अेकला चलो रे

[गांधीजीकी नोआखालीकी धर्मयात्राकी डायरी]

लेखिका

मनुबहन गांधी

अनुवादक

रामनारायण चौधरी

पहली आवृत्ती, अगस्त १९५७

नवजीवन प्रकाशन मंदिर

अहमदाबाद

प्रस्तावना

सारा मानव-समाज अेक और अखण्ड होते हुअे भी अनेक आधारों पर अुसके अलग अलग समूह संगठित होते हैं । ये संगठित समूह विशाल मानव-समाजके अंग होते हैं, फिर भी बहुत बार अुनके बीच परस्पर संघर्ष हुअे बिना नहीं रहता । मानव-समाजके दो समूहोके बीच जब कभी न्याय-अन्यायका प्रश्न खड़ा हुआ है, तब अन्यायके निवारणके लिअे दोनोंके बीच अुग्रसे अुग्र संघर्ष हुअे हैं ।

मानव-जातिके अलग अलग समूह अन्यायके निवारणके लिअे हिंसाका अुपाय आजमाते आये हैं । परन्तु अनुभव यह हुआ कि हिंसासे कोअी अन्याय दुर नहीं होता, दूर होनेका भासमात्र कुछ समयके लिअे होता है; और अन्तमें दुसरे अनेक रूपोंमें अन्याय जारी रहता है या नये रूपमें फूट पड़ता है ।

मनुष्यकी रचना ही कुछ अैसी है कि मानव-समाजके विभिन्न समूहोंके बीच मतभेद, श्रद्धाभेद और विरोधका रहना अनिवार्य-सा है । अिन भेदों या विरोधोको शान्त किये बिना मानव-समाजका जीवन सुख-चैनसे बीत नहीं सकता । बल्कि यह कहना चाहिये कि भेदों या विरोधोंको शान्त करना भी मनुष्यका स्वभाव है। परन्तु अन्यायको दुर करने या भेदो अथवा विरोधोको शान्त करनेके लिअे यदि हिंसाका ही अुपाय काममें लिया जाय, तो अुससे भेद या विरोध शान्त नहीं होते, और न अन्यायका ही निवारण होता है !

अिसलिअे मानव-जातिके सामने प्रश्न यह अुपस्थित हुआ है कि भेद या विरोधके शमनके लिअे और अन्यायके निवारणके लिअे हिंसाके अुपायके बदलेमें सचमुच काम दे सके अैसा कोअी दूसरा अुपाय है या नहीं ?

अिसमें शंका नहीं कि व्यक्ति और व्यक्ति के बीच अथवा मानवोंके छोटे-छोटे समूहोंके बीच विरोधो या भेदोंके कारण अुत्पन्न होनेवाले संघषोंको शान्त करनेके लिअे हिंसाके बदले अहिंसा या प्रेमका अुपाय सफलता-पूर्वक आजमानेके प्रयोग दुनियामें होते आये हैं । परन्तु मानव-

जातिके अंग-रूप बड़े-बड़े समूहोंके बीचका विरोध शान्त करनेके लिअे अैसे प्रयोग बहुत अधिक नहीं हुअे हैं। गांधीजीने भेदो या विरोधोंको शान्त करने और अन्यायका निवारण करनेके खातिर अहिंसा अथवा प्रेमके अुपायको व्यावहांरिक रूप देनेके लिअे जीवनभर अखंड साधना की। हिन्दु समाजके अन्तर्गत विरोधोंका शमन करनेके लिअे और अंग्रेज जनता तथा भारतीय जनताके बीचके अन्यायमुलक संघर्षमें निहित भेंदोको शान्त करनेके लिअे गांधीजीने अपने जीवन द्वारा अिस अुपायका सफल प्रयोग कर दिखाया ! अैसा कहा जा सकता है कि मानव-जातिकी मूल अेकता शिद्ध करनेके लिअे जो प्रेम आवशयक है अुस प्रेमके द्वारा विरोध शान्त करने अथवा अन्याय दूर करनेका मार्ग मानव-समाजको बताना ही अुनके जीवनका मुख्य कार्य था।

यह कार्य करते करते अुनके जीवनके अंतिम भागमें भारतीय प्रजाके दो अंगों— हिन्दू और मुस्लिम समाज—के बीच दीर्धकालसे चले आये विरोधने अुग्ररूप धारण किया, और अुसका भयंकर परिचय सर्व प्रथम बंगालमें और अुसके पूर्वी कोनेमें मिला।

गांधीजीने अपने जीवन-कार्यके प्रति वफादार रहकर अिस विरोधसे अुत्पन्न हुअी भयंकर परिस्थितिको दूर करनेके लिअे अहिंसक अर्थात् प्रेमका अुपाय आजमानेका बीडा अुठाया।

अुनके जीवनका यह अंतिम प्रयोग कितना और कैसा सफल हुआ, अिसकी चर्चा यहां जरूरी नहीं है। परन्तु आहिंसाकी कार्य-पद्धतिके भावी विकासकी दृष्टिसे अिस प्रयोगका बहुत बड़ा महत्त्व है। अत. अिस प्रयोगके दिनोमें गांधीजी जैसा जीवन बिताते थे और जो महान पुरुषार्थ करते थे, अुसकी प्रतिदिनकी डायरी भावी पीढ़ियोंके लिअे सुरक्षित रहे अिस बातको स्वयं गांधीजी भी महत्त्वपुर्ण मानते थे।

अिस कारणसे अुन्होंने आरम्भसे ही अपनी सेवाके लिअे और अपने भारी कामकाजमें मदद पहुचानेके लिअे श्री मनुबहन गांधीको अपने साथ रखा था। गांधीजीने नोआखाली और अन्य स्थानोंकी अपनी दिनचर्याकी डायरी श्री मनुबहनसे आग्रहपूर्वक रखवाअी थी। अिस पुस्तकमें नोआखालीकी अुनकी पैदल यात्राका विवरण श्री मनुबहनकी डायरीके रूपमें संग्रह किया गया है।

अिस डायरीमें गांधीजीकी दिनचर्या, लोगोंसे और व्यक्तियोंसे काम लेनेका अुनका तरीका, और सबसे बढ़कर तो अपने कामके लिअे आवश्यक मनुष्योंको तालीम देनेकी अुनकी वज्रके समान कठोर होते हुअे भी फूलके समान कोमल पद्धति—जैसे अनेक रोचक अंग है । परन्तु जीवनके अंतिम भागमें गांधीजीने अपने स्वीकृत मिशनको सफल बनानेके लिअे अकेले हाथों जो प्रयोग किया था, अुसके विस्तृत विवरणका मानव-जातिके भावी विकासकी दृष्टिसे बहुत बड़ा महत्त्व है । अहिंसाकी कार्य-पद्धतिको सफल बनानेका प्रयोग करनेके अिच्छुक सब लोग अिस विवरणको अितनी सावधानी और अितनी चिन्तासे सुरक्षित रखनेवाली श्री मनुबहन गांधीके सदा ऋणी रहेंगे।

बम्बई, ४-१-१९५४ मोरारजी देसाअी

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना मोराजजी देसाअी

१. वह धन्य दिवस

२. आत्म-समर्पणकी दीक्षा

३. काम संभाल लिया

४. डायरीका महत्त्व

५. तीन अमूल्य पाठ

६. पंडितजी मिलने आये

७. यात्राकी तैयारी

८. अेकला चलो रे

९. कड़ी परीक्षा

अेकला चलो रे

[गांधीजीकी नोआखालीकी धर्मयात्राकी डायरी]

१. वह धन्य दिवस

अक्तूबर १९४६ में मुझे पारिवारिक कामसे अुदयपुर जाना पडा । अुतने समयमें देशमें नय-नये परिवर्तन हो गये । बंगालमें भयंकर देंगे छिड़ गये । अिसकी प्रतिक्रिया बिहारमें हुअी और बापूजीको बंगाल जाना पडा । अिस बीच अुन्होंने मुझे अुदयपुर यह पत्र लिखा :

२३-१०-१९४६

चि. मनुडी,

तुम्हारा अुदयपुरका पत्र कल मिला । अब तो मानता हूं कि मैं अेक-दो दिनमें बंगाल जाअुंगा । अिससे पहले तुम आ गअी होती तो मुझे अच्छा लगता । परन्तु अब तुम्हें जैसा ठीक लगे वैसा करना; जिससे तुम सुखी होओ और सेवा करने लगो अुसीमें मुझे संतोष है ।

अुमियाको सन्तोष हो तब तक वही रहना । तुम्हारा स्वास्थ्य वहां अच्छा हो जाना चाहिये । वहांके जलवायुकी तारीफ की जाती है ।

बापूके आशीर्वाद

कलकत्ता चले जानके बाद मैं कहा हूं अिसका ठीक पता न होनेसे बापूजीने मेरे पिताजीको पत्र लिखा ।

कलकत्ता,

४-११-१९४६

चि. जयसुखलाल,

चि. मनुका पत्र मिला है । अुसीके साथ तुम्हारा अुसे लिखा हुआ पत्र भी मिला । अुसकी मांग पर ये दोनों लौटा रहा हूं । मनुड़ी वहां पहुंची होगी या नहीं, अिसका यकीन

न होनेसे तुम्हीको लिख रहा हूं। अुसे अलग लिखनेका समय नहीं है। यह पत्र लिखनेका भी नहीं है, अैसा कह सकता हूं। परन्तु लिखना पड़ रहा है।

* * *

मेरा यह पत्र तीन बारमें लिखा गया है। मुझे ड़र है कि यह अंतिम पत्र होगा। बिहारके किस्सेसे मनमें यह निश्चय हो गया है कि लोगोंका मानस न सुधरे तो मैं अुसका साक्षी नहीं रह सकूंगा। अभी भी मैं अर्ध-अुपवास जैसा ही कर रहा हूं। अिसका मुख्य कारण शरीर है। परन्तु बिहार मुझे अनशनकी ओर ले जायगा। परसो नोआखाली जाअुंगा। पत्र आजकल कम ही लिखता हूं। लंबा तो आज यहां आनेके बाद ही लिखा है। अिसलिअे अिस समम मनुका स्थान मेरे पास ही हो सकता है। लेकिन अब तो अिसे असंभव मानता हूं। भगवान करे वह व्याधिमुक्त हो और सुखी रहे। और तो जो कुछ होगा वह अखबारोमें देखोगे।

बापूके आशीर्वाद

१ दिसम्बरको मैं महुवा पहुंची तब अपने पिताजीके नाम लिखा बापूजीका यह पत्र मैंने पढ़ा और अुसी रात रेडियो द्वारा खबर मिली कि बापूजीने अपने सभी साथियोंको अलग अलग गावोंमें रख दिया है। पिताजीके पत्रमें यह पढ़कर कि "अिस समय मनुका स्थान मेरे पास ही हो सकता है', मेरा हृदय घडी भरके लिअे भर आया। विचार आया कि बापूजी मुझे अपनी निजी सेवाके लिअे रखे तो ? परन्तु शायद अब यह असंभव है। अगर पासके साथियोंको भी अलग कर दिया है, तो अितनी दूरसे मुझे भला क्यों बुलायेंगे ?

अिस विचारमें नींद नहीं आअी। पिताजीको जगाया। अुनसे पूछा। वे बोले: "तुम लिखो तो सही, सेवा करनेकी तुम्हारी सच्ची भावना होगी तो जरूर सफल होगी !" अुनके शब्दोंसे मुझे और प्रोत्साहन मिला और रातके डेढ़ बजे मैंने बापूको पत्र लिखा। अुसमें स्पष्ट लिखा कि "यदि मुझे किसी गांवमें बैठानेका अिरादा हो तो मुझे वहां नहीं आना है; अैसा ही अिरादा हो तब तो यहां बैठकर जितना बनता है अुतना काम करती ही हूं। परन्तु आप अपनी व्यक्तिगत सेवा करने

देनेकी शर्त पर आने दें तो ही मेरी अिच्छा वहां आनेकी है। मेरा प्रस्ताव आपको मंजूर हो तो मुझे तारसे खबर दें, ताकि आपकी पैदल यात्रा शुरू होनेसे पहले मैं वहां पहुंच सकू । मैं वचन देती हूं कि अिसमें बड़ेसे बड़ा खतरा अुठानेके लिअे भी मैं तैयार रहूंगी ।" वगैरा ।

कौन जाने रातके डेढ़ बजे किस शुभ मुहूर्तमें मेरा पत्र लिखा गया कि मेरा प्रयत्न सफल हुआ । ता. ११-१२-१९४६ की शामको दुरसे तारवालेको आता देखकर मनमें अत्यंत हर्षकी भावना दौड़ गअी । तार खोलने पर बापूजीका ही निकला । तार अिस प्रकार था:

Ramganj,

Jaysukhlal Gandhi,

Care/Shepherd Mahuva,

If you and Manu sincerely anxious for her to be with me at your risk you can bring her to be with me. Wire arrival Khadi Pratisthan, College Squre, Calcutta.

Bapu

यह तार पढ़ते ही मुझे खयाल हुआ कि पूज्य बा और मेरे माता-पिताके आशीर्वादका ही यह फल है । सर्वथा असंभव बातके संभव हो जाने पर जैसी भावनाका अनुभव होता है वेसी ही भावना मैंने अनुभव की, और अीश्वरके अहर्निश अुपकारसे हृदय धन्यता अनुभव करने लगा ।

पिताजीने भावनगर तार देकर अपनी छुट्टी मंजूर कराअी । अिस बीच मैंने बापूजीको जो पत्र लिखा था, अुसे मेरे नोआखाली पहुंचने पर उन्होंने 'जीवनभर संभाल रखने' का आदेश देकर मुझे वापस दे दिया । अुस पत्रमें मेरा लिखित निश्चय था, अिसीलिअे शायद संभालकर रखनेको कहा होगा । बापूजीको लिखे गये मेरे किसी अन्य पत्रको अिस तरह संभाल कर रखनेको अुन्होंने कभी नहीं कहा । मेरा वह लिखित निश्चय अिस प्रकार था:

महुवा,

१२-१२-१९४६

परमपूज्य बापूकी सेवामें,

आपका तार कल शामको मिला । मुझे आपने अपनी निजी सेवा करनेका अमूल्य अवसर दिया, यह जातकर बहुत ही आनंद हुआ । पू. भाअी (मेरे पिताजी) ने भावनगरसे तार द्वारा १५ दिनकी छुट्टी मांगी है। वह मिल जायगी और जल्दीसे जल्दी २२-२३ तारीख तक ये मुझे यहां छोड़ जायेंगे । यहां पहुंचनेसे पहले खादी प्रतिष्ठानको तारसे सूचना कर देंगे ।

आपको अितना लम्बा तार देनेकी जरूरत तो नहीं थी । क्योंकि आपके अिस प्रवासमें अकेले रहना पसन्द करने पर भी मैंने और पू. भाअीने अीमानदारीसे और यहां आनेके खतरेका पूरी तरह विचार करके ही अिस शर्त पर वहां आनेका निर्णय किया था कि आप मुझे अपनी निजी सेवा करने देना पसन्द करेंगे । यह ब्यौरा अुस पत्रमें लिखा ही था । अिसलिअे सिर्फ आनेकी ही अनुमति दे दी होती तो काम चल जाता ।

आज मुझे आपका अेक वाक्य याद आता है । अेक बार जाहेता, कान्ताबहन आदि मेरी सभी सहेलियां जानेवाली थी; तब मैंने कहा था, 'बापू, अब तो मैं अकेली हो गअी ।' तब आपने मुझसे कहा था, 'तुम और मैं अकेले ही रहेंगे । मैं जीता हूं तब तक तुम अकेली कैसी हो ?' और फिर आपने गीताके 'आपूर्यमाणम् . . . श्लोकका अर्थ समझाया था । वह दिन सचमुच आ गया । मैं तो अीश्वरसे प्रार्थना करती हूं कि वह मुझे अन्त तक प्रामाणिकतासे आपकी सेवा करनेकी शक्ति दे।

आपका अेक पत्र (पुज्य भाअीके नामका) मिला है । मैं तो मूर्खा हूं ही । अिसमें शंका कहा है? समझदार होती तो अैसा होता ही क्यों? परन्तु मुझे लगता है कि अीश्वर मूर्खोका भी वेली होता है । अिस तरह मेरे लाड़भरे नाम तो पडे ! परन्तु जो हुआ सो हुआ । आपको मुझे समझदार बनाना होगा । अब तो आपकी सेवाका लाभ मिलेगा,

अिस आशामें सब कुछ भूल गअी हूं । सेवा करते करते कोअी छुरा भी भोक देगा तो खुशीसे वह दुख सह लूगी । मेरा खयाल है कि मेरे आनेसे पहले आपकी पैदल यात्रा शुरू नहीं होगी । अुससे पहले पहुंच जानेकी मैं आशा रखती हूं ! अधिक तो कया लिखू ? आपकी तबीयत अच्छी होगी ।

आपकी पुत्री मनुडीके

दण्डवत् प्रणाम

हम ता. १५-१२-१९४६ के दिन कलकत्तेके लिअे रवाना हुअे। कलकत्तेसे नोआखाली जानेके लिअे हमारे साथ खादी प्रतिष्ठानसे अेक मार्गदर्शक आये । कलकत्तेसे काजीरखिल, जहां गांधी छावनीका मुख्य केन्द्र था, पहुंचनेमें २४ घंटे लगे । और सफर भी बहुत ही कठिन था । अन्तमें ता.१९-१२-१९४६ को दोपहरके कोअी तीन बजे हम श्रीरामपुर पहुंचे, जहां बापूजी ठहरे हुअे थे । यह धन्य दिवस जीवनके अेक सुनहले दिनके रूपमें हृदयमें अंकित हो गया ।

२. आत्म-समर्पणकी दीक्षा

श्रीरामपुर,

१९-१२-१९४६, गुरूवार

हम जब दोपरहके तीन बजेके करीब बापूजीके पास पहुंचे, तब बापूजी अेक तख्ते पर वैठे अकेले ही चरखा चला रहे थे, और आसपास 'आअी. अेन. अे.' (आजाद हिन्द फौज) के कुछ लोग तथा कर्नल जीवनसिंहजी वगैरा बातें करते हुअे बापूजीसे प्रश्न पूछ रहे थे। वे सब बापूजीके साथ अिस काममें शरीक होना चाहते थे। मव बातोंमें तल्लीन थे।

हमने अुस झोपडीमें प्रवेश किया। झोपडीकी देहलीसे बापूजीकी बैठक कोअी चार फुट दूर थी। मैं वहांसे सीधी बापूजीको प्रणाम करने दौडी। बापूजीने अेक जोरकी धप लगाअी, कान पकडा, अुनकी प्रमपूर्ण चपत गाल पर पडी और गाल खींचकर बोले, "आखिर आ पहुंची!" कर्नल साहबसे कहने लगे, "यह लड़की यहां मरनेकी तैयारी करके आअी है, अिसलिअे आप लोगोंके दो मिनट ले लिये! अब आप बात कहिये।"

पांच-सात मिनटमें वे सब चले गये। बादमें बापूजीने मेरे स्वास्थ्यके समाचार पूछे। मैंने पूछा, आपको कैसा लगता है? "जैसी की तैसी है, परन्तु लगता है वजन बढा होगा।"

अिसके बाद मेरे पिताजीसे बोले, "कब चले थे? रास्तेमें भीड़ तो नहीं थी? मनुडीका पत्र मिला था। यह दिल्ली आअी थी तब भी अपने पास रहनेको मैंने खूब समझाया था! मगर अिसकी अिच्छा अुमियाके पास जानेकी हुअी। मेरे नाम अेक पत्र लिखकर छोड़ गअी। वह मुझे बहुत अच्छा लगा था। मैंने बहुत कुछ अिस बारेमें मनुको लिखा भी था। बादमें तो बंगाल आना हो गया। यहां तो करना या मरना है। अिसके लिअे मनुकी तैयारी होगी, अिसका मुझे विश्वास नहीं था। परन्तु अितनेमें मनुका पत्र मुझे मिला। अुस पत्रका तारसे जवाब मांगा था, अिसलिअे तार दिया। यहां अिसकी परीक्षा होगी। मैंने अिम हिन्दु-मुस्लिम-अेकताको यज्ञ कहा है। अिस यज्ञमें जरा भी मैल हो तो काम नहीं चल सकता। अिसलिअे मनुके मनमें जरा भी मैल होगा तो अिसका

बुरा हाल होगा । यह सब तुम समझ लो, जिससे अब भी वापस जाना हो तो यह तुम्हारे साथ चली जाय । बादमें बुरा हाल होने पर जाय, अुसके बजाय अभी लौट जाना ज्यादा अच्छा है ।"

अुपरकी बात कहनेके बाद मेरे सामने देखकर बापूजीने कहा, "जयसुखलालको मैंने जो कहा वह अच्छी तरह समझमें न आया हो ती अिनसे समझ लेना । यहां तुम्हारी कड़ी कसौटी होगी ।"

यह बात यही रुक गअी । अितनेमें कुलरंजनबाबू लौट आये । अंधेरा हो रहा था, अिसलिअे बापूजीने भाअीको (अर्थात् मेरे पिताजीको) जानेके लिअे कहा । मेरा बिस्तर आया नहीं था । मुझे तो बापूजीने यही रहनेको कहा, क्योंकि मैं अुनके पास रहनेके लिअे ही आअी थी । भाअीसे बोले, "यहां तो यज्ञ चल रहा है। मैं तुम्हें यहां सोने या खानेकी अिजाजत नहीं दे सकता । अिसलिअे तुम काजीरखिल लौट जाओ । मनुका बिछौना भेज देना ।"

मेरा बिस्तर नहीं आया था, अिसलिअे बापूजीने अेक शतरंजी निकाल दी। साढ़े नो बजे वे सोये ।

रातको ठीक १२॥ बजे मेरे सिर पर हाथ फेरकर बापूजीने मुझे जगाया । मनुड़ी, जागती हो क्या ? मुझे तुम्हारे साथ बातें करनी है । तुम अपना धर्म अच्छी तरह समझ लो और जयसुखलालसे बातें करके जो फैसला करना हो झट कर लो, क्योंकि अुसे भी ज्यादा छुट्टी नहीं है ।*

कल शामको मैं यहां आअी हूं । तबसे बापूजीकी जो बातें मैंने सुनी अुन परसे यह वर्णन करना गर्वथा असंभव है कि यहां अुनकी क्या स्थिति है, कैसा अद्भूत कार्य अुन्हें करना है और किस प्रकारकी कठिनाअियोंका सामना वे कर रहे हैं । बापूजीकी स्थिति पर लागू होनेवाला अखा भगतका यह भजन बड़ा मार्मिक है:

अकल कला खेलत नर ज्ञानी ।
जैसे हि नाव हिरे फिरे दसो दिश,

भ्रुवतारे पर रहत निशानी । अकल.

चलन वलन अयनी पर बाकी,

मनकी सुरत अकाश ठहरानी;

तत्त्व-ममास भयो है स्वतंतर,

जैसे हिम होवत है पानी । अकल.

छूपी आदि अन्त नहीं पाया,

आअी न सकत जहां मन वानी;

ता घर स्थिति भअी है जिनकी,

कहि न जात अैसी अकथ कहानी । अकल.

अजब खेल अद्‌भुत अनुपम है,

जाकू है पहिचान पुरानी;

गगन हि गेव भया नर बोले,

अेहि अखा जानत कोअी ज्ञानी । अकल.

श्रीरामपुर,

२०-१२-१९४६, शुक्रवार

फिर बापूजीने साढ़े तीन बजे मुझे प्रार्थनाके लिअे अुठाया । अुससे पहले बापूजी जाग गये थे। अुस दिनकी अपनी डायरीमें बापूजीने लिखा :

“आज रातको १२-३० बजे अुठा, मनुको १२-४५ को जगाया । अुसके धर्मके बारेमें सब समझाया । जयसुखलालसे बातें करनेको भी कहा । अुसे निश्चय बदलना हो तो अभी बदल सकती है, परन्तु यज्ञमें कूद पड़नेके बाद सभी खतरे अुठाने होंगे । वह टससे मस नहीं हुअी । जयसुखलालसे मेरी खातिर बात करेगी । परन्तु जयसुखलालने तो सब कुछ अुसी पर छोड़ दिया है और छोड़ेगा । अिस प्रकार बातोंमें सवा बज गया और फिर कुछ देर सोकर तीन बजे प्रार्थनाके लिअे अुठा ।"

अितनी बात बापूजीने अपने हाथसे अपनी डायरीमें लिखी और मेरे लिअे जो कुछ लिखा गया हो अुसकी नकल करके मेरे पिताजीको भेज देनेके लिअे कहा । अिसमें साढ़े तीन बज गये । प्रार्थना हुअी । प्रार्थनामें आजसे दोनों समय भजन और गीतापाठ करनेका मुझे आदेश दिया । प्रार्थनामें निर्मलबाबू और परशुरामजी थे ।

प्रार्थनाके बाद बापूजीने मुझे फिर रातकी बातों पर विचार करनेको कहा । मैंने अपना निश्चय कह सुनाया "जहां आप वहां मैं, मेरी यह अेक शर्त आपको मंजूर हो तो किर मैं किसी भी परीक्षाका और आपकी किसी भी शर्तका स्वागत करूंगी । भाअीने तो मुझे बचपनसे ही संपूर्ण स्वतंत्रता दे रखी है । मुझ पर कभी शंकाकी नजर नहीं रखी । अिसलिअे आपको अुनकी अिच्छाकी अपेक्षा मेरी अिच्छा अधिक समझनी होगी ।"

मैं बापूजीके लिअे गरम पानी करने गअी, अुस बीच अुन्होंने मेरे नाम चिट्ठी लिखी :

चि. मनुड़ी,

अपना वचन पालन करना । मुझसे अेक भी विचार छिपाना मत । जो बात पूछू अुसका बिलकुल सच्चा अुत्तर देना । आज मैंने जो कदम अुठाया, वह खूब विचारपूर्वक अुठाया या । अुसका तुम्हारे मन पर जो असर हुआ हो वह मुझे लिख देना । मैं तो अपने सब विचार तुम्हें बताअूगा ही, परन्तु अितना वचन मुझे अभी तुम्हारी ओरसे चाहिये । यह हृदयमें अंकित करके रख लेना कि मैं जो कुछ कहूंगा या चाहूंगा, अुसमें तुम्हारा भला ही मेरे सामने होगा ।

बापू

(मैंने कहा, मुझे जो भी कठिनाअी या कष्ट सहन करने पड़ेंगे वे मरते दम तक सहूंगी । मुझे आप पर संपूर्ण श्रद्धा और विश्वास है । आप जैसे-जैसे नोआखालीका भयंकर चित्र मेरे सामने रखते जाते है, वैसे वैसे मेरा मन दृढ होता जा रहा है । अिसलिअे बापूजीने लिखा:) यदि अैसा ही हो तो मुझे कुछ पूछनेको नहीं रह जायगा, केवल

समझनेको हो रहेगा । तुम्हारी श्रद्धा सचमुच ही यहां तक पहुंच गअी हो तो तुम सुरक्षित हो । तुम अिस महायज्ञमें पूरा भाग अदा करोगी,—मुर्ख हो तो भी । अिसे संभालकर रखना । समझमें न आये तो पूछ लेना ।

बापू

साढ़े सात बजे बापूजी घुमने निकले । घूमते-घूमते बोले "यह न समझना कि मैंने तुम्हें यहां केवल अपनो सेवाके लिअे ही बुलाया है । मेरी सेवा तो तुम करोगी ही । परंतु जहां छोटीसी लड़की या वृद्ध स्त्री भी सुरक्षित नहीं, वहां तुम्हें, १६-१७ वर्षकी जवान लड़कीको, मैंने अपने पास रखा है । यदि कोअी गुण्डा तुम्हें तंग करे और तुम अुसका सामना बहादुरीके साथ कर सको अथवा सामना करते करते मर जाओ तो मैं सुशीसे नाचूंगा । तुम्हें बुलानेमें मेरा यह अेक प्रयोग भी है ।"

नोआखालीमें कहीं-कहीं वांसके पुल पार करना पड़ते हैं । बापूजी जिस प्रदेशकी यात्रा करने जा रहे हैं, वहां अैसे पुल पार करना पड़ेंगे। अिसलिअे वे अुन पर चलनेकी आदत डाल रहे हैं । अैसे पुलों पर वहांके बालक तो आसानीसे चल सकते हैं, परन्तु अनजान आदमी अगर चल न सके तो नीचे खाअीमें ही गिरता है ।

घूमकर आनेके बाद मैंने बापूके पैर धोये। मालिश की। मालिशमें बापूजी आधा घंटा सो गये थे । नहा लेनेके बाद दस बजे जब बापूजी भोजन कर रहे थे अुस समय मेरे पिताजी अंतिम विदा लेने आये । बापूने कहा: "मनुडी तो टससे मस नहीं होती । मैंने अुससे बहुत बातें की । अब तुम निश्चिन्त होकर जाओ । अिसकी चिन्ता न करना ।"

पिताजीने कहा, "अब तो आप अिसे जब तक चाहे रख सकते हैं । और आपके पास रहे तो फिर मुझे चिन्ता ही कया हो सकती है ?"

बापू—मेरी धारणा है कि जब तक मैं जिन्दा हूं तब तक अुसे जानेको नहीं कहूंगा । यह तंग आ जाय तो भले जा सकती है । परन्तु मेरा तो अभयदान है कि यह चाहे तो मुझे

छोड़ सकती है, पर मैं अिसे नहीं छोडूंगा, सिवाय अिसके कि दोनोंमें से कोअी मर जाय । मरे तो भी क्या ? शरीर अलग होंगे, आत्मा तो अमर है । मेरी यह प्रबल अिच्छा है कि अिस लड़कीमें जो छिपे हुअे गुण मैंने देखे हैं अुन्हें प्रकाशमें लाअू।

मेरे पिताजी साढ़े ग्यारह बजे महुवा जानेके लिअे रवाना हुअे । साथका तमाम फालतू सामान अुनके साथ वापस भेज देनेकी सूचना बापूने की । तीन बजे कातते हुअे अुन्होंने मेरी डायरी सुनानेको कहा । मैंने कहा "अपनी ही डायरी मैं नहीं सुनाअूंगी ।"

बापूने कहा "हमेशा अपनी भूल स्वयं ही स्वीकार करनेमें जितनी श्रेष्ठता है अुतनी कागज पर लिखकर स्वीकार करनेमें या किसी औरके मारफत स्वीकार करनेमें नहीं । अिसलिअे तुम पढो । अुससे मुझे पता लगेगा कि तुम मेरी बातोंको कितना समझी हो । बादमें मैं अुस पर अपनी सही कर दूंगा । अिससे पढ़नेमें मेरा समय नहीं बिगडेगा, आंखोंकी शक्ति भी नहीं जायगी । और तुम्हें तो अब मेरी जो भी सेवा हो सो करनी ही है अिसलिअे यह भी अेक सेवा ही है, अैसा मान कर मेरे सामने पढ़ जाओ ।

मैंने अपनी कलकी डायरी सुनाअी । बापूजीने कातकर अुसके नीचे सही की ।

चार बजे कुछ पत्र लिखवाये और कहा: "महादेव और प्रभासे जो काम लिया है वही तुमसे लेना है ।"

शामकी प्रार्थनाके बाद मैं अकेली बैठकर बापूजीने दिन भर जो गंभीर बातें कहीं थी अुन पर शांतिसे विचार कर रही थी और सोच रही थी कि मैं अिस बड़ी जिम्मेदारीको पूरा कर सकूंगी या नहीं?

बापू कहने लगे, "तुम अितनी गंभीर क्यों हो? अपनी मांसे कुछ भी छिपाओगी तो पाप लगेगा । भले अच्छा विचार आये या बुरा, सब मुझे कह देना ।"

मैंने कहा, "आज आपने . . . को जो पत्र लिखाये, अुनमें अिस बात पर प्रकाश डाला है कि आप मुझसे किस प्रकार काम लेनेकी आशा रखते हैं और मुझ पर कैसी जिम्मेदारियां है । वे सब

आशायें मैं पूरी कर सकूंगी और अुन जिम्मेदारियोंको निबाह सकूंगी या नहीं, अिसी पर अेकान्तमें बैठी विचार कर सही हूं।"

बापू—अिसकी चिन्ता हम किस लिअे करें ? चिन्ता करनेसे काम नहीं चलेगा। हां, हमारी भावना शुद्ध हो तो सफलता जरूर मिलेगी। हम सभी काम अीश्वरको ही सौंपकर क्यों न करें ? अुससे हार्दिक प्रार्थना करें तो अपने-आप वह शक्ति हममें आ ही जायगी। रामनाम रटें। राम पर पूरा भरोसा करके यह काम अुसे सौंप दो। छोटा बच्चा भूख लगने पर रो देता है तब मां अुसे दूध पिलाती है। परन्तु अपनी भूख मिटानेकी चिन्ता अुस बालकको नहीं होती, मांको होती है। वैसे ही तुम कामकी चिन्ताका भार मन पर रखोगी तो निभ ही नहीं सकोगी। यह भार मुझ पर और अीश्वर पर छोड़कर वह जो भी शक्ति दे अुसके अनुसार काम करती रहो।

शामकी सार्वजनिक प्रार्थनामें सबके सामने भजन गानेका पहला ही अवसर होनेसे मैं गाते समय कुछ कांप रही थी। अिसका भी बापूजीने अच्छी तरह खयाल रखा और मुझसे कहा, " प्रार्थना केवल मुंहसे बोल जाने या गानेके लिअे नहीं है। प्रार्थनामें सच्ची भावना अुत्पन्न हो तो ही सुननेवालों पर अुसका भव्य प्रभाव पड़ता है। दो-चार दिन करोगी तो संकोच जाता रहेगा।"

रातको साढ़े आठ बजे बापूजीने बंगला वर्णमाला लिखी। मैंने डाकमें आये पत्र और अखबार पढ़कर सुनाये। आजसे बापूजीका सभी काम मैंने संभाल लिया है।

अीश्वरकी मुझ पर कितनी कृपा है ? पुज्य बाकी भी अिस प्रकार अेकान्तमें सेवा करनेका मुझे अवसर मिला था। और आज दुनियाके अिस महापुरुषकी घोर तपश्चर्यामें साथ रहनेका सोभाग्य प्राप्त हुआ है। सत्यकी ही जय है, यह मैं प्रत्यक्ष अनुभव कर रही हूं। अीश्वरसे प्रार्थना करती हूं कि हे अीश्वर, तुझ पर मेरी अैसी ही श्रद्धा बनी रहने दे और मुझे मिल रही प्रसादीको पचाने योग्य बना।

(बापू, श्रीरामपुर, १०-१२-१९४६)

(बापूजीने रातको साढ़े नौ बजे मेरो आजकी डायरी पढ़कर तुरंत ही अुपर लिखे अनुसार हस्ताक्षर कर दिये ।)

---

* यह बात विस्तारसे 'बापू-मेरी मां' के पृष्ठ ९ से १३ पर मिलेगी । नवजीवन प्रकाशन। कीमत ०-१०-०; डाकखर्च ०-३-० ।

३. काम संभाल लिया

श्रीरामपुर,
२१-१२-१९४६, शनिवार

साढ़े तीन बजे, प्रार्थनासे कुछ समय पहले अुठे । दातुन करते समय बापूजीने कुछ पत्र, जो मुझसे कल लिखवाये थे, सुने और मेरी डायरीमें हस्ताक्षर किये । अितनेमें प्रार्थनाका समय हो गया ।

प्रार्थनाके बाद बापूजीने गरम पानी और शहद लेकर निर्मलदाने प्रार्थना-प्रवचनकी जो रिपोर्ट तैयार की थी अुसे सुधारा । सारा समय अिसमें चला गया । सात बजे मोसंबीका रस पीकर घूमने निकले। आज बहुत दूर तक घूमने गये थे । बापूजीके साथ मैं तथा प्रेस-रिपोर्टर थे । लगभग ४० मिनट तक घूमे । बीचमें उन्होंने मेरी गीताकी पढाअीके बारेमें पुछा । मैंने कहा, जेलसे छूटनेके बाद ठीक तरहसे मैंने गीताका अध्ययन नहीं किया । अपने-आप झूठ सच्चे अर्थ जरूर करती रही । दुसरोंसे गीताका अर्थ न करानेमें मेरी यह अिच्छा थी कि दूसरे लोग अन्य किसी विषयमें भले मेरे गुरु बनें, परन्तु मेरे गीताके अध्ययनके गुरु तो आप ही रहें । बापूजीको मेरी अिस बातसे दु.ख हुआ । अुन्होंने मुझे समझाया :

“अिस अिच्छामें तुम्हारा झूठा मोह है । अच्छी बात सीखनेमें हजारो क्या लाखो गुरु भी हम क्यों न बनायें ? और अेक छोटा बच्चा हो तो अुससे भी सीखे । अच्छी बात किसीसे सीखनेमें शर्म काहे की? परन्तु जन जागे तभी सवेरा मानना चाहिये । अब हम आजसे ही गीताका अध्ययन शुरू कर दे। अुच्चारणमें अधिक कुछ करनेकी जरुरत नहीं है । परंतु गीताके अर्थ नहीं सीखे, यह मुझे बहुत खटकता है । तुम्हें हमेशा पांच श्लोकोंका अर्थ लिखना चाहिये । तुम जानती हो कि तीसरा अध्याय यज्ञका है । भगवान कहते हैं कि जो मनुष्य यज्ञ किये बिना खाता है वह चोरीका अन्न खाता है। यह तो बड़ा महत्त्वपूर्ण वचन हुआ; क्योंकि चोरीका अन्न खाना कच्चा पारा खाने-जैसा है । कच्चा पारा हजम नहीं होता । वह खा लिया जाय तो फूट निकलता है। अिसी तरह

चोरीका अन्न खाया जाय तो वह फूट निकलेगा । यज्ञके बिना मनुष्य घडीभर भी रहे तो वह चोर ठहरता है । अिसलिअे यज्ञ हम सबको करना चाहिये । सद्भाग्यसे जिसका हृदय स्वस्थ है, शुद्ध है, अुसके लिअे यज्ञ सरल वस्तु है। और यज्ञके लिअे न धनकी आवश्यकता है न बुद्धिकी और न पढ़ाअीकी । यज्ञका अर्थ है कोअी भी परोपकारी कार्य । जिसका जीवन पूरी तरह यज्ञमय हो अुसके लिअे कहा जा सकता है कि वह चोरोका अन्न नहीं खाता। अत. यह कह सकते हैं कि जो थोड़ासा यज्ञ करता है वह कम चोर है । अिस प्रकार सूक्ष्मतासे देखा जाय तो थोड़ी-बहुत चोरी हम सब करते हैं । जब स्वार्थमात्रका त्याग कर दें तभी कहा जायगा कि पूरा यज्ञ किया है । स्वार्थका त्याग करनेका अर्थ है अहता, मेरापन, छोड़ना । यह मेरा भाअी है और वह पराया है, यह मेरी बहन है और वह पराअी है, अैसा भाव मनमें रहना ही नहीं चाहिये । अैसा वही कर सकता है जो अपना सब कुछ कृष्णार्पण कर दे । अैसा व्यक्ति जो भी सेवा करता है, वह सब अीश्वरको बीचमें रखकर अुसके सेवककी हैसियतसे करता है । अैसे मनुष्य नित्य सुखी रहते हैं । अुनके लिअे सुख-दुख अेकसे ही है । वे अपने शरीर, मन, बुद्धि सबका परमार्थके लिअे ही अुपयोग करते है । अैसा अुत्तम यज्ञ हम सब नहीं कर सकते । जब हमारे मनमें यह भावना हो कि संभव हो तो सारे जगतकी सेवा करें, तभी अैसा यज्ञ हो सकता है । तो अैसा कौनसा कार्य है जिससे यह भावना सिद्ध हो सकती है ? अिस प्रश्नका विचार करें तो मालूम होगा कि कातना ही वह मुख्य कार्य है; और यह अेक ही सेवा अैसी है जिसे परमार्थकी दृष्टिसे असंख्य मनुष्य अेकसाथ अथवा चाहे जब कर सकते हैं । यह मेहनत जगतके लिअे, देशके लिअे की जा सकती है । और अिससे असंख्य गरीबोंका पेट भरता है । अंधे, गूंगे, बहरे, गरीब, अमीर, बच्चे, बूढ़े सब आसानीसे यह सेवा कर सकते हैं । और प्रत्येक तारके साथ रामनाम लिया जा सकता है । मैंने तो जबसे चरखेकी खोज हुअी तबसे यह अेक बात रट रखी है। तुम भी गीताके अैसे अर्थोंकी कंठस्थ करके आचरणमें अुतारो, अिसलिअे मैं तुम्हें गीताके अर्थ अिस तरह समझाना चाहता हूं, केवल व्याकरणकी दृष्टिसे नहीं । यह तो मैं तुम्हें गीताके श्लोकोंका अर्थ भी समझाअूंगा अिस बातका अेक अुदाहरण दिया । और यज्ञका सच्चा अर्थ भी समझाया । यज्ञमें चरखा है और चरखेमें यज्ञ है ।

यह सारी बात घर आये तब तक बापूजीने बहुत गंभीरतापूर्वक मुझे समजाअी। घर आकर कीचड़के पैर धोये और बापूजीने बंगाली वर्णमाला लिखी । अिस बीच मैंने बापूजीकी मालिश करनेकी और अुनके स्नानके लिअे पानी गरम करनेकी तैयारी की ।

आठ बजे मालिश कराते समम बापूजी २० मिनट सो लिये । अुन्हें थकावट बहुत मालूम होती है । मालिश और स्नानके बाद भोजन करते हुअे सुहरावर्दी साहबके लिअे पत्र तैयार कराया । भोजनमें आठ औंस दुध, शाक तथा बार्ली (जो) के बहुत आ जानेसे अुसे बांटकर रोटी बनानेको कहा था । परन्तु रोटी जैसी चाहिये वैसी बनती नहीं थी । अिसलिअे कलसे बार्लीको शाकके साथ ही कूकरमें रख देनेकी सूचना की ।

यहां बापूजी जिस बुढियाके, मेहमान बने हैं वह बहुत ही ममतालु और प्रेमल है, परन्तु मैं अुसकी भाषा नहीं समझती और वह मेरी नहीं समझती । अिशारेसे आग्रहपूर्वक मुझे खिलाती है।

आजसे मैंने भी बंगला सीखना शुरू किया है । बापूजी कहते हैं, देखें, हम दोनोंमें से कौन पहला नम्बर लाता है ।"

बापूजी अेक बजे आरामके लिअे लेटे। मैंने पैरोमें घी मला । आराम लेते-लेते सुहरावर्दी साहबका पत्र जांच लिया । किर मेरी डायरी देखी । वह अुन्हें पसन्द आअी । परन्तु अधिक समयके अभावमें थोड़ेमें लिखनेकी सुचना करके कहा, "मुख्य बात दर्ज कर ली जाय तो संक्षेपमें सब लिखना आ जाता है । मेरे लेखोंका अध्ययन करना । यज्ञकी बात समझके साथ लिखी गयी है।"

दो बजे बापू अुठ वैठे । कुछ पंद्रह मिनट सोये । तीन बजे बिड़लाजीकी पेढीसे फल आये। अेक दर्जी भी आया । मेरे लिअे पंजाबी पोशाक सीनेको दी । सवा तीन बजे पेट और सिर पर मिट्टीकी पट्टी रखवाअी आर अुसी समय श्रीकृष्ण सिन्हा (बिहार) के नाम मुझसे पत्र लिखवाया । अिस बीच कोअी पांच मिनट बापूजी अूंघते रहे । अिसके बाद मुलाकात शुरू हुअी । जमान— अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट, मेजर स्ट्राअिकर, डॉ. दासगुप्ता और तीन रिलीफ अफसर आये ।

अुनके साथ बापूजीने यह चर्चा की कि यात्रामें किस रास्तेसे जायें । मजिस्ट्रेट जमानके साथ निराश्रितीसे किस प्रकार काम लिया जाय अिसकी बातें करते हुअे बापूजीने कहा, “सरकार काम करनेके लिअे अुन्हें मजबूर नहीं कर सकती । वे खुद अपनी मरजीसे करें तो दुसरी बात है । असलमें यह काम अलग-अलग संस्थाओं द्वारा होना चाहिये ।”

मुलाकातें पांच बजे तक चली । पांच बजे प्रार्थनामें गये । बरसातके कारण आनेवालोंकी संख्या बहुत नहीं थी । फिर भी ५०-६० भाअी-बहन तो जरूर होंगे । अभी लोगोंके मनसे डर गया नहीं है । मुसलमानोंको यह खबर लग जाय कि हिन्दू बापूजीका आसरा लेने गये हैं तो शायद वह मारेंगे, यह डर हिन्दुओंमें गहरा पैठ गया है ।

प्रार्थनाके बाद सुशीलाबहन अपने गांवसे आअी थी । अिसलिअे सारा समय अुनके साथ बातें करनेमें बिताया ।

घूमकर लौटने पर बापूजीने दूध और अंगूर लिये । यहां खाखरा बनानेका कोअी साधन न होनेसे आज खाखरे नहीं बनाये । नारियलका संदेश बूढी मां बापूजीको जबरदस्ती दे गअी, अिसलिअे अुसका अेक टुकडा खाया ।

बापूजीका कातना पुरा नहीं हुआ था, अिसलिअे रातको साढ़े आठसे नौ बजे तक काता । कुल तार १६० (दोहरे ८०) हुअे। बापूजीने अपनी डायरी लिखी; मेरी डायरी सोते-सोते सुनी । हस्ताक्षर सुबह करनेके लिअे गद्दीके पास रखनेकी सूचना की ।

मैं अकेली बापूजीका बिस्तर कर रही थी । अितनेमें बाथरूमसे हाथ-मुंह धोकर वे आये और मुझे चादर बिछानेमें मदद की । मैंने बहुत मना किया तो बोले, “ अिसमें मैं सूक्ष्म गर्वका भाव देखता हूं । तुम मना करती हो सो प्रेमके कारण या यह सोचकर कि बापूको तकलीफ होगी । परन्तु तुम्हें और मुझे ये सब काम अेक-दुसरेकी मददसे पुरे करने हैं । अिसमें यदि तुम यह आग्रह रखो कि मैं अकेली ही सब करूंगी तो तुम जल्दी बीमार पड जाओगी और मेरी सेवा नहीं कर

सकोगी । यह चादर बिछानेमें मुझ पर क्या जोर पड़ जायगा? अिसलिअे अब जो तुम्हें सुझे सो तुम करना और मुझे सूझे सो मैं किया करूंगा ।"

बापूजीका चादर बिछानेका दृश्य अितना करुण था कि देखा नहीं जाता था । मुझे अेकदम विचार आया कि अिस समय यदि पूज्य बा होती तो ? परन्तु बापूजीको चादर बिछानेसे रोकनेका मुझे साहस नहीं हुआ ।

साढ़े नौ बजे बापूजी बिस्तर पर लेटे । आधा घंटा अखबार सुने । फिर मुझसे कहा कि सारा काम निबटा कर अुनके सोनेके समय मैं भी सो जाअू। काम न पूरा हो तो "अधूरा रखकर भी तुम्हें सो ही जाना चाहिये । नहीं तो जब तक तुम जागती रहोगी, तब तक मुझे चिन्ता बनी रहेगी । और मैं भी सो नहीं सकूंगा।" अिस बातमें दो चिन्ताअे थी । अेक तो यह कि अधिक जागरण करके शरीर पर जोर डालकर काम करनेसे मेरे स्वास्थ्यको हानि पहुंचेगी और दुसरी तथा बडी चिन्ता यह थी कि यह प्रदेश दुसरी ही तरहका है और खास करके जवान हिन्दू लड़कियोंके लिअे तो खतरनाक ही माना जाता है । अिसलिअे 'सावधान नर सदा सुखी' कहावतके अनुसार मैं भी बापूजी बिस्तर पर लेटे कि तुरत अुनके सिरमें तेल मलकर और पैर दबाकर प्रणाम करके सो गअी । यहां आये आज तीसरा दिन हुआ । आजसे सारा काम मैंने संभाल लिया, जिससे मनमें संतोष हुआ ।

श्रीरामपुर,
२२-१२-१९४६, रविवार

रातको बापूजी डेढ बजे जागे । मुझे जगाया । दीया और लिखनेका सामान देकर बापूजीने मुझे सो जानेको कहा । मैं सब सामग्री देकर सो गअी । अढाअी बजे फिर जगाया । अुन्होंने कुछ पत्र लिखवाये थे, वे अुन्हें पढकर सुनाये । बापूजीने अुन पर हस्ताक्षर किये । आजकी डाकमें बापूजीने जो कुछ लिखाया वह बड़े महत्वका और हृदयद्रावक है । अेक पत्रमें लिखवाया :

> तुम्हारे दो पत्र मिले । . . . भाअी पर मेरी नजर जमी हुअी है । यदि मुझे अैसा लगा कि यहां मैं थोडा भी स्थिर हों, तब तो . . . भाअी जैसे बहुतोंकी सेवाका अुपयोग कर

सकूंगा । और मुझे वह अच्छा लगेगा । निर्भय बननेके बारेमें तुम जो लिखते हो वह वास्तविक है, फिर भी तुम्हारे मुंहसे शोभा नहीं देता । जिस प्रकार जब हमारे जाने हुअे अपराधी आजाद घूमते हो, तब लोगोंको निर्भय बनना और रहना आना चाहिये। यह शिक्षा जब तक हम पचा नहीं लेते, तब तक पगु ही बने रहेंगे । यहां हिंसा-अहिंसाका भेद भूल जाओ । हिंसावादी भले बहादुरीकी हिंसा करके मरना सीखे। परन्तु अहिंसावादीको तो अैसे समय ही आहिंसाका प्रभाव जानना है । निर्बलकी अहिंसाको अहिंसाका नाम देकर हम जिस शक्तिकी निन्दा करते है । अैसी अहिंसाको हम डरपोककी युकित कह सकते है । वह युक्ति हमने सीख ली ! और अिसीलिअे मुझे अपने बारेमें यह भय पैदा हुआ है कि मैंने भी—भले अनजानमें—अहिंसाके बहाने या नाम पर कहीं डरपोककी यह युक्ति ही चलाना तो नहीं सीखा है और दूसरोंको सिखाया है । अत: मैं अपनी जांच करने और सच्ची परीक्षा देनेके लिअे यहां आया हूं । मेरे पास पुलिस वगैरा मौजूद है । और अब सिक्ख भाअी भी आ गये है । परशुराम और निर्मलबाबू तो है ही । परसो मनुडी आअी है। यह पत्र अुसीसे लिखवा रहा हूं । अिसीलिअे तो कहीं मैं बेफिक्र बनकर नहीं घूम रहा हूं ? 'सुज्ञेषु कि बहुना'।

बापूके आशीर्वाद

दूसरा पत्र भी अैसा ही है; अुसमें नोआखालीका करुण चित्र आ जाता है ।

चि. . . .

तुम्हारा प्यारेलालके नाम भेजा हुआ पत्र मेरे पास सीधा आ गया । प्यारेलाल वगैरा तो अपर्न काममें लगे हुअे है । मौतके साथ खेल रहे है । अिसलिअे हम सब अेक जगह थे तब वे जो कुछ कर सकते और भेज सकते थे वह अब नहीं कर सकते । तुम्हारा पत्र काजीरखिल गया तो सतीशबापूने मेरे पास भेज दिया । प्यारेलालको अिस पत्रका पता नहीं है । वे मेरे पास आते-जाते रहते हैं ।

यह पत्र मैं सुबह तीन बजे लिखवा रहा हूं । दातुन-पानी तो चार बजे होगा । फिर प्रार्थना । अीश्वर निभायेगा तो निभ जाअूंगा । अितना करते हुअे भी मेरे स्वास्थ्यके बारेमें जरा भी चिन्ताका कारण नहीं है । शरीर काम देता है, फिर भी मेरी परीक्षा हो रही है । मेरी अहिंसा और सत्य दोनों मोती तोलनेके काटेसे भी कहीं अूंचे काटे पर चढे हुअे है, जो बालके सौवें भागके वजनकी भी परीक्षा कर सकता है । अहिंसा और सत्य तो अपूर्ण हो ही नहीं सकते । परन्तु मेरी, जो अिनका प्रतिनिधि बना हूं, अपूर्णता सिद्ध होनी होगी तो हो जायगी । और अगर वह सिद्ध हुअी तो अितनी आशा जरूर रखता हूं कि अीश्वर मुझे अुठा लेगा और किसी दूसरे शरीर द्वारा यह काम लेगा ।

मुझे खेद है कि जो काम प्यारेलाल करते थे यह काम मैं खुद नहीं कर सकता और मेरे पास जो दो आदमी है अुनसे अिसका प्रबंध नहीं करा सका । परन्तु दोनों कुशल हैं, अिसलिअे मुझे अुम्मीद है कि मैं अिसका प्रबंध करा लूगा । अिसमें तुम्हारा पत्र प्रोत्साहन देगा । तीन-चार दिन हुअे जयसुखलाल चि. मनुको अुसकी अिच्छासे यहां छोड गये है । वह मेरे साथ मृत्युका भी आलिंगन करनेको तैयार थी । अिसलिअे मैंने अुसकी अपनी शर्त पर मनुको यहां आने दिया और अब यह पत्र लेटे लेटे आंखें बन्द करके अुससे लिखवा रहा हूं, जिससे मुझे कोअी कष्ट न हो । अिसी कोठरीमें सुचेता भी है । वह सो रही है । और मैं अपने पाट पर पड़े पड़े धीमी आवाजसे मनुको लिखवा रहा हूं । यहांका पाट अैसा है कि अिस पर तीन आदमी आरामसे सो सकते हैं । मैं अपना सारा काम अिस पाट पर ही करता हूं । तुमने जो तार भेजा, अुसे निकम्मा समझो । यहां अतिशयोक्तिका पार नहीं है। यह भी नहीं कहा जा सकता कि लोग जान-बूझकर अतिश्ययोक्ति करते हैं । यहांके लोग जानते ही नहीं कि अतिशयोक्ति क्या होती है । जैसे हरी घास अुगती है वैसे ही मनुष्यकी कल्पना अुडती है । चारो ओर नारियल और सुपारीके बडे-बडे पेड़ खडे हैं । अुन्हीकी छायामें अनेक साग-भाजिया अुगती है । नदिया सब सिन्धु जैसी है । गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्रा अपना पानी बंगालकी खाडीमें अुंडेलती है । मेरी सलाह है कि तुमने अभी तक तार भेजनेवालेको

कोअी जवाब न दिया हो तो अब यह जवाब दो कि सब बातोंका सबूत भेजो तो ही शायद केन्दीय सरकार कुछ कर सके, यद्यपि अुसे अिसका अधिकार नहीं है । तुम्हारे पास गांधी मौजूद है, वह तुम्हें न्याय न दे अैसा नहीं हो सकता । परन्तु वह तो सत्य और अहिंसाका पीर कहा जा सकता है, अिसलिअे संभव है तुम्हें निराशा अुत्पन्न हो । परन्तु यदि वह तुम्हें निराश कर देगा तो हम, जो अुसके हाथ नीचे तैयार हुअे है, कैसे संतोष दे सकेंगे ?

यहां मामला कठिन है । सत्य कहीं ढूंढे नहीं मिलता । अहिंसाके नाम पर हिंसा होती है। धर्मके नाम पर अधर्म हो रहा है । सत्य और अहिंसाकी परीक्षा तो अिसके बीचमें ही हो मकती है न ? मैं यह समझता हूं, जानता हूं, अिसीलिअे यहां पडा हूं । यहांसे मुझे बुलाना मत । कायर बनकर भागू तो मेरा दुर्भाग्य । हिन्दुस्तानके अभी तक अैसे लक्षण मैं नहीं देखता । अिसीलिअे तो मुझे यहां करना है या यहां मरना है । कल रेडियोके समाचार आये कि . . . मेरे साथ बातचीत करने आ रहे है । सभीको मिलकर क्या करना है ? तुममें से जिसे कुछ पुछना हो वह पूछ सकता है ।

* * *

मैं तो भट्ठीमें पडा हुआ हूं, अिसलिअे अुसमें कया होता है और क्या सत्य है, अिसका सबूत अच्छी तरह दे सकता हूं । बिहार लीगकी रिपोर्ट देखी होगी । अुसके बारेमें मैंने . . . को लिखा है । और तुम सबको मेरी राय बता देनेके लिअे . . . को भी लिखा है । यदि अिसमें आधा भी सत्य हो तो भयंकर है । मुझे जरा भी शंका नहीं कि अैसी निष्पक्ष जांच तुरुन्त होनी चाहिये, जिसके विरुद्ध कोअी अंगुली न अुठा सके । अेक दिनका भी विलम्ब नहीं होना चाहिये । अिसमें जो सत्य हो अुसे स्वीकार करना चाहिये । बाको जो स्वीकार न किया जा सके वह जांच करनेवाले न्यायाधीशके पास जाय । मुस्लिम लीगके मंत्रियोंसे भी बात करो । सुहरावर्दी साहबके साथ मैं जो पत्र व्यवहांर कर रहा हूं वह पूरा नहीं हुआ है ।

तुम्हारी कठिनाअी यहां बैठे हुअे भी जानता हूं, और समझता हूं। परन्तु कठिनाअी होते हुअे भी कुछ काम तो करने ही पडते हैं। . . . तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा होगा, यह तो कैसे कहूं ? काम करने लायक है, अैसा मान लेता हूं। आशा करता हूं अच्छा हो जायगा।

बापूके आशीर्वाद

अिस प्रकार अैसी नीरव शांतिमें पत्रोंमें लिखाअी गअी बातोंसे बापूजीकी हृदय-व्यथा आसानीसे समझी जा सकती है।

ठेठ चार बजे प्रार्थना हुअी।

४. डायरीका महत्त्व

२२ वी तारीखको पु. बाका मासिक श्राद्ध-दिवस होनेके कारण संपूर्ण गीता-पारायण हुआ। सुशीलाबहन थी, अिसलिअे पाठ खूब सुन्दर हुआ । गीतापाठ हो रहा था अुसी समय प्यारेलालजी और मि. अिंग्लांड (अेक अग्रेज मित्र) अपने गांवसे पैदल चलकर आ पहुंचे ।

प्रार्थनाके बाद अुन्होंने कहा कि दो बजे चलना शुरू किया था । परंतु रास्ता भूल जानेसे जरा देर हो गअी । मि. अिंग्लांडकी अिच्छा प्रार्थनाका क्रम देखनेकी थी, अिसलिअे जल्दी रवाना हुअे थे। मि. अिंग्लांडने बापूजीसे कूछ प्रश्न पूछे । अुन्हें भी बापूजीने शहद और गरम पानी पिलाया। अुनके चेहरेसे अैसा नहीं लगा कि अुन्हें शहदका पानी अच्छा लग रहा है । घंटेभर बापूजीने प्यारेलालजीसे ही बातें की । साढ़े छ बजे फलोंका रस लेकर घूमने निकले । घूमते हुअे भी प्यारेलालजीसे ही बातें की ।

घूमकर लौटनेके बाद मालिश, स्नान वगैराका नित्यके अनुसार कार्यक्रम रहा । मालिशमें बापूजी ठीक अेक घंटा सोये । आज तो रात कोअी डेढ़ बजेसे जग गये थे, अिसलिअे खूब थकावट है ।

भोजनमें जौ, साग, आठ औंस दूध और ग्रेपफ्रूट लिया । भोजनके पहले पनियाला जानेका कार्यक्रम वहांके कार्यकर्ताओंने तय किया था । परन्तु बापूजी जाना नहीं चाहते थे । अिसलिअे वहांके लोगोंके लिअे लिखे संदेशमें न आ सकनेके लिअे बापूजीने माफी मांगी, और लोगोंको मिल-जूलकर रहनेकी, हिन्दुओंको छुआछूत निकाल देनेकी तथा प्रत्येक जातिके मनुष्य अेक ही शक्तिके बनाये हुअे है अिसलिअे परस्पर बधुभावसे व्यवहांर करनेकी सलाह दी।

साढ़े चार बजे बापूजीने आराम करनेके लिअे लेटे-लेटे मुहरावर्दी साहबको पत्र लिखवाया । मैंने पैरोंमें घी मला । डेढ़से दो तक सोये । दो बज नारियलका पानी पिया । बादमें बापूजीने मालिशकी मेज पर बाहर धूपमें काता । आज ठंड लग रही थी । कातते समय मेरी डायरी सुन ली

। मुझे थोडेमें मुख्य बात लिखनेको कहा । मैंने कहा, “परन्तु आपका अेक अेक शब्द याद रखकर लिखा जाय तो मेरे कास नहीं आयेगा ?”

बापूने कहा, “कदाचित् मैं मर जाअूं तो अुससे मेरी विरासत जरूर सुरक्षित रहेगी । महादेवने अैसा ही किया था । अुसकी अिच्छा तो मेरी गोदमें मरनेकी थी और मेरी बातें लिखनेकी भी थी । अुसकी अेक तीव्र अिच्छा अीश्वरने पूरी कर दी । तुम भी मेरी जीवनकथा लिखनेकी अुधेड़वुनमें तो नहीं हो न ? *

मैंने कहा—मैं अैसी लेखिका बन जाअु तो फिर क्या चाहिये ?

बापू—तो मैं जिनसे बातें करूं, अुन सबके साथकी बातचीतकी नोंध लना तुम्हें सीखना चाहिये । तुम्हारी लिखनेकी रफ्तार तो तेज है ही । परन्तु सभी जगह तुम कैसे संभाल सकती हो? वैसे यह मुझे अच्छी लगनेवाली चीजे है । अिससे तुम्हें बहुत बहुत सीखनको मिलेगा ।

मेरी तन्दुरुस्तीकी बात करते हुअे बापूजीने कहा, “मैं अिस समय तुम्हारी मांके रूपमें हूं। अिसलिअे तुम्हारी जो भी शिकायत हो वह खूले दिलसे तुम्हें मुझसे कह देनी चाहिये । मैं तुम्हारे जरिये अिस बातका साक्षी बनना चाहता हूं कि अेक पुरूष भी मां बनकर बेटीकी हर तरहकी गुत्थीको सुलझा मकता है ।”

बापूजीने ठीक अेक घंटा कातते-कातते डायरी परसे मुझे बहुत कुछ समझाया । सवा तीन बजे सतीशबापू और अुनकी पत्नी हेमप्रभादेवी (मां) आअी ।

अुनके साथ जो कुछ चल रहा है अुसके सम्बन्धमें बातें की। सात बजे मौन लिया । पौने पांच बजे बापूजीने शाक, दुध और फलोंमें दो संतरे लिये । प्रार्थनाके बाद घुमे । घूमते-घूमते मि. अिंग्लांडके साथ बातें की, और अुन्हें विदा किया । साढ़े छः बजे लौटकर गरम पानी और शहद लिया । फिर अखबारोंके लिअे भेजा जानेवाला प्रार्थना-प्रवचन सुधारने बैठे । अुस बीच मैंने बापूजीका सूत दुवटा किया । दुवटा करने पर ८० तार हुअे, अर्थात् आज बापूजीने अेक घंटेमें १६० तार काते । बिस्तर किया । साढ़े आठ बजे बापूजी बिस्तरमें लेटे । बिस्तर पर पड़-पड़े

बंगलाका पाठ पढ़ा, वर्णमाला लिखी । मैंने पाव दबाये, तेल मला और अपना काम पूरा करके साढ़े दस बजे सोने गअी ।

श्रीरामपुर,

२३-१२-१९४६, सोमवार

आज बापूजीका मौनवार था, अिसलिअे जल्दी अुठना नहीं था । प्रार्थनाके समय ही बापूजीने मुझे जगाया । प्रार्थनाके बाद गरम पानी पीनेके पहले बापूजीने अपनी डायरी लिखी । अुसमें लिखा :

"आज नींद अच्छी आअी । सवा तीन बजे अुठ बैठा । दुखी हुआ । यहांका काम कैसे निबटाया जाय ? मेरी अहिंसा और कार्य-कुशलताकी कैसी कसौटी हो रही है !"

गरम पानी और शहद पीकर बापूने खुद ही पत्र लिखे । आजकी डाकमें साने गुरुजीको सहभोजनके बारेमें लिखा । ठक्करबापा तथा मणिलाल काका (दक्षिण अफ़्रीका) के नाम पत्र लिखे । और मेरे पिताजीको मेरे यहां आनेके बाद पहला ही पत्र लिखा :

चि. जयसुखलाल,

मनुडी अभी सवेरे ६ बजे याद दिला रही है और यह पत्र लिख रहा हूं । मौनवार है न ?

भाअी रतिलालकी तुनाअीसे बनी हुअी पूनीका जो नमूना तुमने दिया था वह सब कात चुका । पुनियां अच्छी थी । अैसी बारीक कताअीके लिअे पूनी बडी होती है और अुसे पत्ते या कागजमें पकडा जाता है । भाअी रतिलालका साहस पुरी तरह सफल हो ।

मनुडी सकुशल है और कामसे सन्तोष दे रही है । मैंने अिसीसे सुना कि परमानंद गांधी जिस मधुर स्वरसे रामायण गाते थे वैसे ही स्वरसे तुम भी गाते हो । यह बात सुनी तब पछताया कि जरा पहले पता लग गया होता तो तुम्हें रोककर रामायण सुनता । परमानंदभाअीका स्वर आज भी कानोंमें गूंजता है । तुमने तो अुन्हें कया देखा होगा ?

कालिदासमें वह स्वर कुछ कुछ अुतरा था। अब तो प्रभु हमें जब मिलाये तब मिलेंगे। मेरी सुचना याद रखना।

बापू के आशीर्वाद

'प्रभु हमें जब मिलाये तब मिलेंगे'—परन्तु यह मिलन हो ही न सका। बापूजीने मेरे सामने परीक्षाकी शर्त रखी थी कि, "यह तो यज्ञ है। हमारे पौराणिक यज्ञोंमें सब तरहसे पवित्रता होनी चाहिये। अुनमें काम, क्रोध, मोह, लोभ अित्यादिका त्याग करना होता है। (अिसलिअे) यदि दो महीने बाद तुम्हें अैसा मोह हुआ कि अपने पिता या बहनोंसे मिलना हो जाय तो कितना अच्छा हो, तो मैं तुम्हें नापास कर दूंगा।" यह परीक्षा मेरे लिये थी और अीश्वर-कृपासे बापूजीको अैसा लगा कि मैं परीक्षामें सफल हुअी। अिसलिअे १९४७ में हमें जब वर्धा होकर कराची जाना था अुससे पहले बापूजीने मेरे पिताजीको खुद ही बुलाया। परन्तु दुर्भाग्यसे वे तब पहुंच सके जब बापूजीकी बिड़ला-भवनसे अंतिम विदाअी हो रही थी। मेरे पिताजी मिलनेके अुल्लाससे महुवासे रवाना हुअे थे, परन्तु प्रभूने अुनको मिलाया ही नहीं। अीश्वरकी अैसी अगम्य लीला है।

---

* यह बात विनोदमें बिलकुल स्वाभाविकतासे हंसते-हंसते बापूने कहीं थी। बापूजीके चेहरेका वह दृश्य, आज जब अुनके शब्द सही सिद्ध हो रहे है, आंखोके सामने खड़ा हो जाता है।

५. तीन अमूल्य पाठ

श्रीरामपुर,

२४-१२-१९४६, मंगलवार

आज सुबह बापूजीने मुझे तीन बजे जगाया । . . . के नाम प्रत्र लिखवाये । तीनेक पत्र लिखवाये, अितनेमें प्रार्थनाका समय हो जानेसे लिखाना छोड़ दिया । दातुन-पानीके बाद प्रार्थना वगैरा नित्यक्रम चला । गरम पानी और शहद पीकर बापूजीने अपनी डायरी लिखी । साढ़े छः बजे अनन्नासका रस लिया । यहां अनन्नास होता है । अितनेमें प्यारेलालजी अपने गांवसे आये । सुचेताबहन कृपालानी भी आअी थी । घूमनेका सारा समय अुनके साथ बातोंमें चला गया और मालिशके रामय दोनों अपने-अपने गांव चले गये ।

आज स्नान करके आने पर साढ़े बारह बज गये थे। अेक बजे भोजन कर सके । खाना आज रोजकी अपेक्षा देरसे हुआ, क्योंकि कुछ डाक आदमीके हाथोंहाथ कलकत्ता भेजनी थी । अुसमें बहुत वक्त लगाना पड़ा । भोजनमें प्यारेलालजी अपने हाथसे निकाले हुअे नारियलके तेलका जो मसका रख गये थे वह और अेक खाखरा लिया । यह मसका साधारण घी या मक्खनका काम देता है । अिसलिअे दूध छे. औंस लिया और मक्खन खाना छोड़ दिया । अुबला हुआ साग भी थोड़ा ही लिया ।

खाते खाते कर्नल जीवनसिंहजीके साथ बातें की । मैं घी मलनेके लिअे लगभग दो बजे अपने कामसे निबटनेके बाद जा सकी । अभी तक मैंने भोजन नहीं किया था, अिसलिअे बापूजी नाराज हुअे और कलसे अपने पास थाली लाकर खानेको कहा । यहां दोपहरको बहुत देरसे खानेका रिवाज है । सुबह लोग अच्छी तरह नाश्ता करते हैं, दोपहरको तीन साढ़े तीन बजे खाना खाते हैं, शामको चाय या नाश्ता लेते हैं और रातको भी देरसे भोजन करते हैं ।

परन्तु बापूजीने कहा, “यह ढंग हमारे अनुकूल न हो तो अिसे छोड़ा जा सकता है । जल्दी अुठना और रातको दस साढ़े दस बजे भोजन करना शरीरमें जहर अुंडेलनेके बराबर है ।"

पांच ही मिनट घी मलवाया और कहा कि अभी खा लो, फिर शामको भोजन न करके फलाहार कर लेना । दोपहरको अढाअीसे तीन बजे तक बापूजी सोये । तीन बजे नारियलका पानी पीकर कुछ पत्र लिखवाये । साढ़े तीन बजे काता । साढ़े चार बजे पेट और माथे पर मिट्टीकी पट्टी ली । बापूजीको कुछ थकावट-सी मालूम होती है । मिट्टी रखनेके समयमें मेरी डायरी सुनते हुअे दो बार झपकी ले ली । डायरी और भी संक्षेपमें लिखनेकी भूचना की ।

पौने पांच बजे सुचेताबहन वगैरा आये और अुन्होंने बापूजीके साथ अेकान्तमें बातें की ।

शामके भोजनमें आठ औंस दूध, अेक केला और अेक ग्रेपफ्रूट लिया । रातको दस बजे बापूजी बिस्तर पर लेटे ।

मैं बापूजीकी कलकी डायरीकी नकल करने ठहर गअी, अिसलिअे ग्यारह बजे सोअी । ठंड और बरसात खूब थी ।

(बापू, श्रीरामपुर, २५-१२-१९४६)

श्रीरामपुर,

२५-१२-१९४६, बुधवार

आज भी बापूजी अच्छी तरह सोये । प्रार्थनासे आध घंटे पहले अर्थात् साढ़े तीन बजे अुठे थे । दातुन-पानी किया । प्रार्थनामें पाचेक मिनटकी देर थी, अिसलिअे अुतने समयमें मेरी कलकी डायरीमें हस्ताक्षर किये और बंगला वर्णमाला लिखी ।

प्रार्थनाके बाद दसेक मिनटके लिअे बापूजी सो गये । रस पीकर कलके कुछ पत्रों पर दस्तखत किये और मुझे भी बंगला जल्दी सीख लेनेको कहा ।

सात बजे घूमने निकले तब लावण्यप्रभाबहन और मि. अिंग्लांड आये । अुनके साथ मि. ग्लैन और अेन्यनी ढाकासे बडे दिनकी भेंट लाये । अिस भेंटमें साबुन, रूमाल, रेजर (अुस्तरा), कैची, थैली वगैरा चीजें थी । बापूजीने सन्तोष देनेके लिअे अुन्हें वचन दिया कि आज रेजर स्वयं काममें लेंगे ।*

आजकल घूमते समय बापूजी अेक पुल लाधनेकी तालीम लेते हैं । पुल बहुत छोटा है, परन्तु यात्रामें अिससे बहुत बड़े पुल आनेवाले है । अुन्हें पार करना आ जाय अिसीलिअे बापूजी यह तालीम ले रहे हैं । मुझे भी यह तालीम अच्छे तरह ले लेनेको कहा ।

दोपहरको मैं घी मल रही थी, अुस समय बापूजी कुछ पेचीदा अंग्रेजी पत्र व्यवहांर सुन रहे थे । वह पूरा हो जानेके बाद मैंने बापूजीसे कहा, आपने मुझे कॉलेजमें जाकर अेम. अे. या बी. अे. तक पढ़ने दिया होता, तो आपका अंग्रेजीमें होनेवाला काम मैं भी आसानीसे कर सकती । परन्तु आपने मुझे पढ़ने ही नहीं दिया ।

बापूने कहा: "मुझे तो तुम्हें पढ़ना और गुनना दोनों सिखलाना है । अुसका क्या होगा ?"

मैंने कहा, देखिये, महादेवकाका अितना पढे तभी तो आपके निजी मंत्री बन सके । और दूसरे भी जितने बडे लोग है वे सब डिग्री प्राप्त किये हुअ है । अिसीलिअे तो वे अितने अूचे चढे न ?

बापू हंस पडे । बोले, "मोटे सो खोटे । डिग्रीकी जगह तुम अुपाधि शब्द काममें लो । और अुपाधि सचमूच अुपाधि ही है । मैं बैरिस्टर बना, अिसका मुझे आज पश्चात्ताप होता है । और अिसीलिअे तो मुझे अिस बातका आनंद है कि मैंने . . . को अिस अुपाधिमें नहीं डाला, यद्यपि मैं जानता हूं कि अुन लोगोंको सन्तोष नहीं है । और सच कहूं तो मैं बैरिस्टर हूं, अिसका मुझे अब खयाल ही नहीं आता । अिसलिअे अपने अनुभवके आधार पर दूसरोंको तो अैसी अुपाधिसे बचाना ही चाहिये । हां, भाषाके रूपमें सब कुछ अवश्य जानना चाहिये। परन्तु आजकलकी युनिवर्सिटीकी पढाअीमें जो रटाअी हो रही है वहे मुझे खटकती है । देहातमें अपार काम पडा है । विद्यार्थी पढ़ने और रटनेमें जितना समय गवाते हैं अुतना यदि कोअी रचनात्मक काम करनेमें लगावे तो देशकी शकल बदल जाय । हां, अिस पढ़ाअीके पीछे ज्ञान प्राप्त करनेका ध्येय हो तो अलग बात है । तब तो ज्ञानके पीछे पढ़ाअी और पढ़ाअीके पीछे ज्ञान, यह मंत्र होना चाहिये । परन्तु आजकल विद्यार्थियोंमें परीक्षाके पीछे पढ़ाअी और पढ़ाअीके पीछे परीक्षा, यह दृष्टि होती है । और फिर ? फिर अिस ज्ञानका अुपयोग रुपया कमानेमें होता है । कोअी डॉक्टर बनता है,

कोअी वकील या बैरिस्टर बनता है, और कोअी अिंजीनियर बनता है । और पास होनेके बाद नौकरीकी खोज होती है । अिस प्रकार सारी मेहनतका परिणाम देखो तो शून्य । अन्तमें हमारी सारी पढाअीके पीछे यही ध्येय होता है कि हमें बडीसे बडी नौकरी कैसे मिले । अिसमें अपवाद जरूर होंगे । चालीस करोड़ लोगोंमें सभी अैसा करते हैं, यह कहनेका मेरा हेतु नहीं । परन्तु पढ़ाअीकी तहमें यह आजकलका शाश्वत नियम बन गया है । अमुक प्रकारकी पढ़ाअी करे तो ही सेवा की जा सकती है, यह निरा भ्रम है । कैसी भी स्थितिमें रहकर मनुष्य सेवा कर सकता है । अीश्वरने मनुष्यको अैसी शक्तियां दी हैं कि वह कोअी बहाना बना हो नहीं सकता । वरना मनुष्य-जाति अैसी भयंकर है कि काम न करना हो तो बहाने ही बनाया करेगी । तुम देखोगी कि किसीके पास स्पया है तो किसीका शरीर काम देता है, किसीकी बुद्धि काम दे सकती है, तो किसीकी जबान, हाथ-पैर, आंख, कान वगैरा । सभी सेवार्थ काम दे सकते हैं । ये तो मैंने तुम्हारे सामने अुदाहरण रखे । अिमलिअे जो भी शक्ति हममें हो असे कृष्णार्पण कर दे तो हमें पुरे-पुरे नम्बर मिलेंगे । जिसकी शक्ति करोड़ देनेकी हो वह आधा करोड़ ही दे तो अुसे पचास नम्बर मिलेंगे। परन्तु जिसकी शक्ति पाअी ही देनेकी हो वह अगर पूरी पाअी दे दे तो अुसे सौमें से सौ नम्बर मिलेंगे ।

“व्यवहार साफ होना चाहिये । स्वार्थबुद्धिसे या ड़रके मारे मनुष्य यदि कुछ करेगा तो वह सेवा नहीं मानी जायगी । जहां अीश्वरार्पणकी भावना है, वहां स्वार्थके लिअे स्थान ही नहीं है । अिस प्रकार सेवा करनेवाला रोज अपनी शक्तिमें वृद्धि करता है । अुद्यम करे तो वह भी सेवाभावसे ही करता है । जो मनुष्य अिस तरह सेवा-परायण रहता है अुसके हंसनेमें, खाने-पीनेमें, बोलनेमें, हर क्रियामें सेवाभाव भरा होता है । अिसलिअे अुसके सभी कार्योंमें निर्दोषता होगी । अैसे भक्तिको अीश्वर सभी आवश्यक शक्तियां दे देता है । अिसीलिअे गीता कहती है :

अनन्याश्चिन्तयन्तो मा ये जना पर्युपासते ।
तेषा नित्याभियुक्ताना योगक्षंम वहांम्यहम् ।।
मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्त परस्परम् ।

कथयन्तश्च मा नित्य तुष्यन्ति च रमन्ति च ।।
तेषां मततयुक्ताना भजता प्रीतिपूर्वकम् ।
ददामि बुद्धियोगं त येन मामुपयान्ति ते ॥

(जो लोग अनन्य भावसे मेरा चिन्तन करते हुअे मुझे भजते है, नित्य मुझमें ही रहनेवाले अुन लोगोंके योगक्षेमका भार मैं अुठाता हूं । अर्थात् फलकी आशा मुझ पर छोड़ कर मेरा काम करो । मुझमें चित्त पिरोनेवाले, मुझे प्राणार्पण करनेवाले लोग अेक-दूसरेको बोध देते हुअे, मेरा ही नित्य कीर्तन करते हुअे, संतोष और आनंदमें रहते हैं । अिस प्रकार मुझमें तन्मय रहनेवाले, मुझे प्रेमपूर्वक भजनेवाले भवतोंको मैं ज्ञान देता हूं और अुस ज्ञानसे वे मुझे प्राप्त करते हैं ।)

"अिन श्लोकोंका तुम विचार करो । अिनमें अंतिम श्लोक बड़ा महत्त्वपुर्ण है । अिसमें महाश्रद्धाकी जरुरत है । अीश्वरका काम करनेमें तुम अपनी प्राप्त की हुअी डिग्रीका कहां अुपयोय करोगी ? मैं तुम्हारे मनमें यही बात बिठाना चाहता हूं । और कदाचित् तुम पढ़ती होती, कॉलेजमें जाती होती, तो आज कहां होती ? मेरी चले तो मैं सभी कॉलेजकी लड़कियों और लड़कोंको दंगोकी अिस आगमें झोक दूं । सचमुच यदि हमारे विद्यार्थियोंके मनसे डिग्रीका मोह निकल जाय, तो तुम देखोगी कि सारी दुनियाके नक्शेमें हिन्दुस्तान जो बिन्दुमात्र है वह समुद्र जैसा हो जाय । 'तेते पाव पसारिये जेती लांबी सौर'—यह सुन्दर कहावत छोटेसे कुटुम्ब पर ही लागू नहीं होती; बड़े-बड़े देशो पर भी लागू होती है । जैसा देश वसी ही असकी रहत-सहन और वैसा ही अुसका कामकाज होना चाहिये । परन्तु अंग्रेजोंका न करने लायक अनुकरण करनेसे हमारा पतन ही होगा । 'हंस कौअेकी चाल चलने लगता तो मर ही जाता । परन्तु वह अपनी चाल चला, अिसीलिअे जीत गया ।' यह कहानी तुम जानती हो न ? कहानिया भी केवल कहानीके लिअे नहीं होती । अुनकी तहमें बहुत बड़ा अुपदेग भरा होता है । हिन्दुस्तानमें अलबत्ता बहुतसी कुरीतिया है । फिर भी हिन्दुस्तान अपनी ही चालसे आगे बढे तो वह अैसा स्थान प्राप्त कर सकता है, जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती ।

"कारण, भारतकी संस्कृति अनोखी है । मैं जैसे-जैसे तुम्हें गीता समझाता जाअुंगा, वैसे-वैसे नये अर्थ निकलते ही जायेंगे । परन्तु आज अितना पचा लोगी तो भी काफी है । अिसे लिख डालना । परन्तु लिखना केवल लिखनेके लिअे ही नहीं, गीताका अर्थ अमलमें लानेके लिअे है । आजका यह सारा पाठ गीताके आधार पर है ।

मेरे अेक छोटेसे विनोदमें से पच्चीस मिनट तक बापूजीकी अैसी अमृतवाणी जीवनके पाठके रूपमें सुननेको मिली । फिर समय हो गया, अिसलिअे अुठ गये।

आज बापूजी सो न सके अिसका मुझे दुःख हुआ । यह बात में कहूं, अिससे पहले ही बापूजी बोले, "मैं सो नहीं सका जिसका दुःख तुम्हें नहीं करना चाहिये । अीश्वर मुझे कैसे निभा रहा है, यही आश्चर्य है । सुबहसे अुठा हूं । मालिशके समय सतीशबाबू पैदल यात्राके ब्यौरेके बारेमें बातें करने आ गये, अिसलिअे न सो सका; और अिस समय तुम्हारे सहज विनोद करनेसे मेरे हृदयमें देनेके लिअे जो कुछ भरा था वह तुम्हें दे दिया । अब ताजगी अनुभव करता हूं । अब तुम नारियलका पानी ले आओ । भगवानकी अिच्छा होगी तो मिट्टी लेते लेते सो जाअूंगा ।"

लगभग चार बजे अेक सार्वजनिक कार्यकर्ता, जो यहां अच्छा काम कर रहे हैं और जिन्हें बापूजीने मेरे लिअे पंजाबी पोशाक दरजीसे बनवानेकी जिम्मेदारी सौंपी थी, कपड़े लेकर आये । अुन्होंने पैसा लेनेसे अिनकार किया । अिसके पीछे केवल बापूजीके प्रति अुनकी भकित ही थी । मैं बापूजीके परिवारकी लड़की हूं और बापूजीने मेरा परिचय अपनी पोत्री के रूपमें दिया, अिसलिअे वे दाम नहीं लेना चाहते थे ।

परन्तु यहां तो दुसरा ही हिसाब था । बापूजीने पूछा, "तुम कहांसे लाओगे ? तुम्हारे पास जो पैसा है, वह सार्वजनिक है । भले मैं ही क्यों न होअूं, मेरी जरूरतोंके लिअे भी तुम अेक पाअी भी अिस तरह खर्च नहीं कर सकते । और फिर अिस लड़कीके पिता अितना खर्च दे मक्ते है । . . . जनसेवकको सार्वजनिक धनका कैसे अुपयोग किया जाय और कहां अुपयोग किया जाय, अिसका पुरा खयाल रखना चाहिये । आज तो तुमने मनुके लिअे यह बात की । कल तुम अपने संबंधियोंके लिअे अिस तरह नहीं करोगे, अिसका क्या भरोसा ? देखो, तुम पर मुझे बिलकुल

शंका नहीं है । क्योंकि मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूं । तुमने प्रेमपूर्वक ही यह कहा है । परन्तु अितनेसे आगेके लिअे चेत जाना ।"

यह आजका दूसरा पाठ हुआ, और अिसी तरह तीसरा अेक सुन्दर पाठ रातको मिला ।

मेरे पास अेक गरम पश्मीनेका टुकडा था, जिसे बापूजी रातको ठंडके कारण सिर पर बांधते थे । प्रार्थनासे आकर आज मैंने अेक नया गरम टुकड़ा बांधनेको दिया, क्योंकि पुराना जर्जर हो गया था । परन्तु बापूजीने नया कपड़ा नहीं लिया । बोले, "न तो तूने अेक कौड़ी कमाअी है, न मैं कमाता हूं । और न तुम्हारी तरह मेरे बाप बैठे हैं, जो कमाकर मेरा खर्च भेजें । मैं तो गरीब आदमी ठहरा । अिस तरह शाल फेक देनेसे कैसे काम चलेगा ? लाओ, जिस शालको मैं ही पैबन्द लगा दूंगा ।" यों कहकर बापूजीने शालमें पैबन्द लगा दिया । अिसमें रातके साढ़े ग्यारह बज गये ।

पैबन्द अितना सुन्दर लगाया गया है कि कोअी दरजी या कुशल स्त्री ही वैसा लगा सकती है । अुसका टाका भी अुतना ही सीधा लगा है ।

बापू जैसे महापुरुष चाहे तो अैसे सैकड़ों पश्मीनेके टुकडे जुटा सकते हैं, परन्तु अुन्होंने अुस पैबन्द लगी हुअी शालका ही हमारी अिस यात्रामें अुपयोग किया ।

भारतको पैबन्द लगाकर जोड़नेवाले, अनेक क्लेशमय परिस्थितियोंको दूर कर प्रजाके दिलोंको जोड़नेवाले बापूने कपड़ोंको भी जोड़कर विनोदमें कहा, "बोलो, मैं कुशल दरजी हूं न ?" मैंने पैबन्द लगा देनेको कहा, परन्तु कहने लगे, "तुम देखो तो सही, मेरी परीक्षा तो करो कि मुझे यह काम आता है या नहीं ।" **

अिस प्रकार दिनभरमें अेकसे अेक बढ़कर तीन सबक मुझे मिले ।

---

* अिसी अुस्तरेको बापूजीने सारी यात्रामें अिस्तेमाल किया था। यह बात जब भेंट देनेवाले भाअियोको मालूम हुअी तब वे अत्यंत प्रसन्न हुअे थे ।

** सौभाग्यसे वह सुअी-डोरा और पैबन्द लगी हुअी वह शाल मेरे अनेक पाठोमें प्रत्यक्ष पाठ और प्रसादीके रूपमें मरे पास सुरक्षित है ।

६. पंडितजी मिलने आये-

श्रीरामपुर,

२६-१२-१९४६

आज तीन बजे अुठे । . . . के नाम बापूजीने पत्र लिखवाये । ठंड बहुत थी । बापूजी लेटे-लेटे लिखवा रहे थे । दो-अेक बार झपकी ले ली । बापूजी झपकी लेते अुतने समयमें मैं अुनकी डायरीकी नकल अपने लिअे कर लेती । दो दिनकी नकल करनी बाकी थी । बापूजीने मुझे यह गलत परिश्रम न करनेको कहा । परन्तु मैंने कहा, "आप अपनी डायरीमें मेरे बारेमें अुल्लेख करते हैं, अिसलिअे में नकल कर लेती हूं, ताकि जीवन भर वह मेरे पास रहे ।"

प्रार्थनामें आज . . . नहीं थे । कल रातको . . . काजीरखिलसे वापस नहीं आये । बापूजी बहुत दुखी हुअे । प्रार्थनाके बाद . . . के बारेमें . . . के साथ बातें की और कलका प्रार्थना-प्रवचन सुधारा । मैंने बापूजीको गरम पानी देकर अपनी कलकी डायरी लिखी । आध घंटे काता । साढ़े सात बजे घूमने निकले । घूमते समय बापूजी कुछ विचारोमें लीन थे । . . . के साथ ही बातें की । रोजकी तरह पुल पार करनेकी तालीम जारी है । पर धोते समय . . . को प्रार्थनामें अुपस्थित न होनेके बारेमें पूछा, अुनके साथ बातें की । अिसमें बहुत वकत लग गया । . . . पूछकर नहीं गये थे, अिसके लिअे बापूने . . . से कहा, "अुन पर मेरा कोअी हक नहीं है । अेक पुत्रकी तरह वे रहते हैं, अिसलिअे अितना कहना मुझे अपना धर्म प्रतीत हुआ । वे मुझे छोड़ दे तो मैं बड़ा खुश होअूगा । यह लड़की भी मुझे छोड़ सकती है। परन्तु मैंने अिसे वचन दिया है कि जब तक मैं जिन्दा हूं तब तक अिसे नहीं छोड़ूगा । यह चाहे तो मुझे छोड़ सकती है । तुम भी मुझे छोड़ सकते हो । तो ही मेरी परीक्षा होगी । शायद अीश्वरको मेरी परीक्षा करनी होगी; अिसीलिअे तो कहीं वह अकल्पित प्रसंग अुपस्थित नहीं करता हो ? वह मानते हैं कि मैंने. . . में रहकर भूल की है । परन्तु मैं कहा मानता हूं ? परन्तु मेरी परीक्षा अिसीमें होगी ।" बापूजीने बड़ी गंभीरतापूर्वक . . . के सामने अपना हृदय अुड़ेला ।

मैं ये बातें सुननेके लिअे खडी रही, अिसलिअे नहानेमें देर हो गअी । अिससे सभी कामोमें विलम्ब हुआ । खानेसे पहले बापूजीके पैरोमें घी मलने बैठी । बापूजीने अुलाहना दिया, "तुम्हारी बातें सुननेके लिअे खड़ी रहना मुझे अच्छा नहीं लगा । कितनी ही दिलचस्प बातें हो, तो भी हमें अपने नियमका भंग नहीं होने देना चाहिये । परन्तु . . . के साथ हुअी बातें तुम्हारे समझने लायक तो जरूर थी, अिसलिअे तुम्हें मेरे पैरोमें घी मलनेसे मुक्त रखनेकी अिच्छा होती है । परन्तु तुम नहीं चाहोगी, अिसलिअे अिस सारे समयका बदला चुकानेके लिये तुम्हें अपनी कुशलता दिखानी होगी । अिसका अर्थ यह नहीं कि खानेमें जल्दी मचाकर चली आओ ।"

तारसे समाचार आये कि पं. जवाहरलालजी २७ तारीखको आनेवाले हैं । अुनके लिअे क्या बन्दोबस्त करना होगा, अिसके सम्बन्धमें निर्मलदाके साथ बापूजीने बातें की । मुझसे बापूजीका कमोड़ ले जानेकी कहा गया । खानेका अिन्तजाम आअी. अेन. अे. वाले कर्नल जीवनसिंहजीके आदमी करनेवाले हैं ।

दोपहरको बापूजीने मेरी कलकी और आजकी अधूरी डायरी सुनी । अूपर- अूपरसे खुद देख गये । अभी हस्ताक्षर नहीं किये ।

शामको बापूने कुछ नहीं खाया । प्रार्थनाके बाद गरम पानी और शहद ही लिया है । पानी पीकर बापूजीने आध घंटे काता ।

बापूजी जिस अंगोछेको काममें लेते थे वह बीचमें से बिलकुल जर्जरित हो गया था । मैंने नया देनेसे पहले विचार तो बहुत किया कि अिसमें कुछ अक्ल लगाअूं और यदि जोड़ लग सके तो जोड़ लगाकर ही बापूजीको दूं, ताकि शालके जैसा किस्सा न हो । बहुत विचार किया, परन्तु कुछ बुद्धि चली नहीं । अन्तमें नया अंगोछा बापूजीके हाथमें रखा । बापूजीने कहा, "अभी पुराना काम देगा ।" (मैं तो मानती थी कि बापू कुछ भी करें तो भी अब अिसमें पैबन्द काम नहीं देगा और जोड़ लग ही नहीं सकेगा । साथ ही अैसे टुकड़ेमें रफू भी नहीं होगी । और अिससे ज्यादा बापूजी क्या करेंगे ?) अिसलिअे मैंने झट अुत्तर दिया कि अिसमें मैंने बहुत अक्ल लगाअी है । अिसे छुट्टी दिये बिना चारा नहीं है । देखिये, अब अिसमें आप क्या कर सकेंगे?

बापू हंस पड़े । मेरा कान खींचकर बोले, “परन्तु अिस रुमालको अभी नया करके दो महीने चलाअुं तो ?”

मैंने कहा, “आप चला ही नहीं सकते ।”

अन्तमें अुन्होंने अुस रमालको अुसी हालतमें ड़बल कर दिया, ठीक चौकर बनाकर अच्छी तरह जोडा और रफू कर दिया । (सचमुच अुस रुमालकी अुम्र दो महीने तो बढ़ ही गअी । परन्तु बादमें मैंने जिद की और यह कहकर कि अिसे मुझे नमूनेके तौर पर अपने पास रखना है, मैंने रुमाल ले लिया । यह अंगोछा बहुत सुन्दर बन गया है । हमारे यहां रजाअीमें जैसे ‘पंखे दालनेका रिवाज होता है वैसी चौरस आकारवाली सुन्दर सिलाअी की गअी है । अिससे अंगोछा ज्यादा मजबूत हो गया है ।)

बापूजीकी अैसी बारीकी और कलात्मक किफायतशारीका कलवाले शालके पाठसे आज भिन्न ही प्रकारका पाठ मिला ।

अेक बहन बम्बअीकी डॉक्टर है । वे नोआखालीमें सेवा करने आनेको कहती थी । परन्तु बापूजीने अुनसे कहा, “सुहरावर्दी साहबसे अिजाजत लेकर शौकसे आ सकती हो ।"

रातको बापूजीने साढ़े नौ बजे सोनेसे पहले मेरी पूरी डायरी सुनी, हस्ताक्षर किये और बिस्तरमें लेटे ।

(बापू)

श्रीरामपुर,

२७-१२-१९४६

आज रातको बापूजी दो बजे अुठे । मुझे जगाया । मेरे लिअे छीटके पंजाबी सलवार और कुरते बने थे । बापूजीने पूछा: “तुमने छीट या किस प्रकारकी खादी ली जाय, अिस बारेमें . . . से कुछ कहा था ?”

मैंने कहा, "यह कपड़ा . . . नहीं लाये है । आपने बिड़लाजीके आदमियोंसे कहा था । वे लाये है ।"

बापूजी बोले, "तब तो क्या कमी हो सकती है ? छीट भले ही आअी, और सलवार-कुरते भी पहन फाड़ना । परन्तु मनमें यदि यह भाव हो कि अैसे कपड़े पहननेसे और अच्छी लगूंगी, तो अुसे निकाल देना । मनुष्य स्वादके लिअे खुराकको खट्टी, मीठी और तीखी बनाता है । परन्तु यदि वह यह वृत्ति पैदा करे कि हमारा शरीर अेक देवस्थान है, अिसका अुपयोग सेवार्थ होना चाहिये, और वह सेवा करनेके लिअे पौष्टिक भोजन करनेसे शरीर कायम रह सकता है, तो अुस मनुष्यका जीवन भव्य बनता है । यही बात कपड़ेको भी लागू होती है । कपड़े शरीर ढकनेके लिअे, सरदी-गरमीसे शरीरकी रक्षा करनेके लिअे है, न कि फैशन दिखानेके लिअे । आज तो हर बातमें फैशन ही फैशन है। लड़कियां बिना बांहोके पोलके पहनती हैं, बारीक साड़ियां पहनती हैं, और पोलके भी अुतने ही बारीक और चुस्त होते हैं । मैंने अैसी बहुतसी निकम्मी बातें देखी हैं । और यह सोचकर मनमें दुःख होता है कि कया हमारी संस्कृतिका नाश बहनें ही करेगी ?

"चुस्त कपड़े पहननेसे श्वासोच्छ्वास अच्छी तरह नहीं लिया जा सकता, फेफडे कमजोर पड़ जाते हैं, और अिसके परिणामस्वरूप स्त्रियां क्षय जैसे रोगोंकी शिकार बनती है । हिन्दुस्तातमें पुरुषोंसे स्त्रियां और अुनमें भी युवतियां अिस रोगकी अधिक शिकार बनती है । अिसके अनेक कारणोमें से यह भी अेक कारण है ।

"बालोंकी भी यही बात है । मैंने तुम्हें बालोंकी सादगीके बारेमें भी कहा तो है ही । अेक बार और कहता हूं कि बालोंमें जितनी सादगी रहेगी अुतने ही बाल सुन्दर लगेंगे । बाल सिरकी रक्षाके लिअे है । अीश्वरने जो कुछ दिया है, वह सब सदुपयोगके लिअे ही दिया है । अुनकी दी हुअी अेक भी चीज व्यर्थ नहीं है ।

"दुसरी बात यह कहनी है कि तुम्हें . . . के या और किसीके साथ बातोंमें समय बेकार नहीं खोना चाहिये । तुम . . . अुम्रकी हो । और मैं तो अपना ही अुदाहरण तुम्हें देता हूं । बचपनमें समवयस्क लोगोंकी कुसंगतिमें पड़ जानेके कारण मैंने मास खाया और कडेकी चोरी की । हमेशा

बराबरकी अुम्रवालोमें यदि समझनेकी शक्ति हो और साथ ही निश्चय हो कि हम अेक-दुसरेके गुणोंका ही अनुकरण करेंगे, अवगुणोंका नहीं, तो ही दोनों व्यक्ति अूपर अुठते हैं; नहीं तो आम तौर पर बुरी बातें ही सीखते हैं और दोनोंका पतन होता है। सबके साथ आवश्यक बातें ही करनी चाहिये। गुण अवगुणको दुर कर सकता है; पर अवगुण अवगुणको क्या दूर कर सकता है ? . . . बहुत कुशल है । फिर भी मनुष्यमें कभी कभी कोअी अैसा दोष आ जाता है जो सारी अच्छाअियोंको ढंक देता है। परन्तु मेरे खयालसे शायद मनुष्यकी परीक्षा करनेके लिअे ही अीश्वर सौ गुणोंके साथ अुसमें अेक अैसा अवगुण रख देता है और फिर अुसकी परीक्षा करता है। अिस अवगुणको मनुष्य समझ ले तब तो फिर कहना ही क्या ? तब मनुष्य मनुष्य नहीं रह जाता, वह अनत शक्तिमें लीन हो जाता है। अैसे मनुष्यत्वमें भव्यता है।"

मनुष्य-जीवनका यह तत्त्वज्ञान बापूने रातको अढाअीसे साढ़े तीनके बीचमें समझाया। प्रार्थनामें थोड़ी देर थी, अिसलिअे मेरी दो दिनकी डागरीमें हस्ताक्षर किये। मुझसे कहा, "मुझे पता नहीं था कि तुम अितनी लम्बी डायरी लिख सकती हो। मुझे अच्छी लगती है। तुम्हें रोज मुझसे पढ़वा ही लेना चाहिये और याद रखकर हस्ताक्षर करा लेने चाहिये। हस्ताक्षर करानेका मूल्य आज तुम्हारी समझमें नहीं आयेगा। परन्तु आजकल मैं तुम्हें जो कुछ दे रहा हूं, असमें अपना हृदय अुंडेल रहा हूं। भविष्यमें यह डायरी अुसका प्रमाण होगी। साथ ही तुम्हारी कच्ची अुम्र होनेके कारण अिस सारी नोंध पर मेरे हस्ताक्षर होना जरूरी है। अिसलिअे डायरीमें हस्ताक्षर करानेका काम रोजका रोज हो जाना चाहिये। अिसमें कितनी देर लगती है ? मैं तो तुम्हें वैसे ही तालीम दे रहा हूं, जैसे मां बेटीको देती है।"

जवाहरलालजी आनेवाले हैं, अिस कारण अुनके लिअे खड्डेवाला पाखाना तैयार कराया। अुसमें बापूजीने जो सुधार सुजाये, अुन्हें करनेमें सुबहका सारा समय चला गया।

बाकीका क्रम तो लगभग नित्यके अनुसार ही चला। भोजनमें सवेरे बापूजीने रोजकी तरह ही सब चीजें लीं। शामको दुधके साथ अेक खाखरा (पापड़ जैसी खस्ता रोटी) लिया था। बापूजी कहते थे, "आज कुछ भूक-सी मालूम होती है।" बापूजी आज दिनभर . . . की बातें करते रहे।

सारी बातचीत लगभग खानगी ही थी । अतः मेरे लिअे छुट्टी जैसी थी । मैंने अपना लिखनेका सारा काम पूरा कर डाला ।

. . . ने अेण्टीफ्लॉजिस्टीन मंगाया था । परन्तु बापूजीने काली मिट्टीको बारीक कपड़ेसे छनवा डाला और वह मिट्टी . . . को भेजी । अुस मिट्टीमें भीगने लायक पानी डालकर और गरम करके लेपकी तरह लगानेको कहा । बापूजी मानते हैं कि अिस मिट्टीमें अेण्टीफ्लॉजिस्टीनके लेपसे भी अधिक गुण हैं ।

(बापू)

बापूजीने अपनी डायरीमें लिखा : -

आज सवेरे दो बजे अुठा । २-१५को मनुडीको जगाया, अुसे . . . के बारेमें समझाया । कपड़ों और बालोंकी सादगीके बारेमें तथा . . . या और किसीके साथ बातोंमें समय न बितानेके सम्बन्धमें भी समझाया । . . . और अिस बारेमें बातें की कि अक्सर जैसी सोहबत होती है वैसा असर पड़ता ही है । (डायरीमें) हस्ताक्षर करानेके बारेमें समझाया । वह अच्छी तरह समझ गअी । प्रार्थनाके बाद . . . के साथ बातेंकी । अिसमें काफी समय दिया । बंगलाका पाठ किया, अितनेमें ५-१५ बज गये। . . . बीमार पडी है। अुसे पत्र लिखा कि वैद्य-डॉक्टर बाहरसे न बुलाया जाय । पंचतत्त्व परमेश्वरका आधार रखकर जैसी अिच्छा हो वैसा करे ।

ठक्करबापा आये । जवाहरलालजी वगैरा आनेवाले थे । परन्तु (रातको) साढ़े नौ बजे तक नहीं आये । बापाके साथ थोड़ी बात हुअी । ७० तार काते । साढ़े नौ बजे सोनेकी तैयारी की ।

श्रीरामपुर,

२८-१२-१९४६

आज रातको बापूजी अढाअी बजे अुठ गये थे। परन्तु लालटेन देनेके बाद मुझे सुला दिया। और लिखनेका काम आज सारा बापूने खुद ही किया । प्रार्थनाके समय मुझे अुठाया । प्रार्थना वगैरा नित्यक्रम सदाके अनुसार ।

साढ़े सात बजे घूमते वक्त जवाहरलालजी तथा मृदुलाबहन आये । वे लोग भी बापूजीके साथ घूमने आये । पुल लाधनेकी जो तालीम बापूजी ले रहे थे अुसे देखनेमें पंडितजीको बड़ा मजा आ रहा था। पंडितजी तो दो डगमें पुल पार कर गये । लौटते समय बापूजीने मुझे यह ध्यान रखनेको कहा था कि जवाहरलालजीकी सारी व्यवस्था ठीक है या नहीं । बापूजीके कहनेसे अुनका कमोड़ मैं पंडितजीके निवास-स्थान पर ले गअी । यह देखकर पंडितजी मुझ पर नाराज हुअे और बोले, “तुमको अितनी अकल नहीं है कि बापूको कितनी तकलीफ होगी ? बापूका कमोड़ हम कैसे अिस्तेमाल कर सकते हैं ? मैं अितना नाजुक आदमी तो नहीं हूं !”

मैंने कहा, “लेकिन बापूने कहा अिसीलिअे मैं लायी हूं ।”

वे ज्यादा नाराज होकर कहने लगे, “बापूकी नाराजगी तुम्हें सहन करनी चाहिये । बापूको सभालनेकी जिम्मेदारी तुम्हारी है । फिर अुनको कितनी कया जरूरत है यह देखनेका काम तुम्हारा है न ? बापू तो अैसे हैं कि खुद तकलीफ भुगत लेंगे लेकिन दुसरेकी सब जरुरीयात देख लेंगे ! अैसे बापू हैं । लेकिन फिर भी कहता हूं कि मैं तो जवान आदमी हूं, कहीं भी चला जाअुंगा । लेकिन किसीको अिस तरह बापूकी जो जरूरियातकी चीज है वह तुम्हें न देनी चाहिये । चाहे बापू मार भी डालें । तुम ड़रना नहीं, बापू मारेगे नहीं ।”

यह अंतिम वाक्य बोलते बोलते तो अेक क्षणमें पंडितजीके चेहरे परसे नाराजी जाती रही और विनोदका भाव आ गया । बालकोंको डाटकर बादमें बुजुर्ग लोग अक्सर प्यार करके अुन्हें

मना लेते हैं, वैसे ही मुझे प्रेमसे आलिंगन करके कहने लगे, “जाओ, बापूसे कहना, जवाहरलाल मना करते हैं।” फिर पूछताछ की कि बापूकी तबीयत कैसी रहती है, क्या लेते हैं, वगैरा वगैरा।

बापूजीके प्रति पंडितजीकी भक्तिको कौन नहीं जानता ? परन्तु साक्षात् दर्शन होनेसे पावनताका अनुभव हुआ। अिस बोधवाणीके समय अुनके भावनापूर्ण हृदयसे कभी जोशीले शब्द निकलते थे, तो कोअी वाकय अत्यंत धीमा और भावपूर्ण निकलता था और कभी विनीदी शब्दोंका स्वर कानमें गूंजता था।

बापू कुछ लिखनेमें बहुत मशगूल थे। अिस समयका अुपयोग करके पंडितजीकी बात लिख लेनेका मुझे मौका मिल गया। अभी मालिश, स्नान वगैरा बापूजीका सब काम बाकी है। आज बहुत देर होनेकी संभावना है। मालिश करते समय मैंने बापूजीसे अुपरोक्त बात की। बापूजी अितना ही बोले, “यह आदमी अैसा ही है। अब वह कमोड़ काममें नहीं लेगा] रख दो।“

ठक्करबापा भी तबीयत खराब होनेके बावजूद यहां तक आ पहुंचे हैं। बापू कहने लगे, “अिनके सामने अच्छे अच्छे जवानों को भी शरमाना पडे, अितना काम ये अिस समय कर रहे हैं।”

खाते वक्त बापूजीने पंडितजीके साथ बातें की। अुन्हें अेक खाखरा और खोपरेका मसका और तेल—जो प्यारेलालजीने खास तौर पर निकाल कर भेजा है—चखाया। अुसे बताते हुअे बापूजीने कहा, “जहां जहां नारियलकी पैदावार होती है वहां मनुष्योंको अनाजकी जरूरत नहीं है।नारियलका पानी भी खुराक जैसा माना जा सकता है; नारियलका दुध खाया जा सकता है। नारियलका तेल आसानीसे निकल सकता है और आजकलके मिलावटी घीसे बहुत पौष्टिक है। और जो छूछ निकलती है अुसकी मिठाअी बनाअी जा सकती है। (अिस मिठाअीको बंगलामें संदेश कहते हैं। वह मिठाअी भी बापूजीने अुन्हें चखाअी।) हिन्दुस्तानमें अैसा प्रदेश बहुत है जहां ताड़गुड़ और नारियलके अुद्योगका विकास हो सकता है। और अिससे अनाजकी बहुत बचत हो सकती है। बंगालमें अैसी प्राकृतिक संपत्ति भरपूर होते हुअे भी आज अुसकी हालत कंगाल जैसी है। अिसका कारण लोगोंके आलस्यके सिवाय मुझे तो और कुछ दिखाअी नहीं पड़ता। हमें

प्रकृतिने तो अपार भंडार दिया है, परन्तु आलस्य हमें खा जाता है ।" अिन बातोंके बाद दोनोंने लगभग डेढ़ घंटे तक अेकान्तमें बातें की ।

जैसे अेक सयाना पुत्र पितासे थोडे समयके लिअे जुदा हो जाता है और जब पिता-पुत्र फिर मिलते हैं तब पिताकी अनुपस्थितिमें हुअी भली-बुरी सभी घटनाओंसे वफादारीके साथ पिताको परिचित कराता है और पितासे अुचित मार्गदर्शन प्राप्त करके हल्का हो जाता है, वैसा ही दृश्य आज यहां है । ये दोनों पुरुष अिस समय अिस मिट्टीके झोपडेमें अेक गद्दे पर बेठकर देशके भूत, वर्तमान भौर भविष्यके प्रश्नोंकी चर्चा कर रहे हैं । बापूजी दिल्ली छोड़कर यहां आये अुसके बाद जो जो घटनाअे हो चुकी है, देशमें अिस समय हो रही है और आगे होगी, अुनके लिअे क्या मार्ग अुचित था, है और होगा—अिस सम्बन्धमें पंडितजी बापूसे मार्गदर्शन ले रहे हैं । मुझे थोडी भी चित्रकला आती होती तो अिस दृश्यको आज शब्दोंमें लिखनेके बजाय मैं अिसका चित्र खींच लेती । यह दृश्य अितना भव्य था । लगभग ग्यारह बजेसे साढ़े तीन बजे तक पंडितजी, शंकरराव देव, कृपालानीजी वगैरा मेहमानोंके साथ बारी बारीसे बातें करनेमें बापूजीका समय गया ।

अिन मेहमानोंका समय व्यर्थ न जाय अिसके लिअे बापूजीने दोपहरको साढ़े तीन बजे मौन लिया, ताकि कल साढ़े तीन बजेसे बाते हो सकें । शामकी प्रार्थनामें सभी मेहमान आये थे । जवाहरलालजी और कृपालानीजीने भाषण दिये थे ।

शामको थकावट होनेके कारण बापूजीने छः औंस दूध और फल ही लिये । रातको नौ बजे डॉ. राममनोहर लोहिया आये ।

बापूजी साढ़े नौ बजे बाद सोये ।

श्रीरामपुर,

२९-१२-१९४६

आज बापूजी पौने चार बजे अुठे । पंडितजीके लिअे कुछ लिखना शुरू किया, अितनेमें प्रार्थनाका समय हो गया । प्रार्थना वगैरा नित्यक्रमके बाद बापूजीने परसोंका भाषण सुधारा ।

साढ़े सात बजे घूमने निकले । सभी लोग साथ थे । बापूजीका मौन होनेसे कोअी खास बातें नहीं हो रही थी । मालिश और स्नानके बाद ग्यारहसे अेक तकका समय पंडितजीके साथ बिताया । पंडितजी बातें सुना रह थे । बापूजीको कुछ पूछना होता तो लिखकर पूछ लेते थे । दोसे अढाअी तक बापूजीने आराम किया । मुझे मेहमानोंको भोजन कराने जाना था, अिसलिअे बापूजीने मिट्टी लेते समय पैरोमें घी मलनेको कहा । अुठकर तुरन्त पंडितजीको फिर बुलवाया । अढाअीसे चार तक पंडितजीके साथ । प्रार्थनाके बाद पंडितजी, शंकरराव देव, कृपालानीजी और मृदुलाबहनके साथ मत्राणा की । आज भी शामका भोजन हल्का ही किया । बिहारके दंगोंसे बापूजीको काफी दुख हुआ है ।

पू. ठक्करबापाको आज बुखार नहीं आया । आज दिनमें बापू कात नहीं सके थे, अिसलिअे अिस समय नौ बजे कात रहे हैं । कातते कातते प्रेस-रिपोर्टरसे अखबार सुन रहे हैं, और मैं पास बैठी अपनी डायरी लिख रही हूं । साढ़े नौ बजे तक कातनेके बाद कुछ लिखनेका काम करके बापूजी बिस्तर पर लेटे ।

श्रीरामपुर,

३०-१२-१९४६

बापूजी अढाअी बजे अुठे हैं और पंडितजीके लिअे कुछ लिख रहे हैं । मैं अपनी डायरी लिखने बैठी हूं ।

आजकल बापूजीको समय नहीं रहता, अिसलिअे मेरी डायरी नहीं देख पाते । बापूजीका अभीका जीवन-मंथन वैसा ही है जैसा अखा भगतने गाया है : समुद्रमें नाव तो कहीं भी जानेको

मुड़ती है, पर नाविककी आंख केवल ध्रुवतारे पर होती है और अुसी निशानीके आधार पर वह अपनी नावको अपने मार्ग पर ले जाता है। आजकल बापूजी वैसा ही कर रहे हैं। अुन्होंने अपना निशान सत्य-अीश्वर-रामनामको बनाया है।

आज साढ़े सात बजे पंडितजी और अन्य मेहमान बिदा हुअे। घूमकर आये तब पता चला कि कृपालानीजी अपनी पेटी भूल गये हैं। अुसे फेनी भिजवाया। बापूजीको पिछले तीनेक दिनसे थकावट जान पड़ती है। रोज दो-अढ़ाअी बजे अुठकर काममें लग जाते हैं, पर यह सब बापूजीके लिअे शक्तिसे बहुत ही ज्यादा है।

शामको चरखा चलाते हुअे पिछले तीन दिनकी डायरी पढ़वाअी। दूसरी डाक पढ़वाअी। बापूजीने कहा, "तुम्हारी डायरी रोज नहीं पढ़ी जाती, यह मुझे अच्छा नहीं लगता।"

मैंने कहा, "आपको समय कहा रहता है?"

बापूने कहा, "परन्तु प्यारेलालको बताअी, अिससे मुझे संतोष है। वह भी तुम्हारा काफी पथप्रदर्शन कर सकते हैं।" और कोअी खास बात आज नहीं हो पोअी।

(बापू। अच्छा लिखा है। ३१-१२-१९४६, श्रीरामपुर)

पुनश्च :

(२८, २९ और ३० तारीखकी मेरी डायरीमें ता. ३१-१२-१९४६ को तड़के ही अेकसाथ अुपर लिखे अनुसार बापूने हस्ताक्षर कर दिये।)

७. यात्राकी तैयारी

श्रीरामपुर,

३१-१२-१९४६, मंगलवार

आज बापूजी प्रार्थनासे थोड़ी ही देर पहले अुठे । प्रार्थनामें लगभग १५ मिनटकी देर थी, अिस बीच मेरी डायरी देख गये और हस्ताक्षर कर दिये । मुझसे कहने लगे, "तुम बहुत लम्बा लिखती हो। पर लिखा अच्छा है ।"

मैंने कहा, "संक्षेपमें लिखू तो सही, परन्तु यह नोटबुक पूरी होते पर भाअीको (पिताजी) को भेजूगी । अितना लंबा न लिखा हो तो अुन्हें यहांकी परिस्थितिका कैसे पता चले ?"

बापू हंसते हंसते बोले, "चले, चले, अगर लिखना आवे तो . . ."

प्रार्थना के बाद गरम पानी पीकर पत्र लिखे । ७ बजे प्यारेलालजी अपने गांवसे आये । अुनके साथ बातें करके घूमने गये ।

९॥ बजे मालिशमें मैंने बापूजीसे कहा, "जब तक सुहरावर्दी जैसे लोग हैं, तब तक आप झूठसे भरे वातावरणमें कैसे काम कर सकेंगे ?" मेरे अिस प्रश्नका अुत्तर तो अेक तरफ रह गया, परन्तु अेक नया पाठ मुझे मिला ।

"तुम सुहरावर्दी कैसे कह सकती हो? सुहरावर्दी साहब कहना चाहिये । वे कैसे भी हो परन्तु आज अेक अूंचे ओहदे पर हैं । दूसरी दृष्टिसे कहूं तो तुमसे अुम्रमें बड़े हैं । अिस प्रकारकी कुटेव हमारी प्रजामें बहुत पाअी जाती है । जब तक हममें विवेक-बुद्धिकी कमी होगी तब तक हम पिछड़े हुअे ही रहेंगे । पश्चिमके लोग तो अेक नौकरको भी अुससे कोअी चीज मगानी हो तो 'प्लीज़' शब्द आगे रखकर ही संबोधन करेंगे और कार्यके अंतमें 'थेंक यू' कहे बिना नहीं रहेंगे । यह तो मैंने तुम्हें अुदाहरण दिया है । परन्तु हमारी प्रजामें यह चीज नहीं है । भाषामें शिष्टता और विनय तो कभी छोडना ही नहीं चाहिये । अिस प्रकारकी कुटेव हममें साधारण बन गअी है । और

शायद ही कोअी अिस पर ध्यान देता है । मगर मैं तो भाषामें अशिष्टता आ जाय तो अुसे भी सूक्ष्म रूपमें हिंसा कहता हूं और राअीके बराबर भूलको पहाड़ जैसी मानता हूं । यह कुटेव कोअी साधारण नहीं है । जो हमसे बड़े या बुजुर्ग हों अुनके प्रति सम्मानपूर्ण भाषा ही काममें लेनी चाहिये। जब प्रत्येक भारतवासीको अैसी आदत पड़ जायगी तभी हमारे देशका, जो पिछड़ा हुआ माना जाता है, अुद्धार होगा । अैसी आदतें बचपनसे डाली जानी चाहिये ।"

अपनी भूलसे मिला हुआ यह बोधपाठ मुझे किसी अच्छी पाठशालामें भी पढ़नेको मिलता या नहीं, अिसमें शंका है ।

आजकी खुराकमें बापूजीने परिवर्तन कराये । दोपहरके खाखरे बंद कर दिये और अुसके बजाय पांच बादाम पिसवा कर सागमें डलवाये। पांच काजू लिये । शामको फल और अेक औंस गुड़ लिया ।

श्रीरामपुर,
२-१-१९४७, गुरुवार

मैंने साथ रखनेका सारा सामान बांधा तथा तुरन्त आवश्यक हों अैसी चीजों और महत्वके कागजोंका अेक बड़ा बगलझोला अपने अुठानेके लिअे अलग तैयार किया ।

ठीक साढ़े सात बजे बापूजीने श्रीरामपुर छोडा । मैं बापूजीका बड़ा बगलझोला लेकर छोटे रास्तेसे तीस मिनटमें अर्थात् आठ बजे यहां (चंडीपुर) पहुंच गअी । चंडीपुर आकर बापूजीकी मालिशकी तैयारी की, कूकर रखा और बर्तन साफ किये । बापूजीके साथ सुशीलाबहन थी । रामधुन चल रही थी और दूसरे कीर्तनवाले भी कीर्तन कराते आ रहे थे । बापूजी यहां आठ बजकर पचास मिनट पर पहुंचे । यहां जिस घरमें हमारा पडाव है अुस घरकी बहनोंने बापूका स्वागत किया, अुन्हें तिलक लगाया और हार पहनाये।

अब्दुल्ला साहब, डी. अेस. पी. आये। अुन्हें बापूजीने कहा, "अिन सेनाके आदमियोंका होना मुझे अच्छा नहीं लगता, शोभा नहीं देता । मेरी रखवाली तो बहुत बडा प्रभु कर रहा है । मैंने अुस

रखवाले—अीश्वर, खुदा पर ही सब कुछ छोड दिया है । अुसे जरूरत होगी तो वह मुझे जिन्दा रखेगा, न जरूरत होगी तो अुठा लेगा ।"

मालिश, स्नान, भोजन और आराम करके बापूजी अुठे तब लगभग १२-५० हो गये थे ।

भोजनमें यहां ताजे बने हुअे मुरमुरे, अुबाला हुआ शाक, अेक ग्रेपफ्रूट और दूध लिया । अेक बजे नारियलका पानी पिया । दोसे तीन बजे तक काता । कातकर मिट्टी लेते हुअे . . . के साथ बातें की । शामको अिस खयालसे प्रार्थना साढ़े चार बजे हुअी कि बहनोंके लिअे बहुत देर न हो जाय । प्रार्थनामें बहनोंकी अच्छी संख्या रही । प्रार्थनासे आकर बापूजीने शाक, बार्ली और दूध लिया। बार्ली शाकमें डाला था, परन्तु चबानेमें बापूजीको कठिनाअी हुअी ।

आज सुशीलाबहनके गांवमें घूमने गये । अुस गांवका नाम है चागेरगांव । चंडीपुरके पास ही है । अेक बड़ा मकान है, जिसमें दूसरे भी रहते हैं और अेक कमरेमें सुशीलाबहन रहती हैं । अुनसे तथा अन्य स्थानीय लोगोंसे बापूने बातें की । हम अचानक ही पहुंच गये थे, अिसलिअे सुशीलाबहन बहुत प्रसन्न हुअी । लौटते समय तो बापूजीने खूब दौडाया, पचास मिनटमें वापस आ गये । जाते समय सवा घंटा लगा था । आकर मैंने बापूजीके पैर धोये और अुन्होंने रामफल खाते हुअे मेरी डायरी सुनी, बंगलाका पाठ किया और थकावट मालूम होनेके कारण लेट गये । नौ बजे बाबा (सतीशबाबू) आ पहुंचे ।

चंडीपुर,

३-१-१९४७, शुक्रवार

आज रातको बापूजी बहुत जल्दी नहीं अुठे । सवा तीन बजे अुठे । दातुन करते करते किसी प्रसंगके आधार पर मुझे कहने लगे, "मेरा मनोविज्ञान यह है कि हम कुछ भी काम करें और अुसका सोचा हुआ परिणाम न आवे, तो यह समझना चाहिये कि दोष हमारा है । हमें गंभीरतासे विचार करना चाहिये कि हमारा सोचा हुआ परिणाम क्यों नहीं आया? अिसका जवाब अपने मनसे शान्तचित्त होकर मागना । तुम्हें जवाब मिले बिना नहीं रहेगा । यदि तुम अितनी विचारक बन सको तो मेरा काम कितना चमक अुठे ? तुम्हारे लिअे यह बडा कठिन काम है,

परन्तु प्रयत्न करोगी तो बहुत आसान हो जायगा । जिस दिन हम अपने दोष देखने लगेंगे, अुस दिनसे हमें अिस प्रकार लड़ाअी-झगडे और मारकाटमें पडनेकी बात नहीं सूझेगी । केवल यही सूझेगा कि दुनियाका भला किस बातमें है । आज हमारे दिमाग खाली पड़ गये हैं । हम आपसमें अेक-दूसरे पर दोष मढ़ते हैं । मेरे कहनेका यह आशय नहीं कि अैसा हम जान-बुझकर करते हैं, परन्तु यह स्वाभाविक ही हमसे हो जाता है। जैसे आगसे अनजाने हाथ छू जाय तो हम तुरन्त अुसे हटा लेते हैं, अुसमें यह विचार करनेकी जरूरत नहीं पडती कि हटायें या नहीं, वैसे ही आजकल जो अमानुषिक कृत्य हो रहा है वह मानो स्वाभाविक हो गया है । परन्तु अिसकी तहमें जाकर हमें यह सोचना चाहिये कि कोअी हिन्दू अेक भी मुसलमानको क्यों मारे ? या कोअी मुसलमान अेक भी हिन्दूको क्यों मारे ? अिस देंगेकी जिम्मेदारी मेरी दृष्टिसे सारे हिन्दुस्तानकी है । प्रत्येक भारतीय यह सोचे कि 'मेरा हृदय किस ओर है ? शुद्ध है या अशुद्ध ? मैं प्रत्येक भारतीयको अपना भाअी मानता हूं या नहीं?' यदि अेक भी हिन्दू यह चाहे कि मुसलमान मरे तो अच्छा हो अथवा अेक भी मुसलमान यह चाहे कि हिन्दू मरे तो अच्छा हो—भले वह खुद छुरिया न भोकता हो, परन्तु मनमें अेक-दूसरेका बुरा चाहता हो—तो मैं कहता हूं कि जो छुरा भोंककर मारनेवाले हैं अुनसे ये हलके विचारवाले लोग अधिक क्रूर और निर्दय हैं । क्योंकि अुनका मन गंदा हो जाता है और यह गंदगी वातावरणमें अैसे रजकण फैलाती है जो सूक्ष्मसे सूक्ष्म होते है । अुदाहरणार्थ, घरमें किसी प्रकारकी गंदगी है—अेक टी. बी. का शिकार हुआ आदमी है । कोअी जानता नहीं कि अुस आदमीको सचमुच टी. बी. हो गया है, शायद शुरूमें वह भी न जानता हो कि मुझे क्षय जैसा रोग है । वह चाहे जहां थूककर गंदगी करता है । धीरे-धीरे अुस पर मक्खिया बैठती है और दूसरे जन्तु फैलते हैं । समझ लो कि तुम्हारे शरीरमें रोगके विरुद्ध लडनेवाले जन्तु कम हो जाय, फिर भी तुम भली-चंगी रहो । परन्तु तुम्हारे खाने पर ये मक्खिया कब आकर बैठ गअी और क्षयके जहरीले जंतु फैला गअी, यह तुम भी न जानती हो । पर तुम्हारे दुर्बल शरीरमें यह जहरीली खुराक जाय तो तुम क्षयकी शिकार तो अवश्य बनोगी ।"

[अिसी तरह हिन्दुस्तान अिस समय निर्बल है । अुसमें रोगोंके विरुद्ध लड़नेवाले जन्तु—विचारक, नि.स्वार्थ, सेवाभावी और फूट न फैले यह चाहनेवाले लोग बहुत कम हो गये है । और अिसलिअे मनसा, वाचा, कर्मणा हम जैसा चाहें या करें वैसा होता है।]

"जैसा यह सूक्षम विज्ञान है, वैसा ही मेरी दृष्टिसे मनका विज्ञान है । हममें कहावत है कि 'मन चंगा तो कठौतीमें गंगा ।' अिस मनकी, विचारोंकी तुम बारीकीसे जांच करना कि . . . की या तुम्हारी बनाअी हुअी . . . मैंने क्यों काममें नहीं ली? यह मैं अुलाहनेके तौर पर नहीं कहता, परन्तु यह बतानेका प्रयत्न करता हूं कि हमारे विचार क्या रूप लेते हैं ।"

दातुन करते करते बापूजीने अेक छोटीसी बात परसे सारे देशके वातावरणमें हमारे मनका, अिच्छाका कितना हाथ रहता है अथवा प्रत्येक मनुष्यकी जैसी अिच्छा वैसा अुसका कार्य होता है, अिस संघर्षकी अपनी विचारसरणी मुझे बताअी । अिस समय जो हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य पैदा हो गया है अूसके लिअे बापूजी देशके प्रत्येक मनुष्यके मनको अधिक जिम्मेदार समझते हैं । ये बातें अुदाहरण-सहित अितनी सरलतासे बापूजीने कहीं कि बिलकुल गले अुतर जाय । बापूजी तो अैसी छोटीसी मानी जानेवाली भूलोंको—कदाचित् साधारणत जिन्हें भूल भी नहीं कह सकते अैसे प्रसंगोको पहाड़ जैसा बना लेते हैं । वे हमेशा कहते हैं कि 'मनुष्यको आगे बढ़ना हो तो छोटीसी भूलको भी पहाड़ जैसी बनाकर अुसे सुधार लिया जाय, ताकि फिर कभी अैसी भूल हो ही नहीं ।" यह बात बिलकुल सच है ।

सदाकी भांति प्रार्थना हुअी । आज प्रार्थनामें प्यारेलालजी थे, अिसलिअे भजन और गीतापाठ अुन्होंने कराया । बापूजीने गरम पानी पीकर अुनके साथ बातें की । निर्मलदाके साथ भी बातें की और आश्रमकी डक लिखी । मैंने भी डाक लिखी और प्रात कालकी बातें नोट कर ली।

सुबह साढ़े सात बजे यहांकी हरिजन-बस्ती और जिन्हें नमोशूद्र कहा जाता है अुनका मुहल्ला देखने गये । वहां दंगाअियोंने अैसे अमानुषिक कार्य किये हैं कि दिल कांप अुठता है । खाथमें आअी. अेन. अे. वाले देवनाथ दास और कर्नल जीवनसिंह थे । आकर बापूजीके पैर धोये।

और वे कलका प्रार्थना-प्रवचन सुधारने बैठे । अिससे मालिशमें काफी विलम्ब हो गया । मालिशके समय प्यारेलालजीके साथ बातें हुअी ।

भोजनमें आज आठ औंस दूध, बार्ली, संदेश (खोपरेका) और थोड़ा कच्चा शाक लिया।

भोजनके समय मैं पास नहीं बैठी थी । प्यारेलालजी थे, अिसलिअे मुझे बापूजीने नहाकर कपड़े धो डालनेको कहा, क्योंकि बारह बज गये थे । मैं निबटकर आअी । बापूजीने भोजन कर लिया, अुसके बाद बापूजीके बरतन साफ करके पैरोंमें घी मला । वे आध घंटे सोये । यहांका नकशा देखा । दो बजे अमियबाबू (गुरुदेव टागौरके मंत्री) आये । अुनके साथ लगभग घंटे भर बातें कीं और देशमें रोगके रजकण किस प्रकार बढ़ गये हैं, यह जैसे आज सुबह मुझे कहा था, वैसे ही लगभग धाराप्रवाह रूपमें अुन्हें सुनाया ।

तीन बजे बापू और मैं बहनोंकी सभामें गये । सभामें बहुत बहनें थी । अस्पृश्यता और पवित्रता पर बापूजीने सुन्दर भाषण दिया । अन्तमें कहा, “जब बहनें अिस कार्यको अपनायेंगी, तभी देशकी अुन्नति होगी ।”

चार बजे पेट पर मिट्टी लेते वक्त बिहारके भाअी, व्होल्टन साहब और सिन्हाजी आये । अनके साथ लगभग पांच बजे तक चर्चा चली । बापूजीने कमीशन नियुक्त करनेके बारेमें खूब जोर दिया । बिहारमें नोआखालीको मात करें, अैसे कुछ कृत्य हुअे दीखते हैं । और . . . आपसमें भी गंदगी हो अैसा लगता है ।

बातें करते हुअे बापूजीको दूध, शाक और फल लेना था, अिसलिअे मिट्टी साढ़े चार बजे अुतार ली । पौने पांच बजे खाना शुरू किया । दूधमें अेक औंस बार्ली पीसकर डाली थी । सब कुछ मिलाकर पी गये । पांच बजे खाना पूरा हुआ और प्रार्थनामें गये । कल जरा जल्दी हुअी थी । अिसलिअे आज प्रार्थना देरसे रखी । वहांसे सीधे रामकृष्ण मिशनबाडीमें घूमने गये । आकर बापूजीके पैर धोये । फिर अुन्होंने अखबार सुने । अिस बीच मैंने अपना रातका कामकाज निबटाया । तार दुबटे किये । सौ तार निकले ।

आज दिन भर मुझे अितना ज्यादा काम रहा कि सुबहसे घरकी डाक आअी हुअी थी, फिर भी रातको बापूजी लेटे तब अुनके पैर दबाने और सिरमें तेल मलनेके बाद दस बजे डाक पढ़ी। और अभी यह डायरी पूरी की। (ग्यारहका धंटा बज रहा है।) बापूजीके साथ बड़ा आनंद आ रहा है और खूब सीखने और जाननेको मिल रहा है। अिस प्रकार सारा काम रोज पूरा किया जा सके तो कोअी अड़चन ने हो।

बापूजी सुबह बहुत जल्दी अुठाते हैं, अिसलिए मैंने सोनेसे पहले विनोदमें कहा, आज यदि आप जल्दी न अुठ सकें तो भगवानके नाम पर अेक दीया जलाअूंगी।

बापूजी हंसते हुअे बोले : "भगवान अैसा लालची नहीं है।"

(ठीक समझी हो, परन्तु मेरी दृष्टिसे कुछ सुधार करने जैसा मालूम होता है। बापू, ५-१-१९४७, चंडीपुर)

अपनी डायरीमें तो आज बापूजीने अपना कार्यक्रम और दिनमें कौन कौन आया, यही लिखा है।

सवेरे नमोशूद्रोंकी बस्तीमें गये थे। अुसे देखकर अपनी विचारमालामें अेक वाक्य अुद्धृत किया है, "घूमते समय नमोशूद्रोंकी बाड़ीमें हुआ नुकसान देखा। सहज ही ये विचार आये कि मनुष्य धर्मके नाम पर या स्वार्थवश अैसी बरबादी कैसे करता होगा?"

चंडीपुर,
४-१-१९४७, शनिवार

बापूजी दो बजे अुठे। लालटेन जलवाअी। मैंने बापूजीसे कहा, मेरा दीया निष्फल रहा। आप रातको देरसे सोते हैं और दो बजे अुठ जोते हैं। तब लालटेन धीमी रखें तो कया हर्ज है? रोज मुबह ठंडमें लालटेन जलानेमें मेरे हाथ ठिठुर जाते हैं।

बापू बोले, "अरे, बच्चोंकी ठंड तो बकरी चर जाती है, यह तुम्हें मालूम है? तुम्हारी बात तो नहीं है, परन्यु अितना घासलेट कौन दे? ने तुम कमाकर लाती हो, न मैं कमाता हूं। तुम्हें घासलेट

जलानेकी सूझती है, क्योंकि तुम्हारे पिता महुवामें कमाते हैं ! परन्तु तुम्हें मालूम है कि लालटेन बुझानेसे मेरे दो काम हो जाते हैं: अेक तो लालटेन जलानेसे तुम्हारी नींद अुड़ जाती है, जिससे मैं कुछ लिखवाअुं तो तुम अुसे बिना लिख सकती हो, और घासलेटकी बचत तो होती ही है । अिस प्रकार मेरे तो अेक पथ दो काज होते है । परन्तु तुम अिसका अर्थ जानती हो? अेक पथ और दो काजका अर्थ है वह कौनसा पथ है जिसे ग्रहण करनेसे सदा दो काम बनें ? दो काजका मतलब दो ही काम नहीं समझना चाहिये । दो काजका अर्थ अनेक अथवा सौ काज समझना चाहिये । यहां हजारों आदमी तबाह हुअे हैं, अिस परसे सहज ही यह विचार आता है कि हमें अेक भी पल व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिये । शरीरको जरूरत हो अुतनी ही नींद, अुतनी ही खुराक वगैरा ली जाय । अपनी तमाम शारीरिक आवश्यकताअें मर्यादित की जाय । 'आजनो लहावी लीजिये रे काल कोणे दीठी छे?'—आजका लाभ अुठा लो, फिर कल किसने देखा है? अिस भजनके अनुसार हमें पता नहीं कि अेक क्षण बाद हमारा क्या हो जायगा? मैं तुम्हें अभी यह समझा रहा हूं । पर अीश्वर चाहे तो मुझे या तुम्हें अुठा ले सकता है । अिसलिअे भजनकी यह कडी बहुत समझने लायक है । तब अैसा सुवर्ण-सुनहला पंथ कौनसा है, जिसे अपनानेसे सभी काम सध जायं ? यह पंथ केवल परोपकारका ही है । परोपकारका अर्थ है पडोसीकी सेवा अथवा यों कहें कि अीश्वर-भक्ति । परन्तु अीश्वर-भक्ति केवल तिलक लगाने या माला फेरनेसे नहीं होती । तिलक लगाकर कोअी मनुष्योंको छुरे भोके, जैसा कि आजकल हो रहा है, तो वह दंभ कहा जायगा । परन्तु नरसिंह भगतने कहा है कि 'भक्ति शीश तणु साटुं—भक्ति सिरका सौदा है । अिसलिअे तुम समझ लो कि तुमसे शरीर द्वारा किसीका अुपकार न हो तो मनके द्वारा किया जाय । अुठते-बैठते, खाते-पीते, हंसते-खेलते हम मनके द्वारा सारे जगतका कल्याण चाहें और अपने हाथमें जो सेवा आये अुसे करें । अितना समझ लोगों तो बहुत सीखोगी। मैंने तो छोटेसे मजाकमें तुम्हें सबक दे दिया । हमारी कहावतोंमें अैसे गूढ़ अर्थ भरे हैं ।"

फिर लालटेन रखवाकर खुद ही लिखना शुरू किया । मुझे जोरकी सरदी हो गअी है, अिसलिअे सो जानेको कहा । मैं सो गअी । प्रार्थनाके समय बापूजीने अुठाया । दातुन, प्रार्थना

वगैरा नित्यके अनुसार हुआ । मेरा गला बैठ जानेसे आज भी प्रार्थना प्यारेलालजीने कराअी । वे जल्दी अपने गांवसे पैदल चलकर आ गये थे । आज तो अमियबाबू और अुनके मित्र भी प्रार्थनामें थे। आजकल बिहारके सम्बन्धमें भी कअी गूढ प्रश्न अुपस्थित है । अुन सबसे परिचित रहनेके लिअे प्यारेलालजी बड़े सवेरे लगभग रोज बापूजीके पास आते हैं और बातें करके अपने गांव चले जाते हैं ।

साढ़े सात बजे रोजमर्राकी भांति घुमने निकले । अुत्तर चागेरगांवमें अेक पाठशालाका अुददघातन बापूजीके हाथों होनेवाला था, अिसलिअे घूमने वही गये । घुमते वक्त रास्तेभर अमियबाबूके साथ ही आजकी परिस्थिति पर ब्योरेवार बातें की ।

वहांसे लौटनेमें अेक घंटा लग गया । बापूके पैर धोकर मैंने मालिश और नहानेकी तैयारी की, बापूजीके लिअे साग काटकर कूकर रखा; खाखरे भी बना लिये; तो भी बापूजीकी बातें पूरी न हुअी। कर्नल जीवनसिंहजी और आअी. अेन. अे. वाले देवनाथ दासके साथ बातें हो रही थी । अन्तमें मुझसे नहीं रहा गया । मैंने कहा, अब तो बापूजीको छोडिये । दो बजेसे अुठे हैं, बहुत देर हो गअी है । फिर मालिशमें जल्दी करायेंगे । अिस पर बापूजी हंसते-हंसते कहने लगे, “अिस लड़कीकी बात नहीं मानेगें तो हमारी शामत ही आ जायगी ! गुजरातीमें कहावत है कि 'मीठा झाडना मूल न खाअीअे'—मीठे पेड़की जडें नहीं खाअी जाती । थोड़ा ही अच्छा । अिसलिअे आप अब जाअिये । यह रूठेगी तो मेरी सेवा कौन करेगा? अतः अिसकी खातिर भी हमें बातें बन्द करनी चाहिये ।” अिस प्रकार मीठी वाणीसे अिन दोनों भाअियोंको तुरन्त विदा दे दी ।

मालिशमें बापूजी पंद्रह मिनट सो लिये, अिसलिअे ताजे हो गये। अुठकर कहने लगे, मेरी कुछ थकावट अुतर गअी । रातके ठीक दोसे सुबहके नौ बजे तक लगातार काम चला और अुसमें भी बोलनेका ही ज्यादा रहा । बापूजीके लिअे यह बहुत अधिक कहा जायगा । खानेमें दो खाखरे, साग, दूध, थोडासा पपीता और अेक छोटासा सन्देशका टुकड़ा लिया । बापूजीने मुझे मुरमुरे, पोहे, नारियलका तेल वगैरा कैसे बनता है, अिसका ब्यौरा जान लेनेकी कहा । “और फिर हम चावल साथ रखें जिससे तुम्हें रोज रोज खाखरे बनानेकी मेहनत न करनी पड़े । मुरमुरे बनाकर

रख दिये जायं तो वे दस-पंद्रह दिन तक चलेंगे और हमारा काम हो जायगा । मेरे जैसेके लिअे तो मुरमुरे गेहूकी जगह अच्छी तरह काम दे सकनेवाली वस्तु है ।"

खाना खाकर बापूजी लगभग पौन घंटा सोये । कातते समय आज मेरी दो-तीन दिनकी डायरी सुनी । बापूजीने कहा कि सब पर अेकसाथ हस्ताक्षर कर दूंगा, अिसलिअे पाट पर रख दो।

शोरेनदाने अेक बढ़िया धनुप-तकली बनाअी है, जिस पर बापूजीने काता । कातकर ग्रामसभामें गये । चार बजे बापूजीके पेट पर मिट्टी रखकर मैं शासका खाना तैयार करने गअी । आज बापूजी आंखोंमें जलन होनेकी शिकायत करते थे । आंखों पर भी मिट्टी रखी । बापूजी आजकल बड़े गहन विचारोमें डूबे रहते हैं । खूब थके हुअे हैं । शामको छ. औंस दूध और थोड़ा शाक ही लिया ।

शामको प्रार्थनामें अच्छी संख्या थी । लगभग दस बजे सोये । बिस्तरमें तो साढ़े नौसे लेट गये । मैं आज जल्दी साढ़े दस बजे सो गअी । मुझे सरदीके कारण बुखार है । बापूजीको यह अच्छा नहीं लगता । सोनेसे पहले कहने लगे, "आज मेहरबानी करके तुम जल्दी सो जाओगी तो मुझे अच्छा लगेगा ।" मैं समझ गअी कि बापूजीको मेरी काफी चिन्ता होती है । कुछ भी बहस किये बिना सारा अतिरिक्त काम छोड़कर सो गअी । अभी बापूजीका सूत दुबटा करने, कुछ पत्रोंकी नकल करने और कुछ अखबारोंकी कतरनें फाअिल करनेका काम बाकी है । कल निबटा दूंगी ।

(बापू, ५-१-१९४७, रविवार, चंडीपुर)

चंडीपुर,

५-१-१९४७, रविवार

बापूजी अढ़ाअी बजे अुठे । मुझे अुठाया । मैंने लालटेन जलाअी । सबसे पहला काम आज मेरी चार-पांच दिनकी डायरीको अूपर- अूपरसे देखकर हस्ताक्षर करनेका था । ता. ३-१-१९४७ की डायरीमें भाषाकी दृष्टिसे क्या सुधार हो सकता है (व्याकरणकी कुछ भूलोंका) सो बताया ।

थोड़ेसे चैंकों पर हस्ताक्षर किये और यह समझाया कि किस प्रकार यह सब हिसाब रखा जाय। बापूजीने स्वयं ही कुछ पत्र आश्रमको लिखे। साढ़े सात बजे सदाकी भांति घूमने निकले। घूमते समय रास्ते पर सुधीरदा (सुधीरचंद्र घोष) के साथ बातें की। अुन्हें विदेशमें राजदूतके नाते अथवा मंत्रि-मंडलमें अुपयोगी हो सके तो अुस दृष्ठिसे कुछ सूचनाअें और मार्गदर्शन दिया। सुधीरदा बहुत ही सरल स्वभावके और सादे आदमी हैं।

जहां हत्याअें हुअी थी वहां गये। सब अुजाड और वीरान पड़ा था। हड्डियां भी बिखरी पड़ी थी। आकर बापूजीके पैर धोये। बापूजी और सुधीरदाके बीच खूब लम्बी बातें चली, अिसलिअे मालिशमें बहुत देर हो गअी। मालिश जल्दी जल्दी कराअी। खाते समय बापूजीने ... को बुलाया। अुन्होंने जानेकी अिच्छा बताअी। मेरे लिअे भी ये बातें समझने लायक होनेसे बापूजीने कहा, "कुछ खानगी नहीं है। मैं चाहता हूं कि तुम अिस किस्सेको समझो, अिसलिअे यही बैठ जाओ।" बापूजीने ... से कहा, "मैं समझूंगा तुम छुट्टी पर गये हो। तुम पर ... ने अटूट प्रेम बरसाया है। तुमने मेरे लिअे फकीरी ली है। तुम्हारी भक्तिपूर्ण भावनाके कारण मैंने तुम्हें मुक्त किया। मैं तो तुम्हें पुत्रके समान मानता हूं और मानूगा। अिस समय तुम अुत्तेजित हो, अिसलिअे मेरा सारा समझाना व्यर्थ है। यह भी हो सकता है कि मैं अपनी भूल ने समझ पा रहा होअू।"

बापूजीने भोजनमें दो खाखरे, आठ औंस दूध, खोपरेका मसका, जरासी कच्ची भाजी और दो सन्तरे लिये। भोजन करके आरामके लिअे लेटे। मैं पैरोमें घी मल रही थी। अिसलिअे मुझसे बोले, "आज हर पैरको अढ़ाअी मिनट देकर पांच मिनटमें दोनों पांव पूरे करने हैं। तुम अभी तक नहाअी नहीं ? कब नहाओगी और कब कपडे धोओगी ? आज तो धोनेको ढेरों कपड़े निकाले हैं। बरतन भी बहुत माजने होंगे। परन्तु ... की बात समझना तुम्हारे लिअे बहुत जरुरी था, क्योंकि तुम ब्यौरेवार लिख सकती हो और तुम ... अितनीसे बातें कर लोगी तो मेरा समय भी बच जायगा।"

बापूजीके पैरोमें घी मलकर, चरखा तैयार करके और अुठें तब नारियलका पानी देनेको शोरेनदासे कहकर मैं नहाने-धोने गअी। यहां खानेका समय आम तौर पर अढाअी-तीन बजेका

है और मैं अपने कामकाजसे अढाअी बजे ही निबटी । रोज तो बापूजीको मेरा अितनी देरसे खाना अच्छा नहीं लगता, अिसलिअे जल्दी खा लेती हूं । परन्तु आज अपवाद था, अिसलिअे मैंने घरके लोगोंके साथ भोजन किया । अिससे दीदी, शोरेनदा सब बहुत खुश हुअे । परन्तु बापूजीको मालूम हुआ तो कहने लगे, "असमय खानेसे न खाया होता, दूध पी लिया होता या फल और नारियलके पानी जैसा हलका आहार ले लिया होता तो मुझे अधिक पसन्द होता । ये सब तो बीमार पडनेके लक्षण है । यदि तुम यहां बीमार हो गअी तो मेरे सभी किये-कराये पर पानी फिर जायगा । तुम्हें मुझसे पूछना तो था कि मैं खाअू या नहीं? यह सब मुझे अच्छा नहीं लगा । तुम्हें अभी तक जुकाम है, फिर भी अितने ज्यादा कपडे धोये । . . . परन्तु अब और काम छोडकर आध घंटा आराम ले लो । यह मुझे अधिक अच्छा लगेगा और संतोष होगा । तुम्हारा आजका समय बिगाडनेवाला तो मैं हूं । मैंने तुम्हें बातें समझनेको रोका । किसलिओ रोकना चाहिये था? परन्तु मेरा मन न माना । खैर, जो हुआ सो हुआ । यह तो भविष्यकी सुरक्षितताके लिअे अितना कहना पडा ।"

कातकर बापूजी कारीगरोंकी सभामें गये । मुझे नहीं ले गये । सोनेको कहा । मैं सो गअी । बापूजीने आकर चार बजे जगाया । "तुम कितनी थक गअी थी, अिसका खयाल तुम्हें मुर्देकी तरह सोते देखकर मुझे हुआ । तुम तो कहती थी कि नींद नहीं आती । सुबहके अढाअी बजेसे तुम्हें अुठाया है । अिसलिअे थकावटका कोअी दोष नहीं । परन्तु बढ़-बढ़कर बूतेसे ज्यादा काम करोगी तो मर जाओगी और मैं भी मर जाअुंगा ।"

शामको खानेमें अनन्नासका रस, आठ औंस दूध और अेक औंस गुड़ लिया । प्रार्थना चागेरगांवमें हुअी । वहांसे हरिश्चरामें अेक मुसलमान भाअीके यहां गये।

चारुदा, बाबा और मा आये । यात्रा शुरू होने वाली है, अिसलिअे अुसके विषयमें चर्चा हुअी । बापूजीने कहा, "काजीरखिल कैम्पमें से कोअी भी आदमी मेरी सेवामें खास तौर पर रहे, यह मैं नहीं चाहता और मेरे साथ जो अखबारवाले रहना चाहें अुन्हें भी कह दिया जाय कि वे अपने खर्च, जोखिम और जिम्मेदारी पर रहना चाहें तो ही रहे । बहुत बार अैसा भी हो सकता है कि ये लोग मेरे दलमें मान लिये जाय । अिसलिअे प्रेस-रिपोर्टरोंको खास तौर पर समझा दिया जाय । .

. . ने तो जाना तय किया है । . . . भी बहुत नहीं टिक सकता । फिर भी देखना है । लेकिन मनु और निर्मलबाबू मेरी मंडलीमें ही माने जायेंगे ।”

बाबा (सतीशबाबू) और मा (सतीशबाबूकी पत्नी हेमप्रभादेवी), दोनोंको बापूजीकी अतिरिक्त चीजें सौंप दी ।

रातको प्रार्थना-सभासे आकर बापूजी खूब थक गये थे । आधे औंसके बरावर गुड़ लिया और अेक ग्रेपफ्रूट लिया । मौन लेकर बहुतसे पत्र जांचे। दस बजे सोये ।

शामके बाद मौन होनेसे बापूजीके पास कोअी खास काम नहीं रहा । अब नियमानुसार रोज अेक अेक गांवमें रहना होगा, अिसलिअे कमसे केस सामान साथ रहे अिसके लिअे बहुत प्रयत्न किया ।

चंडीपुर,

६-१-१९४७, सोमवार

बापूजी विशेष जल्दी नहीं अुठे । ठीक प्रार्थनाके समय ही अुठे । मौनवार होनेसे लिखनेका काम अुन्होंने स्वयं ही किया । प्रार्थना वगैरा नित्यकर्मसे निबटकर रस लिया। बादमें पत्र पढ़ते-पढ़ते सो गये । शामद कल शामको बूतेसे बाहर घूमे थे; अुसकी थकावट होनेसे पैर दबानेको भी अिशारेसे कहा । मैंने पाचेक मिनट पैर दबाये कि गहरी नींदमें सो गये । साढ़े छः बजे अुठे | साढ़े सात बजे बापूजी और मैं अेक कार्यकर्ता भाअीको, जो बीमार पड़े है, देखने गये । वहां बापूजीने लिखकर अुन्हें कुछ हिदायतें दी । बार बार गरम पानीमें शहद और थोड़ा थोड़ा सोडा डालकर पीनेको कहा । कुछ भी खानेके लिअे मना कर दिया । पेट पर मिट्टी लेनेका भी आदेश दिया । वहांसे आनेमें पूरा अेक घंटा लगा । पैर धोकर सीधी मालिश की । मालिशमें बापूजी पच्चीस मिनट सो लिये ।

शामको प्रार्थनामें बापूजी नंगे पैरों आये । मैंने कारण पूछा तो मौनके बाद बतानेको कहा। रातको बापूजीने अपना काम जल्दी समेट लिया और आठ बजे बाबा, मा, अरुणभाअी (सतीशबाबूके लड़के) के साथ बातें की ।

बापूजीके पैरमें चीरा पड़ गया है, अिसलिअे हेजलीन लगाया । प्यारेलालजी आये । अुनके साथ लगभग दस बजे तक बातें की ।

बापूजी रातको लेटे थे और मैं तेल मल रही थी तब मुझे चप्पल छोड़नेका कारण बताते हुअे कहा : “हम हिन्दू मंदिर, मस्जिद या गिरजेमें जाते हैं तब चप्पल नहीं पहनते । तब मुझे तो दरिद्रनारायणके पास जाना है, जिस भूमिके स्वजन लुट गये है, जहां स्त्रियों और बच्चोंकी हत्या हुअी है; जहांके लोगोंके पास लाज ढंकनेको भी कपड़े नहीं है, जहां अनेक निर्दोषोंकी पवित्र हड्डियां पड़ी हुअी है, अैसी भूमि पर चलना है और अैसे लोगोंसे मिलने जाना है । यह मेरे लिअे पवित्र यात्रा है । (कलसे नियमित प्रवास शुरू होनेवाला है ।) अैसी हालतमें मैं चप्पल कैसे पहन सकता हूं?”

ये शब्द बोलते समय बापूजीके हृदयकी स्थिति वैसी ही थी, जैसी मक्खन निकालनेके लिअे छाछ बिलोते समय छाछकी होती है । अिस पैदल यात्राको बापूजी कितनी पवित्र मानते हैं, यह समझाया ।

(बापू, मासिमपुर, ८-१-१९४७)

८. अेकला चलो रे

चंडीपुर,

७-१-१९४७, मंगलवार

आज पवित्र यात्राका स्मरणीय दिवस होनेके कारण प्रार्थनामें 'वैष्णव जन' का भजन गानेके लिअे बापूजीने कहा । और अुसमें प्रत्येक कडीके अन्तमें ख्रिस्तीजन, पारसीजन, सिक्खजन, मुस्लिमजन और 'हरिना जन तो तैने कहींअे जे पीड पराअी जाणे रे' जोड़कर गानेका आदेश दिया ।

प्रार्थनाके बाद लगभग अेक घंटे तक बापूजी और प्यारेलालजीके बीच बातें हुअी । मैं सामान ठीक करनेमें लगी हुअी थी । अिसलिअे उन दोनोंकी बीचकी बातें नहीं सुनी ।

आज . . . को बापूजीने बड़ा हृदयस्पर्शी पत्र लिखा है और अुसमें वहांका विस्तृत चित्र दिया है । अुसकी नकल की । बापूजीने अुस पत्रमें लिखा है:

> " . . . मेरे स्वास्थ्यकी चिन्ता न करो । अभी तो बहुत काम देता है । कब तक काम देगा, यह तो भगवान जाने । खेड़ामें मेरी बीमारीका कारण मेरी मूर्खता थी । तब मुझमें कुशलता थोडी थी और स्वादेन्द्रियकी प्रभूता थी । पांच चीजें खाओ या अेक चीज, परन्तु मैं अिस बातका प्रत्येक क्षण अनुभव करता हूं कि अिस अिन्द्रियके वश हो जाओ तो वह हमारे व्यवस्थित किये हुअे कामको चौपट कर डालती है । साथ ही . . . से कहता हूं कि मेरी चिन्ता न करो । मेरी चिन्ता करनेवाला अेक सर्वशक्तिमान वैद्य हमारे सिर पर है; वह काफी है । . . . के नाम लिखा तुम्हारा पत्र आया था । जवाबकी मत पूछो । थोडेसे पत्र लिखता हूं सो भी जल्दी अुठता हूं अिसलिअे । काम संभल नहीं पाता । अुसकी भी चिन्ता नहीं करता । कहते शर्म आती है कि 'हरिजन' मिलता तो है, परन्तु पढ़ नहीं पाता । . . . अपने-अपने गांवमें है । भला-बुरा देखनेमें आयेगा तब तो कह ही दूंगा । यहांका काम

अटपटा है। रास्ता अंधेरेमें तय करना है। 'मुझे अेक कदम काफी है।' यह सारी प्रस्तावना है।"

बापू सवा सात बजे अुठे। बाथरूममें गये। अितनी देरमें मैंने जिस गद्दी पर बापूजी बैठते हैं अुसका अंतिम बेडिंग बांधा और पाचेक मिनटमें बापूजी बाहर आये। घरकी और दूसरी बहनोंने बापूजीको तिलक लगाया, आरती अुतारी; अेक तरफ मैं और दूसरी तरफ बापूजीकी काठकी बैसाखी। बापूजी नंगे पैर थे।

आजका दिन मेरे जीवनमें अैतिहासिक दिन बन गया है। अुसके आनंदकी तो किसीको कल्पना भी नहीं हो सकती। बापूजीके अैसे अद्भुत महायज्ञमें आज मेरे लिअे अुनकी लाठी बननेका अवसर आयेगा, यह तो मैंने कभी सोचा भी नहीं था।

ठीक साढ़े सात बजे 'जदि तोर डाक शुने केअो ना आसे, तबे अेकला चलो रे'—तेरी पुकार सुनकर कोअी न आये तो तू अकेला ही चल—यह पंक्ति गाते हुअे बापूजीने नंगे पैर घरके बाहर रखे, अुस समयका दृश्य अैसा था, मानो 'परथम पहेलू मस्तक मूकी बळती लेवु नाम' (पहले सिर रखकर बादमें अुसका नाम लेना चाहिये।) वाली पंक्तिको अुन्होंने प्रत्यक्ष आचरणका रुप दे दिया हो। 'अेकला चलो' के भजनके बाद रामधुन के बाद अेक गीत गाते मार्ग काट रहे थे। तुलसीदासजीने गाया है 'दंडक वन प्रभु पावन कीनो अपियन प्यास मिटाअी; अुसी तरह यह भी निरा जंगल ही था और बापूजी मानों अनेक निर्दोषों पर गुजरा हुआ सितम और त्रास मिटानेको ही जा रहे थे। सबसे आगे सेनाके आदमी थे, बादमें प्रेस रिपोर्टर थे और अुनके पीछे बापूजी और मैं। दो आदमी मुशकिलसे अेक साथ चल सकें, अितनी चोडी पगडंडी थी। परन्तु मार्ग बडा रमणीय था। नारियल और सुपारीके हरे हरे पत्ते बापूजी पर झुककर मानो प्रणाम करके अुनका स्वागत कर रहे थे। चारों तरफ हरियाली छाअी हुआ थी। और घनी हरीभरी वनराजिके अुपर सामने लाल लाल आकाशमें सूर्यदेव भी मानी अिस महापुरुषकी अैतिहासिक यात्राकी घड़ीके साक्षी बननेको निकल आये थे। अिस भव्य अरुणोदयका प्रतिबिंब आसपासके सुन्दर तालाबोंमें पड रहा था।

जगह जगह अनेक सुन्दर झरने थे । मेरे मनमें विचार आया, आजका यह सुनहला और भव्य अवसर किस पुण्यके प्रतापसे मिला होगा ? पू. बाके आशीर्वादका और मेरे माता-पिताकी अुनके प्रति रही भक्तिका ही यह सुफल है । अैसी अनेक भावनाओंसे मैं हर्षित हो रही थी । अीश्वरसे अेक ही प्रार्थना कर रही थी कि मुझे परीक्षामें पार अुतारना, मेरे प्रभु ! रास्तेमें दो जगह ठहरे । चागेरगांवसे सुशीलाबहन आनेवाली थी, परन्तु वे दूसरे रास्तेसे गअी ।

बीचमें ही सतीशबाबू (बाबा) और चारुदा आ पहुंचे । ठीक नौ बजे हम यहां (मासिमपुर) पहुंचे ।

मासिमपुर

७-१-१९४७, दोपहरके दो बजे

बापूजी अिस समय कात रहे हैं और मैं डायरी लिखने बैठी हूं । हम यहां नौ बजे पहुंचे । यहां किसीका कोअी घर नहीं था । जहां देखो वहीं जले हुअे मकान थे । निर्मलदा जल्दी आ पहुंचे थे । निर्मलदाने अपना सामान आप ही अुठाया था । बड़े सिद्धान्तवादी आदमी हैं ।

बाबा (सतीशचन्द्र दासगुप्ता) और अुनकी मंडलीने जो 'फोल्डिंग हट' बनाया है अुसे खडा किया गया है । नीचे घास है । अपर चटाअी बिछाअी है । दो खाटें हैं, अेक बापूजीकी और दूसरी मेरी । छोटी-छोटी खिड़कियां और रोशनदान रखे गये हैं । पीछेकी ओर बापूजीकी मालिश हो सके, अैसा स्थान रखा गया है । कमोड रखनेकी भी छोटी कोठरी-सी बनाअी गअी है । छोटीसी होने पर भी यह झोंपडी छोटी-बड़ी सारी सुविधाओंवाली और बहुत रमणीय है । अूपर तिरंगा राष्ट्रध्वज फहरा रहा है ।

बापूजीने सुबह आते ही पहले यह झोपड़ी देखी । फिर बाहर अेक पटिये पर जब मैं अुनके पैर गरम पानीसे धो रही थी तब (नंगे पैर चलनेसे बापूजीके पावोंमें छाले पड़ गये हैं । बापूजीके पाव बड़े स्वच्छ और कोमल है । हमारे हाथोंसे भी वे पावोके तलुअे ज्यादा स्वच्छ रखते हैं । तलुओमें जरासा भी मैल या कालापन नहीं होता।) वे बोले, "तुमने देखा कि सतीशबाबूने मेरे अिस महलके लिअे कितना परिश्रम किया है? अिसके अलावा, अुठानेवालेको अेक जगहसे

दुसरी जगह ले जाना आसान हो, अिसके लिअे छोटे-छोटे हिस्से बनाये है, ताकि छोटा बच्चा भी अेक हिस्सा अुठा सके । अिन्होंने मुझ पर अैसा प्रेम बरसाया है । परन्तु अैसे अपार प्रेमको स्वार्थी बनकर मैं ही कैसे स्वीकार करूं? अिसलिअे अपने मनमें मैंने निश्चय किया है कि यह महल अब किसी और गांवमें नहीं ले जाया जायगा । अुसका अुपयोग अेक छोटासा अस्पताल बनानेमें होगा या अैसे ही किसी और कामके लिअे किया जायगा । मैं तो जहां तहां, जो जगह मिलेगी वही, आरामसे पडा रहूंगा । कोअी जगह नहीं मिली तो अंतमें यहां पेड़ कितने अधिक है? ये हमें कहां अिनकार करते हैं? अुनके नीचे आरामसे पड़े रहेंगे । जैसे रामजीको निवाहना होगा वैसे निवाहेगे । अिसकी चिन्ता हम किस लिअे करें? गांवोंमें जो भी कार्यकर्ता गये है अुन्हें मैंने कह दिया है कि जिस गांवमें बैठो वहींके लोग तुम्हें खाने-पीनेको दे, जैसे कुटुम्बके आदमियोको खिलाते है अुसी तरह । कार्यकर्ता अुनके कुटुम्बी बन जायं । वे यह भाव न दिखायें कि हम कुछ है अथवा हम तुम्हारी सेवा करने आये है अिसलिअे तुम पर अुपकार करने आये है । अगर अैसा भाव दिखायेंगे तो वे टिक नहीं सकेंगे । यदि ये बीमार पडें तो गावोंमें जो दवा-दारु और वैद्य-हकीम मिलें अुन्हीसे अथवा पंचमहाभूत जो कुछ दें अुसीसे संतोष मानें । यही नियम तुम्हारे लिअे और मेरे लिअे भी है । तुम देखना अिस निश्चयका परिणाम अद्भुत हो गा। अिसमें मुझे जरा भी शंका नहीं ।

पैर धोकर मैंने बापूजीकी मालिश की । मालिशमें बापूजी बीस मिनट सो लिअे । दो बजेसे अुठे थे । रातके दोसे दिनके पौने दस तक सतत आठ घंटे काम किया । नहाने-धोनेमें साढे ग्यारह हो गये । आज पहला ही दिन है, अिसलिअे हर काममें थोडी देर हुअी । भोजनमें आठ औंस दूध, अुबाला हुआ शाक, दो साखरे और अेक ग्रेपफ्रूट लिया ।

भोजनके समय सुशीलाबहन और प्यारेलालजी बैठे थे, 'अिसलिअे मैं नहाने-धोने और दूसरा काम निबटानेमें लग गअी । तीन बजे बापूजी बंगलाका पाठ करते करते आध घंटे सो लिये । मुझे भी पैरोमें घी मलकर सो जानेको कहा । परन्तु मुझे और बहुत काम था, अिसलिअे मैं सोअी नहीं । साढ़े तीन बजे बापूजी अुठे । नारियलका पानी पिया । डाक देख और पढ़कर बापूजीने अपनी डायरीमें कुछ नोट किया । पौने चार बजे मिट्टी ली । अब्दुल्ला साहव और जमान साहबके

साथ निराश्रितोंके बारेमें बातें की । मिट्टी लेते ही 'रिलीफ कमेटी' की बैठक शुरू हो गअी । परन्तु मैं अुसमें भाग न ले सकी । अुसमें बैठती तो दूसरा थोड़ा जरूरी कामकाज रह जाता । अिसलिअे अिच्छा होते हुअे भी अुसमें शामिल नहीं हुअी । अन्नदाबाबूके साथ लगभग दो घंटे निराश्रितोंके प्रश्न पर चर्चा चली । बापूजी मानते हैं कि निराश्रितोंको दान देनेके बजाय अुन्हें स्वावलम्बनकी ओर मोड़ना चाहिये । कुछ दान भले देना पडे, मगर कैवल दानसे तो 'मुफ्तका खाना और मस्जिदमें सोना' अिस कहावतके अनुगार अुनकी वृत्ति हो जायगी ।

ठीक पांच भजे प्रार्थनामें गये । प्रार्थनामें रामधुन शूरु की कि मुसलमान भाअी प्रार्थनामें से अुठने लगे। परन्तु प्रार्थना जारी रखी । प्रार्थनासे पहले शामको बापूजीने अेक केलेका गूदा और आठं औस दूध पिया, और साढ़े सात बजे अेक औंस गुड़ लिया ।

अेकके बाद अेक दर्शनार्थी और मुलाकाती आते गये, परन्तु साढ़े नौके बाद निर्मलदाने सबको मना कर दिया । वैसे बहुत कुछ काम निर्मलदा ही निबटा देते हैं ।

थोड़ा घुमनेके बाद बापूजीके पैर धोये । बापूजीने बंगलाका पाठ किया, मैंने बिछोने वगैराका रातका काम पूरा किया । साढ़े नौ बजे बापूजी बिस्तर पर लेटे । बापूजीके सिरमें तेल मलकर और पैर दबाकर मैंने थोड़ेसे नोट लिखनेके लिअे आध घंटेकी छूट्टी मांगी । बापूजीने अधिकसे अधिक दस बजे सो जानेको कहा । आजकी डायरी टुकडे-टुकडेमें लिखी गअी है । डर था कि सब काम पूरा नहीं कर सकूंगी, परन्तु आज कोअी विशेष कठिनाअी नहीं हुअी । सवेरे रसोअी और मालिशका समय अेकसाथ होनेसे मैं कूकर रखनेको ठहरती हूं अुतनी बापूजीको देर हो जाती है । बापूजीने खाखरे दूसरे किसी समय बनाकर रखनेका आदेश दिया । यद्यपि अुन्होंने खाखरेकी जगह मुरमुरेसे काम चला लेनेको कहा, परन्तु मैंने अिनकार कर दिया । अिसलिअे अन्य किसी समय बनाकर रखनेको कहा, ताकि सवेरे समयकी खीचतान न हो ।

प्रभुकृपासे अिस प्रकार आजका पहला दिन बहुत अच्छी तरह निर्विघ्न पूरा हुआ ।

बापूजीकी डायरीकी नकल की । ठीक दस बजे हैं । मैं भी अब बापूजीको दिये हुअे वचनके अनुसार सोने जाती हूं ।

फतहपुर,

८-१-१९४७, बुधवार

बापूजीने दो बजे मुझे जगाया । जाजूजीको पत्र लिखवाया । अुसमें . . . के प्रत्रका अुल्लेख किया। अेक पत्र बिहारके सबधमें राजेन्द्रबाबूके नाम लिखवाया । फिर मेरी डायरी सुनी । अब रोजकी रोज सुनकर किसी भी समय हस्ताक्षर कर देनेको कहा । "महादेव और प्रभा काम करते थे अुसी ढंगसे तुम्हें करना सिखाना चाहता हूं । तुमने बहुत कुछ सीख लिया है, फिर भी अभी बहुत सीखना बाकी है।" बापूजीने डाक लिखवाअी, फिर मैंने पढ़कर सुनाअी । अितनेमें प्रार्थनाका समय हो गया ।

प्रार्थनाके बाद तीन-चार दिनकी मेरी डायरीमें हस्ताक्षर किये और बादमें बापूजीने निर्मलदाके साथ काम किया ।

हम ठीक सात बजे मासिमपुरसे यहांके लिअे रवाना हुअे । साथमें कुछ स्थानीय स्वयंसेवक है । थोड़ा थोड़ा सामान सबने अुठाया । साढ़े आठ बजे यहां पहुंचे । रारतेमें मुसलमानभाअी मिलते थे । बापूजी सबको सलाम करते, परन्तु वे लोग अिस तरह चले जाते थे मानों कुछ जानते ही न हों । मैंने बापूजीसे कहा: "आप किसलिअे सलाम करते हैं, जब अिन लोगोंको कुछ पड़ी ही नहीं है ?" बापू बोले, "अिसमें हमारा क्या जायगा ? कभी न कभी ये जरूर समझेंगे । हमें कभी नम्रता नहीं छोडनी चाहिये । ये लोग यही मानते हैं कि यह हमारा दुश्मन आ गया है, जब कि मुझे तो साबित करना है कि मैं किसीका दुश्मन नहीं, सबका मित्र हूं, सेवक हूं । और यह दावा मैं तभी कर सकता हूं जब मुझमें और मेरे साथ रहनेवालोंमें पूरी नम्रता हो . . . ।"

रास्तेमें रामधुन, भजनादि कलकी तरह ही चले ।

यहां अेक पाठशालामें हमारा पड़ाव है । यह पाठशाला मुसलमानोकी है । बापूजीके पैर धोये कि कुछ मुसलमान भाअी बापूजीसे बातें करने आ गये । मुझे तो लगा कि सिर्फ गप्पे ही लगाने आये है । परन्तु बापूजी सबकी बात बहुत धीरजसे सुन रहे थे । बापूजी अुन लोगोंके साथ बातें कर रहे थे, अुस बीच मैंने अुनके नहानेके लिअे खंभे गाडकर अुनके चारों ओर कनात बांध ली और मालिशके लिअे भी वैसी ही व्यवस्था कर दी । कमोड भी अुमी बाथरूममें लगा दिया । बापूजीके लिअे शाक भी अुबलनेको रख दिया और खाखरे भी बना लिये। हमारे साथ आअी. अेन. अे. वाले सरदार जीवनसिंहजीकी टोली है । ये लोग पत्थरके चूल्हे तैयार करके बाहर दाल-रोटी बनाते थे । अुसी तरह अेक दूसरा चूल्हा बनाकर अुस पर बापूजीके लिअे नहानेका पानी रखा । हवा और ठंड खूब लग रही थी । बापू भी मालिशमें सो नहीं सके । मालिशके समय कहने लगे, “यहांके मुसलमान कैसी सयानी सयानी बातें करते हैं ! मानो बेचारे बिलकुल निर्दोष हों !”

साढे ग्यारह बजे कामसे निबटनेके बाद बापूजीको भोजन कराकर मैं नहाने-धोने गअी । बापूजीने भोजनमें तीत खाखरे, आठ औंस दूध, शाक—यीस्ट और अेक ग्रेपफ्रूट लिया ।

यहां पानीकी भी बड़ी तंगी रहती है । बाहरसे बालटीमें लाना पडता है, सो ले आअी। मेरे और बापूजीके कपडे धोने और नहानेमें अेक बज गया । फिर भोजन किया । आज सरदार जीवनसिंहजीकी दाल-रोटी खाअी । रोटी पंजाबी थी । अितनी मोटी कि मुश्किलसे आधी खाअी जा सकी । परन्तु खाना स्वादिष्ट लगा । तीन पत्थर जमाकर अच्छी तरह पकाया था । सबने हाथोंहाथ काम किया ।

खाना खाकर बापूजीके पैर मलते समय देखा कि पैरोमें विवाअीयां पड़ गअी हैं जीर खून निकल आया है । अुन विवाअियोमें घी भरा । मेरी आखोमें आंसू आ गये । अंगूठेके जोड़में तो गहरा चीरा पड़ गया है । बापूजीकी अिस अुम्रमें कितनी कड़ी परीक्षा हो रही है । भारतके लोगोंका कैसा दुर्भाग्य है कि वे अिस महापुरुषको पहचान नहीं सकते ? क्या अीश्वर महापुरुषोंके यही हाल करता है? रामचंद्रजीने चौदह वर्षका वनवास भोगा । अिसलिअे आज वे अीश्वरके अवतारके

रूपमें पूजे जाते हैं । अिस प्रकार दुनियाको सबक देनेके लिअे अीश्वर अवतार लेता ही है । जब जब अधर्म फैलता है तब तब अीश्वरको अवतार अवश्य लेना पड़ता है ।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युथानमधर्मस्य तदात्मानं सुजाम्यमहम् ॥

गीताके अिस श्लोकका अेकाअेक मनमें स्मरण हो आया । अिस श्लोकका यहां मैं प्रत्यक्ष दर्शन कर रही हूं ।

दोपहरको कातकर मिट्टी लेते लेते बापूजी मुसलमान भाअियोके साथ बातें करने लगे । अुन बातोंमें बापूजीने कहा, "यदि आप लोग हिन्दुओंको नहीं अपनायेंगे तो आपकी हालत खराब होगी । यहां अथवा जहां भी आप बहुमतमें है, वहां किसी दुर्बल हिन्दुको मारनेका काम तो अेक छोटा बच्चा भी कर सकता है । अैसा नीच काम करनेको आपके कुरान शरीफमें कहीं भी लिखा हो तो मुझे बताअिये । मैं तो कुरान शरीफका विद्यार्थी हूं । और फिर मुसलमानोंमें मेरी गहरी दोस्ती रही है । आज भी जैसी मेरी यह लड़की है वैसी मेरी दूसरी बहुतसी मुसलमान लड़कियां हैं । अुनमें से अेक अम्तुस्सलाम है, जो यहां अुपवास कर रही है । अुसे तो आप जानते ही होंगे । वह लड़की अैसी है कि मेरे लिअे जान दे दे । अिसलिअे मेरी आपसे नम्र प्रार्थना है कि जो कोअी अैसा अनुचित काम करे अुसे चेतावनी दीजिये, ताकि आपका भविष्य अुज्ज्वल बने ।"

बादमें मुसलमान भाअियोने बिहारकी और दूसरी दलोलें दी । अिस बीच बापूजीको जरा अूंघ आ गअी । रातके दो बजेसे अुठे है, अिसलिअे खूब थक गये हैं । परन्तु अूंघ आ जानेके लिअे बापूजीने अुन लोगोंसे माफी मांगी । नम्रताके अैसे पाठ मिल रहे है ।

चार बजे बापूजीने दूध, फल, तीन संतरे और थोडासा शाक लिया । अुसके बाद प्रार्थनामें गये । प्रार्थनामें मुसलमान भाअी बहुत थे । प्रार्थनासे आने पर हरेरामजी मिले । (ये हरेरामजी बिडलाजीके यहां नौकर है । हरिजन है । दिल्लीमें बापूजीकी खूब सेवा करते थे । अुन्हें

बिडलाजीने बापूकी सेवा करने भेजा था । हरेरामजी बडे ध्यानपूर्वक बापूजीकी सेवामें तल्लीन हो जाते थे।)

हरेरामजी बापूजीको प्रणाम करने आये । बापूजीने अुनसे पूछा, “क्यों आये हो ?" और हालचाल पूछे । फिर बापूजीने अिनकार करते हुअे कहा: “यह तपस्या है । मैं बिडलाजीसे यह कहूं कि मेरे लिअे रसोअिया, मोटर-गाडी, विमान, नौकर-चाकर सबकी व्यवस्था कर दो तो वह कर देंगे । परन्तु अिसका नाम यज्ञ नहीं । यज्ञमें कठिनाअी तो आती ही है । और कठिनाअीके बिना अिसे ‘तप’ कैसे कहा जाय?” अितनी बात समझाकर अुन्हें विदा किया ।

बेचारे बडे निराश हुअे । मेरे पास आकर कहने लगे, तुम बापूसे कहो कि मुझे रख ले । मैंने कहा कि बापूजी जब बिडलाजीकी नहीं मानते तो मेरी तो मानने ही क्यों लगे? और मैं अुनसे कहूं तो वे मुझीको यहांसे निकाल दें ।

घूमते वक्त अेक मुसलमान भाअीके आग्रहसे अुनके घर गये । जाते-जाते बड़ी तेजीसे चले। सुशीलाबहन आ गअी थी ।

घूमकर आने पर बापूजीने गरम पानी और शहद लिया । प्रार्थना-प्रवचन और डाक देखी । सुशीलाबहनको थोडासा लिखवाया ।

मैंने अपनी डायरी लिखी । बापूजीका और अपना बिस्तर किया । सुबहके लिअे सामान बांधा और बापूजीके पाव धोये । दस बजे अुनके लेटनेके बाद पैर दबाये और सिरमें तेल मला । बापूजीके सोनेके बाद अुनका सूत अुतारा। फिर कताअी की । अितनेमें साढे दस हो गये । यह बापूजी अच्छा मही लगा । कहने लगे, “मैं सोने जाअु अुसके बाद अधिकसे अधिक पंद्रह मिनटसे ज्यादा जागनेकी तुम्हें छुट्टी नहीं है । यदि काम अधूरा रहे तो सुबह मुझे कह दो कि अितना काम पुरा नहीं हुआ ।”

मैं पौने ग्यारह बजे सोअी ।

(बापू, ९-१-४७, फतहपुर)

दासपाड़ा,

९-१-१९४७, गुरुवार

आज भी फतहपुरमें बापूजीने मुझे दो बजे जगाया । और रातमें जल्दी सो जानेको कहा । बादमें लालटेन जलाकर बापूजीने चरखा-संघकी जो लम्बी रिपोर्ट भैजी है अुसे पढा; अुसीमें सारा समय बीता और प्रार्थनाका वक्त हो गया ।

प्रार्थनाके बाद बापूजीने मेरी डायरीमें हस्ताक्षर कराये । फिर अुन्हें गरम पानी और शहद देकर रस निकालने गअी । अितने समयमें कल लिखाअी हुअी डाक पर हस्ताक्षर करके बापूजीने मुझे सुधार बताये ।

फतहपुरसे यहां आनेके लिअे हम ठीक सात पैंतीसको निकले । यहां अेक छोटासा झोपड़ा है, परन्तु बड़ा साफ-सुथरा है । घरमें अेक बूढेके सिवा कोअी नहीं था । अुसका अिस दंगेमें दूसरा बहुत बुछ स्वाहा हो गया है । नारियलके पत्तोकी छत है । गुबजवाले घासके झोपड़े जैसा लगता है । बापूजीको यह झोपडा खूब पसंद आया ।

बापूजीक पैर धोकर मैंने मालिश और स्नानकी तैयारी की । आज तो सरदारजीके आदमियोंने ही खड्डा खोदकर मालिश और नहानेकी सुविधाके लिअे परदे डाल दिये । कर्नल जीवनसिंहजीने बापूजीके लिअे साग काटा, और मैं बापूजीके लिअे कूकर किस तरह रखती हूं, यह सब दिलचस्पीसे देखा । मैंने बापूजीसे सरदारजीकी बात की तो वे कहने लगे, “ये बड़े जबर्दस्त सैनिक हैं । सुभाषबाबूके साथ खूब काम किया है । और तलवार-बन्दूकके दाव बढ़िया जानते हैं । परन्तु यहां पर अहिंसक बनकर बैठे हैं । यह कोअी अैसी-वैसी बात नहीं मानी जा सकती । परन्तु मेरे पास अैसे बहुत सैनिक रहे हैं । अफ्रीकामें लडाअीके समय जो सेना थी अुसको अपना काम करना ही पड़ता था । प्रत्येक काम हिस्सेके अनुसार बांट लेते थे । अुसमें

अच्छे अच्छे पड़े-लिखे भारतीय तो खाना पकाते ही थे, परन्तु गोरे भी अुत्साहसे शरीक होते थे। अिसलिअे जीवनसिंहजी न पकाते तो मुझे आश्चर्य होता, पकानेसे नहीं होता। जो सैनिक हो गया है, वह हर कामका जाननेवाला होना ही चाहिये।"

मालिशमें बापूजी बीस-पच्चीस मिनट सोये। नहाना दस बजे पुरा हुआ। खानेके समय मारवाड़ी रिलीफ सोसायटीके अेक भाअी जो पुस्तकें लाये थे अुन्हें देखा।

भोजनमें तीन खाखरे, शाक, दूध, संतरे और खोपरेके सन्देशके दो टुकडे लिये।

बापूजीको खिलानेके बाद नहाकर मैंने कपड़े धोये और जीमकर निबटी तब तक साढ़े बारह हो गये। बापूजी लिखनेके काममें लगे हुअे थे, अिसलिअे मैंने अुनके बरतन मलकर सूत अुतार लिया। बादमें अुनके पैरोमें घी मला। बापूजीके लिअे गुड़ तैयार किया। बकरीका दूध आज लगभग अढाअी सेर आया था। बादमें कुछ पत्रोंकी नकल की। थोडी देर सोअी। तीन-साढ़े तीन बजे बापूजीने जगाया। साढ़े तीन बजे अुनके पेडू पर मिट्टीकी पट्टी रखकर पैर दबाये। शामको बापूजी शाक नहीं लेनेवाले थे। दुध और खजूर लेनेवाले थे। मैंने बापूजीकी डायरीकी नकल करके सामान बांधा। अिसमें साढ़े चार बज गये। बापूजीको दूध देकर अपना कामकाज किया, अितनेमें प्रार्थनाका समय हो गया।

प्रार्थनाके बाद स्थानीय मुसलमान भाअी मिलने आये। बापूजीने शान्ति- समिति बनानेका सुझाव दिया।

प्रार्थनामें बहुत थोड़े आदमी थे, अिसलिअे बापूजीने कहा, "आप अितने थोड़े हैं, यह सुझे पसंद भी है और नापसन्द भी। पसन्द अिसलिअे कि लोग अपना मुंह दिखाने या मुझे देखने आये, अिससे तो अुनका न आना ही अच्छा है। परन्तु मैंने अेक बात अैसी सुनी है कि बहुतसे अिस डरसे नहीं आते कि प्रार्थना करने जायेंगे तो पकडे जायेंगे अथवा मेरे साथ जो पुलिस दल है वह मारेगा। मैं आप सबसे कहता हूं कि अगर मुसलमान यह कह दें कि गांधीका हम कुछ होने नहीं

देंगे तो आपको पुलिसका जो झूठा डर है अुसे सरकार पर दबाव डालकर भी मैं मिटा सकता हूं। मैं तो आपका मित्र हूं। आपमें से किसीको पकड़वाने या तग करनेके लिअे मैं यहां नहीं आया हूं।"

बापूजी और मैं साढ़े नौ बजे सोये। रोजकी तरह पैर दबाकर, तेल मलकर और बापूजीको प्रणाम करके मैं तुरन्त ही सो गअी। अिससे वे बहुत ही खुश हुअे। "हां, अितनी जल्दी सोने लग जाओ तब तो मेरे आनन्दका पार न रहे। परन्तु अिस सीखको अेक कानसे सुनकर दूसरे कानसे निकाल तो नहीं दोगी?"

(बापू, १०-१-१९४७, दासपाडा)

दासपाडा,

१०-१-१९४७, शुक्रवार

रोजकी तरह बापूजी दो बजे अुठे। मुझे जगाया। गुजराती पत्र ही लिखवाये— मावलंकरदादा, मणिलालकाका, सुशीलाकाकी, रामदासकाका और कहानाको। अितनेमें प्रार्थनाका समय पास आ गया। दातुन-पानी करके प्रार्थना की। प्रार्थनके बाद बापूजीने शहदका गरम पानी लेते लेते मेरे साथ लगभग चालीस मिनट बातें की।

आजकी बातोंमें बापूजीकी नम्रता चरम सीमाको पहुंच गअी। "मेरा आरोप तुम पर था। मैं कहता हूं कि मैंने वह आरोप तुम पर बिलकुल गलत लगाया है। मैं तुमसे कहीं बड़ा, तुम्हारा दादा हूं। अत तुमसे माफी तो क्या मागूं? फिर भी माफी मागूं तो कुछ बेजा नहीं होगा। परन्तु तुम अैसा नहीं चाहोगी। मुझे आत्म-संतोष यह हुआ कि मैंने अनजाने अन्याय करके तुम्हें दबाया था, पर अुससे मैंने तुम्हें पहचाना। . . . की बात मैं आज मानता हूं और तुम्हें पहचान सकनेके लिअे आज आनंद अनुभव कर रहा हूं। यह विचार मेरे दिमागमें कलसे घूम रहा है कि मनुडीसे कहूं या नहीं? अुससे कहूं तो वह फूल तो नहीं जायगी? यह विचार भी आया। फिर नींद अुड गअी। घडीमें देखा। दो बजे थे। मुझे लगा कि चलो मनुडीको अुठाकर अुससे अितना कह देना मेरा धर्म है कि मेरे मनने अुसकी निर्दोषता स्वीकार कर ली है। कहीं मैं अिसमें खप जाअू तो? क्योंकि चारो तरफ अंधेरा ही अंधेरा देख रहा हूं। जहां तहां असत्य ही भरा है। अेक तरफ बिहारमें

दावानल फूट पड़ा है । कहीं भी मेल नहीं, अेका नहीं । अिसमें मुझे टिके रहना है । कहाँ तक टिकूंगा यह नहीं कह सकता । तुम्ही देखो न, रोज दस-ग्यारह बजे सोकर दो-अढाअी बजे अुठता हूं, और काम करता हूं । आराम तो जरा भी नहीं मिलता । फिर भी अीश्वर कैसे टिका रहा है, अिसीका आश्चर्य होता है । अिसलिअे तुम्हें यह बात कह दी । अेकाअेक मनमें विचार आया कि कहीं मैं अिस दुनियामें न रहूं तो तुम्हारे बारेमें अपने खयालकी थोडी झांकी तो तुम्हें करा दूं ।"

आदर्श विवाहके बारेमें अपने विचार बताते हुअे बापूजी कहने लगे, "विवाह करना पाप नहीं, परन्तु आजकल हमने अिसे पाप जैसा बना डाला है । विवाह करनेका अर्थ यह है कि स्त्री और पुरुष साथ मिलकर संसारका जो जीवन-चक्र चल रहा है अुसे जारी रखनेमें अर्थात् संसारके दु:ख दूर करनेमें सहायक हो । दोनों अेक गाड़ीके दो पहिये है । विवाहका अर्थ यह नहीं है कि विषय-वासनाका पोषण किया जाय, बहुत बच्चे पैदा किये जाय, जो यहां-वहां भठकते फिरे, जिन्हें खानेके भी लाले पड़ें तो दूध तो मिले ही कहांसे ? विवाहका यह अर्थ नहीं कि पति-पत्नी आपममें झगड़ते रहे, अेक-दूसरे पर चिढते रहे और दोनोंके शरीर नाजुक हो जाय । अिसलिअे विवाह करनेसे पहले मैं सब लडकियोंसे विचार करनेको कहता हूं । विवाह करनेके बाद ब्रहमचर्यका पालन करना बहुत कठिन होता है । यदि ब्रहमचर्यका पालन करके दोनों विचार-पूर्वक जीवन बितायें तो कितने अुंचे अुठ जाय? मैं अितना अुंचा अिसलिअे नहीं अुठा हूं कि मैं बेरिस्टर बन गया या बाकी अितनी पूजा आज अिसलिअे नहीं होती कि वह मेरी पत्नी थी; बल्कि अिसका कारण यह है कि हम दोनोंने ब्रहमचर्यका पालन किया । अिसमें भी बा यदि दृढ़ न रही होती तो भी हम अितने अूंचे नहीं अुठ सकते थे । लोगोंने मुझे जो महात्माका पद दिया है अुसका श्रेय बाको है । ब्रह्मचर्यका पालन करनेका अर्थ है निर्विकार होना । जो निर्विकार हो अुसके सामने अप्सरा भी आकर क्यों न खड़ी रहे, तो भी अुसकी दृष्टि दूषित नहीं होती । जो निर्विकार है अुसमें क्रोध, मोह, असत्य, हिंसा, चोरी, झूठ, परिग्रह आदि कुछ भी नहीं हो सकता । अथवा मैं तो यहां तक जाअुंगा कि अुस आदमीमें अैसे अवगुण प्रवेश ही नहीं कर सकते । अिन सबके साथ अुसके मनमें यदि रामजी रमते हों तो कभी बीमार पडना तो क्या अुसे अेक फूंसी तक न होगी और वह

मृत्युसे रामजीका नाम लेते हुअे हंसते हंसते अेक मित्रकी भांति भेट करेगा । अुसे रोगसे पीड़ित होकर मरनेका मौका ही नहीं आ सकता । यह हुआ विवाहित जीवनका बड़ा लाभ । परन्तु यह लाभ तो कोअी विरले ही आदमी प्राप्त कर सकते हैं । यह लाभ अुठाने जितनी हमारी आत्मा प्रबल न हो तो कुछ भी नहीं हो सकता | . . . नहीं तो . . . के जैसे हाल होते हैं ।

"कोअी काम करना हो तो अुसके बारेमें हमें पूरा ज्ञान होना चाहिये । अुदाहरणार्थ रोटी (बाजरे) की कैसे बनाअी जाती है, यह तुम्हें मालूम है? मेरी मां की रोटी अभी तक मुझे याद आती है । आजकल तो चकले पर थापकर बनाअी जाती है । मेरी मां, बा वगैरा सब हाथसे थाप-थापकर बनाती थी । अिसमें चकलेकी जरूरत नहीं पड़ती । हां, अेक हाथ किसी समय काम ने करे तो शायद चकलेकी जरूरत पड़े । परन्तु अधिक मीठी तो तभी लगती है जब दोनों हाथोंसे थापकर बनाअी जाय । तुम्हें तो अिस स्वादका शायद पता भी नहीं होगा ।

"अिसी तरह . . . अिन दो शक्तियोंके मेलसे अधिक सेवा करनेके लिअे विवाह करनेका मेरा अर्थ है । सेवा अर्थात् देशसेवा करना । देशसेवाका अर्थ यह नहीं है कि मंत्री बनें तो ही सेवा हो सकती है । घरको संभाल रखना भी देशसेवा है । अुदाहरणके लिअे, रसोअी बनाना । रसोअी अिस ढंगसे बनानी चाहिये कि अनाजका अेक कण भी अैसे कठिन समयमें बेकार न जाय । थोड़ी बानगियोंमें शरीरके लिअे आवश्यक सभी तत्व मिल जाने चाहिये । कपड़ा यह सोचकर पहने कि शरीरकी रक्षाके लिअे पहनना है । हमारे देशका अेक भी आदमी नंगा-भूखा न रहना चाहिये । जितनी जरूरत हो अुतना ही संग्रह किया जाया । आजकल बहुतसे घरोमें स्त्रियां किफायत तो करती है, परन्तु संग्रह अितना करती है कि जिससे दूसरोंको खाने-पीने, पहनने वगैराकी चीजे नहीं मिलती अथवा महंगी लेनी पड़ती है । यह स्वार्थपूर्ण मितव्यय कहा जायगा । अिसलिअे अैसी वृत्ति पैदा करनी चाहिये कि हम जो कुछ करे वह अपने वंशको ध्यानमें रखकर करे । अैसी दृष्टि रखकर काम करनेवाली गृहिणी मेरी दृष्टिसे बड़ीसे बड़ी देशसेवा करती है । आजकल तो देशसेवाका नाम बड़ा हो गया है । लोग मानते हैं कि अखबारोंमें फोटो और नाम छपना अथवा जेलमें जाकर मंत्री बन जाना ही सच्ची देशसेवा है । अिसलिअे सभी मंत्री बनना और सत्ता लेना

चाहते है । अैसी हालतमें सच्चे मंत्री कैसे काम कर सकते है ? बेशक, मंत्रियोंकी भी देशको जरूरत है । परन्तु मंत्री . . . मंत्री-पदके लिअे योग्य हो तो ही शोभा देता है । अुस पदको सुशोभित करना हमारा कर्तव्य हो जाता है । अितना समझ सकें तो अेक अनपढ़ से अनपढ़ स्त्री भी देशकी सेवा करती है । ये सब विचार तुम्हीको अिस ढंगसे समझाता हूं । . . . को भी समझाये तो है, परन्तु जरा दूसरे ढंगसे । अुसका रहन-सहन भिन्न है । वह विवाहित थी । तुम अभी बच्ची हो । तुम सत्रह वर्षकी हो गअी, परन्तु मेरी दृष्टिमें तो छः-सात वर्षकी बालिका ही हो । . . .

"यह नोआखालीका यज्ञ तुरन्त पूरा हो जायगा, अैसा सोचना आकाश-कुसुम जैसा है, अिसलिअे बेकार है । अिस समय मुझे अैसे चिह्न दिखाअी नहीं देते कि हिन्दू-मुसलमानोंका हार्दिक वैमनस्य बिलकुल नष्ट हो जाय । वह तभी मिटेगा जब मुझमें पूर्णता आ जायगी । परन्तु अभी तक अितना रामनाम हृदयगत हो गया है अैसा दावा नहीं है । अुस दिशामें मेरा प्रयत्न जरूर है ।

"आजकी सब बातोंसे तुम्हें गंभीर बननेका कोअी कारण नहीं । मांके नाते मैं अपना फर्ज अदा कर रहा हूं । मेरे मनमें जो भरा है वह तुम्हें पिला रहा हूं । अपनी डायरीमें ये बातें विचारपूर्वक लिखना, क्योंकि मुझे भय है कि आजकी हमारी बातें तुम्हें जरा कठिन मालूम होंगी । साथ ही अेक बातमें से दूसरी अनेक बातें निकल आअी है । परन्तु आजकी बातें तुम्हारी जीवन-रचनाके लिअे बुनियादी है । मैं मर जाअूंगा तब तुम्हारे लिअे, जयसुखलालके लिअे, तुम्हारी बहनोंके लिअे ये अुपयोगी सिद्ध होगी । मैं पुरुष होकर भी तुम्हारी मां बना हूं । अिसलिअे मेरा भार आजकी बातें तुम्हें कह देवेसे हलका हो गया ।"

(ठीक है, परन्तु लंबा लिखा है । बापू, लामचर, ११-१-१९४७, शनि ।)

जगतपुर,

१०-१-१९४७, शुक्रवार

अुपरोक्त बातें बापूजीने सवेरे तडके ही कहीं थी । अुन्हें लिखनेमें मेरा पूरा अेक घंटा गया । बापूजी प्रार्थनाके बाद प्रवचन सुधारनेमें और अपने काममें लग गये और मैंने यह सब लिखनेका काम पूरा किया । बापूजीने अभी देखा नहीं । मुझे डर है कि बापूजीको लंबा लगेगा । बापूजी ७-४० पर बाहर आये और हमारी यात्रा शुरू हुअी । बंगलाका पाठ लिखनेमें साढे सात बजकर दस मिनट हो गये । साधारण नियम साढ़े सात बजे यात्रा शुरू करनेका रखा है ।

दासपाडासे यहां आनेका हमारा रास्ता साफ किया गया था । परन्तु मुसलमान भाअियोंने अुसे गोबरसे और जहां तहां मलसे गंदा कर दिया था । यह भी मालूम हुआ कि अैसा जान-बूझकर किया गया है । बापूजी कहने लगे, "यह मुझे अच्छा लगता है । अिस प्रकार यदि मेरे प्रति अुनका रोष बाहर निकले तो अिसमें कोअी दोष नहीं ।"

यह झोपडा अेक हिन्दूका है । आकर सदाकी भांति मालिश-स्नान वगैरासे निबटनेमें साढ़े दस हो गये । मालीशमें बापूजी चालीस मिनट सौ गये । दोपहरके ग्यारह बजे भोजन हुआ । भोजनमें दो खाखरे, शाक, दूध और अनन्नास लिया । साढ़े बारहसे अेक तक आराम किया । अेक बजे अुठकर नारियलका पानी पिया और काता । दो बजे प्यारेलालजी आये, अुनके साथ बातें की । अितनेमें बहनें मिलने आ गअी । बहुतसी बहनोंको जबरन् मुसलमान बनाया गया था। कुछ बहनें अैसी दु:खी थी मानो अुनके पति और पुत्रकी हत्या हुअी हो । बापूजीके सामने हिचकिया भर भर कर रोते हुअे अपना हृदय अुंडेल रही थी । बापू बोले, "तुम अिस तरह रो रही हो और मैं हिचकिया भरकर तुम्हारी तरह रोता नहीं । तुम्हारे और मेरे बीच अितना ही फर्क है । मेरा हृदय रो रहा है । तुम्हारा दु:ख मेरा दु:ख है । अिसीलिअे यहां आया हूं । रामनामके सिवा आश्वासन प्राप्त करनेकी और कोअी दवा नहीं है । सबसे बडी दवा यही है । कितना ही रोयें तो भी गअी हुअी चीज वापस नहीं आयेगी । यह जान लें तो फिर अिस प्रकार दु.खका कारण नहीं रह जाता ।"

आश्वासनके ये शब्द बापूजी बड़ी गंभीरतासे कह रहे थे । और जैसे जैसे वे बोलते जाते थे, वैसे वैसे वातावरण गंभीर बनता जा रहा था । ये बहनें मिलने आअी तब अैसा करुणामय वातावरण था कि अच्छे अच्छोका दिल भी काबूमें न रहे ।

साढ़े तीनसे चार तक बापूजीने मिट्टी ली । कुछ मुलाकाती आये हुअे थे, अुनसे मिले । डाकके पत्रों पर हस्ताक्षर किये ।

शामको केवल गुड़ ही लिया । दूध, फल सभी छोड दिया । कहने लगे : "आज मिलने आनेवाली बहनोंका दृश्य अैसा था जो आंखोके सामनेसे हट नहीं सकता । कौन जाने अभी अैसे और कितने दु:खद दृश्य देखना नसीबमें होगा !"

नित्यकी भांति प्रार्थना हुअी । वहांसे आकर घूमे । प्रवचन देखा । मुलाकाती आये थे अुनसे मिले । आठ बजे लेटे लेटे अखबार सुने ।

लगभग दस बजे बापूजी सो गये ।

मैंने अपना सामान मिलाकर पैक किया । डायरी पूरी की । बापूकी डायरीकी नकल की । साढ़े दस हुअे है; सोनेकी तैयारी है । बापूजीके १२० तार हुअे ।

बाबाने बापूजीके पैरोंमें लगानेको हेजलीन भेजा है । अुसे आज सोते समय लगाकर पट्टिया बांधी है ।

लामचर,

११-१-१९४७, शनिवार

जगतपुरमें रात बिताअी । दो बजे बापूजीने मुझे जगाया । मुझसे डायरी लिखनेके बारेमें पूछा । फिर पत्र लिखवाये । पहला पत्र माधवदास मामा (पू. कस्तूरबाके भाअी)को लिखवाया । और दूसरे . . . को लिखवाये । प्रार्थनाका समय हो जाने पर लिखाना बन्द किया । दातुन-पानी करके प्रार्थना की । दातुन करते हुअे आजकल मैं क्या खुराक लेती हूं, कब लेती हूं, अित्यादि बातें पूछी । अितने अधिक काममें भी बापूजी मेरी छोटी छोटी बातोंमें परिचित रहते हैं । प्रार्थनाके बाद अुन्हें गरम पानी देकर और रस तैयार करके बर्तन मले और सामान तैयार किया । सुबह मुझे काफी वक्त मिल गया । क्योंकि सुबहके लिअे जरूरी चीजें बाहर रखकर सारा सामान मैंने रातको ही बांध लिया था । साढे सात बजते ही बापूजीने चलनेकी तैयारी की । बापूजीके सूतकी

दुबटा किया । वे बाथरुममें गये अुतनी देरमें बिस्तर बांधा । घडीमें ठीक सात चालीस होने पर जगतपुर छोड़ा ।

रास्तेमें भजन और रामधुन जारी रही । बीचमें अेक बिलकुल जला हुआ घर देखा । वहां खूनके दाग भी थे | अैसा लगा कि वहां हत्याअें हुअी होंगी ।

मैंने बापूसे अपनी कलकी डायरी लिख चुकनेकी बात कहीं थी: अिसलिअे डाक और अपनी डायरी यहां पहुंचते ही बापूजीकी मेज पर रख दी । पैर धोते समय बापूजीने पत्र देखकर अुन पर हस्ताक्षर किये । मालिशमें डायरी देखने लगे । परन्तु थकावट थी, अिसलिअे सो गये ।

स्नानके बाद खाते समय मैंने अपनी डायरी सुनाअी । बापूजी थोडेमें लिखनेको कहते हैं, सगर मुझे थोडेमें लिखना नहीं आता । मैंने कहा, मुझे आपका अेक अेक शब्द लिखना है । बापू कहने लगे, “यह तुम्हारा झूठा मोह है, परन्तु मुझे जबरन कुछ नहीं कराना है । तुम जितना अधिक लिख सको लिखो । मुझे वह अच्छा लगेगा, क्योंकि मेरा खयाल है कि लिखनेसे अक्षर सुधरते हैं।”

खाते-खाते कलकी डायरीमें हस्ताक्षर किये । अुसमें भी लंबा लिखनेकी आलोचना की । परन्तु कुल मिलाकर बापूजीको वह अच्छा लगा । तुरन्त ही लिख ली थी, अिसलिअे कोअी खास बात छूटी नहीं थी ।

भोजनमें शाक, बारह औंस दूध, पांच बादाम और पांच काजूकी चटनी बनाअी । बादाम और काजू कराचीसे जयंतीभाअीने भेजे हैं । अुनका पारसल भठकता भठकता आज मिला ।

बापूजीके दायें पैरका अंगूठा दुख रहा है । और कोअी खास बात नहीं हुअी ।

जगतपुरसे लामचरका रास्ता बहुत ही खराब था । जमीन बहुत ठंडी थी और खेतोमें चलकर जाना था । अेक नया परिवर्तन यह हुआ कि आज पहला ही दिन है जब प्रत्येक मुसलमान भाअीने बापूजीकी सलाम ली और अुन्हें सलाम की ।

बापूजी अखबार सुनते सुनते जल्दी सो गये । दस बजे फिर अुठे । मैंने अिस बीच डायरी लिखी और घर पत्र लिखा । सूत अुतार रही थी के बापूजी जाग गये । बाथरूममें जानेके बाद बिस्तर किया । बापूजी साढ़े दस बजे बिछीने पर लेटे । अुनके सिरमें तेल मला, पैर दबाये और सदाकी भांति प्रणाम किया । अुन्होंने मुझ पर वात्सल्यपूर्ण हाथ फेरा । मैं कब सो गअी, अिसका पता ही नहीं रहा । काम खूब रहता है, परन्तु रातको नींद आनेमें पांच मिनट भी नहीं लगते ।

कारपाड़ा,

१२-१-१९४७, रविवार

कल डॉ. सुशीलाबहन नय्यरने बापूजीको रोज डेढ दो बजे अुठनेसे मना कर दिया । अिसका अुनके स्वास्थ्य पर असर पड़ रहा है । अतमें बापूजी समझ गये और जल्दी न अुठनेकी बात स्वीकार कर ली । परन्तु आज अपनी आदतके अनुसार डेढ बजे अुठ गये । मैं भी अुठी । परन्तु दोनों फिर सो गये और प्रार्थनाके समय अुठे । प्रार्थनाके बाद बापूजीने गरम पानी और शहद लिया तथा रस पिया । सुशीलाबहनके साथ बातें करनी थी, अिसलिअे और कोअी लिखनेका खास काम नहीं कराया ।

हम लामचरसे ७-४० को निकले । ८-४५ पर यहां पहुंचे । रास्तेमें . . . के साथकी बातोंमें अुन्हें सबके साथ मिलकर अेक हो जानेको कहा । कह सकते हैं कि कारपाड़ामें भाअी-बहनोंने भव्य स्वागत किया । यह गांव सुशीलाबहन पैका है । गांवके लोगों पर अुनकी बड़ी अच्छी छाप पडी है खास तौर पर स्त्रियां और लड़कियां अुनके प्रति बहुत आदर रखती हैं ।*

अुन्होंने बापूजीके स्नान और मालिशके लिअे सुन्दर व्यवस्था की थी अिसलिअे बापूजी पहुंचते ही सीधे मालिश और स्नानके लिअे चले गये । और समय भी वहुते बच गया । मालिश और स्नानके बाद भोजनमें शाक, संदेश, दूध, पांच बादाम और पांच काजू लिये । ये बादाम और काजू सुशीलाबहन बापूजीके लिअे बहुत समयसे बचा कर रखे थे, ताकि बापूजी अुनके घर आयें तब दिये जा सके । बापू कहने लगे, “यह तो शवरीक बेरों जैसी बात हुअी ।”

दोपहरको बहनोंकी सभा थी । अुसमें बापूजीने सबसे कातनेका अनुरोध किया । बहनें बहुत अधिक संख्यामें थी । कारीगरोंकी भी सभा थी । अिस प्रकार दोपहरका सारा समय अिन दोनों सभाओंमें ही चला गया । शामके भोजनमें दूध और थोडासा पपीता लिया । आज बापूजीने १५० तार लगभग ४५ मिनटमें काते । धनुष-तकलीसे काता था । शामको थकावद लग रही थी, अिसलिअे लगभग पौने नौ बजे ही सो गये । शामको छः बजकर छः मिनट पर मौन लिया । सरदार निरंजनसिह गिल आये थे ।

(बापू, नारायणपुर, १५-१-१९४७)

*सुशीलाबहन पै आजकल कस्तूरबा स्मारक ट्रस्टकी मंत्री हैं । नोआखालीमें बापूजीक साथ जितने कार्यकर्ता थे, अुनमें से प्रत्येकको अेक अेक गांव सौंपा गया था; अुसी तरह अिन बहनको यह गाय सौंपा गया था ।

शाहपुर,

१३-१-१९४७, सोमवार

चार बजे अुठे । आज प्रात-कालीन प्रार्थना कारपाड़ामें सुशीलाबहन पैने कराअी । नियमानुसार प्रार्थनाके बाद गरम पानी और शहद लिया । अेक तार कादिमखांके नाम अम्तुस्सलाम बहनके अुपवासके बारेमें किया । बापूजी डाक पढ़ते पढ़ते सो गये थे । ठीक साढे सात बजे अुठे । और सात चालीस पर कारपाड़ासे यहां आनेको रवाना हुअे । चलनेसे पहले सुशीलाबहनने सबके ललाट पर तिलक लगाया । बापूजीके साथ दोनों सुशीलाबहन थी: डॉ. सुशीलाबहन नय्यर और सुशोलाबहन पै । प्यारेलालजी भी साथ थे । अुन्होंने चलते-चलते मुझे गीताके १२ वें अध्याय सम्बन्धी प्रश्न समझाये ।

हम ठीक साढ़े आठ बजे यहां पहुंचे । आज मालिश और स्नान सब मैंने कराया । भोजनमें बापूने दो खाखरे, आठ औंस दूध, नीबू, कच्चा शाक और अेक संदेशका टुकड़ा लिया । खाते समय . . . के साथ खानगी बातें होनेके कारण मैं नहाने-धोने चली गअी और जल्दी काम पूरा कर लिया । बापूजी खाकर धूपमें जमीन पर लेटे । सिर पर छाया कर ली थी । शाम तक बाहर

खुलेमें ही रहे । सुचेताबहन दोपहरको आअी थी । अुनकी भयानक बातें सुनकर तो दिल कांप अुठता था । क्रूर ढंगसे हिन्दू स्त्रियोंकी अिज्जत ली गअी थी । डॉ. सुशीला नय्यर मुर्दोंकी जांच करने लामचर गअी और वहांसे अम्तुस्सलाम बहनकी परीक्षा करके साढ़े चार बजे लौटी ।

शामको आठ औंस दूध और खजूरकी आठ पेशिया भांप दिलवाकर ली । प्रार्थनाके बाद घूमकर जल्दी आ गये । सवा आठ बजे बापूजीके पैर धोये और वे सोये । पैरका अंगूठा अब ठीक है । बापूजी कहते हैं, "तुम सबने मेरी सेवा कर करके मुझे कोमल बना दिया है, अिसलिअे मेरे पैर भी कोमल बन गये हैं । अिसका फल तो मुझीको भुगतना चाहिये न ?"

(बापू, नारायणपुर, १५-१-१९४७)

भटियालपुर,

१४- १-१९४७

रोजकी तरह चार बजे ही अुठे । प्रार्थनाके बाद शाहपुरकी गृह-स्वामिनीके साथ बातें की । अुसने बापूजीसे कहा, "हमें डर लगता है।" बापूजी बोले, "अगर डर लगता है तो यह देश छोड देना तुम्हारा धर्म माना जायगा । जहां डर न लगे वहां जाना चाहिये।" गरम पानी पीनेके बाद अनन्नासका रस दिया । रस पीकर बापूजीने बंगला बारहखडी और वर्णमाला लिखी । लिखते लिखते झपकी आ गअी । ७-३५ पर अुठे और भटियालपुरके लिअे रवाना हुअे ।

आजका यह गांव प्यारेलालजीका है । रास्तेमें कुछ मुसलमानोंके घर पर दो-दो चार-चार मिनटके लिअे ठहरे थे । मैं मुसलमान बहनोंसे मिलनेके लिअे अन्दर जाती, परन्तु मुझे देखकर वे भाग जाती । फिर भी मैं अंदर जाकर अुनसे बातें करती । बापूजीसे मिलनेकी अुनसे प्रार्थना करती और कहती, "आपके आंगनमें अेक संत महात्मा आये हैं । आप अुनके दर्शन किये बिना कैसे रह सकती है ?" अेक बाड़ीमें पहले तो स्त्रियोंने बापुके सामने आना स्वीकार किया, फिर अिनकार कर दिया । परन्तु दूरसे अुन्हें देखा । दूसरी अेक बाड़ीमें तो बहनोंने बापूजीके साथ फोटो खिंचवानेकी मांग की । बापूजी बीचमें कुर्सी पर बैठे, बहनें खड़ी रही और अुस परिवारके अेक

लड़केने फोटो लिया । अैसा लगा जैसे बापूजीके प्रति बहनों और कुटुम्बके पुरुषोंमें कुछ भक्ति हो । बापूजी कभी 'पोज' देते ही नहीं, परन्तु अिस ढंगसे ले लिया । यहां आनेके बाद यह पहला ही अवसर था जब बहनें अितनी आजादीसे मिली ।

हम सवा नौ बजे भटियालपुर पहुंचे । दोनों सुशीलाबहन वहां मौजूद थी । डॉ.सुशीलाबहनने मालिश की । मैंने बापूजीको स्नान कराया । आज बापूजीके लिअे प्यारेलालजीने खाखरे बनाये थे । आठ औंस दूध, दो खाखरे और कच्चा शाक लिया । दोपहरको निरजरनसिंह गिल आये थे । आज यहां अेक ठाकुरजीके मंदिरमें बापूजीके हाथों मूर्तिकी फिरसे प्रतिष्ठा की गअी । अिसकी मूर्ति दंगेमें अुठा ली गअी थी । अिस अुत्सवमें बहुतसे मुसलमान भी आये थे । जिन मुसलमानोंने मूर्ति अुठाअी थी अुन्हींके सान्निध्यमें मूर्तिकी दुबारा प्रतिष्ठा होना कोअी छोटा-मोटा काम नहीं माना जा सकता । मुसलमानोंने प्रतिज्ञा ली कि हम अपनी जान देकर भी अिस देव-मंदिरकी रक्षा करेंगे । आरती हुअी और प्रसाद बांटा गया । . . .

नित्यके अनुसार प्रार्थना वगैराका क्रम रहा । शामको भोजनमें केवल दूध और भांपसे पकाया हुआ सेब लिया । रातको दस बजे बापूजी सोये ।

(बापू, नारायणपुर, १५-१-१९४७)

९. कड़ी परीक्षा

नारायणपुर,

१५-०१-१९४७

आज भी बापू सदाकी भांति चार बजे ही अुठे । परन्तु कह रहे थे कि “तीन बजेसे जाग रहा हूं ।” प्रार्थना नित्य क्रमके अनुसार । . . . ७-३५ पर यहां आनेके लिअे भटियालपुर छोडा । रास्तेमें डॉ. सुशीलाबहन अलग होकर अपने गांव चली गअी ।

यहां पहुंचने पर पैर धोकर मैं बापूजीके लिअे नहानेकी तैयारी करने लगी । पर 'खानेकी पेटी' में रोज पैर घिसनेका जो पत्थर रखती हूं वह नहीं मिला । खूब ढूंढा परन्तु कहीं भी नहीं मिला । बापूजीसे कहा तो बोले, “तुमने बड़ी भूल की है । कदाचित् मनुडी खो जाय तो काम चल सकता है, परन्तु पत्थर खो जानेसे काम नहीं चल सकता । मैं चाहता हूं कि वह पत्थर तुम स्वयं ही ढूंढकर लाओ। निर्मलबाबूसे कह देना कि मेरे लिअे खाना तैयार कर लें । परन्तु पत्थर तो तुम खुद ही ढूंढने जाओ । अैसा करोगी तो दूसरी बार कोअी चीज भूलोगी नहीं । और अिसमें तुम्हारी और मेरी परीक्षा होगी कि मैं तुम्हें निर्भीकताका कैसा पाठ पढ़ा सका हूं, और तुमने अुसे कितना हजम किया है ?"

मैंने स्वयंसेवकको साथ ले जानेके लिअे पूछा तो बापूने साफ अिनकार कर दिया । और मैं भी थोड़ी गुस्सेमें बापूजीको छोड़कर चली गअी । मुझे डर तो लग रहा था कि कोअी पकड लेगा तो कया होगा । नारियलकी घनी झाडिया थी और मुश्किल रास्ता था । परन्तु किसी तरह अुस बाड़ीमें पहुंची जहां भटियालपुरसे यहां आते हुअे बापूजीके पैर बहुत ठंडे हो जानेके कारण अुन्हें घोनेके लिअे पत्थर निकाला था । बुढियाने यह पत्थर फेंक दिया था, परन्तु तुरन्त मिल गया । अुसे लेकर अेक बजे बापूजीके पास आअी । रास्ते भर मनमें रामनामकी रट लगाती रही । शायद अितना अीश्वर-स्मरण मैंने आजतक कभी नहीं किया होगा । भूख भी अुतनी ही कड़ाकेकी लगी

थी । आज बापूजीकि अमुक सेवा छुट गअी, अिससे मनमें अपार दुःख हुआ । पत्थर बापूजीके सामने डाल कर बोली—"लीजिअे आपका पत्थर ।" और मैं रो पड़ी ।

बापूजी खिल-खिलाकर हंस पड़े । मुझे लगा कि मेरा तो दम निकल गया और ये हंस रहे हैं । किर कहने लगे, "आज तुम्हारी परीक्षा हो गअी । अीश्वर जो करता है बह भलेके लिअे ही करता है । पहले ही दिन मैंने तुमसे कह दिया था कि मेरे यशमें शरीक होना बड़ी हिम्मतका काम है । अगर जरा भी हिम्मत हार गअी तो नापास हो जाओगी, अिसलिअे वापस जाना हो तो चली जाओ । यह तुम्हें याद है ? अिस पत्थरके निमित्तसे तुम्हारी परीक्षा हुअी । अिसमें मेरी दृष्टिसे तुम अुत्तीर्ण हुअी हो । मुझे अिससे कितना आनन्द हुआ, अिसका तुम्हें पता नहीं है । साथ ही तुम अेक सुन्दर पाठ भी सीखी । पत्थर सो बहुत मिल जायेंगे, दूसरा ढूंढ लूंगी—अैसी लापरवाही नहीं रखनी चाहिये । प्रत्येक अुपयोगी वस्तुको संभालकर रखना सीखना चाहिये ।"

मैंने कहा, "बापूजी, अगर दिलसे कभी रामनाम लिया हो तो आज ही लिया है ।"

बापूजी बोले, "हां, जब दुःख पड़ता है, तभी अीश्वर याद आता है । फिर भी अुसकी दया कितनी अपार है । मनुष्य सुखमें अुसका स्मरण नहीं करता, परन्तु दुःखमें थोडा भी याद करता है तो अीश्वर अुसे बचा लेता है ।"

अिस प्रकार मुझ पर आअी हुअी अिस अकल्पित विपत्तिने दोपहर तकका सारा समय ले लिया और दूसरा कुछ भी काम नहीं हो सका ।

डेढ़ बज जाने पर बापूजी कहने लगे, "तुम्हें खूब भूख लगी होगी । खाना हो तो खा लो । परन्तु मैं तो चाहुंगा कि नारियलका पानी या फल लेकर थोड़ी देर आराम कर लो । अिससे तुम्हारी थकावट अुतर जायगी ।"

मैंने अिनकार करते हुअे कहा कि कपड़े धोकर और बहुतसा काम पड़ा है अुसे पूरा करके खाअूंगी। परन्तु बापूजीको यह अच्छा नहीं लगा ।

बापूजी दोनों पलड़े बराबर करा लेते हैं। अेक तरफ कड़ी धूपमें अितनी दूर पत्थर लेनेको भेजा, और दूसरी तरफ आने पर जबरन् हल्का भोजन कराकर आध घंटे सुलाया। बापूजीका सब काम अैसा ही होता है और अिससे सचमुच जीवनका वास्तविक निर्माण होता है।

शामको रोजकी तरह प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके बाद घूमते समय बापूजी कहने लगे, "अगर आज तुम्हें गुंडे पकड लेते और तुम वहां मर गअी होती तो मैं खुशीसे नाचता। परन्तु यदि तुम डर कर भाग आती तो मुझे जरा भी अच्छा न लगता। आज प्रातःकाल पत्थरके प्रसंगसे मुझे तुम्हारी परीक्षा लेनी थी। यह समझकर ही मैंने तुम्हें भेजा था। मैंने तुम्हें अिस तरह अकेले भेजकर कितना खतरा अुठाया, अिसका तुम्हें खयाल नहीं आया होगा। मुझे लगा कि यह लड़की 'अेकला चलो रे' का गीत तो स्वस्थ स्वरसे गाती है, परन्तु अिसने अुसे पचाया कितना होगा? भगवानकी अिच्छासे तुम पत्थर भूल आअी, अिसलिअे मेरे मनमें जो अीच्छा थी वह पूरी हुअी। आजके प्रसंग परसे तुम विचार करना कि मैं कितना कठोर हो सकता हूं। मुझे भी अिसका भान हुआ और तुम्हें तो हुआ ही होगा।"

लामचरसे बापूजीन डायरी नहीं देखी थी, अिसलिअे घूमकर लौटने पर बीस मिनटमें डायरी सुन ली और तुरन्त ही हस्ताक्षर कर दिये।

बादमें अखबार सुने। साढ़े नौ बजे सोनेकी तैयारी की। आज बापूजीके अेक सो चौबीस तार हुअे। खुराक रोजकी तरह। शामको छः औंस दूध लिया। दो औंस कम कर दिया।

(बापू, १५-१-१९४७, नारायणपुर)

रामदेवपुर,

१६-१-१९४७

आज रातको तीन बजे बापूजीने मुझे जगाया। मैं घुटने समेटकर सो रही थी। अिसलिअे सीधी सोनेको कहा। फिर कहने लगे, "अब तक तो तुम सब कुछ मुझमें श्रद्धा रखकर रही हो। परन्तु अब जो कुछ करो वह समझकर, ज्ञानपूर्वक, करो तो तुम्हारी शकल

वदल जायगी । श्रद्धा अंध-श्रद्धा नहीं होनी चाहिये । हम जो कुछ करे अुसमें ज्ञानपूर्वक हमारी श्रद्धा होनी चाहिये । कोअी आदमी कुछ भी पढाअी करे, अुदाहरणार्थ शब्द या वर्णमाला सीखनेकी श्रद्धा तो रखे परन्तु वर्णमालाका ज्ञान प्राप्त न करे, ह्रस्व-दीर्घ, मात्रा, शून्य, अल्पविराम, पूर्णविराम वगैरा कहां और कैसे लगाये जायें, यह समझे बिना चले तो कअी बार अर्थका अनर्थ हो जाता है । वैसे ही तुम्हें भी अब केवल श्रद्धा न रखकर अुसमें ज्ञानको मिलाना चाहिये । गीतामें कहा है कि :

यथैघासि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात् कुरतेऽ र्जुन ।
ज्ञानाग्नि सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुते तथा ।।
न हि ज्ञानेन सदृश पवित्रमिह विद्यते ।
तत्स्वय योगसंसिद्ध कालेनात्मनि विन्दति ॥
श्रद्धावाल्लभते ज्ञान तत्पर संय तेन्द्रिय: ।
ज्ञानं लब्ध्वा परा शातिमचिरेणाधिगच्छति ॥
अज्ञश्चाश्रद्दधानशच सशयात्मा विनश्यति ।
नाय लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ॥

अिसलिये तुम अपने भीतर ज्ञानपूर्ण श्रद्धा पैदा करनेकी कोशिश करो ।"

अितनेमें प्रार्थनाका समय हो गया । अिसलिअे प्रार्थनाके बाद निर्मलदाने प्रार्थना-प्रवचनका अनुवाद करके बताया । मैं डायरी लिख रही थी कि . . . आये और अुनके गांवकी क्या प्रारंभिक तैयारी करनी है यह पूछ गये । साढे सात बजे नारायणपुर छोडा । वहांसे यह गांव दूर माना जा सकता है । आज ठंड खूब थी । घूप बिलकुल नहीं थी । रास्तेमें बापूजीके दायें पैरकी पट्टी निकल गअी । यह थोड़ा चल लेनेके बाद पता चला । बापूजी कहने लगे, "वह पट्टी तो ढूंढनी ही चाहिये।" कर्नल जीवनसिंहके अेक साथी आधी दूर तक जाकर पट्टी ढूंढ लाये । अिससे बापूजी आनंदित हुअे । बोले, "मुझे बड़ा अच्छा लगा । हमारे आलस्यके कारण अेके चिन्दी भी चली जाय तो भारतको कितनी हानि पहुंचे ?"

रास्तेकी अेक वाडीमें अेक बहनने पैर धोनेके लिअे गरम पानी कर रखा था। वहां पैर धोये। अेक मुस्लिम वाडीमें भी गये। यहां हम पौने नौ बजे पहुंचे। पैर धोनेका पानी तैयार था। यह गांव कनुभाअीका है। अुनकी व्यवस्था सुन्दर थी। बाथरूम और मालिश-घर भी तैयार कर रखा था। अिस गांवमें आकर मुझे कोअी खास तैयारी नहीं करनी पड़ी। पैर धोते समय बापूजीको डंडा-रास (काठियावाडी) दिखलाया गया। स्थानीय देहाती बच्चोंको 'सियास्वामीकी जय, प्यारे राघवकी जय, बोलो हनुमान कृपालुकी जय, जय, जय'—धुनके तालोंके साथ रास अच्छी तरह सिखाया गया था। बापूजीको पैर धोते समय ही यह रास बताया गया, अिसलिअे अुनका समय बच गया। यह व्यवस्था अुन्हें बहुत पसंद आअी।

आज . . . ने बापूजीको मालिश करनेकी मांग की। मुझसे पूछा तो मैंने कहा, "आपको सेवा करनी हो तो जरूर कीजिये। मैं जानती हूं कि बापूजीकी कोअी भी सेवा करनेको मिले तो अुसका आनंद अनोखा होता है। अिसलिअे मैं मना नहीं कर राकती।" परन्तु बापूजीको यह अच्छा नहीं लगा। कहने लगे, "यह मेरे स्वभावमें है कि जो चीज लगातार चलती आअी हो अुसे बदला न जाय। मुझे आज यह परिवर्तन अच्छा नहीं लगा। तुम्हें . . . को अुनका धर्म बताना चाहिये था। मैं तुममें अितनी हिम्मत पैदा करना चाहता हूं कि जो सच्ची बात हो वह सबसे स्पष्ट कह दो। तुम्हें कहना चाहिये था कि बापूकी सेवा आपके लिअे मुख्य वस्तु नहीं है। आपके लिअे अिस गांवकी सेवा ही सच्ची सेवा है। यदि अिसमें से आप जरा भी विचलित होंगे तो अुतना पाप करेगे। साथ ही, बापूकी सेवा गांवकी सेवा करनेके समयमें से चोरी करके ही तो करेंगे! मान लीजिये कि बापू न आये होते तो आपने अुतने समयमें गांवकी कुछ न कुछ सेवा तो की हो होती? जब तुम अितना और अिस तरह कहनेका साहस अपनेमें पैदा करोगी, अुस दिन मैं मानूंगा कि अब हर हालतमें तुम्हारा कुशल ही है। सच बातसे किसीको बुरा लगेगा या अच्छा लगेगा, यह विचार नहीं किया जा सकता। हां, मर्यादामें रहकर अच्छी भाषामें कहना चाहिये। किसीको अच्छा लगनेके लिअे हम अपना नियम तोड दें तो दुनियामें आगे नहीं बढ़ा जा सकता। तुम्हें पता है न

कि बच्चोंको हमेशा मीठा ही मीठा भाता है । फिर भी माता अुन्हें जिलानेके लिअे या तंदुरुस्त रखनेके लिअे कभी कभी निष्ठुर बनकर कड़वी दवा भी देती है ।"

मालिश और स्नानके बाद बापूजी अन्दर गये । भोजन अन्दर किया, परन्तु भोजन करके जल्दी ही बाहर आ गये । खाना रोजकी भांति ही था—थोड़े मुरमुरे, आठ औंस दूध, खाखरे, शाक और खोपरेका संदेश ।

दोपहरको कोअी तीन बजे कातते समय कुछ महिलाअें आअीं। अुन्होंने अपने हाथके सूतकी खादी बापूजीको भेंट की । बापूजीने अुनसे कहा, " तुम्हें अपने परिवारके लिअे स्वयं ही अिस प्रकार कात कर खादी बना लेनी चाहिये । मुस्लिम बहनोंके साथ मिल-जुलकर तुम अुन्हें अपनी बहन बना लो । अपनी कला अुन्हें सिखाओ । अितना कर लोगी तो अिस प्रदेशमें जो यह कहा जाता है कि मुसलमानोंका बहुमत है अुसके बजाय यह कहा जायगा कि हिन्दु-मुसलमान दोनोंका समभाग है । तुम बहनें तो अैसा बहुतसा काम कर सकती हो, जो पुरुष हरगिज नहीं कर सकते ।"

बहनोंके जानेके बाद बापूजीने मिट्टी ली । मिट्टी लेते हुअे कुछ पत्र लिखवाये । अुठकर रामफल और दूधको फाडकर अुसका पानी लिया । प्रार्थनाके बाद प्रवचन लिखा। रेड्डीजीने कथकलीका नाच किया । अखबार सुने । साढ़े दस बजे बापूजी सोये ।

(बापू, पाराकोट, १७-१-१९४७, शुक्रवार)

पाराकोट,

१७-१-१९४७

नियमानुसार प्रार्थना । बापूजीको सदाकी भांति गरम पानी और शहद दिया । दस मिनट बापूजी सोये । अुठकर अनन्नासका रस लिया । ७-४० पर हम यहांके लिअे रवाना हुअे । आज पाराकोट और रामदेवपुरकी दो भजन-मंडलिया मिल गअी थी । अिस रास्तेमें बरबाद हुअे मकान बहुत थे । साढ़े आठ बजे यहां पहुंचे । बापूके पैर धोकर मैंने मालिश और

स्नानकी तैयारी की । अभी तक धूप नहीं आ रही थी, अिसलिअे बापूजीने थोडी देर दूसरा काम किया । मालिश करके अुन्हें स्नान कराया तब तक ग्यारह बज गये । खुराक सदाकी भांति ही ली।

धूपमें ही बैठकर खाना खाया । और धूपमें ही लेटे । बापूजीके पैर मलनेके बाद कपड़े धोने और बरतन माजनेमें अेक घंटा चला गया । दो बजे बापूजी अुठे । नारियलका पानी पिया । साढ़े तीन बजे मिट्टी ली । चार बजे स्त्रियोंकी सभामें गये ।

सभामें वहनोंको कातने, मुस्लिम बहनोंसे मिलने और घरबारकी सफाअी रखनेका अनुरोध किया ।

साढ़े चार बजे सभासे आकर केला, दूध और हरे जरदालू लिये । खाकर प्रार्थनामें गये । प्रार्थनासे अेक मुस्लिम मुहल्लेमें गये । बापूजी खूब थक गये थे । आकर पैर धोनेके बाद प्रार्थना-प्रवचन देखा । बंगलाका पाठ किया । अितनेमें नौ बज गये । मैं पैर दबा रही थी, अुस समय बापूजी वात्सल्यपूर्ण वाणीसे कहने लगे, “तुम थक जाओ तो मुझे कह देना । जब मैंने आज तुम्हें दौड़ते दौड़ते मेरे लिअे नहानेका पानी भरकर बाल्टी लाते देखा, तब मुझे खयाल हुआ कि मैं तुमसे बिलकुल निष्ठुर बनकर काम लेने लगा हूं । तुम जरा भी संकोच न करना । क्योंकि यह समझ लेना कि बीमार पड़े गअी तो खैरियत नहीं । मेरी यह अुत्कट अिच्छा है कि तुम्हें दोपहरको आध घंटे सो ही लेना चाहिये । परन्तु मुझे अिसका आश्चर्य और दुःख है कि मैं अितना भी समय तुम्हारे लिअे क्यों नहीं निकाल पाता । तुम अिसमें मदद करो तो मैं आध घंटा तुम्हारे लिये आसानीसे निकाल सकता हूं । मैं तुम्हें अेक मिनट भी फुरसत नहीं लेने देता । वैसे मुझे यह पसन्द है । परन्तु यह तुम पर भार न बन जाय तो मुझे तुमसे अितना काम लेनेमें कोअी आपत्ति नहीं है ।”

मैंने कहा, आप चिन्ता न कीजिये । मुझे अिससे कितनी ही बातें सीखनेको मिलती है ।

अिस प्रकार बातें करते करते बापूजी सो गये । मुझे सोनेमें ग्यारह बज गये ।

कोअी सगी मां अपनी बच्ची पर अितना प्रेम बरसा सकती है, अुससे भी अधिक प्रेमामृत बापूजीकी आजकी अिस बातके अेक अेक शब्दसे झर रहा था। अितनी अधिक चिन्ताओंके बीच भी मेरे जैसीकी वे अितनी मीठी चिन्ता रखते हैं। मुझे सवेरे पानी भरकर लाते देखकर अुन्हें कितना दुःख हुआ ? माताके समान अैसी प्रेमपूर्ण और मीठी चिन्ता कौन पुरष रख सकता है ? परन्तु बापूजीने बार बार कहा है कि "जैसे मैंने सत्य, अपरिग्रह, अस्पृश्यता, अहिंसा और अैसे अनेक आदर्श देशके सामने रखे हैं, वैसे मुझे यह आदर्श भी पेश करना है कि पुरुष भी माता बन सकता है। स्त्रियोंके प्रति पुरुषोंकी दृष्टि माता जैसी मीठी हो जायगी तभी हमारी भव्य संस्कृति स्थायी बन सकेगी।" सचमुच जिस अनुभवमें से आजकल मैं गुजर रही हूं। बापूजी मेरी माता बनकर यह प्रयोग कर रहे हैं, अिसे मैं अपना अहोभाग्य समझकर आनन्दसे फूली नहीं समाती।

बादलकोट

१८-१- १९४७, शनिवार

आज बापूजी सवा तीन बजेसे जाग रहे थे। मुझे जगाकर कहा "आज तो अैसी निद्रा आ गअी कि रातमें अेक बार भी अुठना नहीं पड़ा। यह मुझे बहुत अच्छा लगा।" प्रार्थनाके बाद बापूजीने अपना भाषण लिखा और सारा समय . . . और . . . को पत्र लिखनेमें बिताया अंतिम दस ही मिनट जरा लेटे। हमने सात पैंतीस पर पाराकोट छोड़ा रास्तेमें अेक मुसलमानके घर पर ठहरे थे। यहां सबको सलाम करके आगे बढ़े। यहां आनेके बाद सारा कार्यक्रम नित्यकी भांति रहा। मालिश और स्नानादिसे दस बजे निबटे। बापूजीने रोजकी तरह खाखरे, शाक और दूध लिया।

मैंने दो बजे अपना कामकाज पूरा करके ढाअी बजे बापूजीके पैर पर मिट्टीकी पट्टी रखी। पैर दबाये और मैं भी पंद्रह मिनट सोअी। तीन बजे महिलाओंकी सभा हुअी। बहनें बहुत आअी।

शामको दूध और अेक केला ही लिया। प्रार्थना वगैरा नियमानुसार हुआ। लगभग दस बजे सोये। बापूजीके पैर अब कुछ अच्छे होने लगे हैं। तबीयत अितने कामकाजके हिसाबसे ठीक है, हालांकि बहुत कम भोजन करते हैं, बहुत ज्यादा काम करते हैं, नींद कम कर डाली है

और अितनी असह्य ठंड पड रही है । यह तो स्पष्ट ही दिखाअी देता है हि अीश्वर ही अुनमें शक्ति पूर रहा है ।

आताकोरा,

१९-१-१९४७

सदाकी भांति साढ़े तीन बजे अुठे । दातुन-पानीके बाद प्रार्थना हुअी । आज गरम पानी करनेमें जरा देर हो गअी । गरम पानी देरसे हो तो फलोंका रस भी बापूजी देरसे ही ले पाते हैं । रातको मैं अींधन अन्दर लेना भूल गअी थी । (रोज थोडा अींधन अंदर ले लेती हूं, जिससे सुबह ओसमें भीग न जाय ।) अिसलिअे ओसमें भीग गया था । मैंने अपनी ओढ़नीकी चिंदी फाड़कर लालटेनके घासलेटमें डुबोअी । बापूजी पीछेसे देख रहे थे । लेकिन मुझे अिसका पता नहीं था । दियासलाअी पेटीसे विकालते ही कहने लगे, "यह चिन्दी बताना तो !" मैंने बताअी ।

बापूजीने अुसे देखा और मुझसे कहने लगे, "अिसे धो डालो और धूपमें सुखा लो । चिन्दीमें लगा तेल तो जायगा । परन्तु तेल बचायें तो नाड़ा जाता है और नाड़ा बचायें तो तेल जाता है । अिसलिअे फायदा नाड़ा बचानेमें ही है । नाड़ा बन जाय अुतनी बड़ी चिन्दी कहीं चूल्हा जलानेके काममें ली जाती है ? मैं कितना लोभी हूं, अिसका तुम्हें पता है ? साथ ही बनिया भी हूं। गरम पानी जरा देरसे हुआ तो क्या चिन्ता है ? चिन्दीने कितना अधिक तेल पी लिया ? अिसके सिवा मेरा ध्यान न गया होता तो वह जल हो जाती न ?"

मैंने कहा, "पर अितना लोभ क्यों किया जाय ?"

बापूजी बोले, "हां, तुम तो अुदार बापकी बेटी हो । परन्तु मेरे बाप थोड़े ही बैठे हैं जो मुझे रुपया देंगे ? मेरे विनोदमें भी हमेशा गाभीर्य रहता है । अुसे तुम समझना सीख लो तो काफी है।"

मैंने चिन्दी धो डाली । वह सूखी अिससे पहले दोन-तीन बार पृछताछ हुअी और जब चिन्दी सूखी और अुसका नाडेके रुपमें अुययोग हुआ तब ही अिस बातकी पूर्णाहुति हुअी !

बादमें बापूजी डाकके काममें लगे और मैं अपने काममें लगी । कल 'यीस्ट' की बोतल फूट गयी थी, अिसलिअे बापूजीने हरअेक चीज साथ ही रखनेको कहा । पहलेसे भेज देनेको मना कर दिया । सात पैंतीस पर हमने बादलकोट छोड़ा । आजका रास्ता बहुत ही खराब था । सरदार जीवनसिंहजी दो बार फिसल कर गिर पड़े । पगडंडी अैसी थी कि मैं और बापूजी बड़ी मुश्किलसे साथ चल सकते थे । कहीं कहीं तो मुझे छोड़कर अुन्हें अपनी काठकी लकडीके सहारे चलना पडता था । अिसके सिवा यह रास्ता कार्यकर्ताओंने साफ तो किया था, लेकिन रातको मुसलमानोंके लड़के गंदा कर गये थे । अेक-दो भाअियोंने अपनी आंखों यह देखा था । यह गंदगी—मैं जरा पीछे रह गयी थी अिसलिअे—बापूजी पत्तेसे साफ करने लगे । मैंने देखा कि सब अेकाअेक रुक गये हैं । अेकके बाद अेक लाअिन बनाकर चलने लायक वह पगडंडी थी । मुझे बापूजी पर गुस्सा आया । मैंने कहा, आप मुझे क्यों लज्जित करते हैं ? मुझे कहनेके बजाय आपने खुद क्यों साफ किया ? अिस पर बापूजी हंस पड़े और बोले, "तुम्हें कया पता कि अैसे काम करनेमें मुझे कितना आनंद आता है ? तुम यह जानती होती तो अिस प्रकार मुझ पर गुस्सा न होती ।"

गांवके लोग देख रहे थे । अिसलिअे मुझे गांवके लोगों पर भी मन ही मन गुस्सा आया । बापूजी जैसे पुरुष तो यह गंदगी साफ कर रहे हैं, जिन्हें जगत पूज्य मानता है, और गांवके अनाड़ी और अज्ञान लोग खडे खडे पुतलोकी तरह देख रहे हैं ? जरा भी शर्म नहीं आती ?

परन्तु बापूजी कहने लगे, "तुम देख लेना, कलसे ये गंदे रास्ते मुझे साफ नहीं करने पडेंगे। क्योंकि सबको यह पाठ मिल जायगा कि गंदगीकी सफाअी करना हलका काम नहीं है । परन्तु मेरे ही लिअे वे रास्ता साफ करेंगे ती मुझे बुरा लगेगा ।"

मैंने कहा, "केवल कल भरको कर देंगे और बादमें नहीं करेंगे तो आप क्या करेंगे ?"

"मैं तुम्हें देखनेको भेजुंगा और फिर अैसा गंदा रास्ता होगा तो खुद साफ करने आअूंगा । अस्वच्छको स्वच्छ करना तो मेरा धंधा ही है ।"

बापूजीकी यह आखिरी बात कितनी सत्य है, अिसका वर्णन करना मेरी शक्तिसे बाहर है । परन्तु अैसी छोटी छोटी अस्वच्छताओसे लेकर जीवनकी, व्यवहारकी, राजनीतिकी और धर्मकी अनेक अस्वच्छताओंको स्वच्छ करना अुनका धंथा ही था । और अुन्होंने कअी प्रकारसे हमें स्वच्छ किया भी सही । यहां तो मैं यह देख ही रही हूं । खूबी तो यह है कि जो छोटी या निकम्मी बात मानी जाती है अुसीको बापूजी महत्त्वकी और मुख्य बात साबित करके बता देते हैं । तब समझमें आता है कि जीवनको सच्चे अर्थमें जीनेके लिअे यह छोटी बात ही महत्त्वकी है ।

रास्तेमें हम अुस जगह पहुंचे जहां घूपमें अेक मदरसा लगा हुआ था । वहां रास्ता तंग था, अिस कारण कर्नल जोवनसिंहजी फिसल कर गिर पड़े । अुनका पहाड़ी और कसा हुआ शरीर है, अुस पर फौजी सिपाही ! वही किसल पड़ें तो वह रास्ता बापूजीके लिअे कितता खतरनाक हो सकता है अिसकी कल्पना ही कर लेनी पड़ेगी । बापूजी खूब हंसे । कहने लगे "समुद्रमें ही आग लगे तो क्या किया जाय?"

मदरसेमें पडनेवाले लड़के-लड़कियां हमें देखकर भागने लगे । बापूजीने सबको सलाम करनेकी कोशिश की । परन्तु कोअी सलाम नहीं करता था । अब्दुल्ला साहबने सबसे अपना काम जारी रखनेको कहा । मुझे सहज ही विचार आया कि भाग्यमें हो तभी मिले न ? नरसिंह मेहताने सच ही गाया है : 'जैहना भाग्यमा जे समे जे लख्युं . . .' — 'जिसके भाग्यमें जिस समय जो लिखा हो . . .' । बापूजी जैसे पुनीत पुरुष, जिनके दर्शन दुर्लभ हो सकते हैं, स्वयं प्रत्यक्ष आकर सामने खड़े हैं, परन्तु अज्ञानने अिन लोगोंको अंधा बना दिया है । यह हैं भाग्यकी बलिहारी।

आताकोरा लगभग दो मील होगा । परन्तु यहां पहुंचनेंमें पूरा अेक घंटा लग गया ।

यहां आकर नित्यके अनुसार बापूजीके पैर धोकर मैंने रोजका काम-काज शुरू किया । धूप नहीं थी, अिसलिअे मालिश और स्नान देरसे हुआ । अिस बीच बापूजीने दूसरा काम निबटाया । मैं जब मालिश कर रही थी, तब बापूजीने अपने हाथसे हजामत बनाअी । अेकसाथ दोनों काम निबट गये ।

शामको अेक बूढ़ेके घर गये । बुढा बहरा था, शरीरसे अशक्त था, परन्तु बापूजीके सामने अुठ कर खड़ा हुआ । बापूजीने प्रेमपूर्वक अुसके गाल पर चपत लगाअी । तुरन्त ही बूढेकी पत्नी आयी । अुसने बूढ़ेको कपुरकी अेक माला दी और अेक स्वयं रखा । दोनोंने बापूजीको माला पहनाअी । बुढ़िया कांप रही थी । अुसने बापूजीके हाथ पकड लिये, सारे शरीरको लगाये और पावनता अनुभव की । दो मीठे नारियल खास तौर पर रख छोड़े थे, जिनका पानी पीनेका आग्रह किया । मुझे यह दृश्य देखकर रामायणकी शबरीके बेरोबाली बात याद आअी । आसपास हराभरा जंगल था । जैसे प्रभुने शबरीके बेर प्रेमसे खाये थे, वैसे बापूजीने नारियलका पानी प्रेमसे पिया ।

कंदमूल फल सुरस अति, दिये राम कहु आनि ।
प्रेम सहित खाये प्रभु, वारंवार वखानि ॥

मैं रोज रामायण पढती हूं । अुसी क्रमसे जब आज घूमकर आअी और रामायण पढने बैठी तो यही अूपर वाला सीरठा पढ़नेमें आया । यही दृश्य मैंने अुस समथ देखा, जब वूढ़े-बूढ़ीने संग्रह करके रखे हुअे नारियलका पानी पौनेके लिअे बापूजीके सामने रखा । बापूजी शामको खानेके बाद कुछ भी नहीं लेते, लेकिन प्रेमसे दिये हुअे नारियलके पानीको अस्वीकार न करके अेकका पानी स्वयं लिया और दूसरेका मुझे जबरदस्ती पिलाया । अिस अवसर पर बापूजीके चेहरे पर आनंद झलक रहा था । वहांसे लौटते हुअे अपने आप कहने लगे, “अपने जैसे आदमी मिल जाते हैं तब हमेशा आनंद होता है । ये दोनों बुढे-बूढी अस्सीके आसपास तो होगे ही । शायद कुछ बडे हों ।”

दोपहरको बातोंमें बापूजीका कातना रह गया था । आकर अब काट रहे हैं । शामके साढे सात हुअे है । शैलेनभाअी अखबार सुना रहे है । मैं डायरी लिख रही हूं ।

पुनश्च मेरी डायरी कातनेके बाद साढे नौ बजे सुनी; हस्ताक्षर करनेके बाद सोये ।

शिरंडी,

२०-१-१९४७

आज बापूजी सवा पांच बजे जागे । प्रार्थनाके बाद नियमानुसार गरम पानी और शहद लिया । बादमें रस देकर और सामान पैक करके मैं कलका वह रास्ता देखने गअी । रास्ता गंदा ही था । अिसलिअे बापूजीसे कहने न जाकर मैं स्वयं साफ करने लगी । गांवके लोग भी सकाअीमें शरीक हो गये । अिसलिअे मेरा काम पंद्रह मिनटमें निबट गया । गांवके लोगोंने मुझसे कहा, "कलसे आप न आअिये । हम खुद साफ कर लेंगे ।"

अिस पर मौन खुलने पर बापूजीने कहा, "तुमने आज मेरा पुण्य ले लिया न ? यह रास्ता मुझीको साफ करना था । खैर, अिससे दो काम होंगे । अेक तो सफाअी रखी जायगी; दूसरे, लोग दिया हुआ वचन पालना सीखेंगे तो सचाअी सीखेंगे, जिसका यहां बिलकुल अभाव है । तुम जानती हो कि हमारे काठियावाडमें भी सबको रास्ते गंदे करनेकी बडी बुरी आदत है । तुम यह मत समझना कि यहीं सबको थूकने या टट्टी बैठनेकी गंदी आदत है । हिन्दुस्तानमें बहुत जगह लोगोंको यह कुटेव है । काठियावाडमें तो खास तौर पर है । यह सुधार करनेकी बचपनसे मेरी साध थी । परन्तु संयोगवश मैं काठियावाडमें स्थायी होकर न रह सका । तुम्हें मुझ पर जो क्रोध आया बह अनुचित था, वयोंकि जैसे खुद खायें तभी पेट भरता है, वैसे ही स्वच्छताका नियम मेरे लिअे है । स्वयं सफाअी करनेमें मुझे अपार आनंद होता है ।"

(बापूजी सुबह मुझसे पहले शिरंडी पहुंच गये थे । वहां अम्तुस्मलाम बहन अुपवास कर रही थी । यह गांव अुनका कार्यक्षेत्र था । यह कहा जाता है कि अुस गांवमें कुछ मुसलमान भाअियोने हथियार छुपा रखे हैं । अिससे बहनको दुःख हुआ कि मेरे जातिभाअी यह कैसा कृत्य कर रहे हैं ! अस्तुस्सलाम बहन शरीफ मुसलमान खानदानकी लड़की है । बापूजी तो अुन्हे सगी बेटीसे बढ़कर मानते थे । अिस अेकताके कार्यमें अुनका ठोस हाथ रहा । और आज भी वे यही कार्य कर रही है । दीखनेमें दुबली-पतली, अुम्र लगभग पचाससे अुपर होगी, मगर जीतोड मेहनत

कर रही है । अिन बहनने नोआखालीमें अुपवास किये थे तब वे मृत्युशय्यासे ही अुठी थी अैसा कहा जा सकता है ।)

मैं और निर्मलदा पीछे रहे, परन्तु सामान अुठानेवाला आज और कोअी न था । बापूजी जल्दी चले गये, अिसलिअे सभी चले गये । अिससे बड़ी कठिनाअी हुअी । परन्तु बापूजी मार्गमें अेक दो स्थानों पर मूसलमानोंके घर ठहरे, अिसलिअे मैं समय पर पहुंच सकी ।

अम्तुस्सलाम बहन बहुत ही अशक्त हो गअी हैं । अुनका बिस्तर बाहर किया और अुन्हें बापूजीने सूर्यस्नान लेनेको कहा। . . . बापूजीने दिन-भर मुसलमान भाअियोसे समझौतेकी बातचीत जारी रखी ।

अम्तुस्सलाम बहन दिनभर गीता, कुरान शरीफ या भजन सुनमेकी अिच्छा रखती है । सब बारी बारीसे सुनाते हैं ।

बापूजीकी दिनभरकी बातचीतके परिणामस्वरूप रातको नौ बजे लिखापढ़ी हुअी और मुसलमान भाअियोने समझौता किया । बहनके अुपवास छूटे । प्रार्थनाके बाद बापूजीके हाथों मोसंबीके रसका प्याला लिया । सन्देशसे सबका मीठा मुंह कराया । प्रार्थना हुअी । प्रभुका अुपकार मानी कि अुपवासका सुखद अंत आया । वातावरण आनंदमय बन गया और सबको शान्ति हुअी ।

बापूजी रातके ग्यारह बजे सोये । दिनभर बातें करते रहनेसे थक गये थे ।

केथूरी,

२१-१-१९४७

रोजकी तरह प्रार्थना हुअी । आज सुशीलाबहनने प्रार्थना करायी । बापूजीको गरम ,पानी देकर मैं सामान ठीक करने गयी ।

अितनेमें सात बज गये । बापूजी अुठे । अम्तुस्सलाम बहनके पास गये । अुनसे बिदा ली । कुछ बहनें बापूजीको तिलक लगाकर प्रणाम कर गअीं कौर हम रवाना हुअे ।

आज . . . भी गये, अिसलिये मुझ पर कामका काफी जोर पड़ा । वे बीमार पड़े हैं । बापूजी कहते हैं, " यह आदमी मेरे पास अचानक आ गया । पहले वह सिपाही था । भादमें आअी. अेन. अे. में भरती हो गया । अुसने मुझसे कहा कि मेरी सेवामें ही जीवन बिताना चाहता है, परन्तु अिसमें मुझे दया दिखाअी देता है । मगर मुझे क्या ? मेरा जीवन अिसीसे बना है ।" फिर महा-भारतकी कहानी सुनाअी कि "जब पाचों पांडव और द्रौपदी वनमें (महा-भारतके युद्धके बाद) गये, तब स्वर्गारोहणके समय युधिस्ठिरके साथी अेकके बाद अेफ सभी गिरते गये । अन्तमें द्रौपदी भी स्वर्गमें साथ न जा सकी । अेक कुत्ता बाकी रहा । अिसी तरह अिस यज्ञमें पहलेसे ही साथी अेकके बाद अेक निकलते जा रहे हैं । यह मुझे अच्छा लगता है । अन्त तक तुम रह जाओ तो ? कदाचित् रह भी जाओ । अिस कहानीसे बड़ा सुन्दर अर्थ निकलता है: कुत्ते जैसे अल्प प्राणीने, जिसकी कुछ भी कीमत नहीं, अैसे क्या पुण्य किये होंगे कि वह अिन पांचों जनोंके बाद भी जिन्दा रहा ? कारण यही है कि वह वफादार प्राणी था । अिसलिअे यह माननेका कोअी कारण नहीं कि बड़े माने जानेवाले आदमी या व्यक्ति पाप नहीं करते और छोटे ही करते हैं; कभी कभी 'अल्प' माने जानेवाले बड़ोंसे अधिक आगे बढ़े हुअे होते है ।"

शामको अेक मुसलमान भाअी आये। अुन्ह पंडित सुन्दरलालजीने यहां भेजा है । अुनका नाम हुनर है । वे यहां रहेंगे । बापूजीने अुन्हें प्रत्येक काम स्वयं करनेकी सुचना दी । रसोअी आदि भी सीख लेनेको कहा । सबसे पहले पाखाना-सफाअीका काम सौंपा गया । मुझे अिन भाअी पर बड़ी दया आती है । बापूजी आनेवालेकी पहले-पहल खूब परीक्षा लेते हैं । परन्तु मैं अिन भाअीकी मदद नहीं कर सकती । यदि कुछ भी सहानुभूति दिखाअुं और बापूजीको मालूम हो जाय तो वे मेरी सबर ले डालें । अिसलिअे बहुत दया आने पर भी मैं कठोर बनकर वहांसे चली गअी—कारण यह था कि कहीं अुनके साथ बातें करनेमें जी पिघल जाय और अुन्हें मदद कर बैठूं । अिसलिअे वहांसे चले जानेमें ही मैंने खैरियत मानी ।

मैंने बापूजीसे यह बात कही । बापूजी कहने लगे, "मैं अिसे दया नहीं निर्दयता कहूंगा । मेरी दया दूसरी तरहकी है । जो कार्य अिस भाअीके जीवनमें ओतप्रोत होकर अिसे अुन्नतिके मार्ग

पर चलानेवाले हैं वे कठिन होने पर भी महत्वके हैं । अतः अिस समय अिसके प्रति सहानुभूति बताना निर्दयता ही है । पेटमें कोअी बिगाड़ हो गया हो और ऑपरेशन करना जरूरी हो, अुस समय डाक्टर यदि कहे कि बेचारेको हथियार लगाअूंगा तो खून निकलेगा और ज्यादा परेशान होगा, तो अफ. आर. सी. अेस. हुआ डॉक्टर भी अयोग्य ही माना जायगा । बीमारका पेट अुसे चीरना ही चाहिये और भीतरकी खराबी निकालनी ही चाहिये । अिस प्रकार अुस भाअी पर आअी हुअी तुम्हारी दयाको मैं दया नहीं कहूंगा । अच्छा हुआ कि तुमने अुसकी मदद नहीं की, वर्ना पता नहीं मैं क्या करता ।"

बापूजीके कार्योंमें कैसा सूक्ष्म तत्त्वज्ञान होता है? अैसा तत्त्वज्ञान मैं किसी कॉलेजमें गअी होतो तो वहां कोअी प्रोफेसर मुझे अिस ढंगसे समझा सकता या नहीं, अिसमें शंका है ।

सुबहका भोजन तो रोजकी भांति लिया । शामको प्रार्थनाके बाद दूधको फाड़कर अुसका पानी पिया और नारियलका मसका लिया । प्रार्थनामें अम्तुस्सलाम बहनके अुपवास सबंधी बातें कहीं । मुसलमान भाअियोने यह खबर अखबारोंमें देनेसे मना किया । बापूजीने समझाया कि प्रगट हुअी बात छुपानी नहीं चाहिये । यह खबर अखबारोंमें न देनेके पीछे अुनका जरूर कुछ न कुछ हेतु रहा होगा, परन्तु बापूजी अिस तरह किसीके चक्करमें आनेवाले नहीं थे । वर खबर छपवानी ही पड़ी ।

दस बजे बापूजी अखबार सुनकर सोये । . . . मैंने दिनभरमें बहुतसा काम निबटा लिया । कपड़ोमें सारी जादरे धोअी । बापूजीका तकिया रुअी निकालकर और अुसे सुखाकर फिरसे भरा । लिखना भी बहुत था । छोटा-बड़ा सारा सामान भी साफ किया । रातको अूंघते अूंघते घरकी डाक लिख रही थी । कब सो गअी, अिसका पता नहीं चला । सवेरे अुठी तो कागज-कलम अिधर-अुधर बिखरे पड़े थे । बापूजी भी अितने ज्यादा थक गये थे कि गहरी नींदमें थे । अिसलिअे आज अुनके अुलाहनेसे बच गअी । सवेरे मेरा यह सारा पराक्रम देखकर अुन्होंने पूछा । मैंने बताया तो बोले, "मैं तो कहता ही हूं कि मुझे कौन धोखा दे सकता है ? मैंने तुम्हें मेरे सोनेके बाद जागनेसे बिलकुल मना कर दिया है, तो भी तुमने मेहनत करके काम निबटानेके लिअे जागनेका प्रयत्न

क्रिया । परन्तु अीश्वरने तुम्हारी आंखोमें नीद भर दी । यह क्या बताता है ? अिसलिअे मैं तो मानता हूं कि दगा किसीका सगा नहीं । आअिंदा सावधान रहना और अैसा न करना ।"

यह अेक छोटीसी बात है, परन्तु अितना तो मानना ही पड़ेगा कि बापूजीको धोखा देनेकी कोशिश करनेवाला स्वयं ही धोखा खाता है ।

पनिवाला,

२२-१-१९१४

आज पूज्य बाका मासिक मृत्यु-दिवस है । अिसलिअे जल्दी अुठे । मुझे भी फौरन जगाया। दातुनके बाद प्रार्थना और सदाकी तरह पूरी गीताका पारायण किया । पारायणमें मैं अकेली ही थी । कलसे बापूजी कुछ अधिक थके हुअे लगते हैं ।

प्रार्थनाके बाद गरम पानी किया । परन्तु शहदकी बोतल नहीं मिली । कोअी अुठा ले गया दिखता है, क्योंकि मैंने रातको सब कुछ तैयार करके रखा था । सुबह देखा तो बोतल गायब थी ! परन्तु खुशकिस्मतीसे अनुदीदीके पास अच्छा गुड था । अुसमें गरम पानी डालकर नींबू निचोडा और वह बापूजीने पिया । कहने लगे, "कोअी हर्ज नहीं । जो ले गये होंगे वे खानेके काममें ही तो लेंगे । हमारा काम गुडसे अच्छी तरह चल जाता है । अब बोतल कौन ले गया है, अुसकी जांच करानेके झगड़ेमें मत पड़ना ।"

प्रार्थनाके बाद कुछ पत्र देखते देखते—हाथमें पत्र रखकर ही—बापूजी सो गये । ये पत्र यदि अुनके हाथमें से ले लेती तो वे जाग जाते । अिसलिअे सामान बांधनेमें मुझे देर हो गअी । बाहर कीर्तनवाले आ गये थे । सब सामान जमानेमें मुझे पांच मिनट ज्यादा लगे । बापूजी कहने लगे, "लोग कभीके आ गये हैं । कहा जायगा कि तुमने आज पांच सो आदमियोंके पांच मिनट चुरायें हैं । यह मुझे बर्दाश्त नहीं हो सकता । मैं जाता हूं । तुम पीछेसे आ जाना । परन्तु आज मैं जाता हूं अिससे यह न समझ लेना कि रोज मैं अिसी तरह चला जाअूंगा और तुम दौडकर मुझे पकड़ सकोगी, अिसलिअे रोज अैसा करोगी तो चलेगा । तुम लड़की हो और मैं बूढा हूं, अिस विचारसे तुम छूट सकती हो । परन्तु वह अपराध होगा । अिसलिअे सदा नियत समय पर काम

होना चाहिये । किसी आदमीको समय देकर कहा हो कि सात बजे मैं बाहर निकलूंगा, तब सात पर दो सेकण्ड भी हो जायं तो मुझे अखरेगा । मुझे अुठा देना तुम्हारा धर्म था । मुझे जगाकर भी चीजें जमा ली होती तो वह तुम्हारा पूण्यकार्य माना जाता और कहा जाता कि तुमने अपने धर्मका पालन किया है ।"

बाकीका काम रोजकी तरह । सुबहसे मुझे बुखार था । ग्यारह बजे १०३° हो गया । परन्तु बापूजीसे कह देती तो बिस्तर पर लिटा देते, अिस डरसे नहीं कहा । दो बजे लगभग १०४° हो गया तो सो गअी । चार बजे अुतर गया । फिर बापूजीके पेडू पर मिट्टीकी पट्टी रखी । और दो घंटे आराम करके काममें लम सकी, अिससे मनमें संतोष हुआ । मिट्टी लेते समय बापूजी मेरी डायरी देख गये और अुस पर हस्ताक्षर किये ।

शामको प्रार्थनामें बरसात हुअी तो भी कोअी अुठा नहीं । बापूजी पर चद्दर डाल दी । फिर भी मैं और बापूजी काफी भीग गये । लोगोंमें से कोअी अुठा नहीं । मुसलमान भाअी अच्छी संख्यामें थे । भजनके बाद अेकाअेक नअी धुन दिमागमें आ जानेसे मैंने वही गाअी । लोगोंने तालके साथ सुन्दर ढंगसे गाअी ।

रघुपति राघव राजाराम पतित-पावन सीताराम,
अीश्वर अल्लाह तेरे नाम सबको सन्मति दे भगवान् ।

यह धुन गाअी तो सही, परन्तु मुझे डर था कि बापूजीसे पूछे बिना मैंने जो समझदारी बताअी अुसका अुनके मन पर न जाने क्या असर होगा ।

परन्तु नियमानुसार धुनके बाद प्रवचन हुआ । अुसमें अिस धुनका अुन्होंने सुन्दर अुल्लेख किया । अिस पर मेरे संतोषका पार नहीं रहा ।

प्रार्थना-स्थलसे लोटे तब बापूजी कहने लगे, "आजकी धुन मुझे बडी मधुर लगी । लोगोंको पसंद आअी । तुमने कहांसे सीखी ? या तुमने खुद बना ली ?"

मैंने अुसका अितिहास कहा: "पोरबन्दरमें सुदामाके मन्दिरमें अेक सभागृह था (आज भी है) । वहां अंक ब्राह्मण महाराज कथा कहते थे । अुनकी कथा पूरी होने पर धुन गाअी जाती थी । अुसमें प्रत्येक जातिके लोग भाग ले सकते थे । मैं भी अपनी मांके साथ आठ दस वर्षकी अुम्रमें अिस सत्संगमें जाया करती थी । वहां अेक दिन मैंने यह धुन सुनी थी । यहां तो आज अचानक दिमागमें आ गअी ।"

बापूजी कहने लगे, "अीश्वरने ही तुम्हें यह धुन सुझाअी । मेरे यज्ञमें अीश्वर किस खूबीसे मदद दे रहा है ! अुस शक्ति पर मेरी श्रद्धा अधिकाधिक प्रबल होती जा रही है । चारो ओरसे जब मेरे कामोंका विरोध हो रहा है, तब मैं अधिक दृढ़ होता जा रहा हूं । मेरे साथ मेरा अीश्वर है और वह मुझे कितनी सहायता दे रहा है, यह तो तुम देखो ! आजकी यह रामधुन अिसकी साक्षी है ।...

"पुराने जमानेमें अैसा ही था । अब रोज यही धुन गवाना । कौन जाने अिस कठिन समयमें अीश्वरने ही तुम्हें यह धुन सुनाअी हो ! ठीक समय पर अिससे प्रार्थनामें नये प्राणका संचार हो गया । मां-बापके साथ भजन-कीर्तनमें जानेसे कभी कभी अैसा लाभ होता है, जो जीवनमें महत्वपूर्ण भाग अदा करता है । मैं भी पोरबन्दरमें रामजीके मंदिरमें जाता तब बडा आनंद आता था । परन्तु आजकल तो सब कुछ मिटता जा रहा है । सुदामाजीके मन्दिरमें और वह भी ब्राह्मणने अल्लाहका नाम बहुत स्वाभाविकतासे लिया । आजका यह कलुषित वातावरण तो पिछले पांच-सात वर्षोंमें ही बढ़ा है ।

घूमकर आने पर दूधको फाडफर अुसका पानी लिया । नारियालका मसका लिया और काता । अखबार सुने । साढे नौ बजे बापूजी सोये । मैंने काता नहीं था अिसलिअे कातकर दस बज सोअी ।

बरसातमें भीग गअी थी, अिसलिअे सोते समय फिर बुखार आ गया । परन्तु अब सोना ही है, अिसलिअे कोअी चिन्ताकी बात नहीं ।

डाल्टा

२३-१-१९४७

आज बापूजी अेक नींदमें सुबह हो जानेकी बात कह रहे थे । जब सरदार जीवनसिंहजी जगाने आये तभी जागे । रोजकी तरह प्रार्थना । गरम पानी पीते समय . . . के साथ अुनके कामोंके बारेमें बातें की । और बादमें अुनके बच्चोंके बारेमें भी बातें की । बालकोंके बारेमें बोलते हुअे बच्चोंके प्रति माता-पिताकी क्या जिम्मेवारी है और माता-पित्ता आजकल किस ढंगसे अपना फर्ज अदा करते हैं, अिसकी सुन्दर, ठोस और बोधप्रद बातें बापूने कही. ". . . नहीं समझता कि सत्य कया चीज है; अुसकी मेरे पास बहुत शिकायतें आअी है । मेरे खयालसे बच्चे अैसे बनें तो अिसमें मैं माँ बापका कसूर मानता हूं । तुम्हारे अितने बालकोंमें से किसीमें भी तुम्हारा गुण क्यों नहीं आया ? अिसका कारण यह है कि तुमने बच्चोंकी तरफ धयान ही नहीं दिया । मां-बाप लगातार बच्चे पैदा करते जाते हैं, परन्तु बच्चोंके संस्कार या शिक्षाकी परवाह नहीं करते । अपने विषय-सुखके लिअे भारतका (देशका) कचूमर निकालना अिसे ही कहा जायगा । मेरा ही अुदाहरण लो । हरिलालके जन्मके समयका । वह पैदा हुआ तब मैंने अुतना ध्यान नहीं दिया जितना पिताकी हैसियतसे मुझे देना चाहिये था । अुसे छोटासा छोड़कर मैं विलायत चला गया । परिणाम क्या हुआ, यह तो तुम जानते ही हो । अब अुसका ब्याह कर देनेमें ही अुसका भला है । . . . की शादी न की होती तो वह बिगड़ जाती ।" . . . अुन्हीसे मेरी अेक बात कही कि "अुसने मनुके बारेमें जो अीर्ष्याभरे वाक्य मुझे सुनाये है, वे मैंने मनुसे कहे नहीं । न कहना चाहता हूं ?" . . . यह बात सुनकर मैं अुद्विग्न हो गअी कि मैं तो किसोके बीचमें पड़ी ही नहीं फिर अैसा क्यों हुआ । अिस प्रकार विचारों ही विचारों में पतियालासे डाल्टा तक पहुंच गये ।

रोज 'अेकला चलो रे' का यात्राके दौरानमें गाया जानेवाला भजन आज नहीं गाया । मैं प्रात-कालकी बापूजी और . . . की बातें सुनकर मनमें दुःखी थी, अिसलिअे यह भजन गाना भूल गअी । परन्तु यहां आने पर चुपचाप बापूजीके पैर धो रही थी तब अुन्होंने अुलाहना दिया, "आज तुमने अपने मनका गाना मुक्त कंठसे यात्रामें नहीं गाया । जो कुछ मनमें हो कह दो । आज कुछ

परेशान ही क्या ? तबीयत ठीक नहीं है ?" वगैरा बातें पूछी । मैंने बापूजीसे कहा, बादमें कहूंगी ।

मालिश वगैरा निबटाकर बापूजीको स्नान करा रही थी तब बापू फिर मुझसे कहने लगे, "यदि तुम शान्त हो गअी हो तो अब कहो ।" मैंने सुबहकी बात कही और मेरे लिअे अिन लोगोंको अितना दुःख है, वगैरा कहा ।

बापू बोले, "मनको अितना दु.खी क्यों बनाती हो ? मुझे भी कितने ही लोग गालियां देते हैं । क्या लोग मेरी अीर्ष्या नहीं करते होंगे ? परन्सु मैं अिस तरह सब बातें धयानमें रखू तो अपनेको संभालना भूल जाअूं और पागल बन जाअूं । अिसीलिअे मैंने . . . की कही हुअी बातें तुमसे नहीं कही थी । आज भी तुम्हारे सामने कहनेकी अिच्छा नहीं थी । परन्तु तुम अपना काम कर रही थी और . . . के साथ हो रही बातें खानगी नहीं थी । . . . यह आदमी बहुत भला है, बैरागी है । तुमने देख लिया कि मैंने तुम्हारे सामने अुसे बच्चोंके लिअे अितना अुलाहना दिया, परन्तु अुसने कोअी अुत्तर नहीं दिया । अिसीलिअे मैंने अुसे अपने पास रख छोड़ा है । हमें सदा गुणग्राही रहना चाहिये । तुम मेरे वानर गुरुको जानती हो न ? कोअी हमारी निन्दा करे तो हमें खुशीसे नाचना चाहिये । 'निन्दक बाबा वीर हमारा' यह भजन तो तुम जानती हो ।

मैं बापूजीकी बातोंसे अुल्लासमें आ गअी । मेरे मनमें विलकुल स्पष्ट हो गया कि यदि हम अैसे छोटे मामलोंमें निराश हो जायं तो हमारा जीना व्यर्थ है ।

बापूजीने अन्तमें कहा, "जीवनका आनन्द ही परीक्षा तथा निन्दापूर्ण और आलोचनामय वातावरणके बीच सागोपाग जीनेमें है । और तभी पता चलता है कि अीश्वरके प्रति हमारी श्रद्धा कैसी है । तभी कहा जा सकता है कि हम अीश्वरके सच्चे भक्त हैं या केवल जबानसे बकवास करते हैं । तुम यह मीठा भजन गाती हो न ?

जीवनने पथ जता ताप थाक लागशे,
वधती विटवणा सहता तु थाकशे;

सहता सकट अे बधाये,
हो मानवी, ने लेजे विसामो.

(जीवनके मार्ग पर चलते हुअे तुझे धुप लगेगी और थकावट मालूम होगी; बढती हुअी कठिनाअियां सहते सहते तू थक जायगा । लेकिन अिन सब संकटोंको सहन करते हुअे भी हे मानव, तू कभी आराम न लेना; आगे ही बढ़ते जाना ।)

"यद्यपि सारा ही भजन बड़ा मधुर है, परन्तु यह हिस्सा मेरी दृष्टिसे तुम्हारी अिस समयकी मनोव्यथा पर अधिक लागू होता है ।"

आज बापुका नहानेमें बहुत समय चला गया । मुझे अुपरोक्त पाठ सिखानेमें तल्लीन हो गये थे । वाणीका प्रवाह सतत बह रहा था । मुझे पता था कि समय बहुत हो गया है, फिर भी अुस प्रवाहको रोक देनेका मेरा जी नहीं हुआ । अुनके अेक अेक शब्दमें, अेक अेक वाक्यमें ज्ञान भरा था ।

अिस गांवमें कुछ अधिक सुविधाअें हैं और गांव भी रमणीय है । परन्तु हर जगह बरसातका गीलापन बहुत है । गृहस्वामीने मुझे बड़े प्रमसे खिलाया । बापूजीका बंगलाका पाठ नियमानुसार चला । आजकी डाकमें सरदारदादा, जवाहरलालजी और श्वेब कुरेशीके पत्र आये थे ।

घनश्यामदासजी बिड़लाका भी पत्र था । सरदारदादाको बापूजीने छोटोसी चिट्ठी लिखी । विड़लाजीके आदमी संतरे भी दे गये । अुन्हीके साथ डाक भेजी ।

बापूजीने दोपहरके भोजनमें तो रोजके अनुसार ही चीजें ली । शामको फाड़े हुअे दूधका पानी और शहद लिया । आज लिखनेमें बापूजीका बहुत समय बीता । बहुतसे पत्र आये और अुनके अुत्तर दिये । सबको बापूजीने स्वयं ही पत्र लिखे । अिसके बाद वे सो गये । आजके तार १२० हुअे । बापूजीने तुनाअीकी पूनियां काती ।

मुरियम,

२४-१-१९४७, शनिवार

प्रार्थना नित्यकी भांति हुअी । प्रार्थनाके बाद आसामके बारेमें बापूजीने जो प्रस्ताव तैयार किया था अुसके कागज ढूंढनेमें अुनका बहुत समय चला गया । निर्मलदाने भी तलाश किये, लेकिन नहीं मिले । शायद दूसरे कागजोके साथ निर्मलदाकी फाअिलमें कलकत्ते चले गये हो । बादमें मेरी डायरी सुनी । अुस पर तुरंत हस्ताक्षर किये । बापूजी बंगलाका पाठ कर रहे थे अुस बीच मैंने अुनका सूत दुवटा किया । लिखते-लिखते पंद्रह मिनट सो लिये । मैंने पैर दबाये । अितनेमें रवाना होनेका समय हो गया । यहां आठ बजे पहुंचे । डाल्टासे मुरियम तक अढाअी मीलका रास्ता है ।

आज हम अेक मुसलमानकी बाड़ीमें ठहरे है । बड़ा प्रेमी कुटुम्ब है । गृहस्वामीका नाम हबीबुल्ला साहब पटवारी है । मुसलमान भाअी बापूजीसे बड़े प्रेमसे मिले । मौलवी साहबने जो चाहिये सो मदद दिलवाअी । मुझे अपने घरकी स्त्रियोंके पास (जनानखानेमें) ले गये । मेरा अुनसे और अुनका मुझसे परिचय कराया और बापूजीको समय मिले तब बहनोंके पास लानेकी बिनती की । अिसके बाद मैं बापूजीकी मालिश, स्नान वगैरा निबटाकर रोजके काममें लगी । बापूणी नहाकर बाहर आये । तब मैं अुन्हें घरकी स्त्रियोंके पास ले गयी । सबने भक्तिपूर्वक अुन्हें सलाम किया । कुछ बहनें शरमा रही थी । अुनसे बापूजीने कहा, "मैं तो तुम्हारे बापके बराबर बुढा आदमी हूं । मुझसे कोअी स्त्री पर्दा रखती हो नहीं । पर्दा रखना हो तो सच्चा पर्दा दिलमें रखना चाहिये । झूठा पर्दा छोड़ दो । बाहरसे पर्दा रखो और मनमें विकार भरे हो तो वह पाप है ।”

हबीब साहबने अिसका सुन्दर अनुवाद करके बहनोंसे कहा, “आज हम पावन हो गये । हम पर हिन्दुओंको मारनेका काला कलंक है, अिसलिअे हम पापी हैं । हमारे आगनमें ये खुदाके फरिश्ते आये हैं, अुनके दर्शन करके पावन होनेमें पर्दा कैसा ? ” यह जरा जोर देकर कहा, अिसलिअे सब बहनें बाहर आ गअी । कुछ बच्चोंको बापूजीने संदेशके टुकड़े दिये ।

बापूजीने बहनोंकी सफाअी पर ध्यान आकर्षित किया । “तुम बाहरकी और हृदयकी सफाअी करो ।” यह पहला ही अवसर है कि मुसलमान परिवारमें हम अिस प्रकार कुटुंबी जैसे बन सके । बापूजीका धीरज और तप सफल हुआ ।

बापूजी मुसलमानोंको सलाम करते थे तो भी वे मानते थे कि गांधी हमारा दुश्मन है । परन्तु अुन लोगोंको बापूने प्रेम और धीरजसे जीत लिया ।

दोपहरको बापूजीने रोजकी तरह ही खुराक ली । परन्तु हबीब साहब बापूजीके लिअे खास तौर पर रामफल लाये, अिसलिअे खाखरा अेक ही खाया । खाकर बापूजी तुरंत सो गये । मैंने पैरोमें घी मला । नहाकर कपड़े धोये, अितनेमें बापूजी जाग गये । अुन्हें नारियलका पानी दिया ।

मैंने डेढ बजे तक भोजन नहीं किया था, अिसलिअे बापूजी मुझ पर नाराज हुअे और अपने पास ही थाली लाकर खाने बैठनेको कहा । भूल हो गअी अिसलिअे अुनका हुक्म मानना ही पड़ा । खाना खाकर मिट्टीकी पट्टी रखी । मिट्टी लेते हुअे बापूने मुझसे पत्र लिखवाये । ठक्करबापा, शारदाबहन और बलसारियाको । . . . पत्र लिखवा रहे थे, अितने बाबा (सतीशबाबू) और मजिस्ट्रेट आये ।

शामकी प्रार्थनासे पहले नारियलका दूध, बकरीके दूधका संदेश और अेक केला लिया ।

प्रार्थना-सभा आज बहुत बडी थी और सब लोग आनंदसे रामधुन गा रहे थे ।

बापूजी बोले : “आज प्रार्थना-सभा बहुत बड़ी थी और हिन्दू-मुसलमान सब धुनमें शरीक थे । अुसमें कहीं भी गड़बड़ नहीं दिखाअी देती थी । अिस गांवका वातावरण अच्छा रखनेमें हबीब साहबका काफी हाथ मालूम होता है ।”

प्रार्थनासे लौटने पर भी अेकके बाद अेक लोग दर्शन करने आते रहे । साढ़े नौ बजे तक यही हाल रहा । बापूजी बहुत थक गये थे । सवा दसके बाद सोये ।

(बापू, २५-०१-१९४७, हीरापुर, रवि)

हीरापुर,

२५-०१-१९४७

रातको बापूजीके पेटमें थोड़ी गड़बड़ी थी । मुझे भी बुखारकी हरारत-सी मालूम होती थी । प्रार्थना नियमानुसार हुअी । प्रार्थनाके बाद गीताके आठवें अध्यायके श्लोकोंके अुच्चारणमें बापूजीने मेरी भूले बताअी ।

अेक (कार्यकर्ता) भाअीसे बापूजीने कहा, "मेरे साथ जो लोग स्वयंसेवकके तौर पर काम करते हैं, अुनका भोजनालय अलग होना चाहिये । अुन्हें हाथसे खाना पकाना चाहिये । नहीं तो जिस गृहस्वामीके यहां वे ठहरेंगे, अुसके लिअे भार बन जायेंगे ।" अुन्होंने यह बात स्वीकार की।

गरम पानी देनेके बाद बापूजीने मुझे जबरन् सुलाया । साढ़े छह बजे अुठी । अुठकर मैंने बापूजीके लिअे रस निकाला । परन्तु सो जानेसे मेरा लिखने और सूत अुतारनेका सब काम रह गया । मुरियमसे यह गांव केवल डेढ़ मील पर होनेके कारण यहां जल्दी पहुंच गये । मुरियमसे रवाना होनेके पहले सभी बहनें बापूजीसे मिली । बापूजीने अुनसे कहा, "हिन्दू स्त्रियोंको अपनी बहनकी तरह समझना । जब तक तुम घरकी और बाहरकी सफाअी नहीं रखने लगोगी, तब तक हृदयकी स्वच्छता तुममें आ ही नहीं सकती । अिसलिअे आज ही मैं अपने कपड़ोंकी, अपने बच्चोंकी, घरकी और शरीरकी सफाअी करने लग जान । अिससे तुम देखोगी कि तुम्हारे दिलोंकी सफाअी अपने-आप होने लगी है ।"

यहां आकर बापूजीने थोडा लिखनेका काम किया । मालिश और स्नानके बाद सदाकी भांति भोजन किया । मुझे भी साथ ही खा लेनेको कहा । परन्तु मैं नहाअी नहीं थी, अिसलिअे नहीं खाया । आज बापूजीने कहा, "कलसे मुझे खिलानेमें तुम्हें समय नहीं खोना चाहिये । अैसे लाड़ तो बा (कस्तूरबा) करती थी ! तुम अिस तरह मक्खियां अुड़ाने बैठोगी तो तुम्हारा भी काम पूरा नहीं होगा और मेरा भी नहीं होगा ।"

दोपहरको बापूजी अच्छी तरह लगभग घंटे भर सोये । तबीयत अच्छी नहीं थी । स्वामीजीने गीताके कुछ प्रश्न पूछे । अुत्तरमें अेक बात बापूजीने कही, "अीश्वर-परायण मनुष्य काममें गलती

करे तो यह भी सुधर जाती है । आज मैं अधिक खा गया । पेट आराम चाहता था । कै करने जैसी हालत हो गअी । रोका जा सके तो रोकना था, अिसलिअे मैं सो गया । लेकित कै रोकी, अिसमें थकावट बहुत मालूम हुअी । परन्तु रामनामकी अच्छी मदद रही । नतीजा यह हुआ कि अच्छी तरह सो सका और सब काम भलीभांति हो गया ।"

आज बापूजीके बस्तेमें से बहुतसे बेकार कागज निकाल डाले । निर्मलादाने अिस काममें अच्छी सहायता दी ।

शामको बापूजीने भोजनमें कुछ नहीं लिया । कलसे प्रार्थना-प्रवचनके नोट लेनेको बापूजीने मुझे कहा, ताकि अखबारोंमे भाषणकी जो सिपोर्ट जाती है अुसमें कुछ छूट न जाय । वैसे निर्मलदा तो लेते ही है । बापूजी हिन्दीमें बोलते है और वे अंग्रेजी या बंगलामें लिखते है, परन्तु भूल तो हिन्दीमें ही लिखी जा सकती है ।

प्रार्थनासे आकर पौन घंटा घूमे । साढ़े नो बजे बापूजी और मैं दोनों साथ ही सो गये। आज जल्दीसे जल्दी सोये ।

बासा,

२६-१-१९४७

आज बापूजी बहुत जल्दी अुठे । अढ़ाअी बजे पाखाने जाना पड़ा, बादमें नहीं सोये । मेरी डायरी देखी । दूसरा काम किया, अितनेमें लगभग रोजके अुठनेका समय हो गया । अिसलिअे दातुन-पानी किया ।

बापूजीके साथ जो सवयंसेवक आते हैं अुनका अलग भोजनालय रखनेकी बात की । मैं और निर्मलदा जहां खाते है वहां ये लोग नहीं खा सकते । कल हीरापुरमें हम जहां ठहरे थे वहांके गृहस्वामीने अिन सबको खाना खिलाया था । अिसलिअे अिस बातका खास तौर पर ध्यान रखनेके लिअे बापूजीने यहांके कार्यकर्ता . . . भाअीसे कहा ।

२६ जनवरीको स्वातंत्र्य-दिवस होनेके कारण हीरापुर छोड़नेसे पहले वन्देमातरम् का गौत गाया गया । फिर सात चालीसको हीरापुरसे निकले । यहांके लिअे रवाना होनेसे पहले कुछ

मुसलमान बहनोंसे मैं मिलने गअी तो अुन्होंने बापूजीसे मिलनेकी अिच्छा प्रगट की । अिसलिअे बापूजीको मैं अुन महिलाओंके पास ले गअी । परन्तु अेकके सिवा सब महिलाअें अन्दर चली गअी । मुझे भी दुःख हुआ कि बहनोंके कहनेसे मैं बापूजीको यहां लाअी और यह सब अन्दर चली गअी । बहुत समझाया, परन्तु बाहर निकली ही नहीं । अिसलिअे अन्तमें बापूजी हर बहनकी झोपड़ीमें जाकर हरअेकको सलाम करके आगे बढ़े । पंद्रह-सोलह वर्षकी लड़कियोंके पास जा जाकर बापूजी सलाम कर आये ! अिस पर मैं बहुत शर्मिन्दा हुअी । यह कोअी छोटी-मोटी बदनामीकी बात नहीं है । मैंने बहनोंसे कहा, अिसमें आपसे अधिक मुझे नीचा देखना पड़ा है, क्योंकि आपके कहनेसे मैं बापूजीको लाअी और यहां आकर मेरी अुम्रकी लड़कियोंको बापू जैसे महापुरुषको सलाम करना पड़ा ! आप मेरी बहनें हैं, अिसलिअे आपसे ज्यादा मुझे शर्म आ रही है । हमारे घर पर अेक महापुरुप आये हैं, अैसा आप न मानें तो मुझे कोअी आपत्ति नहीं । अपनी दृष्टिसे जिन्हें मैं भगवान मानती हूं अुन्हें आप भगवान न मानें अिसे मैं समझ सकती हूं । परन्तु हमसे यह आदमी अुम्रमें बड़ा है, अिस खयालसे तो आपको अिनका सत्कार करना चाहिये । बड़ी देरके बाद मेरी बात अुन्हें जंची; लेकिन अुनमें से हरअेकके धर हमारे ही आनेके बाद ही । फिर सब महिलाअें बाहर निकली ।

अिस पर बापूजी कहने लगे, “देखा तुमने ? अेक अेक लड़कीका मन जहरसे भरा है । स्त्रियोंमें भी कितना जहर फैल गया है ? अिस जहरको मिटानेमें तुम जितनी अुपयोगी हो सको अुतनी होनेका प्रयत्न तुम करना । तुम्हारे शुद्ध हृदयका प्रतिबिम्ब अिन लोगों पर पडे बिना नहीं रहेगा । अिसलिअे ये समझ लो कि अिस काममें तुम जितनी अुत्तीर्ण होगी अुतना मुझे लाभ होगा । तुम और मैं दो ही व्यक्ति अिस महायज्ञमें हैं । अिसलिअे यह समझ लो कि तुम्हें मेरा कोअी काम छोड़कर भी यह काम पहले करना है । तुमने देखा कि आज पहले बहनें नहीं आअी, अुसमें पुरुषोंकी सिखावट थी ? परसों हबीब साहबके यहां जी दृश्य देखा अुससे यह अुलटा ही था ।”

यहां हम ८-१० पर पहुंचे । आजकी यात्रा सबसे छोटी थी । बापूजीको लगा मानों कुछ चले ही नहीं । आकर तुरन्त ही अुन्होंने डाक लिखी । रशीद अहमद, कुलरंजनबाबू, प्रकाशम्,

जवाहरलालजी, मदालसा बहन, डॉ. जोशी और रविशंकर शुक्लको पत्र लिखवानेके बाद मालिश हुअी । मालिश शुरू करनेसे पहले अे. पी. आअी. के अेक प्रतिनिधि शैलेनभाअीने बापूजीसे पूछा कि आज स्वातंत्र्य-दिवस होनेके कारण कोअी खास कार्यक्रम रखा जाय या नहीं । बापूजीने कहा, "मैं तो यह यज्ञ आरंभ करके बैठा हूं । मेरे लिअे यही स्वातंत्र्य-दिवस है । परन्तु गांवके लोगोंमें अुत्साह पैदा करनेके लिअे तुम लोग (प्रेस-प्रतिनिधि और दूसरे) अुत्सव मना सकते हो।"

अिस कारण यहां सरदार निरंजनसिंह गिलके हाथों ध्वज-वन्दन हुआ । बापूजी और मैं अुसमें शरीक होकर सीधे मालिशके लिअे घूपमें लगाअे हुअे तम्बूमें गये । सामूहिक भोजनका कार्यक्रम रखा गया था । बादमें समाचार आये कि यदि मुसलमान लोग खाने आयेंगे तो धोबी लोग नहीं आयेंगे, क्योंकि अुन्हें डर है कि अैसा करनेसे संभवत अुन्हें जबरन् मुसलमान बनाया जायगा । अिसलिअे बापूजीने कहा, "जो डरे हुअे हैं वे सहभोजमें भाग न लें ।" भोज अिसी मुहल्लेमें रखनेको कहा । मुझे भी अुन्होंने शामको भोजमें जानेको कहा । बापूजीने आज अुपवास किया है, अिसलिअे स्नानके बाद गरम पानी और शहद लिया । शामको अुपवास छूटेगा । खूब काता । मिट्टी लेते हअे पत्र लिखवाये : अुरुली कांचनवाले मणिलालभाअी, गोखलेजी, धीरुभाअी, डॉ. भागवत और परमानन्दभाअीको ।

बापूजीने स्वातंत्र्य-दिवसके विषयमें दु:खी हृदयसे कहा, "आज २६ जनवरी है, स्वाधीनताका दिवस है । जबसे कांग्रेसका जन्म हुआ; तबसे भारतने अेक नया जन्म लिया है । सब हिन्दुस्तानी यह जानते नहीं थे, परन्तु धीरे धीरे कांग्रेसकी वृद्धि हुअी और कांग्रेसने गांव-गांवमें आन्दोलन करके लोगोंको यह भान कराया कि आजादी क्या चीज है । अुस जमानेमें अेक भी गांवमें कोअी जानता नहीं था कि हिन्दू-मुसलमान- वैमनस्य क्या है । परन्तु आज दोनोंमें अतिशय वैमनस्य फैल गया है । आज दोनोंके दो दिल हो गये है, यह दु:खकी बात है । यदि अैसा कलुपित वातावरण न होता तो मैं यहां तिरंगा झंडा फहराता । मुझसे कुछ भाअियोने पूछा था । मैंने जान-बूझकर अुन्हें मना कर दिया । परन्तु यदि किसी अंग्रेज अफसरने मुझसे कहा होता कि यहां तिरंगा झंडा नहीं फहरा सकते तो मैं जरूर वही झंडा फहराता । अिसके लिअे मेरी जान भी

देनी पड़ती तो मैं दे देता । परन्तु आज मैं किससे कहूं ? मान लीजिये मैं यह झंडा फहराअूं और मुसलमान भाअी अुसे सहन भी कर लें । परन्तु मनमें वे यही मानेंगे कि यह आफत कहांसे आ गअी ? अैसा मैं नहीं करना चाहता । परन्तु मेरे मनमें जो भरा है वह तो कहूंगा । जब झंडेकी बात पहले-पहल अुठी तब मेरे मनमें विचार आया कि अेक ही रंग रखेंगे तो अन्याय होगा । हिन्दुस्तानमें तो अनेक जातियां हैं । हां, अेक दिन अैसा जरूर था जब हिन्दू, मुसलमान, पारसी, सभी भारतीय जातियां मानती थी कि यही हमारा झंडा है । और अिसी झंडेके लिअे लोग मरे भी है । आज तो कितने ही झंडे हो गये हैं । परन्तु तिरंगा झंडा तो होना ही चाहिये । जैसे यूनियन जेक है । किसी समय अैसा जमाना था, परन्तु अब नही रहा । आज मैं किससे कहूं ? अथवा किसके साथ लडूं ? हम सब भारतीय हैं और भाअी भाअी है । स्वाधीनतामें आपसमें, अेक-दूसरेके मनमें, वैरका जहर फैल जाय तो वह स्वाधीनता किस कामकी ? परन्तु आज तो वह सब हमारे लिअे आकाश-कुसुम जैसी बात हो गअी है । हमें अैसा लगना चाहिये कि जब तक आजादी न मिल जाय तब तक हम चेनसे नही बैठेंगे । आज हम भाअी भाअी आपसमें लड रहे हैं । आजादीसे पहले पाकिस्तान कैसा ? क्या अंग्रेज पाकिस्तान देंगे ? कौन जानता है आजादी कैसी होगी ? अंग्रेज तो यहांसे अवश्य जायेंगे । परन्तु अमरीका और रूस मौजूद है । अगर हम सावधान नहीं रहेंगे तो मर जायंगे । अभी अभी 'जन-गण-मन' गाया गया । कितना सुन्दर गीत है ? हिन्दुस्तानमें अैसी अैसी चीजें मौजूद हैं। परन्तु अिसे हम हृदयसे गाये तो सब अेक हो जायें । अैसा नही करेंगे तो हम मूर्ख कहलायेंगे । यदि आप सबका हृदय स्वीकार करे कि यह अनुभवी बूढ़ा जो कह रहा है वह सही है, तो आजसे आप मेरे कहे मुताबिक चलनेकी कोशिश कीजिये ।

"आज मैंने झंडा नहीं फहराया । परन्तु मेरे साथ जो अखबारोंके प्रतिनिधि घूम रहे हैं अुन्होंने फहराया । बंगालके महापुरुप नेताजीने अिसी स्वाधीनताके लिअे अपनी जान कुर्बान की थी । यदि अुनके लिअे हम अितना भी 'यज्ञ' न करे तो किसके लिअे करेगें ?"

आज बापूजीने घूमनेके बाद दुध और खजूर लिये । मैं अपना कामकाज निबटाकर प्रेसवालोंके निमंत्रण पर वहां भोजन करने गअी । खिचडी और शाक बनाया गया था । खाने

जानेमें मुझे आध घंटा देर हो गअी, अिसलिअे सब मेरी प्रतीक्षामें बैठे थे । साढे आठ बजे खाकर आअी तब बापूजी अखबार पढ़ रहे थे । साढ़े नौके बाद सोये ।

बापूजीको रातमें अेक दो बार अुठना पड़ता है । मैं रोज सोचती हूं कि अुस समय अुठ जाअुंगी और तसला, पानी वगैरा दे दूंगी । परन्तु बापूजी अितने धीरेसे अुठते हैं कि मुझे पता ही नहीं चलता । अुलटे ठंडसे सिकुडकर पडी रहती हूं तो मुझे अच्छी तरह ओढा देते हैं । अिसलिअे सोनेसे पहले मैंने बापूजीस कहा, आपकी सेवा करनेके बजाय मैं रातको आपसे सेवा कराती हूं। आजसे मुझे जरुर अुठा दिया करे ।

वे बोले, "रातकी मेरी सेवाकी बात कहती हो, परन्तु दिनमें मैं तुमसे सेवा कराता हूं । तुम मुर्देकी भांति गहरी नींदमें सोअी रहती हो । अुसे मैं सुन्दर निर्दोष निद्रा कहूंगा । मुझे वह बहुत अच्छी लगती है । यह निद्रा अिस बातका विश्वास कराती है कि तुम कितनी निर्दोष हो । मनुष्यका जैसा मानसिक वातावरण होता है वैसा ही परिणाम दिखाअी देता है । भले मनुष्य बोले नहीं, परन्तु निद्रा, आहार, व्यवहार आदि सबसे परीक्षा हो जाती है कि वह किस कोटिका आदमी होगा।"

बापूजीके पैर दबाकर, सिरमें तेल मलकर और प्रणाम करके मच्छरदानी बन्द की । अिस वक्त पौने ग्यारह बजे है । मैंने अपनी डायरी भी पूरी कर ली । दातुनकी कूची बनाना बाकी है सो बनाकर सोने जाअूंगी ।

पल्ला,

२७-१-१९४७, सोमवार

आज ठंड अितनी अधिक थी कि अुठनेका जी ही नहीं होता था । बापूजीके पैर बहुत ठंडे हो गये थे । बहुत देर तक दबाये । प्रार्थना आदि नित्यक्रम रोजके अनुसार चला । अब शामकी प्रार्थनाके समय अपनी डायरी साथ ले जाती हूं । बंगला भाषान्तर होता है अुस बीच मैं लिख लेती हूं । बापूजी सुबह पानी पीते समय रोज सुन लेते हैं । देखकर हस्ताक्षर कर देते हैं ।

आज बापूजीने बंगला बारहखडी पूरी की । अुसे लिखनेमें पूरा आध घंटा लगा । फिर कुछ पत्र लिखे । सात बजे थोड़ी देर सोये । ७-४० पर हम बासासे चले और ८-१० पर यहां पहुंचे । अेक ही मील चलना था ।

हमारा पड़ाव यहां अेक जुलाहेके घर है । बापूजीका मौन है । जुलाहा परिवार बड़ा प्रेमी है । धूप निकलनेके बाद बापूजीकी मालिश की । स्नान करके भी वे बाहर धूपमें ही रहे ।

आज दोपहरके भोजनमें बापूजीने पांच काजू, पांच बादाम, मुरमुरे और साग लिया । राजेन्द्रबाबूकी आत्मकथाकी पुस्तक आअी है । अुसे पढ़नेमें बापूजीने बहुत समय लगा दिया । सोमवार है अिसलिअे मुझे तो छुट्टी जैसा ही लगता है । अपना अतिरिक्त काम आज मैंने पूरा कर लिया । बापूजीकी चादरें और शतरंजी बड़ी मैली हो गअी थी । आज सब धो डाली । लगभग चालीससे अधिक कपड़े धोये । अिसमें तीन बज गये । बादमें कलके लिये खाखरे बना लिये ।

दोपहरको दो बजे बापूजीने नारियलका पानी लिया । शामको प्रार्थनाके बाद यहांकी यूनियनके पुराने अध्यक्षके घर गये । वह मुसलमान परिवार था । वहां बापूजीने नारियलका पानी लिया । बहनें भी मिली । अेक बहन आठवी तक पढ़ी हुअी थी । बापूजीने बहनोंसे खास तौर पर शिक्षा प्राप्त करने अर्थात् लिखना-पढ़ना सीखनेको कहा और कातने पर जोर देते हुअे कहा । “कातनेसे सौमें साठ रुपयेका कपड़ा बचता है । और कपासका तो यह देश है ही । फिर आजकल कपडेकी अितनी असह्य महगाअी है । हमारे अैसे देशमें कपड़े पर अंकुश ही किसलिअे हो ? बहनें विचार करे तो अुन्हें जरूर लगेगा कि वे अपना कितना समय फीजूल खो देती हैं । छोटी छोटी लडकियां भी कात सकती हैं । आप जो पर्दा रखती हैं, वह मनमें रखिये । पर्देका अर्थ है शरम, मर्यादा और सभ्यता । परन्तु बाहर दिखानेको पर्दा रखें और मन मैला हो तो पर्दा किस कामका?”

आज हम जिस जुलाहेके घरमें ठहरे हैं, अुस पर बापूजी बहुत ही खुश हैं । अुसका अुल्लेख करके बोले, “मुझे बडा आनंद होता है कि आज मेरा मुकाम अेक जुलाहेके घर पर है । मुझे सब बड़े प्रेमसे रखते हैं । प्रेमके बिना महल कैदखाने जैसा लगता है, जब कि प्रेमपूर्ण झोंपडी महलसे भी अधिक अच्छी लगती है । सच बात तो यह है कि मैं बंगालकी झोपड़ियों पर मुग्ध हूं । अिनमें

जो हवा और रोशनी मिलती है, वह कमरोमें कहांसे मिल सकती है ? परन्तु दुःखकी बात यह है कि अैसा सादा जीवन होने और कुदरतकी मेहरबानीके बावजूद यहांके हिन्दू और मुसलमान अेक-दुसरेके साथ मुहब्बतसे नहीं रहते । क्या धर्म भिन्न होनेसे हम अिन्सानियत खो देंगे ? परन्तु मुझे आशा है कि यह वैमनस्य हम जल्दी भूल जायंगे और अपनी जिम्मेदारीको समझेंगे । जहां दंगे हुअे हैं वहां अभी भी बाजार बन्द हैं, लोग अेक दसरेको अविश्वासकी दृष्टिसे देखते हैं । अिसमें नुकसान हमारा ही है; किसीको फायदा नहीं होगा । अेक तरफ अन्न न पकनेके कारण अकाल पड़ा हुआ है, तो दूसरी तरफ अज्ञान और जडताके कारण हम अपनी ही हानि कर रहे हैं । अपने हो पैरों पर कुल्हारी मार रहे हैं ।

"हमारे सामने कितने ही अैसे सवाल खड़े हैं, जिनके लिअे सरकारको जरा भी तकलीफ देनेकी आवश्यकता नहीं । हम खुद अुन सवालोको हल कर सकते हैं । अुदाहरणके लिअे, स्वास्थ्य, स्वच्छता, फल-फूलोंके छोटे छोटे पौधे अुगाना, पक्के पाखाने बनाना और नियमपूर्वक खाद तैयार करना अित्यादि अनेक काम हमारे सामने हैं । यदि हम अपने दिमागको अिन कामोंमें लगा दें तो सबको कितना लाभ हो ? किसीको अेक पलकी भी फुर्सत मिले तो मुझसे कहना । परन्तु यह तभी होगा जब हमारी बुद्धि खुले । प्रभुसे मैं निरंतर यह प्रार्थना करता हूं कि जैसा अिस लड़कीने 'सबको सन्मति दे भगवान' गाया, वैसे वह हमारी बुद्धिको खोले और हमें अच्छे काम करनेकी शक्ति दे ।"

यह आजकी प्रार्थना-सभाका प्रवचन है । निर्मलदा अिसका बंगला अनुवाद कर रहे थे, अुस बीच बापूजीने अपनी डायरी लिखी । मैंने अपनी लिखी ।

बापूजी शामको बहुत थक गये थे । प्रार्थनाके बाद घुमकर लौटने पर मैंने आज अुनक पैर धोये । बहुत ठंड है । स्टीम किया हुआ अेक सेब और दूध लिया । ओढ़कर अुन्होंने थोडासा काता । कातकर अखबार सुने शैलेनभाअी सुना रहे थे । बापूजी बहुत ठंड़े हो गये थे, अिसलिअे मैंने अुनका शरीर दबाया । सवा नौ बजेके बाद बिस्तर किया । बापूजीने हाथ-मुंह धोकर गरम पानी

पिया और लेट गये । बापूजीके सिरमें तेल मलकर और पैर दबाकर मैं भी पौने दस बजे सोअी । आजके जैसी ठंड कभी अनुभव नहीं की ।

रातमें भी बापूजीको बड़ी ठंड लग रही थी, अिसलिअे सुझे जगाया । मैंने और ओढ़ाया और खूब दबाकर शरीर गरम किया ।

पांचगांव,

२८-१-१९४७

सदाकी भांति पल्लामें प्रार्थना हुअी । आज निर्मलदाने बहुत मीठे स्वरमें भजन गाया ।

कल रातको बापूजीने स्त्रियोंके कुछ सवालोंकी छानबीन की थी । अुनके जो थोड़ेसे सवाल आये अुनमें अेक सवाल यह था कि यदि गुंडे स्त्रियों पर हमला करें तो वे क्या करें ? भाग जाय या सामना करनेके लिअे हथियार तैयार रखें ?

बापूजीने कहा, बचावके लिअे हथियार रखनेकी अर्थात् हिंसा करनेकी तैयारी की ही नहीं जा सकती । आदर्श अहिंसक साहस बढानेकी तैयारी करनी चाहिये । जो मनुष्य अहिंसक है, अुसके जीवनमें अैसे संकटका अवसर आता ही नहीं । वह शांति और गौरवके साथ हंसते हंसते मृत्युका आलिंगन करनेको तैयार रहता है । क्योंकि सच्ची सहायता हथियारोकी नहीं, परन्तु अीश्वरकी ही है ।

“संसारके पास आज आदर्श अहिंसासे पैदा होनेवाला साहस नहीं है, अिसलिअे यह अणुबम जैसे शस्त्रोंमें सुसज्जित है । परन्तु लोगोंको स्वाभाविक रूपमें किसी पर आधार रखे बगैर स्वतंत्रतासे रहना सीखना पड़ेगा । किसीके वश हो जानेकी अपेक्षा स्त्रियोंको प्राण त्याग देनेकी हिम्मत्त अपने भीतर पैदा करनी चाहिये । तब अुनमें अतरकी पवित्रता अितनी बढ जायगी कि गुंडोके हथियार अपने-आप नीचे गिर पड़ेंगे । मुझसे अपने प्राण दे देने और हमला करनेवालेकी जान लेनेके बीच चुनाव करनेको कहा जाय तो मैं कहूंगा कि हंसते-हंसते प्राण देवेमें ही सच्ची बहादुरी है ।”

प्रार्थनाके बाद मुझसे कुछ पत्र लिखवाये। अुनमें अुपरोक्त बातका अुल्लेख किया । पत्र लिखाते-लिखाते बापूजी सो गये । अेक महिलाने बापूजीको पेंसिलसे पत्र लिखा था। अुसका अुल्लेख करके बापूजीने लिखा, "अब तुम हमेशा स्याहीसे ही लिखना । पेंसिलसे लिखना पाप है, आलस्य में हिंसा है ।"

रोजकी तरह हम साढ़े सात बजे पल्लासे यहांके लिअे रवाना हुअे । रास्तेमें रामकुमार दे, मुहम्मद रजा और मुफलिस रहम, अिन तीन जनोंके घर गये । अिसलिये यहां नौ बजे पहुंचे । मुफलिस रहमके यहां रोजकी भाति मैं स्त्रियोंके पास गअी तो सब स्त्रियां अन्दर चली गअी और दरवाजा बन्द कर लिया । आज यह अेक नया ही अनुभव हुआ । थोड़ी देरमें अेक अधेड़ अुम्रकी स्त्री मेरे पास आअी । अुसने बड़ी भलमनसाहतसे बातें की । पूछा कि मेरा और बापूजीका क्या रिश्ता है। अितनेमें दूसरी स्त्रियां भी बाहर आ गअी । अेक बहन खाना बना रही थी । अुसने मुझे मछलीका शाक और रोटी खानेका बहुत आग्रह किया । मैंने कहा, मछली मैं खाती नहीं, और रोटी खानेकी अिस समय मुझे आदत नहीं । अिससे अधेड़ अुम्रवाली स्त्री कहने लगी, "तुम बहाने बनाती हो । तुम कहती हो कि गांधीजी हिन्दू-मुस्लिम-अेकता करनेके लिअे निकले हैं । परन्तु हिन्दू अपने-आपको अूंचा मानते हैं और हमें नीचा समझते हैं, हमसे भ्रष्ट होते हैं । तुम भी तो हिन्दू ही हो न ?"

मैंने कहा, "मुझे खानेमें कोअी अेतराज नहीं है । आपके मनको संतोष देनेके लिअे मैं रोटी मुहंमें डालनेको तैयार हूं, परन्तु अिस तवे या हाथकी भी मछलीका शाक लगा हुआ होगा तो मैं नहीं खाअूंगी ।"

शुद्ध रोटी बनाअी गअी । अुसमें से मैंने अेक टुकडा तोडकर खा लिया । अिन बहनोंने मेरी परीक्षा की । कहने लगी, "तुममें हिन्दू-मुस्लिमका भेद नहीं है ।"

मैंने रास्तेमें यह बात बापूजीसे कही । बापूजी कहने लगे, "तुमने थोड़ीसी रोटी ले ली यह अच्छा किया । परन्तु तुमने देख लिया न कि मेरे बारेमें भी बहनोंमें कितनी शंका है ?

मुहम्मद रजाके यहांसे संतरे आये । यहां आने पर बापूजीके पैर धोकर तुरंत मालिश की । स्नानके बाद खानेमें दो खाखरे, शाक, दो काजू, दूध और गृहस्वामीको खुश करनेके लिअे थोडा नारियलका संदेश खाया । खाते समय अधूरे रह गये पत्र लिखवाये । बादमें आराम किया । सोकर अुठने पर दो नारियलका पानी पिया । कातते समय फिर पत्र लिखवाने लगे । अितनेमें प्यारेलालजी और सुशीलाबहन आ गये । अिसलिअे पत्र अधूरे रहे ।

शामकी प्रार्थना-सभामें आज बहनोंके साथ मेरी मुलाकात और रोटी खानेका अुल्लेख करके बापूजीने कहा, "मेरी यात्रामें मुझे अेक हिन्दू और दो मुसलमानोंके घर ले जाया गया । अिससे मुझे बडा आनन्द हुआ । मैं तो भावका भूखा हूं । मुझे पहलेसे नहीं कहा गया था कि अितनी जगह जाना पड़ेगा, परन्तु रास्तेमें निमंत्रण देनेवाले भाअियोंमें मुहब्बत देखी अिसलिअे वहां चला गया । तीनों जगह मुझे कुछ न कुछ खानेके लिअे कहा गया । परन्तु वह मेरा खानेका वक्त नहीं था । मैंने कहा, मुझे फल भेजेंगे तो मैं जरूर खाअूंगा । मेरे साथ मेरी पोती भी यात्रा करती है । वह बहनोंके पास गअी । बहनोंने प्रेमसे अुसका स्वागत किया और अेक बूढी माजीने यह जानने पर कि यह लड़की मेरी पोती है अुसका आलिंगन किया । अेक बहनने मछलीका शाक और रोटी बनाअी थी । शाक-रोटी खानेका अुस बहनने मेरी पोतीसे आग्रह किया । परन्तु लड़की बेचारी क्या करती ? अुसने अिनकार किया और कहा कि अिस समय मेरी खानेकी आदत नहीं । तब बहनोंको संदेह हुआ कि छुआछूतकी दृष्टिसे यह लडकी कुछ नहीं खा रही है । अिस पर जरासी रोटी तोड़कर अुसने खाअी, अिससे बहनें खुश हो गअी । मुझमें या मेरे साथ यात्रा करनेवालोंमें जातपातका भेद नहीं है । हमें किसीके भी साथ बैठकर खानेमें जरा भी आपत्ति नहीं है । मैं अपने मुसलमान मित्रोंसे प्रार्थना करता हूं कि जो हिन्दू यह मानते हो कि मुसलमानोंके हाथका खानेसे अपवित्र हो जाते हैं अुनके प्रति आप अुदार दृष्टिसे देखें । मैं समझता हूं कि अुनका यह खयाल गलत है । परन्तु सच्चे प्रेमकी परीक्षा किसीके साथ खानेमें ही थोड़े होती है ? समय पाकर यह वहम अवश्य दूर हो जायगा । अिस दिशामें बहुत काम सफलतापूर्वक हुआ भी है । परन्तु वहम

जब तक पूरी तरह मिट न जाय तब तक जहां जहां आपको सच्चा प्रेम देखनेको मिले वहां अुसकी कद्र कीजिये । तभी आप सब अेक-दुसरेके अधिक निकट आ सकेंगे ।"

२६ जनवरीके प्रसंगका अुल्लेख करते हुअे बापूजीने कहा, "मेरे साथ अखबारवाले यात्रा करते हैं । अुन्होंने अेक समूह-भोजन रखा था । मुसलमान भाअी तो अुस पंगतमें खाने नहीं आये थे । परन्तु जिसके यहां ये भाअी ठहरे थे अुसने हाथ जोड़कर कहा कि सुझसे आप अपने साथ खानेका आग्रह न करें । आप तो अेक दिन रहकर चले जायंगे, लेकिन मुझ पर आफत आ जायगी । आपके जानेके बाद मुझ पर दबाव पड़ेगा कि तू भ्रष्ट हो गया है, अिसलिअे मुसलमान हो जा ।

"अिस आदमीका डर सुझे सच्चा लगा । और मैंने अखबारवालोंसे कह दिया कि आप अिस बेचारेकी झोंपडीमें सहभोज न रखें । हिन्दू बौर मुसलमान अपनी अपनी कमजोरी मिटाकर अेक-दूसरेके नजदीक कब आयेगें, यह मैं नहीं जानता । परन्तु यह मकसद पूरा करनेके लिअे जरूरत पडने पर मैं अपनी जान देनेको भी तैयार हूं । अिसलिअे आप सब मेरे साथ अीश्वरसे प्रार्थना करे कि हे प्रभो ! अैसा सुन्दर दिन जल्दी ही ला दे ।

मेरे छोटेसे प्रसंग परसे आज बापूजीने बडे गद्गद हृदयसे प्रवचन किया ।

प्रार्थनासे आकर बापूजीने आठ खजूर और आठ औंस दूध लिया ।

रातको दस बजेके बाद बापूजी सोये । तब तक प्यारेलालजीके साथ महत्त्वकी बातें की, प्रवचन लिखा और दूसरे पत्र लिखे ।

जयाग,

२९-१-१९४७

बापूजीका प्रार्थना अित्यादिका क्रम नित्यके अनुसार चला । कुछ डाक देखी और बंगला वर्णमाला लिखी । मुझे शब्द लिखवाये । बापूजी बंगला शब्द स्वयं सीखकर मुझे सिखाते हैं और मजेकी बात तो यह है कि स्वयं ककहरा लिख देते हैं और मुझे अुस पर हाथ घुमानेको कहते हैं । अुन्हें कोअी अक्षर या शब्द समझमें नहीं आता तो मुझसे पूछते हैं और मैं अुनसे पूछती हूं ।

दोनोंमें से कोअी न समझ सके तो जाते हैं निर्मलदाके पास । बापूजीने आज बारहखड़ीके अपने लिखे अक्षरों पर मेरा हाथ घुमवाया, ताकि मेरे अक्षर सुधरें । यह देखकर निर्मलदा खूब हंसे । कहने लगे, "ये शिक्षक और शिष्या खूब हैं !" अिस प्रकार आजकल हगारी बंगलाकी पढाअी चल रही है ।

साढे सात बजे हमने पांचगांव छोड़ा। सवा आठ बजे हम यहां पहुंचे । यहां रातभर जागकर गृहस्वामीने हमारी व्यवस्था बड़े प्रेमसे की थी । 'जंगलमें मंगल' अिसीका माम है । रामजीने जब चौदह वर्षका वनवास भोगा था, तब वनमें रहनेवाले भौलों या जंगली मनुष्योंने ही नहीं, पशु-पक्षियोंने भी कितने प्रेमसे अुनका स्वागत किया था, अिसका वर्णन हम रामायणमें पढ़ते हैं । वैसा ही यह दूसरा प्रत्यक्ष दर्शन मैं कर रही हूं । यहां भी हमारा मुकाम जंगलमें रहनेवाले जुलाहे, मोची, हरिजन आदि लोगोंके यहीं रहता है । परन्तु वे प्रेमसे नहला देते हैं । अुनका सत्कार बम्बअी-दिल्लीमें रहनेवाले शहरियोंके मुकामसे कहीं बढ़चढ़ कर है, अैसा कहूं तो अतिश्याक्ति नहीं होगी । वहां पढ़े लिखे लोग रहते हैं, जिन्हें बापूजीने अितनी तालीम दी है । यहां बापूजीका विस्तृत साहित्य पढ़नेवाला वर्ग भी है । लेकिन यहां केवल भक्तिमय प्रेम ही है । स्त्रियां भी अपने पर आ पड़नेवाले अितने असह्य दु:खोंके बीच भी बापूजीके आने पर अुनका स्वागत करनेके लिअे मंगल शंक बजाती हैं, शगुन करती हैं, तिलक लगाकर आरती अुतारनेको दीपमाला जलाती हैं और मंगलनांदसे आकाशको गूंजा देती हैं । सचमुच बापूजी जब दौरा करते हैं तब शहरोंका (बम्बअी, पूना, दिल्ली वगैराका) स्वागत मैंने अपनी आंखों देखा है । परन्तु यह स्वागत कुछ अनोखा ही लगता है । चारो ओरका वातावरण प्रकृतिकी शोभासे भरपूर है । नोआखालीके ये गांव बहुत ही रमणीय हैं । अुनमें भी ग्रामीण लोगोंका स्वागत । फिर कया पूछना ? अिसके सिवा ये सब पुरुष अकेले ही नंगे पैरों अैसी असह्य गर्दीमें यात्रा कर रहे हैं, अिस पवित्र यात्रामें शरीक होनेका मुझे जो सौभाग्य मिला है अुसके आनंदकी क्या बात कहूं ? आज मैं रामायणके अुस प्रसंगकी कल्पना अच्छी तरह कर सकती हूं जब लक्ष्मणजी रामचन्द्रजीसे वनवासमें सुदको साथ रुखनेकी प्रार्थना करने गये और रामचन्द्रजीने बड़ी आनाकानीके बाद अुन्हें अपने साथ ले जाना स्वीकार कर लिया

। तब अुन्हें कितना आनन्द हुआ होगा ? भगवानने बापूजीकी अिस यात्रामें रहनेका मुझे कैसा सुन्दर अवसर दिया है ! अुसकी दया वास्तवमें अपार है ।

यहां आकर बापूजीके पांव धोये । डॉ. सुशीलाबहन आअी है । आज बापूजीकी मालिश अुन्होंने की । अिस बीच मैंने बापूजीके लिअे खाखरे और शाक बनाया । बापूजी नहाकर बाहर निकले कि तुरंत अुन्होंने भोजन कर लिया । वे बोले, "मेरी सेवा तो बहुत होती है । फिर भी मैं बेचैन रहता हूं । काम बढ़ता जा रहा है और पूरा नहीं हो पाता । यह मुझे खटकता है ।"

आज बापूने कुछ प्रश्नोंके अुत्तर दिये हैं । यह प्रश्नोत्तरी अिस प्रकार है ।

प्रश्न : क्या आप चाहते हैं कि मुसलमान आपकी प्रार्थनामें आयें ?

बापूजीने कहा : "मेरी प्रार्थनामें सबको सम्मिलित होना ही चाहिये अैसा मेरा जरा भी आग्रह नहीं है । परन्तु यदि मुसलमान भाअी प्रार्थनामें आये तो मैं प्रसन्न अवश्य होअुंगा; मुझे अच्छा भी लगेगा । मेरी प्रार्थनामें मुसलमान भाअी-बहन वर्षोंसे शरीक होते रहे हैं ।

प्रश्न : आपको तो लोग अवतारी पुरुष मानते हैं । आप हिन्दू हैं, फिर भी आप हमारे कुरानमें से आयेतें क्यों बोलते हैं ? अिस प्रकार सम-रहीम और कृष्ण-करीमको कैसे जोड़ा जा सकता है?

बापूजीने कहा "अिन प्रश्नोंमें अुठाअी गअी आपत्तियोंसे मुझे अपार दुःख होता है । अिस प्रकारकी आपत्तियां अुठाना हमारे मनकी संकीर्यताको बताता है । मेरी प्रार्थनामें कुरानकी आयतें पढ़ना मेरी लडकीके समान और अिस्लामका दृढ़तासे पालन करनेवाली, अब्बास तैयबजीकी पुत्री बीबी रेहाना बहनने शुरू किया है । मुझे कहा जाता है वैसा मैं कोअी अवतारी पुरुष नहीं हूं । मैं तो अदनेसे अदने भाअियोंसे भी छोटा प्रभुका—खुदाका—सेवक हूं । मेरी अिच्छा मुसलमानोंको अधिक अच्छे और सच्चे मुसलमान हिन्दुओंको अधिक अच्छे हिन्दू, अीसाअियोंको अधिक अच्छे अीसाअी और पारसियोंको अधिक अच्छे पारसी बनानेकी है । मैं किसीसे धर्म बदलनेको कहता ही नहीं । मेरा धर्म दुनियाके सभी धर्मशास्त्रोंका पाठ करना

स्वीकार करता है; वह बड़ा व्यापक धर्म है। प्रभुके—खुदाके—अनेक नाम हैं। क्या हम यह कह सकते हैं कि राम ही अुसका नाम है ? अथवा रहीम ही अुसका नाम है ? मैं अपनेको अवतारी पुरुष मानता ही नहीं और अुस प्रकारसे कुछ करता भी नहीं। मैं आपके जैसा ही अेक साधारण मनुष्य हूं। और प्रभु तो अेक ही है। अुसे कोअी खुदाके नामसे पुकारता है, कोअी प्रभुके नामसे। प्रभु अलग नहीं है, हमने अुसे अलग कर रखा है। यह बात बार बार मैं अिसलिअे दोहराता हूं कि आप मेरे कार्यको समझें।"

यूवकोंसे भी बापूजीने दो शब्द कहे, "हमारे देशके जो नौजवान—स्त्री-पुरुष—रोजगारके लिअे बम्बअी-कलकत्ते जैसे शहरोंमें गये हैं, अुनका फर्ज आज जब देश पर आफत आअी है अुचित सहायता देता है। अुनका कर्तव्य गावोंकी सेवा करना है। अिसका बिलकुल आसान रास्ता यह है कि अिस प्रकारके नौकरीपेशा लोग या व्यापारी अिकट्ठे हों और फिर कुछ मासकी छुट्टी लेकर गावोंमें व्यवस्थित काम करे; अुनकी छुट्टी पूरी होने पर दूसरी टोली काम करे और वे अपने निजी काममें लग जायं, जिससे अुन्हें बादमें भी हानि न अुठानी पड़े गौर गांव भी फिरसे ताजे हो जाये। जो लोग खुद सेवा न कर सकें, वे पास रुपया हो तो रुपयेसे अिस काममें मदद करें।

"अिंग्लैण्ड, रूस और अैसे दूसरे आगे बढ़े हुअे देशोंके लोग अपने देशके लिअे कितना अधिक काम करते हैं? अुनके लिअे हमारे मनमें सचमुच आदर पैदा होता है। प्रत्येक परिवारमें से अेक अेक स्त्री या पुरुष भी अिस प्रकार निकल आये तो आज कितना शानदार काम हो सकता है ? दुनियाके लोगोंमें आपसी अैक्य अिसी ढंगसे सिद्ध किया जाता है। हमारे यहां भी देशप्रमी कम पैदा नहीं हुअे। परन्तु आज भाअी भाअीको मार रहा है, अिसलिअे सब कुछ खतम हो रहा है। हम अपने संकीर्ण मनके स्वार्थपूर्ण हिसाबोंसे परे हो जाय, यही प्रभुसे मेरी प्रार्थना है।"

शामको निराश्रितोंकी अेक छावनी देखने गये। अुसमें पाठशाला चलती है। पाठशालाके बालकोंने कसरत करके बताअी। अेक बालकको पुस्तक और स्लेट अिनाम दी। दूसरोंको हमारे पासके संतरे बांटे। वहांसे घूमने गये। लौटकर बापूजीने खजूर और दूध लिया।

आज फिर बापूजीके पैरोंमें विवाअियां पड़ गअी है । कलकी असह्य ठंड अिसका कारण मालूम होती है । गीले फिसलनवाले खेतोमें नंगे पैर चलनेसे पैरोमें खुरसटें पड़ जाती हैं । राम रखे वैसे ही रहना पडता है । रातको पैर धोकर विवाअियोंमें मरहम भरा । दायें पैरके अंगुठेकी विवाअीकी फूट देखकर तो मैं कांप अुठी । आंखें बन्द करके अन्दर मरहम भरा और पट्टी बांधी । परन्तु सवेरे नंगे पांव चलेंगे कि फिर वही हालत हो जायगी । अब तो बापूजी पैरोमें कुछ पहनें तो अच्छा । परन्तु मेरी कहनेकी हिम्मत नहीं होती ।

रातको नौ बजेके बाद बापूजीने काता । २६० तार हुअे । बादमें सोनेकी तैयारी करनेके लिअे हाथ-मुंह धोनेका पानी मांगा । रोज मुंह धोनेके लिअे ठंड पानीका ही अुपयोग करते हैं । परन्तु आज मुझे लगा कि अैसी असह्य सरदीमें मूंह धोनेको गरम पानी रख दू । मैंने अैसा ही किया । परन्तु मेरी समझदारी महंगा सौदा साबित हुअी । गरम पानी देखकर बापूजी बोले, “तुम्हें मुझ पर दया आती हो तो अेक काम करो । सुन्दर सेज बिछा दो, मोटरे मंगा दो या हवा गरम रहे अैसा सुन्दर महल बनवा दो और अुसमें अिस महात्माको रख दो । कैसा अच्छा रहेगा ! क्यों ?”

बापूजी बहुत व्यंगमें बोल रहे हैं, यह मैं फौरन समझ गअी । “तुमने विचार किया है कि मुंह धोनेको भी यदि गरम पानी चाहिये तब तो यह कैसी साहवी होगी ? आज जहां लोगोंको रोटी पकानेको लकडी नहीं मिलती वहां मेरे लिअे मुंह धोनेको तुम गरम पानी करती हो, यह तुम्हारे लिअे और मेरे लिअे आश्चर्यकी बात नहीं ? नहानेके लिअे तो गरम पानीकी बात समझी जा सकती है । परन्तु हाथ-मुंह धोनेके लिअे भी तुमने गरम पानी किया, यह मेरी समझमें नहीं आ सकता । अितनेसे सचेत हो जाओ कि तुम अभी तक कहां हो ? बस, मुझे अितना ही तुमसे कहना है ।”

हाथ धोनेके लिअे गरम पानी काममें लेनेमें भी बापूजीको गरीबोंके दर्दका कितना खयाल होता है, यह अिससे देखा जा सकता है । “जहां रोटी पकानेको भी लकडी नहीं मिलती वहां हाथ धोनेको गरम पानी किया जा सकता है ? अिस हद तक बढा हुआ नाजुकपन हम कब दूर करेंगे। “ये शब्द बोलते हुअे बापूजी अत्यन्त दु:खी हो गये, यह मैं स्पष्ठ देख सकी ।

सोते समय यह बहुत ही वेदनाभरी घटना हो गअी । मुझे भी बहुत खटकी । बापूजीने अिसके भीतर छिपे हुअे सुन्दर पाठका विचार और मनन करनेकी सूचना की ।

आमकी,

३०.१.१९४७

सदाकी भांति प्रार्थना । बंगलाका पाठ करनेके बाद मेरी डायरी बापूजी देख गये ।

बम्बअीसे दो बहने खास तौर पर बापूजीको १,२५० रुपये हाथोहाथ देने आअी है । बापूजीने यह रुपया मुझे सौंपा और सतीशबाबुको देकर अुसकी रसीद लेनेकी सूचना की।

सात बजे रस लिया और दस मिनट बापूजीने आराम किया । साढ़े सात बजे हमने पांचगांव छोड़ा । पौने नौ वे हम यहां पहुंचे । यहां आकर तुरन्त ही बापूजीने पंडितजीके माम पत्र लिखा । सारा पत्र अंग्रेजीमें लिखा, परन्तु सम्बोधन 'चि. जवाहरलाल' किया । सुन्दर लगता था । मालतीदीदी (मालती देवी चौधरी) भी आअी थी । मालिश, स्नानादिसे निबटकर दस बजे भोजन किया । भोजनमें शाक, दो खाखरे, दूध और अेक ग्रेपफ्रूट लिया । आज शामके लिअे दूध नहीं है । हो जाय सो सही । दोपहरको हॉरेस अलेक्जेन्डर आये । कातते कातते अेक घंटा अुनके साथ बातें की । बादमें जमान साहब आये । अुन्होंने २५० रुपयेका अेक झोंपड़ा बनाया है, जिसे देखनेके लिअे हमें ले गये ।

परन्तु बापूजी बोले : "हमारी काठियावाडी भाषामें कहूं तो यह अेक पिटारा ही है ।" हम आधे पहुंचे कि याद आया बापूजीका छोटा रूमाल लेना मैं भूल गअी हूं । अुसे लाने दौडती हुअी डेरे पर गअी और ले आअी । हमारा आजका मुकाम अेक कायस्थके घर है । जिस गांवमे ५४२ हिन्दू, १९९४ मुसलमान, २६ जुलाहे और ७५ दूसरी जातियांके लोग है । पांच भंगियोंके घर है । जिन भाअीके घर हमारा मुकाम है अुनका नाम यशोदाकुमार दे है ।

आज शामके लिअे दूध कहीं भी नहीं मिला । अंतमें हारकर मैंने बाजूजीसे बात कही । वे बोले, "अिसमें क्या हुआ ? नारियलका दूध बकरीके दूधका काम अच्छी तरह देगा । और बकरीके घीके बजाय नारियलका ताजा तेल खायेंगे ।"

मैंने नारियलका दूध आठ औंस बकरीके दूधकी तरह तैयार किया, परन्तु यह दूध पचनेमें भारी पडा और बापूजीको दस्त होने लगे । शाम तक तो बहुत ही कमजोरी आ गअी । बापूजीको खूब पसीना छूटा । सिर पकड़ रखा । मैंने निर्मलदाको पुकारा । मुझे खयाल हुआ कि सुशीलाबहनको बुलवा लूं । कभी कुछ हो जाय तो मुर्ख मानी जाअूंगी । (सुशीलाबहन बापूजीकी प्रार्थनासे पहले ही चली गअी थी । थोडासा फर्क पडा ।)

मैं निर्मलदाको चिट्ठी देने गअी त्यों ही बापूजी जागे, "मनुड़ी, तुमने निर्मलबाबूको पुकारा, यह मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगा । परन्तु तुम्हारी अुम्रको देखकर मैं तुम्हें क्षमा करता हूं । फिर भी अैसे समयमें कुछ न करके हृदयसे रामनाम लेनेकी तुमसे आशा रखता हूं । मैं तो मनमें रामनाम ले ही रहा था । तुमने निर्मलबाबूको बुलानेके बजाय मनमें रामनाम लेना शुरू कर दिया होता तो मुझे बहुत अच्छा लगता । अब तुम अिस बारेमें सुशीलासे ने कहना, न लिखकर अुसे बुलाना । मेरा सच्चा डॉक्टर राम ही है । अूसे मुझसे काम लेनेदी गरज होगी तब तक वह जिलायेगा, नहीं तो अुठा लेगा ।"

अीश्वरने मेरी कैसी लाज रखी ? खयाल हुआ कि श्रद्धालु मनुष्यकी अीश्वर वास्तवमें मदद करता है । मेरी यह कितनी कड़ी कसौटी थी ? 'सुशीलाको न बुलाना' ये शब्द बापूजीके मुंहसे निकले और मैंने निर्मलदासे अपनी चिट्ठी छोन ली ।

यह घटना बापूजीके सामने ही हो रही थी । अिसलिअे वे लेटे-लेटे ही सब बात समझ गये। मुझसे बहने लगे, "क्यों तुमने लिख भी डाला था न ?" मैंने मंजूर किया ।

"आज तुम्हें और मुझे अीश्वरने बचा लिया । यह चिट्ठी पढ़कर सुशीला तो दौडती हुअी मेरे पास आती, परन्तु मुझे वह जरा भी अच्छा न लगता । मैं तुम पर और अपने पर चिढ़ता । आज तुम्हारी और मेरी परीक्षा हुअी । यदि रामनामका मत्र मेरे हृदयमें गहरा अुतर जायगा तो मैं कभी बीमार होकर नहीं मरूंगा । यह नियम हर आदमीके लिअे है, केवल मेरे लिअे नहीं । भनुष्य जो भूल करता है अुसका फल भौगना ही पड़ता है । आखिरी सांस तक रामनामका स्मरण हृदयगत रहना चाहिये । तोतेकी तरह नहीं, बल्कि हृदयसे । रामायणमें कया है कि जब सीताजीने

हनुमानजीको मोतियोंकी माला दी, तब अुन्होंने अुसे तोड़ डाला । अुन्हें यह देखना था कि अुसमें राम शब्द है या नहीं । अुनकी दृष्टिमें मोतीका कोअी मूल्य नहीं था । रामनाममें वे अितने तन्मय थे । यह धटना सच्ची होगी या नहीं, अिस झंझटमें हम क्यों पड़ें ? हनुमानजी जैसा पहाड़ी शरीर शायद हम न बना सकें । परन्तु आत्मा तो पहाडी बना सकते हैं । मनुष्य चाहे तो अभी मैंने जो अुदाहरण दिया अुसे सिद्ध कर सकता है । सिद्ध न कर सके लेकिन सिद्ध करनेका प्रयत्न ही करे तो भी काफी है । गीतामाताने कहा है कि मनुष्य प्रयत्न करे, और फल अीश्वरको सौंप दे । अिस प्रकार तुम्हें, मुझे और सबको प्रयत्न करना चाहिये । अब तुम समझी होगी कि तुम्हारी, मेरी या किसीकी भी बीमारीके बारेमें मेरी क्या दृष्टि है ?

"आज . . . के साथ ब्रह्मचर्यकी बातें करते समय मैंने जो कहा था वह तुम्हारे समझने जैसा है । मैंने कहा कि जो पुरुष मानते हैं कि स्त्रियोंको छूनेमें भी पाप है और अिसलिअे अुन्हे नहीं छूते, क्योंकि स्त्रीके स्पर्शमात्रसे विकार पैदा होनेका अुन्हें डर है, अैसे आदमी ब्रह्मचारी हो तो भी मैं अुन्हें ब्रह्मचारी नहीं मानता । दूसरे, यह मत मानो कि मनुष्य बूढ़ा हो गया है अिसलिअे निर्विकार हो गया है । वह निर्विकार अिसलिअे है कि अुसकी शक्ति बूढी ही गअी है, न कि ब्रह्मचर्येके पालनसे । और मन तो आखिरी दम तक भी बुढा नहीं होता । मेरे कुछ मित्रोमें भी अिस विषयमें मतभेद जरूर है । परन्तु मैं तो अनेक प्रयोगों और अनुभवोंके बाद यह दावा करता हूं कि अुन सबमें सच्चा ब्रह्मचारी मैं हूं । जो निर्विकार हो अुसे रोग क्यों हो ? वह रोगोंसे पीड़ित रह ही नहीं सकता । जिन्होंने मेरे साथ अिस विषयमें बहस की है वे बीमार ही रहते हैं । जिसके लिअे सभी स्त्रियां मा, बहन या बेटी हैं, वह अुनके स्पर्शसे विकारी क्यों बने ? भले सामने अप्सरा जैसी स्त्रियां क्यों न हो ! फिर भी मैं तो कहता हूँ कि मेरी मृत्यु ही यह साबित करेगी कि मेरा यह दावा सच्चा है या झूठा । मनुष्यकी मृत्युसे पहले यह नहीं कहा जा सकता, क्योंकि क्षणभरमें मनुष्य बदल भी सकता है । मन अितना चंचल होता है । अिसीलिअे मैंने अुनसे कहा कि यदि मैं रोगसे मरूं तो यह भान लेना कि मैं अिस पृथ्वी पर दभी और रावण जैसा राक्षस था । परन्तु यदि रामनाम रटते रटते जाअुं तो ही मुझे सच्चा ब्रह्मचारी, सच्चा महात्मा मानना ।

बापूजी रामनामकी अपनी असीम श्रद्धा पर धाराप्रवाह बोलते जा रहे थे। अेक अेक शब्द हृदयकी गहराअीसे निकल रहा था।

मैं तो अिस घटनासे यही सोच रही थी कि भगवानने मुझे कैसे समय पर बचा लिया। सचमुच सेवा करनेसे, केवल अुनके पांव दबाने या भोजन तैयार करने जैसे कामोंसे सच्चे बापूजीको नहीं पहचाना जा सकता। अैसे अवसरों पर ही अुनके विराट स्वरूपका दर्शन होता है। और तभी खयाल होता है कि ये सच्चे बापू हैं। गीतामें जिस पुरुषोत्तमका वर्णन किया गाया है, वैसे ही साक्षात् पुरुषोत्तमके समीप रहनेका सौभाग्य अिश्वरने दिया, यह अुसकी मुझ पर कितनी बड़ी दया है ?

रातको बापूजीने अपने पत्रमें भी अेक बीमार बहनको रामनामके बारेमें लिखा, "रामबाण दवा तो संसारमें अेक ही है और वह रामनाम है। अिस नामको रटनेवाला जिन नियमोंका पालन करना चाहिये अुनका पालन करे। परन्तु यह रामबाण दवा हम सब कहां कर पाते हैं ?"

रातको बापूजी अेकदम ताजे हो गये थे। घूम कर लौटनेके बाद हॉरेस अलेक्जेन्डरके साथ ही लगभग सारे समय बातें हुअी।

अुनके जानेके बाद प्रेस-प्रतिनिधियोंके साथ फिर २५० रूपयेवाले झोंपड़ेकी बात की। "वह झोपडा नहीं, परन्तु पिटारा है। अुसमें न हवा आ सकती है, न धूप आ सकती है। नारियलके पत्तोंका झोपड़ा बनायें तो अूपरका शून्य अुड जायगा और पच्चीस रूपयेमें काम पूरा हो जायगा। मुझे ठेका देवेको तैयार हो ? मैं तो अिसमें से कमीशन भी कमा लूंगा। सब खिलखिलाकर हंस पडे।

रातको दस बजे बापूजी बिस्तर पर लेटे। मैंने हमेशाकी तरह सिरमें तेल मला। पैर दबाकर डायरी पूरी कर रही हूं। थोड़ी दोपहरमें लिखी थी। अिस समय साढे दस हुअे हैं।

रातको लेटे लेटे मैं विचार कर रही थी कि बापूजीने आश्रमके नियमोंमें ब्रह्मचर्यका जो व्रत रखा, वह कितनी अुच्च कोटिका विचार करके रखा होगा। अुसके आध्यात्मिक भावका साक्षात्कार यहां हो रहा है।

मेरे जैसी छोटी लडकीकी माता बनकर बापूजी भिन्न भिन्न प्रकारसे मेरा निर्माण कर रहे हैं । अिसीलिअे मुझे ब्रह्मचर्य व्रतकी बारीकी समझाअी ।

नवग्राम,

३१-१-१९४७

रोजकी तरह प्रार्थना । प्रार्थनाके बाद नियमानुसार मेरी डायरीमें बापूजीने दस्तखत किये।

बिहारमें जो अुपद्रव और गडबड़ी चल रही है अुससे परिचित रहनेके लिअे जिन भाअीको (शासन-तंत्रके) बापूजीने सब बातें समझनेके लिअे बुलवाया था, वे जदुभाअी सहाय आये है । हुनरभाअी हिन्दी-अुर्दुकी डाक देखते हैं । बापूजीने बिहारमें कमीशन नियुक्त करनेका सुझाव दिया । परन्तु . . . को यह बात बहुत पसन्द हो अैसा नहीं लगता । मिट्टी लेते समय हॉरेस अलेक्ज़ेन्डर आये । अुनसे बापूजीकी आध्यात्मिक और वर्तमान हलचली पर बहुत बातें हुअी ।

दोपहरको बहनोंकी सभा हुअी । अुसमें अेक बहनने प्रश्न पूछा कि अुसका पति संन्यासी हो गया है, अब वह क्या करे ? बापूने कहां, "जिसका पति संन्यासी हो गया है अुसे शुद्ध जीवन बिताना चाहिये । वह अपनी रोटी खुद कमाये । परिग्रह न करे । संस्यासी कोअी भगवे कपडे पहननेसी ही होता है अैसी बात नहीं । कुछ न सूझे तो चरखा चलाये । मैंने चरखेको कामधेनु कहा है । कातते समय रामनामका रटन करे । कदाचित् यह संन्यास पतिके संन्याससे मेरे खयालमें बढ़ जायगा । वह ग्राम-सफाअी और बच्चोंकी सफाअी आदि भिन्न भिन्न सेवाके कामोंमें अपनेको लगा दे । 'खाली दिमाग शैतानका घर' यह कहावत शायद बंगलामें भी होगी । हम बेकार बैठेंगे तो हजार अुत्पात सूझेंगे । अिसलिअे अेक मिनट भी खाली न बैठना ही तुम्हारे लिअे सबसे सुन्दर मार्ग है ।"

शामको बापूजीने कुछ नहीं खाया । शहदका पानी और अेक औंस गुड लिया ।

आमिशपाडा,

१-२-१९४७

रोजकी तरह प्रार्थना । फिर पत्र लिखाये और बंगलाका पाठ किया । 'डायरी' शब्द लिखनेके बजाय 'रोजनीशी' अथवा 'नित्यनोंध' जैसे शब्द लिखनेको कहा । कलकी डायरी सिलसिलेवार नहीं लिखी गयी थी, अिसलिअे कहा कि जो बात या घटना जिस समय हो अुसे अुसी क्रमसे लिखा जाय, तो किसी समय यह देखनेकी जरूरत पड़ने पर कि कौनसी बात कब कही गयी, तलाश न करना पड़े । अतः अिसका ध्यान रखा जाय ।

दूसरी बात यह कही कि यह डायरी चाहे जिसके हाथोंमें न पड़ जाय, अिसकी खास तौर पर सावधानी रखनी चाहिये । हमारे पास कुछ खानगी तो है ही नहीं, फिर भी चाहे जिसके हाथोंमें जानेसे अुसका दुरूपयोग हो सकता है । यह डायरी भविष्यमें तुम्हें बडी काम आयेगी । जयसुखलालको अच्छी लगेगी । तुम्हें मालूम है कि सुशीलाने आगखां महलमें जो डायरी रखी थी वह मेरी दृष्टिसे अेक अैतिहासिक और मूल्यवान डायरी हो गअी है । अिसीलिअे मैं जिस बात पर जोर देता हूं और ध्यान देता हूं । अत : तुम अिसे संभालकर रखो या जयसुखलालके पास भेज दो । प्यारेलालको बताओ तो वह बहुतसे अच्छे सुधार कर सकते हैं । मेरे पास सूब गहराअीमें जानेका समय ही कहां है ? मेरा विश्वास है कि प्यारेलाल विद्वान आदमी हैं । वे मुझे अच्छी तरह समझते हैं । तुम अुनके पाय डायरी पढने भेजोगी तो कुछ खाओगी नहीं, बल्कि पाओगी और अुन्हें मेरे कामकी कल्पना होगी ।

परन्तु मैंने भीतर बहुत कुछ अुलटा-सीधा लिखा हो और वे हंसी अुड़ायें तो ? अिस विचारसे अिनकार कर दिया ।

बापूजी बोले, "किसीके मुंहकी तरफ क्यों देखें ? वे हंसी अुड़ायेंगे तो भी तुम सबक सीखोगी। कोअी यह कहेगा या वह कहेगा, अिसकी कल्पना किसलिअे की जाय ? अीश्वरको जो करना होगा सो करेगा । हम अपना कर्तव्य-पालन करते रहे । यदि यह कल्पना करके कि अच्छा होगा या बुरा होगा हम पुरुषार्थ न करें तो आगे नहीं बढ़ा जा सकता । परन्तु साहस

बढ़ाकर जैसे हम हो वैसे ही दिखाअी दें । और अैसा करते हुअे कोअी हमें युधारनेवाली बातें कहे तो अुन्हें सुनकर हम अुनका स्वागत करे । बड़ेसे बड़ा माने जानेवाले मनुष्यको कभी कभी छोटे बालक भी अैसा सबक सिखा देते हैं कि अुसका सारा जीवन ही बदल जाता है । यह मैंने अनुभव किया है । अिसलिअे जिससे जो सोखनेको मिले वह सीख लेनेकी ही वृत्ति हमें अपने भीतर पैदा करनी चाहिये ।"

हमने साढ़े सात बजे नवग्राम छोड़ा, सवा आठ बजे यहां पहुंचे ।

भोजन करते समय प्यारेलालजी अपने गांवसे आये । वे बापूजीके लिअे पांच खाखरे बनाकर लाये थे । अिसलिअे अुनके बनाये हुअे दो खाखरे, शाक, दूध और खोपरेके सन्देशका छोटासा टूकडा बापूजीने लिया । दो बजे नारियलका पानी और शामको दूध और आठ खजूर लिये ।

हम जिनके यहां ठहरे हैं, अुनका नाम कृष्णमोहन चटर्जी है ।

आज प्रार्थना-सभामें बापूजीने अिसलाम धर्मकी सुन्दर व्याखया की । रोजकी अपेक्षा आजकी प्रार्थनामें हिन्दू-मुसलमानोंकी संख्या बहुत ज्यादा थी और खूब शोरगुल था । बापूजीने शांति हो जानेके बाद प्रवचन शुरू किया ।

अेक मौलवी साहबने कहा कि "गांधीजीको अिस्लामके कानूसके बारेमें बोलनेका कोअी हक नहीं ।" अुन्होंने राम जैसे (मनुष्य) राजाके साथ खुदाका नाम जोड़नेका भी विरोध किया । अिस पर बापूजीने कहा, "मेरे खयालसे धर्मके मामलेमें यह बिलकुल संकुचित दृष्टि है । अिस्लाम धर्म, हिन्दू धर्म या पारसी धर्म कोअी पेटीमें बंद करके रखनेकी वस्तु नहीं है । मनुष्यमात्रको अुसका अध्ययन करके अुसके आदर्श और सिद्धान्त, जो जीवनमें अुपयोगी हों, स्वीकार या अस्वीकार करनेका पूरा अधिकार है । मैंने अिस्लाम धर्मका अध्ययन किया है, अिसलिअे यह कहता हूं ।"

बादमें डॉ. सुशीलाबहन जिस गांव (चागेरगांव) में काम करती हैं वहांसे सुन्दर समाचार आये । अुन्होंने अपनी दवादारुसे और सेवासे बहुतसे मुसलमान भाअी-बहनोंको अच्छा करके अुनका प्रेम सम्पादन किया है । अुन्हें सेवाग्राम जाना है, परन्तु ये लोग जाने नहीं देते । साथ ही जिन लोगोंने दंगेके समय लूटपाट की थी वे खुद सुशीलाबहनको लूटका माल केवल अुनके प्रेम और सेवाके कारण अपने-आप लौटा जाते हैं । यह कितना सुन्दर हृदय-परिवर्तन कहा जायगा ?

बापूजीने कहा, "मैं तो सरकारको यह सलाह दूंगा कि लूट करनेवालोंको अदालतोंमें घसीटना छोड दे । हां, सच्चे दिलसे अुन्हें समझाकर यदि जनता और सेनाके आदमी अिस दिशामें काम करे तो वह शान्ति स्थायी शान्ति होगी ।"

जायदादके ट्रस्टियोंके बारेमें अेक सवाल बापूजीसे पूछा गया था । अुस प्रश्नका अुत्तर देते हुअे बापूजीने कहा, "जो भी सम्पत्ति है वह सब अीश्वरकी, खुदाकी है, वह सर्वशक्तिमान अीश्वरसे ही मनुष्यको मिली है । आदमीके पास जो कुछ है बह अुसकी निजी सम्पत्ति नहीं, परन्तु संसारकी सेवाके लिअे अुसे सौंपी गअी सम्पत्ति है । किसी भी व्यक्तिके पास यदि अुसकी अपनी जेरूरतसे ज्यादा जायदाद हो, तो वह भगवानकी दु:खी और गरीब सन्तानकी सेवामें अुसका अुपयोग करनेके लिअे अुस जायदादका ट्रस्टी है । अीश्वर पर यदि श्रद्धा रखें तो वह सर्वशक्तिमान है । वह कोअी वस्तु संग्रह करता ही नहीं । मनृष्यको चाहिये कि वह अपनी जरूरतके अनुसार रोज लेकर कुछ भी संग्रह ने करे । यदि हम यह सत्य अपना लें तो मेरे खयालसे कानूनकी दृष्टिमें यह ट्रस्टीपन ही माना जायगा । फिर किसीको लूटने या चूसनेकी नौबत नहीं आयेगी ।"

बापूजीका हर बार, जैसा गीताजीमें कहा है, भिन्न भिन्न स्वरूपोंमें दर्शन होता है । कोअी भी मामला अुनके सामने रखें तो अुसमें से अटूट खजानेके रूपमें नअी नअी बातें जाननेको मिलती है । कुबेरके भंडार जैसा है । अिस खजानेमें से जितना लें अुतना ही थोड़ा है । लेनेवालेमें लेनेकी शक्ति होनी चाहिये ।

दशघरिया,

२.२.१९४७

नित्यकी भांति प्रार्थना हुअी । बादमें बंगलाका पाठ । अुसके बाद गरम पानी लिया । आज बापूजी प्यारेलालजीके साथ बातें करते रहे, अिसलिअे अुनसे मेरी डायरी पढवाना रह गया ।

बादमें मोरबीके महाराणा साहबने दस हजार रूपयेका जो चेक भेजा है अुस पर बापूजीने हस्ताक्षर कर दिये, और अुन्हें अेक पोस्टकार्ड लिखा । फिर फलोंका रस लेकर सो गये । मैं पैर दबा रही थी, अिसलिअे तैयार होनेमें देर लगी ।

सात पैंतीसको हम यहांके लिअे रवाना हुअे । रास्तेमें दो खंडहर देखे । सुन्दर मकान वीरान कर डाले गये है । मनुष्यों की हत्यायें भी हुअी है । बापूजीने . . . के साथ बात करते हुअे कहा कि "जरूरी कामके बिना या मेरे बुलाये बगैर कोअी न आये । अिसीमें मेरा, कार्यकर्ताका और यज्ञका श्रेय है । सब अपनी अपनी मतिके अनुसार कार्य करते रहें ।

मालिश और स्नान नियमानुसार । दोपहरके भोजनमें खाखरे दो, दूध आठ औंस, जरासा खोपरेका मावा और ग्रेपफ्रुट लिया । अिस गांवमें २५१ हिन्दुओं और ८०० मुसलमानोंकी आबादी है ।

शामको अब्दुल्ला साहब (अस. पी.) के साथ बात करनेके बाद मौन लिया ।

भोजनमें शामको दूध, अेक केला और जरासे मुरमुरै लिये । रातमें अेक औंस गुड लिया । रातको मौन शुरू हो गया था, अिसलिअे खास तौर पर कोअी नहीं आया था ।

शादुरखील,

३-२-१९४७

सदाकी भांति प्रार्थना । प्रार्थनाके बाद तुरंत ही आज जवाहरलालजीको पत्र लिखा । पानी पीते समय मैंने अपनी डायरी सुनाअी, परन्तु हस्ताक्षर दशघरियामें नहीं हो सके । मैं डायरीको

दूसरी पुस्तकोंके नीचे रखकर चली गअी थी, अिसलिअे बापूजीने हस्ताक्षर करनेको ढूंढी परन्तु मिली नहीं।

सात बजकर पैंतीस मिनट पर दशघरियासे चले । रास्तेमें क्षेमनाथ चौधरी और हबीबुल्लाहकी बाडीमें थोड़ी देर ठहरे।

यहां हम यशोदा पाल नामक कायस्थके घर ठहरे हैं।

यहां आकर रोजकी तरह सब क्रम चला। स्नानादिसे निवृत्त होकर बापूजीने भौजनमें पांच बादाम, पांच काजू, दूध और खोपरेका सन्देश लिया, जो हमारे यजमानने बनाया था। अिन लोगोंकी बापूजी जरासी भी चोज स्वीकार कर लेते हैं तो वे अपने-आपकी कृतकृत्य मानते है।

यहां २७१ हिन्दुओं और १,२१२ मुसलमानोंकी बस्ती है। आज मौन है, अिसलिअे कोजी खास बात गही हुअी। बापूजीका मौन हो अुस दिन सब सूना सूना लगता है। शामको यहांकी अेक पाठशाला देखने गये। वहांसे आकर दस खजूर और आठ औंस दूध लिया। दूसरा कुछ नही लिया। नियमानुसार प्रार्थना हुअी। प्रार्थनामें अच्छी संख्या थी।

शादुरखील,
४-२-१९४७

अब मौनवारके दिन अेक ही गांवमें दो दिन ठहरनेका कार्यक्रम रखा है, क्योंकि गांवके लोगोंको मौनके दिन बापूजीके साथ बातें करनेका लाभ नहीं मिलता। अिसलिअे सवेरे मुझे बहुत थोडा काम रहा।

रोज हम जिस समय यात्राके लिअे प्रयाण करते हैं, अुसी समय अर्थात् ७.३० पर हम घूमने निकले। अेक मुसलमान वकीलके यहां गये। मैं स्त्रियोंसे अन्दर मिलनेको गअी। अुन्होंने बापूजीसे मिलनेकी अिच्छा प्रगट की, अिसलिअे अुन्हें बापूजीसे मिलाया। साढ़े आठ बजे लौटे। रोजकी भांति बापूजीके पैर धोकर मालिश व स्नान कराया। मुझे आजसे बापूजीने गीताके श्लोक लिखनेको कहा। पैर धुलवाते हुअे बापूजीने कुछ पत्रों पर दस्तखत किये। . . . के साथ बातें

करते हुअे नअी तालीमकी चर्चा की । नअी तालीम सीखनेवालेको अपना शरीर मजबूत बना लेना चाहिये । पोहे, मुरमुरे, खोपरेका तेल, खली और पकानेकी अन्य सब कला सीख लेनी चाहिये । स्वभाव पर अैसा अंकुश रखना चाहिये कि सत्याचरशण करते हुअे सबके साथ प्रमपूर्वक घुलमिल सके । हिन्दी भाषा और सागरी लिपि सीख लेना चाहिये । गुजराती सीख लेना चाहिये । बंगला भी । आज दिनभर लगभग मुसलमान भाअी और वे भी पदाधिकारी ही मिलने आते रहे।

आजकी प्रार्थना-सभा अेक मुसलमान भाअीकी बाड़ीमें हुअी । निर्मलदा अनुवाद कर रहे थे तब बापूजीने मुझे लिखकर दिया कि "तुम अन्दर बहनोंसे मिल आओ, ताकि बादमें वक्त खराब न हो ।" मैं बहनोंके पास गअी । मैंने औजविल्ला सुनाया । अेक लडकी कहने लगी : "हम तो हिन्दूके साथ बात करनेमें भी पाप समझती हैं ।" मैंने कहा, तुम्हारा आग्रह था, अिसीलिअे तो कुरानकी यह आयत मैंने सुनाअी । परन्तु मुझे तो यह जानना है कि तुम किस तरह पढ़ती हो । अिसलिअे तुम मुझे पढ़कर बताओ । मैं तुम्हारे सामने विद्यार्थी बनकर सीखना चाहती हूं । मेरी अिस बातका अेक बुढिया माजी पर अच्छा असर हुआ । अुस्होंने अुस लड़कीको डांटा और अेक छोटीसी आयत भी मुझे सुनाअी ।

अितना निश्चित है कि वातावरणमें खूब जहर भरा है । लोगोंको धर्मके बहाने अिस तरह भुलावेमें डालकर ज्ञानी लोग शैतानका काम कर रहे हैं ।

मैंने बापूजीसे प्रार्थनाके बाद बात की । बापूजी बोले: "अिसीलिअे तो मैं कहता हूं कि जरूरतसे अधिक ज्ञानने अधिक अज्ञान और जड़ता पैदा की है । जैसे हमारे यहां समझदार जरूरतसे ज्यादा समझदारी बताता है तो अुसे अकलमंदका दादा कहा जाता है, अुसी तरह अिस आवश्यकतासे अधिक ज्ञानने बरबादी ही की है ।"

हमारी प्रार्थना-सभा शादुरखीलके मुख्य नेता सलीमुल्ला साहबके घर पर हुअी थी । प्रार्थनाके दौरानमें रामधुन तालियोंके साथ अच्छी तरह गाअी गअी थी । बापूजीको बंगला भाषामें मानपत्र दिया गया था ।

बापूजीने कहा, "मुझे तो आपके दिलों पर कब्जा करके सबको अेक करना है। यदि दिलोंमें अेकता कायम न हो तो कोअी काम सिद्ध नहीं होगा; और जब तक अेकता कायम नहीं होगी तब तक हमारे भाग्यमें गुलामी ही लिखी रहेगी । हम सब किसी भी नामसे पुकारे जाते हों, परन्तु गुलामी हमें केवल सर्वशक्तिमान अीश्वरकी ही स्वीकार करे । मैं खुदाको केवल मानव जैसे रामके साथ जोड़ता हूं, यह माननेमें अज्ञान है । मेरा राम ही मेरे लिअे अीश्वर है । वह पहले था, आज है और आगे भी सनातन काल तक कायम रहेगा । अुसका न जन्म हुआ है, न किसीने अुसे बनाया है । अिसलिअे सब भिन्न भिन्न घर्मोंका अध्ययन करके अुनका आदर करना सीखें । रहीम और करीम नागवाले मेरे मुसलमान मित्र है । अुन मित्रोंको मैं अुनके नामसे बुलाअूं तो अिसका यह अर्थ नहीं कि मैंने अुन्हें खुदाके साथ जोड़ दिया है । और अिसे आप गुनाह कहेंगे ? बैरका बदला बैरसे लेनेमें मेरा विश्वास नहीं । जाति जातिके बीच सच्चा भाअीचारा स्थापित हुअे बिना किसी भी काममें कामयाबी नहीं मिलेगी ।

"मुझे जबर्दस्ती बिहार भिजवानेकी जरूरत नहीं पड़ेगी । परन्तु जब मुझे महसूस होगा कि अमुक जगह बैठकर मैं राष्ट्रकी अुत्तम सेवा कर सकूंगा तो वहां अवश्य पहुंच जाअूंगा । अिसीलिअेमें यहां आकर बैठा हूं ।"

शामको बापूजीने दूध नहीं लिया । दो औंस गुड़ लिया । दस बजे सोने गये । पांच सात मिनटमें मैं भी सोने चली गअी ।

श्रीनगर,

५-२-१९४७

नित्यकी भांति प्रार्थना वगैराका क्रम चला । मुझे सख्त जुकाम और बुखार होनेसे बापूजीने अपने पास सुला दिया और डाक सारी खुदने ही लिखी । सुबह ठेठ साढे छः बजे मुझे अुठाया ।

रोजकी तरह सात पैंतीसको शादुरखील छोडा । यहां वीपाबहन दास और दूसरी महिलाओंने सुन्दर तैयारी की थी । वे अिस गांवमें काम करती है । सवा आठ पर यहां पहुंचे । आकर्षक रांगोली पूरी गअी थी । आज हमारा मुकाम अेक ताती (जुलाहे) के घरमें है । पिछले अक्तूबरमें अुसका

सर्वस्व लूट गया था । बापूजीके पांव धोकर मालिश की । मालिशमें बापूजी बीस मिनट सो लिये । स्नानके समय भी सो गये।

बापूजीको भोजन करा रही थी अुस समय वीणादीदी अपना थर्मामीटर लेकर मेरे पास आअी और बापूजीके सामने जबरन् मेरा बुखार नापा । १०४° था । यह देखकर बापूजी मुझ पर बहुत नाराज हुअे ।

मेरा खयाल था कि जल्दी कामसे फारिग होकर सो जाअुंगी । परन्तु वीणादीदी नहीं मानी । और अितना बुखार होने पर भी काम किया, अिसलिअे बापूजी खूब नाराज हुअे । कहने लगे, "यदि तुमने सुबहसे अपना काम देवभाअी या निर्मलबाबूको सौंप दिया होता और सो जाती तो यह हाल न होता । यह सब अच्छा नही कहा जा सकता । परन्तु सुक्ष्म दृष्टिसे कहूं तो मूछी भी कही जा सकती है । अिसकी अपेक्षा नम्रतासे आराम लिया होता तो मैं खुश होता । मैंने कअी बार तुमसे कहा है कि काम करने लगती हो तो फिर तुम शरीरकी तरफ नही देखती । अिसके लिअे आगाखां महलमें तुम्हें कितनी ही बार रुलाना पडा है । आज भी रुलाना पड़ेगा । जरा भी थकावट मालूम हो तो काम छोड़ ही देना चाहिये । तुम देखती हो कि मेरे पास कामका ढेर लगा हुआ है, फिर भी मैं वक्त निकालकर आराम लिये बिना नहीं रहता । नहीं तो सेवा कैसे कर सकता हूं ? जिसे सेवा करनी है अुसे पहले अपनी सेवा करना सीखना चाहिये ।"

दो घंटे आराम लेनेके बाद बुखार अुतर गया । शामको ९९° हो जाने पर प्रार्थना करने गअी । वीणादीदीने आज बडी मदद दी, अिसलिअे बापूजीकी सेवामें खास दिक्कत नहीं हुअी ।

आज बापूजीके प्रार्थना-स्थान पर मंडप-सा बनाया गया था । अुपर भी छत बनाअी गअी थी । प्रार्थनामें लोगोंकी खासी भीड थी । परन्तु शान्ति थी । बापूजीने प्रार्थना-स्थलको सजानेका विरोध किया । कहा, अिससे रुपये और शक्तिका व्यय होता है । थोड़ीसी अूंची बैठक रहे, ताकि लोगोंको देखा जा सके और लोग मुझे देख सकें । वैठनेके लिअे नरम गद्दी जैसी हो, ताकि थकावट न लगे । अिसके सिवा किसी भी प्रकारकी सजावट करनेकी जरूरत नहीं ।

प्रार्थनामें आज अहिंसाके शास्त्र पर कहा । बापूजी बोले, "जो आजादीकी रक्षा करनेवाले (मंत्री) होंगे वे विरोधियोंको मार डालनेको तैयार नहीं होंगे, परन्तु खुद मरनेको तैयार होंगे । हिन्दुस्तानके स्वराज्यके मामलेमें अंग्रेज क्या कहते हैं या क्या नही कहते, अिसकी मुझे परवाह नहीं; अुसका आधार हम पर ही है । अिसीलिअे तो जब जवाहरलालजी और दूसरे साथियोने राज्य-शासन अपने हाथमें लिया, तब मैंने कहा था कि आजसे आपको काटोंकी सेज पर सोना है । हमारा ध्येय भारतकी संपूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करना है; और अुसके बिना चैन नही लेना है । परन्तु यदि कोअी यह मानता हो कि अग्रेजोंको तलवारके जोरसे निकाल देंगे तो यह बडी भूल है । अंग्रेज लोग तलवारसे कभी नही डरते । अंग्रेज जातिकी लगन, दृढ़ता और हिम्मत विलक्षण है । अिसलिअे तलवारकी ताकतसे वे कभी नहीं भागेंगे । परन्तु यदि हम मौतका बदला मारकर नही वल्कि मर कर देंगे, तो अिस अहिंसाके साहससे ये अवश्य हारकर चले जायंगे । अहिंसाके सामने वे खड़े नहीं रह सकते । अहिंसासे बढ़कर किसी शक्तिको मैं नहीं जानता । मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि अभी तक हमें पूरी आजादी नहीं मिली, अिसका कारण यह है कि हमारी अहिंसा कच्ची है । परन्तु कुछ भी हो । आज तक अहिंसाकी ताकतका विकास करनेका जो प्रयत्न हुआ, अुस ताकतका जवाब ब्रिटिश सरकारके प्रतिनिधि-मंडलका तैयार किया हुआ दस्तावेज है ।

"युद्धके परिणामोंका हम विचार करे तो मालूम होगा कि मित्रराज्योंको भी लाभ नहीं हुआ, दुश्मनको तो होता ही कहांसे ? असंख्य मानव कट गये । परन्तु फिर भी आज दूनियाकी स्थिति अैसी है कि वह अिस समय अनाज और कपड़ेके बिना अधमरी हो गअी है । मैं तो बिना किसी हिचकिचाहटके कह सकता हूं कि परिणामकी परवाह किये बिना धर्मके रुपमें नहीं, तो केवल प्रामाणिक नोतिके रूपमें अहिंसाको अपनाकर अिस शक्तिसे प्राप्त होनेवाले आत्म-विश्वास पर आधार रखनेमें हमारा अधिक श्रेय है ।"

अंग्रेजी भाषाके बारेमें बोलते हुअे बापूजीने कहा, "अंग्रेजी शिक्षाने हमारी वृद्धिको ज्ञानके भोजनके अभावमें बिलकुल भूखो मारकर हमें पंगु बना दिया है । मैं तो चाहूंगा कि हमारी अितनी अधिक समृद्ध भाषाओंकी शिक्षा विद्यार्थियोंको दी जाय । हम यदि लगनसे काम करें और अंग्रेजी

शिक्षाका मोह छोड़ दें, तो जनताको सच्ची नागरिकताके धर्म और अधिकारोकी शिक्षा बहुत जल्दी दे सकते हैं ।"

आज जब प्रवचनका बंगलामें अनुवाद हो रहा था तभी मैं घर चली आअी थी । बापूजीके लिअे दूध और सेब तैयार करके सो गअी । फिर रातको बुखार हो आया । परन्तु साड़े आठ बजे अुठकर बापूजीका बिछोना करके रोजका कामकाज पूरा किया । बापूजोके सिरमें तेल मलकर और पाव दबाकर फिर जल्दी सो गअी ।

बापूजीको मेरा काम करना अच्छा नहीं लगा । अैसा लगा कि नाराज हैं । परन्तु मैं चुपचाप कामकाज निबटाकर सो गअी । (आजकी डायरी ता. ६-२-१९४७ के दिन लिखी गअी है ।)

धरमपुर,

६-२-१९४७, गुरुवार

रोजकी भांति प्रार्थनाके लिअे अुठी । बापूजीने कहा कि तुम्हें रातभर बुखार रहा अिसलिअे सो रही । परन्तु मुझे अच्छा लगा अिसलिअे अुठ बैठी । प्रार्थनामें गीताजीके अध्यायमें भूल हो गअी । शुक्रवारका अध्याय आज पढ़ना आरंभ कर दिया । बापूजीने संचेत किया । मुझसे कहने लगे, "यह भूल बताती है कि तुम बीमार हो, फिर भी या तो मैं आराम नहीं लेने देता या तुम नहीं लेती । बापूजीको पानी और रस देकर मैं सो गअी । बापूजीने . . . को पत्र लिखा । अुसमें लिखा कि "लीग और राजा कुछ भी करे । मेरी दृष्टिसे कांग्रेसको कुछ नहीं करना है । कपडे और खुराकके मामलेमें मेरा विचार सीधा और दृढ़ है ।"

साढ़े सात बजे हमने श्रीनगर छोडा । रास्तेंमें अेक मुसलमान भाअी सिकंदर जूनियाकी वाडीमें रुके । मैं स्त्रियोंके पास गअी । आकर रोजकी तरह बापूजीकी मालिश, स्नान अित्यादि काम पूरा किया । भोजनमें बापूने पांच काजू, पांच बादाम, शाक, फल और दूध लिया । मेरी तबीयत ठीक रही । सब काम किया । परन्तु दोपहरके बाद १०४° टेम्परेचर हो गया । अिसलिअे चारसे पांच तक बापूजीके पास सो गअी । पांच बजे प्रार्थनाके समय जागी और नियमानुसार प्रार्थना करने बापूजीके साथ गअी ।

शामको बापूजीने भोजन कुछ नहीं किया । केवल गुड ही लिया । अिसलिअे प्रार्थनाके बाद मेरे पास कोअी खास काम नहीं था । बापूजी कहने लगे, "तुम्हें सुला सकूं, अिसीलिअे मैंने केवल गुड़ लिया है ।" बापूजीने मेरी चिन्ताके कारण और मेरे आरामके लिअे सिर्फ गुड लिया, अिसका पता मुझे रातको लगा । मैंने माना था कि शायद तबीयत ठीक न होनेके कारण दूसरा कुछ लेनेसे अिनकार कर रहे हैं । परन्तु वे दूसरोंकी चिन्ता कितनी ज्यादा करते हैं ? मुझे गुडकी बात सुनकर दुख हुआ । सोचा मैंने अपना स्वास्थ्य नहीं संभाला, अिसकी यह सजा मिली !

आज सफाअीके बारेमें बापूजीने कहा कि "स्वच्छता तो मेरा मुख्य और मनपसंद विषय है । पश्चिमकी बहुत बातें मुझे पसन्द नहीं, मगर वहां स्वच्छताका नियम मैंने खास सीखा है । यहांके तालाबोंमें अुसी पानीमें कपडे घोते होते हैं और वही पानी पीना होता है । यह देखकर मुझे बड़ा दुख होता है । लोग जरा भी संकोच किये बगैर जहां-तहां थुकते हैं, पान खाकर पिचकारियां छोड़ते हैं । यह सब हमारे देशमें स्वाभाविक बन गया है । अिससे बड़ा दुःख होता है । यह हमारे लिअे शर्मकी बात है । हिन्दुस्तानमें अनेक रोगोंका कारण अिस प्रकारकी गंदगी ही है । अितने पर भी भारत जी रहा है, यही मेरे लिअे तो अचरजकी बात है । यहांकी आबादीमें मृत्युका अनुपात दुनियामें सबसे अधिक है । पूरी सफाअी रखनेमें गरीबी कभी बाधक नही होती । सिर्फ हम आलस्य छोड दें तो अपने देशको स्वर्णभूमि बना सकते हैं । अंग्रेजीमें कहावत है कि स्वच्छता दैवी गुणके निकट पहुंच सकती है । और यदि हम बाहरकी सफाअी रखनेके नियमोंका मनन करेंगे तो अन्दरकी सफाअी रखना हमें अपने-आप सुझेगा ।

बापूजीकी प्रवृत्तियोंसे परिचित रहनेके लिअे सब अखबारी संवाददाता साथ रहनेकी मांग करते हैं । बापूजी कहते हैं, "अखबारवालोने अभी-अभी अिस क्षेत्र पर चढ़ाअी की है । यहां तो अुनके लिअे किसी भी प्रकारकी सुविधा नही है । यदि वे मेरे आसपास ठाटवाट खड़ा करे तो मैं अुन्हें चले जानेको कह दूं । परन्तु वे बहुत सादे ढंगसे देहातके अनुकूल बनकर जोवन बिता रहे हैं । मेरी सलाह है कि अखबारवालोंके यहां संवाददाता भेजकर व्यर्थ खर्च न करें । फिर भी

अखबारवालोंके पास अपने आदमी मेरे पास भेजनेको ज्यादा रुपया हो तो वे मुझे रुपया ही भेज दें। यहांका कष्ट सब कोअी सहन नहीं कर सकते।"

बापूजीसे अेक प्रश्न यह पूछा गया कि "१९२५ में आपने कहा था कि मैं तो शासन-विधानमें यह धारा रखूं कि स्वतंत्र भारतमें जो शारीरिक परिश्रमसे राज्यकी कुछ न कुछ सेवा कर सके अुसीको मत देनेका अधिकार दिया जाय। बया आप अिस बात पर अब भी कायम हैं?" बापूजीने जवाब दिया, "अिस बात पर तो मैं मरूंगा तब तक कायम रहूंगा। भगवानने मनुष्यको बनाया है अिसलिअे प्रत्येक मनुष्यका यह धर्म है कि वह काम किये बिना खाना न खाये। रुपयेवाले अपना रुपया दे दें और सबके साथ हाथ-पैर चलाकर खायें। बुद्धिसे रुपया बटोर कर, भोग-विलासके साधन खड़े करके अैश-आराममें जीवन व्यतीत करना पाय है।"

राजाओंके विषयमें बोलते हुअे बापूजीने कहा, "हिन्दुस्तानमें राजा तो ६०० हैं और प्रजा करोड़ोंकी संख्यामें हैं। राजाओंसे मैं कहूंगा कि तुम राजा न रहो और प्रजाके सेवक बन जाओ। अिसमें तुम्हारा और प्रजाका सबका कुशल है।"

बापूजीके पास आनेवाले भिन्न भिन्न प्रश्नों पर अलग अलग चर्चाअें होती हैं और अुनसे बापूजीके निश्चित विचार विस्तारसे जाननेको मिलते हैं।

प्रसादपुर,
७-०२-१९४७

रोजकी परह प्रार्थनाके लिअे साढ़े तीन बजे अुठे। प्रार्थनाके बाद मेरी दोनों दिनकी डायरीमें बापूजीने हस्ताक्षर किये। रोजकी तरह बंगलाका पाठ किया। निर्मलदाने अेक बंगाली बालिकाका बंगलामें लिखा पत्र सुनाया।

सात पैंतीस पर धरमपुर छोडा। सवा आठ बजे हम यहां पहुंचे। यह मकान डॉक्टर अुपेन्द्रकुमार मजूमदारका है।

मेरी तबीयत अच्छी है, अिसलिअे बापूजीने सभी काम करनेकी अिजाजत दे दी। आकर रोजकी भांति बापूजीकी मालिश की, स्नान कराया। बापूजी नहाकर निकले, अितनेमें

सुशीलाबहन पै आअी । बापूजीके लिअे संभालकर थोड़ेसे काजू-बादाम रख छोड़े थे सो लाअी । बापूजीने भोजनमें शाक, दूध, थोड़े मुरमुरे और दो काजू लिये । खाखरे नहीं खाये । बाकी सारा क्रम नित्यकी भांति चला ।

दोपहरको बहुत लोग मिलने आये । अुनमें प्रोफेसर राजकुमार चक्रवर्ती, मतीशबाबू, मनोरजनबाबू, चारुदा, मा (हेमप्रभादेवी), जमान साहब, और पुलिस अफसर भी थे । कर्नल शाहनवाज साहब (आअी. अेन. अे. वाले) और हरिदासभाअी तथा बेलाबहन (नेताजीकी भतीजी) आअी । निरंजनसिंह गिल भी आये ।

बापूजी मिट्टी लेते लेते थोडी देर सो गये । अुठकर मेरे बारेमें आये हुअे अेक स्वप्नकी बात कही । “. . . तुम अुसे मरते देखती हो और अुसे बचानेका धर्म समझकर अुसके पास जाती हो । परन्तु तुम अुसके पास पहुंचती ही हो कि वह आदमी विकारवश हो जाता है । तुमने अुसे दो चांटे लगाये । अिसलिअे अुसने आकर तुमसे माफी मांगी । तुम मुझे यह बात कहने आती हो अितनेमें मेरी आंख खुल जाती है । मैं तुम्हें शाबाशी देने जा रहा था ।”

बापूजी कहने लगे, “मैं तुम्हें अिस स्वप्नके जैसी बनाना चाहता हूं । यह स्वप्न सिद्ध करनेमें वर्षों या शायद युगोंका समय भी लग जाय । परन्तु कितना ही समय लगे, अुससे हमें क्या ? हम कर्तव्य करते करते मर गये तो अगले जन्ममें अिसे पूरा करेंगे । परन्तु अिसमें बीमारीको जरा भी स्थान नहीं होना चाहिये । हमारी भाषामें दृढ़ता होनी चाहिये, रहन-सहनमें मर्यादा और विवेक होना चाहिये । और डरके लिअे थोड़ा भी स्थान नहीं होना चाहिये । अितना तुम पचा लोगी तो खूब अूंची अुठोगी ।”

अुपरकी बातें हो रही थी, अितनेमें ठक्करबापा आ गये । डाकका बडा-सा ढेर लाये । बापा और बापूजीने थोड़ीसी बातें कीं । आजकी डाकमें सबके पत्र बहुत गरमागरम है ।

शामको जमान साहबके साथ बातें करते समय अुन्होंने बताया कि निराश्रितोंके लिअे सदाव्रत खोला गया है, जहांसे अुन्हें मुफ्त अनाज दिया जाता है । अिस पर बापूजीने अपने विचार

बताते हुअे कहा, "प्रत्येक मनुष्यको मेहनत करके ही खानेका अधिकार है । सरकारको अिस तरहका काम खोलना चाहिये । अुदाहरणार्थ, रास्ते सुधारना, देहातकी पुनर्रचना करना, सहकारी ढंग पर अुद्योग स्थापित करना आदि । अैसे अनेक कामोंमें जो लोग साथ दें अुन्हींको यह पूरा राशन लेनेका अधिकार है । हमारे यहां जो मुफ्त दान दिया जाता है और हमने अुसका जो अर्थ किया है, अुसका मैं विरोधी हूं । सशक्त लोग कुछ भी काम न करे और सरकारकी तरफसे रहने तथा खानेकी मुफ्त सुविधा पानेकी आशा रखे, यह मेरी दृष्टिसे अुचित नहीं है । वैसे जो लोग बेघरबार, निराश्रित हो गये हैं अुनके प्रति मुझे पूरी सहानुभूति है । सट्टा करके जो लोग रुपया प्राप्त करते हैं वह सच्ची कमाअीका पैसा नहीं है । हर आदमी अपना पसीना बहाकर, खुद मेहनत करके कमाये और खाये तब तो हमारे यहां स्वर्ग हो जाय, अिसमें मुझे कोअी सन्देह नहीं है । कवि, डॉक्टर, लेखक, शिक्षक, वकील और व्यापारी कुछ भी स्वार्थ रखे बिना यदि सच्चे दिलसे अपने-अपने फर्ज अदा करे और अपने ज्ञान अथवा कुशलताको अपने अपने ढंगसे मानव-सेवामें खर्च करे, तो हमारा भारत संसारमें प्रथम श्रेणीका देश बन जाय ।"

बापूजीने जमान साहबको अिस प्रकार अपने विचार बताये, अिस पर मैं विचार कर रही थी कि वे अितनी बड़ी अपेक्षा अिन लोगोंसे कैसे रखते हैं ? मैंने बापूजीसे पूछा तो वे कहने लगें :

"अेक आदमी भी अिस प्रकार करने लग जाय तो अुसका असर दूसरों पर पड़ेगा । हमें निराश न होकर प्रयत्नशील रहना चाहिये । हिन्दुस्तानमें अगर स्वार्थी हैं तो परमार्थी भी कम नहीं हैं । साथ ही मैं तो गीतामाताका अभ्यासी हूं । अिसलिअे कहूंगा कि गीतामाताने कहा है कि तुम श्रद्धा रखकर किसी फलकी अपेक्षा रखे बिना शुद्ध भावनासे अपना कर्तव्य करते रहो ।"

आज बापूजी प्रार्थनासे लौटने पर कात पाये । रोज दोपहरको ही कात लेते हैं । परन्तु आजका दिन मुलाकातियोंसे भरा हुआ था । कातते कातते अखबार सुने । मैंने डाक सुनाअी । फिर पैर धोये और बापूजी बिस्तर पर लेटे । शामको कुछ नहीं खाया । बहुत थक गये हैं । गरम पानी और शहद लिया । पाच ही मिनटमें बिस्तर पर लेट गये । बादमें मैं पैर दबा रही थी कि सो गये ।

बापूजीके सोनेके बाद मैंने घरके लिअे पत्र लिखा । बापूजीके लिखे हुअे पत्रोंकी नकल करके डायरी लिखी । काता । अितनेमें साढे बारह हो गये । परन्तु लिखनेका काम बहुत चढ़ ग्रया था, अुसे पूरा कर लिया । अिसलिअे हल्की हो गअी ।

नंदीग्राम,

८-२-१९४७

मैं रातको देरसे सोने गअी तब बापूजी गहरी नींदमें थे । परन्तु डेढ बजे अुठे और मुझे जगाकर लालटेन जलानेको कहा । मुझसे कहा "मैं रामनाम तो ले ही रहा था, परन्तु अेक पत्र मजिस्ट्रेटको लिखना था, अिसलिअे मन पर बोझ है । नींद अुड गअी । और भी बहुतसे पत्र लिखने हैं । और कल बापा जो ढेर सारी डाक लाये हैं वह भी पढ़नी है । अिसलिअे लालटेन जला दो ।

मैंने लालटेन जलाकर कागज, कलम वगैरा दिये । मैंने कहा, आप लेटे लेटे मुझसे लिखबाअिये न ?

बापूजी बोले, "तुम ७७ वर्षकी हो जाओ फिर लिखना । अभी तो सो जाओ ।" मैं अेक शब्द भी बोले बिना सो गअी । मुझसे कहने लगे, "जिस लड़कीको मैं दिनमें सोनेके लिअे पूरा आराम नहीं दे सकता और जो रातको देर तक काम करती है, अुसे यदि आधी रातको भी अुठाकर काम करनेको कहूं तो मैं कैसा पापी माना जाअुंगा ?"

मैं तुरंत समझ गअी कि कल रातमें साढे बारह बजे तक लिखती रही, यह बापूजीके ध्यानसे बाहर नहीं रहा । मेरा कसूर था, अिसलिअे कुछ बोलनेकी गुंजाअिश नहीं थी । बापूजी मेरा कीतना ध्यान रखते हैं ?

बापूजीने डेढ़से सवा तीन बजे तक काम किया । बादमें मुझे फिर जगाया । दातुन-पानी किया । प्रार्थना हुअी । आज बेलाबहनने प्रार्थनामें सुन्दर भजन गाया ।

प्रार्थनाके बाद बापूजीने गरम पानी और शहद लिया । और बंगलका पाठ करके सो गये । मैं थोड़ी देर बापूजीके हाथ-पैर दबाती रही । पंद्रह मिनट सोये । अुठकर रस लिया और यहां आनेका समय हो गया ।

लगभग रातके डेढ़ बजेसे काम कर रहे हैं, फिर भी बापूजी कहते हैं कि "मुझे थकावट नहीं मालूम होती ।" मुझसे कहा, "यदि तुम रातको मेरे साथ ही जल्दी सो गअी होती तो सारा काम तुमसे कराता । परन्तु तुम देरसे सोने आअी, अिसलिअे तुमसे कैसे काम लेता ?" मुझे भी जल्दी न सोनेका अफसोस हुआ ।

साढे सात बजे प्रसादपुर छोड़ा । आठ पच्चीसको हम यहां पहुंचे । बापाको पत्र भिजवाया । बापूजी दूसरी डाक देख रहे थे, अितनेमें मैंने मालिशकी तैयारी की । मालिशमें पच्चास मिनट सोये । सारी रातका जागरण था, अिसलिअे अितना सो लिये यह अच्छा हुआ ।

दोपहरके खानेमें खुराक बहुत घटा दी । दो खाखरे, छः औंस दूध और शाक ही लिया ।

कातते समय सुरेन्द्र घोष, लावण्यप्रभाबहन और मिदनापुरके कार्यकर्ता आये । सुचेताबहन कृपलानी और मनोरंजन बाबू भी आये ।

आज बापूने कुछ प्रश्नोंके अुत्तर देते हुअे कहा, "मुसलमान हिन्दुओंका बहिष्कार करते हैं, अैसी बातें मेरे पास जरूर आअी है । परन्तु सभी जगह मह स्थिति नहीं है । अिसके सिवा, हिन्दुओंके पास जितनी जोती जा सके अुससे अधिक जमीन है । अिसमें दोनों वर्गोंकी अपार हानि होती है । मैं तो यह सलाह दूंगा कि वे जितनी खुद जोत सकें अुतनी जमीन रखें, अधिक जमीन अपने कब्जेमें न रखें । हम कोअी अतिरिक्त चीज नहीं रख सकते—फिर वह छोटी हो या बडी । समाजको अिस आदर्श तक पहुंचनेकी साधना करनी चाहिये ।

मैं यहां दो-तीन महीनेसे आया हुआ हूं । अिस अर्सेमें अितना जरूर देखता हूं कि हिन्दुओंने किसी हद तक अपनी बहादुरी दिखानेका साहस किया है, अथवा यों कहें कि अपनी कमजोरी मिटाअी है । थोड़े दिनों पहले ही भटियालपुरमें जिस मन्दिरको मुसलमानोंने नष्ट कर दिया था वहीं प्यारेलालजीकी मेहनतसे मेरे हाथों फिर देव-प्रतिष्ठा हुअी है । अुसमें मुसलमानभाअी भी मौजूद थे । अितना ही नही, अुन्होंने प्रतिज्ञा भी ली कि भविष्यमें अपनी जाने देकर भी हम अिस मंदिरको बचायेंगे । पहले अपनी जान कुर्बान करेंगे, बादमें ही कोअी मन्दिरको हाथ लगा सकेगा । अिस

प्रकारकी हवा पैदा हो अथवा मुसलमान भाअी अैसी प्रतिज्ञा लें, यह कोअी अैसी-वैसी बात नहीं है। मेरे दौरेमें अैसी छोटी-मोटी बातें होती रही हैं, जिनसे हमें अितना आत्म-संतोष जरूर होता है कि कुछ न कुछ काम हो रहा है। यदि मैं शुद्ध होअूं, जो कहता हूं वही करता होऊं, तो यह काम अवश्य टिकेगा। मैं यह भी मानता हूं कि सेवक जो सार्वजतिक सेवा करता है अुसका अुसके निजी जीवनके साथ भी मेल बैठना चाहिये और अुसका जीवन अुतना ही विशुद्ध और पारदर्शक होना चाहिये। प्रत्येक सच्चा कार्य मनुष्यको अमर बनाता है। मनुष्यके मर जानेके बाद अुसका काम रुक जाता है, यह कहना गलत है। अिसलिअे मेरे साथके लोग और कार्यकर्ता भीतर और बाहरसे शुद्ध होंगे तो अुनका काम अवश्य चमकेगा। नहीं तो समाज अपने-आप अुन्हें अुस स्थान पर नहीं रहने देगा। यह मेरा कानून नहीं, दुनियाका कानून है। यदि सार्वजनिक सेवकमें थोडा भी आडंबर या अभिमान होगा तो वह अेक क्षण भी नहीं टिक सकेगा।"

आजकी प्रार्थनामें सुशीलाबहन पैके साथ कारपाड़ासे ८० स्त्रियां आअी थीं। सुशीलाबहन कह रही थी कि अिनमें से कुछ बहनें तो अैसी हैं जिन्होंने कभी गांवसे बाहर पैर नहीं रखा। रामधुनको बहनोंने सुन्दर ढंगसे गाया।

अिस गांवमें मुश्किलसे बापूजीके ही रहने लायक छोटीसी जगह मिली है। शेष सबके लिअे तम्बू तानने पडे है। अैसा दृश्य दिखाअी देता है मानो कोअी काफिला पड़ा हो। क्योंकि संवाददातओं और फोटोग्राफरोका दल बहुत बढ़ गया है। अिसके अलावा गावोंके लोग भी शामिल हो गये हैं। खेतोंमें तम्बू तानकर सब पड़े हैं।

प्रार्थनासे आकर बापूजीने फटे हुअे दूधका प्रानी लिया। डाक देखकर दस बजे बाद सोये। मैं कलके अुलाहनेके कारण बापूजीके सिरमें तेल मल कर और पैर दबाकर फौरन सो गअी।

विजयनगर,

९-२-१९४७

रोजकी भांति प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद नियमानुसार बंगलाका पाठ किया और कुछ पत्र स्वयं ही लिखे। यहां कार्यकर्ताके रूपमें मुख्यत बहनें ही काम कर रही हैं। ये बहनें भजन गाते-गाते

सुबह जल्दी ही बापूजीको लेने नंदीग्राम आ पहुंची थी । अुनमें से दो छोटी अुम्रकी बहनोंको बापूजीकी बैसाखी बननेकी बडी अिच्छा थी, अिसलिअे अुन्हें बैसाखी बनने दिया और मैं निर्मलदाके साथ छोटे रास्तेसे यहां आ गअी ।

यहां आकर बापूजीके पहुंचनेसे पहले ही मैंने सारी व्यवस्था कर ली । अिसलिअे बापूजीके आते ही पैर घोकर मालिश की । और स्नान करके साढे दस बजे निबट गये । अितने दिनोंके सफरमें बापूजीने जल्दीसे जल्दी आज भोजन किया ।

बेलाबहन यहांसे गअी । किशोरलाल काकाको दमा है, अिसलिअे बेलाबहनने अुनके लिअे अेक जडी-बूटी भेजनेको बापूजीसे कहा । वे कहती थी कि यह अुनकी आजमाअी हुअी जड़ी-बूटी है । परन्तु बापूजीने विनोदमें कहा, “अगर किशोरलालका दमा जड़से चला जाय तो मैं तुम्हें अिनाम दूंगा ।”

मुझ पर अभी तक सरदीका असर है, अिसलिअे बापूजीने दोपहरको सुला दिया और कहा, “मैं अुठाअूं तब अुठना ।” मैं सोती रही । परंतु जागनेके बाद क्या देखती हूं कि बापूजीने चरखा खुद तैयार कर लिया है और कातने बैठ गये हैं । मैंने रोषमें कहा, “मैं अभी भी जागी न होती तो आप अुठाते ही नहीं न ? मुझे यह खयाल नहीं था कि आप खुद चरखा तैयार करके मुझे अुठायेंगे।”

बापूजी हंसकर कहने लगे, “तुम्हें बया पता कि अपना काम आप ही करनेमें मुझे कितना आनंद आता है ! तुम तो रोज करती ही हो और आगे भी करोगी । परन्तु मुझे जब जब अपना काम खुद करनेका मौका मिलता है तब अुसका सदुपयोग करनेका आनंद लूट लेता हूं । तुम जरा और अच्छी हो जाओ, फिर मैं थोड़े ही तुम्हें अेक घंटा सोने दूंगा ? मैं कितना निर्दय बन सकता हूं, यह अनुभव करना हो तो तुम लोहे जैसी मजबूत बन जाओ । लुहारको लोहा तेज आगमें तपाते और अुस पर जोरसे हथोड़े मारते वक्त लोहे पर दया आती है ? अैसा निष्ठुर मैं तभी बन सकता हूं जब तुम तपे हुअे लोहे जैसी बन जाओ । और अुस लोहेके आकार भी कैसे सुन्दर बनते हैं ? अैसा

आकार तुम्हारा मैं तभी बना सकता हूं जब तुम अितनी मजबूत बन जाओ । अिसलिअे तुम्हें मेरा प्रत्येक काम करनेकी अिच्छा तभी रखनी चाहिये, जब तुम्हारे नखमें भी रोग न हो ।"

बादमें कातते हुअे दुसरे पत्र लिखवाये । अितनेमें अुपलेटाके वलीमुहम्मद भाअी आ गये । आज बापूजीने प्रार्थनासे पहले ही पाच बीस पर मौन ले लिया । प्रार्थनामें लिखा हुआ भाषण पढ़ा गया । आजका भाषण कार्यकर्ताओंकी प्रश्नोत्तरीके रूपमें था ।

बापूजीके पास अेक प्रश्न यह आया "कुछ कार्यकर्ताओंको सेवामें अपना जीवन बितानेके बाद कुछ अंशोंमें सत्ताका भी शोक हो जाता है । अिसलिअे अुनके साथी अथवा अुनके मातहत काम करनेवाले कार्यकर्ता अुन पर किस तरह नियंत्रण रखें ? और संस्था लोकतांत्रिक नीतिको किस प्रकार कायम रख सकती है ? अनुभवसे पता चलता है कि अैसे कार्यकर्ताओंके साथ असहयोग करनेसे कार्योंमें विघ्न आता है ।"

बापूजीने कहा, "मनुष्य स्वभावसे सत्ताका शौकीन है । और अिस शौकका अंत तो मृत्युके साथ ही होता है । अिसलिअे सत्ताके पीछे पडे हुअे सेवकको अंकुशमें रखनेका काम दूसरोंके लिअे मुश्किल है । अिसके कअी कारणोंमें अेक कारण यह है कि दूसरोंमें भी यह दोष जाने-अनजाने होना संभव है । साथ ही जगतमें सर्वथा अहिंसक ढंगसे चलनेवाली अेक भी संस्था देखनेमें नहीं आती । और तब तक हम यह नहीं कह सकते कि कोअी भी संस्था पूरी तरह लोकतांत्रिक ढंग पर चल रही है । जब तक लोकतंत्रको पूरी तरह अहिंसाका आधार न हो तब तक वह कभी पूर्ण नहीं माना जा सकता । यदि अुद्देश्य अथवा कार्य शुद्ध हो तो अहिंसक असहयोग राफल हुअे बिना रह ही नहीं सकता । और अैसे असहयोगसे संस्थाको बिलकुल आंच नहीं आयेगी । अिस प्रयोगमें अहिंसाकी मात्रा थोडी हो या बिलकुल न हो तो ही असफलता मिलेगी। मैंने अनुभव किया है कि जो लोग दुसरोंकी शिकायत करते हैं वे स्वयं ही सत्ताका लालच मनमें रखते हैं । अिसलिअे जहां अेक ही किस्मके दो प्रतिस्पर्धियोंमें भेद किया जाता है वहां अुसे बतानेसे किसीका समाधान नहीं होता और दोनों पक्ष रोषसे भर जाते हैं ।"

"जैसे हमारे शहरोमें दलबन्दी है और सत्ताके लिअे गंदी चालें चली जाती है, वैसे ही गांवोंमें होने लगे तो भारतके लिअे अफसोसकी बात होगी । यदि कार्यकर्ता सत्ताके लिअे गांवोंमें जायेंगे तो वे देहातकी प्रगतिमें बाधक होंगे। मैं तो यह कहूंगा कि परिणामकी आशा रखे बिना हम अपना काम करते रहें और अुस काममें स्थानीय लोगोंकी सहायता लें । यदि हमें सत्ताका मोह नहीं लगा होगा, तो हमारा काम हरगिज नहीं बिगड़ेगा । शहरोंके पढ़े-लिखे और सुधरे हुअे माने जानेवाले लोग हमारे गावोंकी तरफसे लापरवाह रहे हैं । यह हमने भयंकर अपराध किया है । यदि हम अिसका हृदयसे प्रायश्चित करेंगे तो हममें धीरज आयेगा । मैं तो गांवोंमें घूम रहा हूं । वहां कमसे कम अेक-दो प्रामाणिक कार्यकर्ता तो मिलते ही हैं । अिसलिअे अब भी गांव अच्छे हैं । परन्तु अुनकी अच्छाअी स्वीकार करने या मानने जितनी नम्रता हममें नहीं है । जिसे स्थानीय दलबन्दी द्वारा काम करना है अुसे गांवोंसे अलग ही रहना चाहिये । और यदि सब दलोंकी या जो किसी भी दलमें न हो अैसे लोगोंकी अच्छी सहायता मिलती हो तो अुसे नम्रतासे स्वीकार कर लेना चाहिये । हम देहातियोंमें से अके बन सके, अिसी अुद्देश्यसे मैंने प्रत्येक गांवमें अपने अेक अेक साथीको रखा है । और जो कार्यकर्ता बंगला न जानता हो अुसीके साथ दुभाषियेका काम करनेके लिअे अपवाद-स्वरूप दूसरा साथी रखा है । अिससे मुझे लाभ हुआ दीखता है । हमें जल्दबाजीमें निर्णय कर लेनेकी बुरी आदत है । बाहरकी मददके बिना काम नहीं होता, यह गलत बाते है । स्थानीय सहायता जितनी मिले अुसे लेकर हम अकेले ही हिम्मत और समझके साथ काम करेंगे तो जरूर विजयी होंगे । फिर भी यदि सफलता न मिले तो और किसीका (किसी व्यक्तिका या समयका) दोष बताये बिना अपना ही दोष बताना हम सीखेंगे तभी हमारी अुन्नत्ति होगी। अिसमें सुझे जरा भी शंका नहीं ।"

यह मकान जोगेशचंद्र मजूमदारका है । अिस गांवमें १,२६९ मुसलमान और ८६५ हिन्दू है । बहुतसे घर जला दिये गये है । लीगके नाम पर रुपया भी लिया गया है । लगभग सबको जबरन् मुसलमान बनाया गया है । हिन्दुओंमें बहुतसे जुलाहे है । अमीर लोग तो अधिकांश बाहर रहते हैं।

प्रात कालके भोजनमें थोड़े मुरमुरे, पाच बादाम, दो काजू, शाक और आठ औंस दूध लिया । दोपहरको दो बजे दो नारियलका पानी । शामको प्रार्थनासे पहले आठ औंस दूध और अुसमें अेक चम्मच खाखका चूर्ण डाला । प्रार्थनाके बाद अखबार सुनते हुअे गरम पानी और दो चम्मच शहेद लिया । शामको लगभग अड़ाअी मील घूमे । पौने दस बजे बापूजी बिस्तरमें लेटे । मुझे सोनेमें साढ़े दस हो गये ।

विजयनगर,

१०-२-१९४७, सोमवार

अिस गांवमें दो दिन तक रहना है, अिसलिअे आज तो प्रार्थनाके बाद कोअी खास काम नहीं रहा । रोजकी तरह प्रार्थनाके लिअे अुठे । दातुन करके प्रार्थनाके बाद बापूजीने बंगलाका पाठ किया । मौन-दिवस होनेके कारण . . . और . . . को बड़े मननीय पत्र लिखे ।

अभी तक मेरी सरदी नहीं मिटी, अिसलिअे अेक पर्चे पर लिखा :

> "यह जुकाम मिटानेका अुपाय तुम्हें ढूंढना चाहिये । रामनाम तो रामबाण दवा है; अुससे जरूर मिटना चाहिये । छाती और गलेमें कुछ न कुछ लपेट रखो तो ठीक रहे । कुछ भी हो, रामनामका अेक कानून यह है कि कुदरतके वियम न टूटने चाहिये । अिस पर विचार करना सीख लो ।"

ठीक सात पैंतीसको घूमने निकले । गोपीनाथपुर जानेवाले थे । पैंतालीस मिनट चलने पर भी हम गोपोनाथपुर नही पहुंचे, अिसलिअे बापूजीने पूछा, कितनी दूर है ? जवाब मिला कि अभी दस-पंद्रह मिनट और लगेंगे । अिस प्रकार आते-जाते सहज ही दो घंटे बीत जाते । अिसलिअे अैसा सोचकर कि "अिस तरह चलनेसे यात्रा पूरी नहीं होगी । हर बातकी सीमा होनी चाहिये ।" हम लौट आये । मुकाम पर आये तब ८-५५ हो गये । आकर बापूजीके पैर धोये । मालिशमें बापूजी तीस मिनट सोये । आज मौन-दिवस है, अिसलिअे सुनसान लगता है ।

बापूजीने दोपहरके भोजनमें अेक खाखरा, साग, आठ औंस दूध और अेक ग्रेपफ्रूट लिया । दोपहरको नारियलका पानी लिया । लगभग सारा दिन बापूजीने लिखने-पढ़नेमें ही बिताया ।

अेक भाअीने बापूजीसे बात कही कि अेक मुसलमान व्यापारी सच्चा तराजू रखता था और अेक हिन्दू व्यापारी झूठा तराजू रखता था; अिससे क्या यह नहीं लगता कि मुसलमान व्यापारी प्रामाणिक हैं और हिन्दू व्यापारी अप्रामाणिक हैं ?

बापूजीने जवाब दिया, "अिस अधूरे जगतमें कोअी अेक जाति पूरी तरह प्रामाणिक नहीं और न कोअी अेक जाति पूरी तरह अप्रामाणिक है । जो कोअी अपने ग्राहकोंको अिस प्रकार धोखा देता है, वह व्यक्ति अप्रामाणिक है । परंतु अिस परसे सारी जातिको कैसे बेअीमान कहा जा सकता है, यह मेरी समझमें नहीं आता ।

"नोआखाली तो अेक अैसा रमणीय प्रदेश है, जहां अपार प्राकृतिक संपत्ति है । यदि अिसमें हिन्दु-मुसलमानोंकी अपूर्व अेकता और हार्दिक मित्रता हो जाय तो मैं अिसे पृथ्वी पर स्वर्ग कहूंगा । बेचारे हिन्दुओंको अभी तक डर है । जो लौट आये हैं अुनकी स्थिति अच्छी है, अैसा मुझे अफसर कहते हैं । मेरे अनेक मुसलमान मित्रोंने कहा है कि हम चाहते हैं कि वे अपने अपने घर लौट आये । परन्तु अिस समय अुनके लिअे कोअी खाने-पीनेका बन्दोबस्त है ? अभी तक जैसा मैं चाहता हूं वैसा वातावरण पैदा नहीं हुआ है । जैसे खानेका स्वाद मुहंमें रखने पर ही मालूम होता है, वैसा ही यह काम है । यह तो तभी हो सकता है जब तमाम अपराधी, जो छिपकर घूम रहे है, बाहर आकर अपना अपराध प्रगठ करके प्रायश्चित्त करें । तभी डरके मारे जो लोग घबराये हुअे हैं वे भय-मुक्तिकी शांति अनुभव कर सकेंगे ।

"मैं तो यहां अपनी अहिंसाकी परीक्षा पास करने आया हूं । अहिंसामें असफलताके लिअे तो स्थान ही नही है । मैं यहां करूंगा या मरूंगा । जिसके हृदयमें दोनों जातियोंके बीच या मानव-जातिके बीच अैक्य—मैत्री स्थापित करनेकी लालसा है, अैसे अहिंसकके लिअे दूसरा कोअी रास्ता हो ही नही सकता । मेरे लिअे तो है ही नहीं ।"

आज शामको भौजनमें केवल अेक औंस गुड़ ही लिया ।

दो बहनें (जो स्थानीय कार्यकर्त्री है) सतको गरम पानीसे जल गअी । अुनके लिअे मैं वैसलीन लेने जा रही थी । बापूजीने मना किया । "देहातमें अैसी दवाका अुपयोग क्यों किया

जाय? अुनके पैर पर मिट्टी लगाकर चूने और तेलका लेप कराओ ।" मुझसे कहने लगे, "यदि स्थानीय कार्यकर्ता अिस प्रकार प्रसिद्ध विदेशी दवाअे काममें लें तो फिर अिन गांवोंके लोगों पर क्या असर डालेंगे ? अुल्टे देहाती लोग अेक कुटेव सीखेंगें । चाय, बीडी, सिगरेट आदि गांवोंमें अिसी तरह पहुंची है । यह किसका दोष है ? देहातियोंका नहीं, परन्तु शहरियोंका ।" अुन बहनोंको मिट्टीसे आराम मिला । रातको दस बजे सोनेसे पहले मैं अुनकी खबर लेने गअी तब वे आराम कर रही थी ।

बापूजीके प्रत्येक कार्यमें सूक्ष्म विचारोंसे भरे पाठ रहते ही हैं और वे भी अेकसे नहीं परन्तु विविधतापूर्ण ।

अुन बहनोंके समाचार लेनेके बाद बापूजीके सिरमें तेल मलकर, पैर दबाकर और पत्र लिखकर मैं भी सोने चली गअी ।

हैमचंडी,

११-२-१९४७, मंगलवार

आज सोकर अुठे ही थे कि निर्मलदाने . . . के आये हुअे तार सुनाये । प्रार्थनाके बाद तुरंत बापूजीने अुनके अुत्तर तैयार किये । ओसके कारण लकड़िया गीली हो जानेसे चूल्हा नहीं सुलग रहा था । अिसलिअे गरम पानी करनेमें देर हो गअी । रस भी देरसे पीनेको मिला । अिस कारण रस पीनेके बाद तुरंत ही बापूजीने यात्रामें चलना शुरू कर दिया ।

विजयनगर छोडनेसे पहले बापूजीने यहांके पाखानोका निरीक्षण किया कि वे कैसे है और अुनकी सफाअी कैसे होती है । कुछ सूचनायें भी दी । कुल मिलाकर अुन्हें संतोष हुआ ।

रास्तेमें जीवनसिंहजीको पैंगबर साहबके कुछ सुन्दर वचनामृत्त सुनाये । ये वचनामृत केवल मुसलमानों पर ही लागू नहीं होते, परन्तु मनुष्य-मात्रके मनन करने योग्य है ।

१. मुसलमान या किसी भी दूसरी जातिके किसी आदमी पर जुल्म होता हो तो अुसकी मदद पर पहुंच जाना चाहिये ।

२. जो व्यभिचार करता है, चोरी करता है, शराब पीता है या डाका डालता है अथवा रूपये-पैसेके व्यवहारमें घोखेबाजी करता है, वह न सच्चा मुसलमान है और न सच्चा अिन्सान है । अिसलिअे हे मानव, तू चेत और सावधान हो जा ।

३. जिसका अपने मन पर और अपने आप पर काबू है, अुसकी विजय सबसे बड़कर है ।

४. मनुष्य जब व्यभिचार करता है, तब प्रभु अुसे अपनेसे अलग कर देता है । (अुनके साथ प्रभु नही, परन्तु शैतान बसता है ।)

५. मनुष्योंमें सबसे बुरा आदमी दुष्ट विद्वान है । भला अपढ़ सबसे अच्छा आदमी है ।

६. जिसकी जबान या हाथसे मनुष्य-जातिको या अन्य किसी प्राणीको जरा भी चोट नहीं पहुंचती वह पूरा मुसलमान या अिन्सान है ।

७. जो व्यक्ति प्रभुके पैदा किये हुअे प्राणियों पर दयाभाव रखता है अुस पर प्रभु प्रसन्न रहते हैं ।

८. जो स्वयं विश्वासघात नहीं करता, बल्कि कोअी दुश्मन भी कभी अुस पर विश्वास रखे तो अुसकी मददके लिअे दौडता है और दिये हुअे वचनका पालन करता है, वही सच्चा अिन्सान है ।

९. जो झूठ बोलता है, जी वचन भंग करता है, अुसे मैं अपना नही मानता ।

१०. आदमी जो अपने लिअे चाहता है वही अपने भाअीके लिअे न चाहे तब तक वह सच्चा अिन्सान नहीं, सच्चा मुसलमान नहीं ।

११. जो अपने लिअे श्रम नहीं करता अथवा दूसरेके लिअे भी काम नहीं करता, अुसे प्रभु बदला नहीं देता ।

१२. अुपवास और संयमसे मेरे अनुयायी ब्रह्मचारी बनेंगे, बने सकते हैं ।

१३. मनुष्यका आधा अंग स्त्री है ।

१४. साध्वी स्त्री दुनियाकी सबसे कीमती, भव्य और अुम्दा चीज है ।

१५ जो जानता है और तदनुसार चलता है वही सच्चा ज्ञानी है ।

१६. स्त्रियों पर हाथ न अुठाओ, कुदृष्टि न डालो । अपनी स्त्रीके सिवा सब स्त्रियोंको अपनी माता, बहन या बेटीके समान समझो ।

बापू कहने लगे, "सौभाग्यसे धर्मशास्त्रोंमें अैसे बड़े कीमती कानून और प्रत्येक मनुष्यके लिअे सुखी होनेके रास्ते बताये गये हैं । अुनका आचरण और मनन हम कर सकें, तो आज हम संसारकी 'श्रेष्ठ' मानी जानेवाली जातियोंमें प्रथम पद भोग सकते हैं ।"

पैर धोते समय बापूजीने मुझसे कहा, "पैगम्बर साहबके ये वचना-मृत्त कोअी कण्ठस्थ करके रोज सुबह मनन करे और शामको अिनमें से कितने पाले गये या नहीं पाले गये, अिसका मनमें ही हिसाब लगाकर तदनुसार चले तो मुझे विश्वास है कि पंद्रह दिनमें अुस व्यक्तिका व्यक्तित्व अनोखा बन जाय ।"

मालिशकी तैयारी करनेमें मुझे नित्यकी अपेक्षा अधिक विलम्ब हुआ, अिसलिअे बापूजीने बहुतसी डाक (गुजराती) . . . को लिख डाली । यहां आज झोंपड़ीके सिवा और कोअी सुविधा नहीं है, अिसलिअे सब कुछ नये सिरेसे और खुद ही किया । लगभग हफ्तेभरसे मुझे सरदी और बुखार रहता है, अिसलिअे आज निर्मलदाकी दी हुअी कुनैनकी गोलियां मैंने खाअी । निर्मलदाने अपना काम छोडकर मेरे काममें बड़ी मदद दी । हुनरभाअीने साग काटा । बापूजीके लिअस कूकर रखकर अुनकी मालिश की । सब हाथोंहाथ काम करते हैं । निर्मलदा तो कलकत्ता विश्वविद्यालयके बड़े प्रोफेसर है, परन्तु चूल्हा सुलगाने बैठ गये । अिस प्रकार हमारी मंडली या कुदुम्ब मिल-जुलकर काम करनेवाला है । और मैं सबसे छोटी हूं, अिसलिअे मेरे प्रति सबकी अपार सहानुभूति है ।

बापूजीको डर है कि मुझे निमोनिया हो जायगा । मुझसे कहने लगे, "यदि आज बुखार चढा तो तुम्हें 'बेटशीट पैक' देना ही पड़ेगा । मणिलालकी तो बचनेकी आशा ही नहीं थी । मैंने अुस पर अुस समय खतरा अुठाकर अिसका प्रयोग किया और वह अच्छा हो गया । शायद सबसे अच्छी

तन्दुरुस्ती अिस समय अुसीकी है । अिसलिअे जब सप्ताह भरसे बुखार और जुकाम नही जा रहा है तो अिस तरह बैठा नहीं रहा जा सकता ।

मैंने अिनकार किया।

बापूजी बोले, "तुमने मुझे वचन दिया है कि मैं कहूंगा सो तुम करोगी । अिसलिअे जो वचन न पाले अुसकी कीमत तांबेके पैसेके बराबर है ।"

बापूजी छोटी-छोटी मानी जानेवाली बातोंमें कहावतोंका सुन्दर अुपयोग करके हंसाकर काम निकाल लेते हैं । और सबसे भव्य पाठ तो आज बापूजीने पैगम्बर साहबके जिन वचनोंका मनन कराया था अुनमें दिया हुआ अेक कानून है । अुसकी भी बापूजीने याद दिलाअी ।

दोपहरके भोजनमें दो खाखरे, शाक और आठ औंस दूध लिया । खिलाकर और कपड़े धोकर बापूजीके पैरोमें घी मला । मुझे बापूजीने सोनेको कहा । सोनेके पहले देशी अेण्टीपलोजिस्टीन - मिट्टीको छनवाकर और गरम करके अुसमें थोड़ा नमक, सूँठ और अजवायनका चूर्ण और हल्दी मिलाकर खूब अेकमेक किया और अुसे गरम गरम ही छाती और पसलियों पर लगाकर तथा रुअी रखकर मैं सो गअी । अुसके बाद ही बापूजी सोये । बापूजी बीमारोंकी अैसी प्रेम और चिस्ताभरी देखभाल करते हैं ।

शामको बाबा (सतीशबाबू) और हेमप्रभाबहन (अुनकी पत्नी) आये ।

शाम तकका काम आज धीरे-धीरे निबटाया । शामको प्रार्थनामें गअी तब बुखारकी तैयारी हो अैसा लग रहा था । परन्तु प्रार्थनासे लौटकर बापूजीको दूधमें खारकका अेक औंस चूर्ण दालकर दिया और तीन संतरे दिये । बादमें सोअी । बुखार बापूजीने ही देखा । १०५° हो गया था । सिर बहुत ज्यादा दुख रहा था । निर्मलदाका खयाल था कि आज १५ ग्रेन कुनैन पेटमें गया है, अिसलिअे शायद बुखार नहीं आयेगा । परन्तु ठीक समय पर आ गया । बावा और मां (हेमप्रभाबहन) सभी बैठे थे ।

"तुम अेक अपराधीकी तरह समझदार बनकर अब सो रही हो न ?" बापूजीने हंसते-हंसते कहा और 'बेटशीट पैक' मुझे लेना ही पड़ा । खूब सोअी । ठेठ रातके साढे बारह बजे जागी । पसीनेमें तरबतर हो गअी । शैलेनभाअीने बापूजीको अखबार सुनाये । बादमें बापूजी भी सो गये। साढ़े बारह बजे मैं जागी और बापूजीने बुखार नापा । नार्मल हो गया था । अुठकर बापूजीका बिस्तर किया । फिर बापूजीके पैर धोये, पैर दबाये, सिरमें तेल मला और सुबहके लिअे दातुन वगैरा तैयार करके मैं और बापूजी दोनों अेक बजे फिर सोये । अेक नींदमें सुबह हो गअी । जब निर्मलदाने जगाया तब बापूजी जागे और मुझे जगाया ।

प्रार्थनाके बाद प्रात-काल मुझे शरीर-संबंधी कुछ बातें मननीय और प्रेमपूर्ण ढंगसे अिस तरह समझाअी, जैसे मां अपनी बेटीको समझाती है । अुनमें से कुछ बातें प्रत्येक स्त्रीके समझने लायक होनेसे यहां देती हूं ।

"लड़कियोंके शरीर झूठी शरमसे बिगडते हैं । अिसमें भारतका आकडा सबसे ज्यादा है । स्त्रियां यह भूल जाती हैं अथवा अुन्हें समझाया ही नहीं जाता कि आजकी बाला कल मां बनेगी । अिसलिअे प्रत्येक भारतीय अिसके लिअे जिम्मेदार है । वह देशको महापुरुष भी दे सकती है और संत, चोर, बदमाश या हत्यारे भी दे सकती है । . . . जब अपनी पुत्री तेरह-चौदह बर्षकी होती है तब अुस खेलती-कूदती लड़कीके प्रति, जो समझदार भी नहीं होती और नासमझ भी नहीं होती, माता-पिताको सबसे अधिक प्रेम और ममत्व दिखानेकी जरूरत है । और यह जिम्मेदारी खास तौर पर माताकी है । परंतु अिसके बजाय हमारे समाजमें अुल्टी बात होती है । वह लडकी बडी होती है, अिसलिअे मानो गरीब गायसी लगती है । अुसके साथ अिस तरहका बर्ताव होता है मानो अुसने कोअी सामाजिक अपराध किया हो । बाहर कहीं भी जानेकी अुसे मनाही होती है । अिस करुण स्थितिकी करुणता अुसके कोमल मस्तिष्क पर असर करती है ।

"अिसी प्रकार लड़कियोंकी आजकलकी पोशाकने अुनका सत्यानाश किया है । वे अितने चुस्त कपड़े पहनती है या अुन्हें पहनाये जाते हैं कि अुन्हें देखकर मुझे दया आती है । वे पूरा श्वासोच्छ्वास ले पाती होगी या नही, अिसमें मुझे शंका है । फैशनने तो सत्यानाश ही कर दिया है

। लडकिया अपने शरीरकी रक्षासे फैशनकी रक्षाको अधिक कीमती समझती है । यह हमारी कैसी दयाजनक स्थिति है ? और अिन सब बातोंके कारण वे अत्यन्त दुर्बल और अशक्त बनी रहती है । यदि स्त्रियां कुछ न करके अपनी मर्यादा रखें, अपने शरीरको नीरोग बनायें और अपने रंगढंगमें, अपनी खुराकमें, अपने व्यवहारमें, अपनी पोशाकमें, अपने वाचनमें, कार्योंमें, पढ़ने-लिखनेमें तथा रहन-सहनमें पूरी सादगी और सात्त्विकताको अपनायें,—और यह स्त्रियोंके लिअे स्वाभाविक वस्तु है—तो मेरा विश्वास है कि हमारी सत्तामें गामा पहलवान या दयानंद सरस्वती जैसे बहादुर सात्त्विक संतो (ये हमारी ही स्त्रियोंके बालक थे न ?) के समान होंगी । परन्तु अैसे बालक आज अंगुलियों पर गिनने लायक हो गये हैं । मुझे असंख्य आदर्श स्त्रियां चाहिये । परन्तु आज तो यह आकाशसे कुसुम तोड़ने जैसी बात है । अिसमें पुरुषोंका अपराध जरा भी कम नहीं है । परन्तु अेक समझे और दूसरा न समझे, तब भी बात बनती नहीं । अैसी लालसा रखनेवाला मैं तुम्हारी मां बना हूं । यदि अिस दृष्टिसे मैं तुम्हें तालीम न दे सकूं तो मैं अपनेको अैसा विचार करनेका अधिकारी नहीं मानूगा । अिसलिअे मुझे खुशी हुअी कि तुम निर्भयतापूर्वक यहां रही हो । तुम्हारे अिस साहसकी मैं कीमत और कद्र करता हूं । जब तक तुम मेरे हाथमें रहोगी तब तक मैं तुम्हें तालीम देकर तैयार करनेमें हरगिज नहीं चूकूंगा । अिसमें मेरा समय जरा भी नहीं बिगड़ता । मैं मानता हूं कि करोड़ो स्त्रियोंमें से अेक लड़कीकी मां बनवर अुसीका सही ढंगसे पालन-पोषण करके मांका आदर्श दुनियाको मैं बना सकूं तो भी यह आत्म-संतोष तो प्राप्त करूंगा कि सारे संसारकी लड़कियोंकी मैंने सेवा की ।

पुरुषोंको अेक नया पाठ दुंगा कि वे अपनी बहन-बेटियोंको अुनकी माता बनकर आदर्श शिक्षा देना सीखें । मैं मानता हूं कि मनुष्य आत्म-संतोष प्राप्त करनेके लिअे दूसरोंकी कितनी ही फटकार सहन करके और दुःख अुठाकर जब प्रयत्न करता है, तब अुसमें दूसरोंकी परवाह करनेकी वृत्ति अपने-आप कम हो जाती है । परवाह करनी भी नहीं चाहिये । आत्मा ही परमात्मा है । अतः परमात्माको पानेके लिअे बडीसे बडी मुसीबत भी आ जाय तो क्या अुसे सहन न किया जाय ? और क्या मानवको प्रसन्न करनेके लिअे अुसके अिशारों पर नाचा जाय ? हां, अिसमें

मर्यादाके लिअे काफी गुंजाअिश है । कोअी यह माने कि अुसे शराब पीने या व्यभिचार करनेमें आत्म-संतोष मिलता है और दूसरेका कहा न करे, तो यह निरा दंभ और असत्य है । यह तो तुम समझती हो न ? परन्तु शुद्ध भावनासे—शुद्ध हृदयसे अिस परमात्मारूपी आत्माको संतोष देना ही मनुष्यका प्रथम कर्तव्य है । मैं यही करनेका प्रयत्न कर रहा हूं । अिसे मैं अपने अिस यज्ञका अेक अविभाज्य अंग मानता हूं । यहां मेरी जितनी परीक्षा हो सके अुतनी मुझे करनी है । मुझे अपनी ही परीक्षा देनी है । अिसमें कभी असफल हो जाअुं तो ? यह सब अीश्वराधीन है । अीश्वरके सिवा मुझे किसीकी साक्षी नहीं चाहिये । सफलता असफलताकी चिन्ता हम क्यों करें ? और अिसमें कहीं दंभ होगा, तुम भी कही दंभ करती होंगी, भले हम अुसे जानते भी न हों, तो वह संसारको मालूम हो जायगा । यह यज्ञ अनोखा है। मैं यहां लोगोंको प्रेमसे वशमें करके भाअीचारा पैदा करनेकी कोशिश कर रहा हूं । अिसमें कहीं भी दंभकी गुंजाअिश नहीं हो सकती । होगा तो चह अपने-आप बाहर आयेगा । और संसार अुसे जानकर मुझ पर फटकार बरसायेगा। अुसमें भी हमारा भला ही है, जगतका भी भला है । जगतको पाठ मिलेगा कि यह दंभी महात्मा था । दूसरी बार वह किसीको अिस प्रकार महात्मापद नहीं देगा । संसारका तो दोनों दृष्टियोंसे श्रेय है । मैं सच्चा महात्मा होअुं या झूठा । यदि सच्चा हूं तो संसारका लाभ ही है । मेरे जीवनसे अुसे कुछ सीखना हो तो सीखे । और यदि मैं झूठा हूं तो भी संसारका लाभ है; दूसरी बार वह किसीको अितनी आसानीसे महात्मा जैसा पद नहीं देगा । अिसलिअे वह सावधान हो जायगा । यह अेक और अेक दो जैसी स्पष्ट बात समझानेका मैं प्रयत्न कर रहा हूं।”

१२ तारीखको पानी पीते पीते सुबहकी नीरव शांतिमें अिस प्रकार अपने हृदयकी गहराअीसे निकली हुअी बातें अेक सांसमें बापूजीने कह डाली । अुनके अेक अेक शब्द, अेक अेक वाक्यसे अुनका वात्सल्यभाव अुमडता दिखाअी देता था । मुझ परसे समस्त स्त्री-जगतका चित्र प्रस्तुत करते समय अुतना ही गाभिर्य अुनके चेहरे पर झलक अुठा, क्योंकि वे जिम्मेदार स्त्री-अुद्धारक है ।

कफिलातली,

१३-२-१९४७, बुधवार

सुबहकी प्रार्थनाके बाद गरम पानी पीकर जो बातें कही थी, वे कलकी डायरी भी आज लिखनेके कारण अुसमें आ गअी । कलके नोट आज प्रार्थनाके बाद जब बापूजी डाक पढ़ रहे थे तब सुबह-मुबह ही लिख डाले ।

साढे सात बजे हैमचंडी छोड़ा । रास्तेमें फ्रेण्डस युनिटके स्थान पर रुके थे । ये लोग बड़े सेवाभावसे काम कर रहे हैं । बापूजी अुंका काम देखकर बडे प्रसन्न हुअे ।

आज मैं बिलकुल अच्छी हो गअी हूं । (देशी अेण्टीफ्लोजिस्टीन) गरम मिट्टीके लेपसे । यह लेप अेक ही दिन लगाया । अुसने अच्छा काम किया । कफ बिलकुल बिखर गया। और अेक पाअी भी अिसमें खर्च नहीं हुअी ।

यहां आते हुअे रास्तेमें भी सुबहकी बातोंके सिलसिलेमें और मैं अच्छी हो गअी हूं अिस बारेमें बातें करते हुअे बापूजीने मुझ समझाया । वे बोले:

“मैं तुम्हें गढ़ रहा हूं। अिसमें सफलता मिलेगी या असफलता यह मैं नहीं जानता । कुम्हार जब घड़े या हंडिया बनाता है तब अुसे पता थोड़े ही रहता है कि आवामें डालनेसे यह फट या टूट जायेंगे । वह बेचारा आनंदसे, अुत्साहसे कच्चे सुन्दर आकार बना बनाकर आवामें रख देता है । अुनमें से कुछ टूट जाते हैं, कुछ तडक जाते हैं और कुछ सुन्दर और पक्के बनकर निकलते हैं । अिस प्रकार मैं तो कुम्हार ठहरा । अिस समय कुम्हारकी तरह अच्छे घडेकी आशामें तुम्हें तैयार कर रहा हूं । वह टूट जाय या फूट जाय तो मेरी और तुम्हारी तकदीर । तुम या मैं कोअी नी क्या करे ? अिसलिअे हमें अिसकी चिन्ता करनी हो नहीं चाहिये । हमें वो कुम्हारकी तरह अितना ही देखना है कि मिट्टी अच्छी अुंचे दर्जेकी हो, कंकरीली ने हो और आकार सुंदर और पक्का बने । आवामें जानेके बादकी चिन्ता करनेवाला तो अीश्वर है । अिसी तरह हमारे अिस यज्ञमें सत्यता, शुद्धता और निर्मलता हो, कहीं दंभका नाम न रहे, क्षण क्षण पर सोचकर कदम अुठाया जाय,

अपने हृदयसे दस बार पूछा जाय और किसीको अच्छा-बुरा लगनेकी परवाह न करके विवेकपूर्वक जो सच हो वही किया जाय । यदि मैं यह मानता हूं कि अैसी मिट्टी मेरे पास है, तो मुझे जाकार गढ़नेमें कोअी बाधा नहीं होगी । यदि मिट्टीमें कंकर हो (अर्थात् तुममें कोअी दोष हो) तो वे आकार गढ़नेमें बाधक ही होंगें । तुम मिट्टी हो और मैं आकार तैयार करनेवाला कुम्हार हूं । मैंने तुम्हारी तारीफ लिखी है । . . . अिसलिअे तुम्हें संचेत करता हूं । तुम मुझे जो भी पूछना हो निडर होकर पूछ सकती हो । परन्तु सत्यके लिअे लड़ना तो मेरे लिअे अेक खेल है । अैसी लडाअियोंसे मैं कभी हारता नहीं । अभी त़क अीश्वरने निभाया है ।

“तुम देखोगी कि मैंने अैसा बहुत बनाया है और बहुत तोड़ा है । साबरमती जैसे आश्रमको बिखेर देनेमें मुझे देर नहीं लगी । अिसलिअे अिस काममें भी मुझे जरासी भी कंकरी दिकाअी देगी तो अुस कुम्हारकी हंडियाकी तरह अिसे तोड़ डालनेमें मुझे देर नहीं लगेगी । तुम सतत जाग्रत रहो, अिसीलिअे आज सुबहसे तुम्हें यह सब कह रहा हूं ।”

बापूजीकी सुबहकी बातोंसे भी आज अभीकी बातें मुझे अपने लिअे अधिक गंभीर लगी । कया बापूजीके पास रहना तेज तलवारकी धार पर चलनेके बराबर नहीं ? प्रभु अिस परीक्षामें पास होनेका बल मुझे दे रहा है, यह अुसकी असीम कृपा है ।

डॉ. सुशीलाबहन नय्यर रेड क्रोस केन्द्रमें थी । वे हमारे साथ ही यहां आअी । वे कस्तूरबा ट्रस्टकी वैठकमें शरीक होने दिल्ली जा रही है । सुशीलाबहनने बापूजीका ब्लड प्रेसर (खूनका दबाव) देखा । १९२/ ११० था । यहां साढ़े सात बजे पहुंचे । मालिश, स्नान वगैरासे निबटनेमें ग्यारह बज गये । भोजनमें बापूजीने दो खाखरे, दूध, सन्देशका अेक छोटा टुकड़ा और अेक ग्रेपफ्रूठ लिया । भोजन करते हुअे कुछ डाक सुशीलाबहनके साथ दिल्ली भेजनेकी तैयारी की । साढ़े बारहसे अेक तक आराम किया । बादमें काता । कातते कातते पत्र लिखवाये । अढ़ाअी बजे नारियलका पानी लिया । साढ़े तीनसे चार तक मिट्टी ली । आज सिर और पेडू पर दो पट्टियां ली । मुलाकाती आते ही रहे थे । फिर भी दस मिनद सो लिये । प्रार्थनाके बाद स्टीम किया हुआ अेक

सेब और आठ औंस दूध लिया । घूमकर लौटने पर अखबार सुने और डाक सुनी । रातको गरम पानी और शहद लिया ।

बापूजीको रातमें काफी थकावट मालूम हुअी । पौने दस बज बिस्तर पर लेटे ।

बापूजीके सो जानेके बाद मैं जरा भी जागती हूं तो अुन्हें अच्छा नही लगता । अिसलिअे मैं बापूजीके सोनेके समयसे पहले सब काम कर लेनेकी कोशिश करती हूं ।

पूर्व केरवा

१४-२-१९४७

रोजकी तरह प्रार्थनाके लिअे साढ़े तीन बजे अुठे । दातुन करके प्रार्थनाके बाद बापूजीने बंगलाका पाठ किया । फिर मेरी डायरी सुनकर हस्ताक्षर किये । डाकका काम पूरा करके थकावट मालूम होने पर बापूजी सवा छः बजे सो गये । सवा सात बजे अुठे ।

बापूजीके आजके पत्रोंमें ये बातें थी: “जो मनुष्य अनीतिको अपनाता है वह संग करने योग्य नहीं है । . . . अुसका कितना भी मूल्य लगाया जाता हो, तो भी हमें अुसकी परवाह नहीं करनी चाहिये । अब तक तो अीश्वरने मेरी लाज रखी है । . . . मनुष्यकी सजाको तो मैं पी गया हूं ।"

बापूजी कितने अीश्वरमय हो गये हैं, यह आजके अुनके पत्रोंसे मालूम होता है ।

. . . के बारेमें कमीशन नियुक्त करनेके संबंधमें बापूजीने अपनी राय प्रगठ की । बापूजी मानते हैं कि जिसकी जड़में सत्य है अुस पर कुछ आरोप लगाया जाने पर पंच द्वारा तटस्थ जांच होनेमें किसीको कोअी आपत्ति होनी ही नहीं चाहिये । बल्कि जांचके लिअे पंच नियुक्त करनेका आग्रह रखना चाहिये । सांचको कभी आंच होती ही नहीं ।

हमने साढे सात बजे कफिलातली छोड़ा और आठ बजकर दस मिनट पर यहां पहुंच गये । गांव बहुत पास ही लगा ।

आज ठंड और बादल है । यहां आकर बापूजीक पैर धोये । फिर अुन्होंने शैलेनभाअीसे 'शिक्षण' पुस्तककी अंतिम बंगला कविता पढ़ी और अुसका अनुवाद किया । किसी भी बंगला जाननेवालेको बापूजी अपना गुरु बना लेते हैं, भले वह बालक हो या बड़ा ।

हवा ज्यादा चलने और बादल होनेके कारण मालिश अन्दर ही की । स्नानके बाद भोजनमें आज खाखरे छोड़ दिये । सिर्फ आठ औंस दूध और जरा-सी खोपरेकी पीसी हुअी गिरी ली ।

दो बजे गरम पानी, शहद और अेक ग्रेपफ्रूट लिया । चार बजे नारियलका पानी पिया । भोजनका यह सारा परिवर्तन बापूजीको खूब काम रहता है, अिसलिअे किया ।

शामको दूधका पानी लिया और गोपीनाथ बारडोलाअी, मौलाना साहब, जवाहरलालजी और जयरामदासजीको पत्र लिखवाये ।

बापूजी मुहम्मद साहबके वचनामृत पढ रहे थे, तब तीनेक मुसलमान भाअी आये । अुन्होंने कहा, "हमें आशीर्वाद दीजिये कि हमारा दिल साफ रहे ।" अिस पर बापूजी बौले ।

"मुहम्मद साहबने कहा है, अिस दुनियामें रहो, मगर अेक मुसाफिरकी तरह या आकर चले जानेवालेकी तरह रहो । मौत किसी भी वक्त आकर अिन्सानको पकड़ लेगी । सबसे अच्छा आदमी वह है जो अधिक समय जीकर अच्छे काम करता है । मनुष्यकी परीक्षा अुसके बोलने या कहनेसे नहीं होती, अुसके कामोंसे होती हैं । यह अुपदेश सिर्फ मुसलमान भाअीबहनोंके लिअे ही नहीं है, परन्तु दुनियाके सब स्त्री-पुरुषोके लिअे है ।

"नोआखालीमें कितनी सुन्दर प्रकृति है ! परन्तु हमारा दिल अिसके जैसा सुन्दर नहीं है । हमारे दिलमें जब तक अछूतपन है, तब तक हमें शान्ति कभी नहीं मिलेगी । क्या अिन्सानके साथ छुआछूत रखना अच्छी बात है ?

"हरिजनोंके प्रति छुआछूत रखना हिन्दुधर्मका सबसे बड़ा कलंक है । ये बेचारे आपका नरक, आपका मैला अुठाते हैं, अिसीलिअे आप अुंन्हे अछूत कहते हैं न ? असली अछूत तो वह है जो दुराचारी हो, जो भाअीको मारे, जो व्यभिचारी हो, जो दगाबाज हो और व्यसनी हो । यह भेद

आप समझिये । ब्रिटिश लोग तो यहांसे चले जायंगे, परन्तु जब तक हम अस्पृश्यताका कलंक नहीं मिटायेंगे तब तक सच्चा स्वराज्य स्थापित नहीं होगा ।"

प्रेमाबहन कटक यहां आअी हैं, अिसअिअे प्रार्थनाके बादका लगभग सारा समय बापूजीने अुनके साथ बातोंमें बिताया ।

अखबार सुने । वैसे कोअी खास बात नही है । साढ़े नौ बजे बाद मैंने बापूजीके पैर धोये और वे सोने चले गये ।

पश्चिम केरवा,
१५-२-१९४७

आज बापूजी तीन बजे प्रार्थनाके समयसे थोडे जल्दी जाग गये । डाक देखी । प्रार्थनाका वक्त हो जाने पर प्रार्थना हुअी । सारी प्रार्थना प्रेमाबहनने कराअी । प्रार्थनाके बाद नियमानुसार बंगलाको पाठ किया और बादका लगभग सारा समय प्रेमाबहनके साथ बातोंमें गया ।

सुशीलाबहन बिदा लेकर दिल्लीके लिअे रवाना हुअी । बाकीका क्रम रोजकी तरह ही चला । साढ़े सात बजे रायपुराके लिअे निकले ।

रायपुरा,
१५-२-१९४७

हम ठीक ८-१० पर यहां पहुंचे । यह थाना है । बापूजीने प्रेमाबहनके साथ रास्तेमें बातें की । अुन्हें दिल्ली तथा सेवाग्राम जानेकी भी सूचना की । . . .

मालिश और स्नानके बाद भोजनमें तीन खाखरे, छः औंस दूध, शाक और 'यीस्ट' लिया । फलोंमें अेक संतरा और अेक ग्रेपफ्रूट लिया । खाते खाते जवाहरलालजी और बारडोलाअीजीको पत्र लिखाये । . . .

आजके पत्र मुझसे खाते खाते लिखवाये, अिसलिअे मैं देरसे नहाअी और देरसे भोजन किया।

बापा (ठक्करबापा) का हेमचरसे लिखा हुआ ८-२-१९४७ का कार्ड आज मिला । पासके गांवका कार्ड सात दिनमें मिला । अैसा यहांका डाक-विभाग है ।

अिस गांवके लोग बापूजीको अभिनंदन-पत्र देना चाहते हैं, जिनमें मुसलमान भाअी भी हैं । लकडीका खुदा हुआ सुन्दर कास्केट बनाया है ।

बापूजीकी यहां कैसी ज्वलंत विजय हो रही है, अिसका वर्णन करना कठिन है । जहां राम शब्द ही नहीं लिया जा सकता था, वहां रास्ते भर यात्राके दौरानमें रामधुन और भजन गाये जाते हैं । मुसलमान भाअी-बहन यह आग्रह करते हैं कि बापूजी अुनके यहां ठहरें, और अभिनंदन-पत्र देनेका या अैसा ही कोअी सार्वजनिक काम करना हो तो अुसमें गांवकी प्रत्येक जातिके लोग मिलकर काम करते हैं । यह कोअी छोटीसी बात नहीं है । बापूजीने भजनकी 'परथम पहेलु मस्तक मुकी' (सबसे पहले मस्तक रखकर) कड़ीको प्रभावशाली ढंगसे आचरणमें अुतारा है । अिसीलिअे अुन्हें अैसी ज्वलंत विजय मिल रही है । फिर भी वे कभी अैसा दावा नहीं करते कि यह सब अुनके द्वारा हुआ है । निष्काम कर्मयोग करनेवाले बापूजीके मुंहसे सदा यही निकलता है कि 'भगवान ही सब कुछ करा रहा है ।'

यह मानपत्र सार्वजनिक सभामें पढनेके लिअे मना करते हुअे बापूजीने कहा, "मानपत्र मुझे अभी ही दे दीजिये । अैसे समयमें मानपत्र कैसे लिया जाय ? प्रेम तो हृदयका होना चाहिये । और हृदयके प्रेमका प्रदर्शन करनेकी जरूरत नहीं होती । मैंने क्या किया है ? जो कुछ आपको अच्छा हुआ लगता है वह तो खुदाकी मेहरबानीसे ही हुआ है । प्रेमको हृदयमें रखकर काम कीजिये । मेरे प्रति आपके दिलमें प्रेम हो तो मेरा काम कीजिये । यही मुझे मानपत्र देनेके बरावर है । न तो लोगोंको डराअिअे और न लोगोंसे डरिये ।"

अुपरकी बात बापूजीने चार पांच आदमियोंसे कही, जिनमें हिन्दू, मुसलमान, जुलाहे वगैरा गांवके प्रतिनिधि थे और वह कास्केट अुसी समय ले लिया । अिन लोगोंकी अिच्छा प्रार्थना-सभामें मानपत्र देनेकी थी ।

यह लकडीका कास्केट मुझे अच्छा लगा । कलाकी दृष्टिसे तो सुन्दर है ही । परन्तु मैंने अुसे अिस अैतिहासिक यात्राके विजय-चिह्न या प्रसादीके रूपमें अपने पास रखनेकी बापूजीसे मांग की । बापूजीने फोरन हंसते हुअे मंजूर किया, "मैं जानता हूं तुम्हें अैसी चीजें संग्रह करना पसन्द है । परन्तु अिससे प्रेरणा लेती रहोगी तो मुझे अच्छा लगेगा ।*

निर्मलदा विजयनगर गये हैं । प्रार्थनामें प्रवचनका अनुवाद बाबाने किया । पहले बापूजीने शैलेनभाअीसे करनेको कहा था । प्रार्थनामें जाते हुअे अेबलगनीके पुत्र सरहुद्दीनभाअी मिले । अुन्होंने बहुत-सी बातें सुनाअी । प्रार्थनाके बाद यहांके अेक मंदिरमें पाकिस्तान क्लब बनाया गया था, अुसे देखने गये । बाबाके साथ अिस सम्बन्धमें बातें हुअी । योग्य कार्रवाअी करनेका स्थानीय भाअियोंने आश्वासन दिया ।

यहां अिमामसाहब बीमार थे, अुन्हें भी देखने गये ।

अिस थानेमें छ. यूनियन हैं । यह चौथा है । आबादी ४५,००० है । अिस यूनियनकी आबादी २२,००० है । अिसमें ९५ फीसदी मुसलमान और ५ प्रतिशत हिन्दू है । हिन्दू जमींदार, व्यापारी या जुलाह है ।

बापूजी साढे नौके बाद बिछीने पर लेटे । कातना बाकी था, अिसलिअे कातते समय रातको अखबार सुने ।

---

* आज वह अैतिहासिक कास्केट सचमुच मेरे पास प्रेरणात्मक प्रसादीके रुपमें सुरक्षित है ।

रायपुरा,

१६-२-१९४७

रोजकी भांति पार्थनाके लिअे अुठे । अिस गांवमें आज दूसरा दिन बिताना है । अिसलिअे सवेरे कोअी विशेष काम नहीं रहा । प्रार्थनाके बाद बापूजीको गरम पानी और शहद देकर कुछ पत्रोंकी नकल की । अपनी डायरी लिखी । और घरके लिअे पत्र लिखा । बहुत दिनोंके बाद घर

पत्र लिख सकी । समय ही नहीं रहता । अब अेक गांवमें दो दिन रहना हो तभी पत्र लिख डालनेका नियम रखनेको बापूजीने कहा । मेरी बड़ी बहनने बापूजीसे शिकायत की थी कि मैंने अुन्हें अेक महीनेसे पत्र नहीं लिखा । अिसलिअे बापूजीने रस पीते समय मुझे डांटा और अपने सामने बैठाकर सबको पत्र लिखनेका आदेश दिया ।

ठीक साढ़े सात बजे घूमने निकले । . . . ने कुछ प्रश्न पुछवाये हैं । अुनके बारेमें बापूजी कहने लगे, "ये प्रश्न मुझीसे पूछने चाहिये थे । भाषा शिथिल है । . . . में कुछ अपलक्षण (दोष) है, जो प्रगट हुअे बिना नही रहते । परन्तु मनुष्यमें जब अेक तरहका घमंडीपन आ जाता है, तब वह अपने अवगुण नहीं देख सकता । गर्व मनुष्य-जातिका दुश्मन है । परन्तु मुझे दुश्मन, शत्रु आदि शब्द ही अच्छे नहीं लगते । असलमें वह गर्वको अथवा अपनी भूलको समझकर अिस कमजोरीको दूर कर दे तो कितना अुंचा चढ़ सकता है ? अिसलिअे अुसके जीवनसे हमें सबक मिलता है । अुसे हम दुश्मन कैसे कह सकते हैं ? मैं तुम्हारी भूलें निकालकर तुम्हे बताअूं तो तुम्हारा दुश्मन थीड़े ही बन जाता हूं ? अिससे तो तुम्हें सीखनेको मिलता है । अिसी तरह यदि हम अपने घमंडीपनको पहचान सकें तो जीवनमें बहुत अूंचे अुठ जायं । परन्तु यह पहचाननेकी शाक्ति सबको स्वयं ही प्रगट करनी होती है । जो व्यकित अन्न खाता है अुस व्यक्तिको अपनी आतों द्वारा शरीरकी शक्तिके अनुमार अुस अन्नको पचाना पडता है । आंतें शुद्ध होगी तो पाचक रस अपने-आप पैदा होंगे— अन्नका खून ही बनेगा । और आंतें कमजोर होगी तो वह व्यक्ति रोगी बनेगा । अिसी तरहका विज्ञान मनुष्यके प्रत्येक कार्य पर लागू होता है ।"

घूमकर लौटने पर बापूजीके पैर धोये । मालिश और स्नानके बाद भोजनमें बापूजीने अेक खाखरा, आठ औंस दूध और शाक लिया । बादमें मदालसा बहन और किशोरलाल काकाको पत्र लिखे । दो बजे गांववालोंके प्रीति-भोजमें गये । वहां बड़ा शोरगुल था । बापूजीने कोअी खास बात नहीं कहा । साढ़े तीन बजेके करीब लौटे । आकर बापूजीने बची हुअी अेक पूनी काती । कातकर सिर और पेडू पर मिट्टी ली । पैर दबाते समय फिर अन्नकी पाचन-क्रिया परसे मनुष्यके नैतिक व्यवहारकी बात कही और नम्रता बढ़ाने पर जोर दिया तथा अिन बातों पर विचारनेको कहा ।

अुठे तब यूनियनके अध्यक्ष मजरुल हक, सैयद अहमद और अख्तर जमान साहब आये। अुन्होंने यह शिकायत की कि हिन्दुओंने झूठे मुकदमे चलाये हैं। बापूजीने कहा, "अगर झूठे केस होंगे तो अुन्हें सजा होगी। नाम-पत्ते वगैराके बिना मैं कैसे विचार कर सकता हूं?"

प्रार्थनाके बाद बिड़लाजीके मुनीम भैरवदासजी आये। बिड़ला कामगारोंकी तरफसे २,५५३ रुपये नोआखाली कष्ट-निवारणके लिअे दे गये।

आजकी प्रार्थनामें बहुतसे मुसलमान भाअी थे। मुख्य मौलवियोंमें श्री मजमलअली चौधरी, फजलुल रहमान, फजलुल हक, काजी अजीजुल्ला रहमान और वलीअुल्ला साहब थे।

अिन सबके मनमें बापूजीके प्रति अच्छा आदर है, अैसा मालूम होता था। मैं प्रार्थनामें कुरानकी जो आयत बोलती हूं अुसके अुच्चारणमें जरासा सुधार करनेको अेक मौलवी साहबने सूचना की। अिसलिअे बापूजीने अुनके पास आध घंटा बैठकर सही अुच्चारण सीख लेनेको कहा। रातको आठ बजे जब बापूजी अखबार सुन रहे थे तब मौलवी साहबने बड़े प्रमसे मुझे सही अुच्चारण सिखाया।

शामको बापूजीने अेक केला और छः औंस दूध लिया। और सोते वक्त गरम पानी, शहद व सोडा लिया।

बापूजीके औसत तार अब १०० या कभी कभी १५० भी हो जाते हैं। सात पूनियोंसे अितने तार निकलते हैं।

पौने दस पर सोनेकी तैयारी की। रोजकी भांति बापूजीके पैर दबाकर, सिरमें तेल मलकर और प्रणाम करके मैं भी फौरन सो गअी। मौनके कारण सब कुछ शान्त है।

देवीपुर,
१७-२-१९४७, सोमवार

रोजकी तरह प्रार्थनाके बाद बापूजीने बंगलाका ककहरा लिखा। गरम पानी पीते हुअे डायरी सुनी और हस्ताक्षर किये। बादमें डाकका काम शुरू हुआ।

अेक पत्रमें बापूजीने लिखा, “पिछले पत्रका जवाब बाकी ही था कि आज दूसरा आ गया । पहले पत्रका अुत्तर तुरंत देने लायक नहीं था । मुझ पर आजकल काम और विचारका खासा भार रहता है । यहांका काम दिन-दिन सरल सही, बल्कि कठिन होता जा रहा है । क्योंकि हमले बढ़ते जा रहे हैं । फिर भी मेरा विश्वास बढ़ रहा है । साथ ही हिम्मत भी । अन्तमें तो करना या मरना ही है न ? बीचमें कुछ है ही नहीं । . . . मेरी तीसरी यात्रा कब शुरू होगी, यह निश्चित नहीं है । हैमचर २५ तारीसको पहुंचना है । . . . आगेका आधार तो मेरी थकावट पर रहेगा । २५ तारीख तककी यात्रा अीश्वर पूरी करा दे तब भी अच्छा ही समझूंगा ।

अेक लड़कीने मेरी तरह बापूजीके साथ रहनेकी माँग की । अुसके अुत्तरमें लिखा: “तुम मेरे पास आना चाहती हो, यह विचार मुझे पसन्द है । परन्तु जब मैं रोज अेक नये गांवकी यात्रा करता हूं तब सभी प्रकारकी परिशानियां और मुसीबतें होतो हैं । गांवोंमें घूमते हैं तब चीजें बहुत नहीं मिलती, जगहकी तंगी रहती है, और पानी तो बहुत ही खराब होता है । अैसी स्थितिमें तुम्हें बुलानेका साहस नहीं होता । अिसलिअे मेरी अिच्छा यह है कि तुम थोड़ा धीरज रखो । प्रभुकी अिच्छा होगी तो अैसा समय आ जायगा जब तुम मेरे साथ रह सकोगी । तुम्हारे लिखे अनुसार तुम्हारा काम अच्छा चल रहा है । तुम वही प्रगति करती रहो । बुननेके काममें खूब कुशल हो जाओ, और कातनेके काममें भी पहला नम्बर रखो तो अमूल्य साबित हो सकती हो । क्योंकि तभी सब जगह तुम्हारी अुपयोगिता सिद्ध होगी । मराठी तो अच्छी सीख हो ली होगी । न सीखी हो तो सीख लेना । नैसर्गिक अुपचारके बारेमें विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर लेना । अुर्दू लिपि और भाषाका बढ़िया ज्ञान प्राप्त कर लो । संस्कृत भी सीख लो । यह सब विनोदमें ही कर लेना चाहिये । अैसा करोगी तो समय कहा चला जाता है, अिसका पता भी नहीं चलेगा । पत्रों द्वारा मुझसे मिलती

रहना । . . . का बुखार अभी मिटा नहीं, यह अच्छा नही लगता । तुम नैसर्गिक अुपचारका अच्छा अध्ययन कर लो: यह सरल है । फिर तो तुम ही . . . का बुखार मिठा सकती हो । अुसके खानेकी

संभाल रखनी चाहिये । मैं मानता हूं कि कटिस्नान, घर्षण-स्नान और मिट्टीकी पट्टिया देनी चाहिये । अुसका मस्तिष्क शान्त होना चाहिये । और राम-रटन करना चाहिये । . . .”

अेक और पत्रमें : “यहांके डाक-विभागका काम ढीला है । डाककी दृष्टिसे मैं बहुत दूर हूं।”

आजके विविध पत्रोंसे बापूजीकी मानसिक दशाका और यहांकी स्थितिका खयाल होता है ।

६-५० तक काम किया । बादमें पंद्रह मिनट आराम किया । मैंने सामान बांधा । कुछ सामान आगे भेज दिया । ७-३५ को रोजेके समय यात्रा आरंभ हुअी । ८-५५ को रामपूरासे यहां पहुंचे ।

यहांका स्वागत भव्य था । लोगोंने बड़े प्रेम और श्रद्धासे तैयारियां की थी । ध्वज, तोरण, पताका वगैरासे सजावट की गअी थी । यह सब बापूजीकी हिम्मत पर ही हुआ ।

बापूजीका आज मौनवार है । अिसलिअे कुछ गंभीर विचारोंमें लीन मालूम होते हैं ।

पैर धोकर शैलेनभाअीके पास थोडासा बंगलाका पाठ पढा । अितनेमें मैंने मालिशकी तैयारी की । मालिश और स्नानके बाद भोजनमें शाक छानकार अुसमें पिसे हुअे पांच बादाम और पांच काजू डाले । गरम दूधमें अेक नीबू निचोया और वह फटा हुआ दूध आठ औंस लिया । भोजनके बाद अेक घंटा आराम किया । मैंने पैरोमें घी मलकर बहुतरे कपडे धोने थे सी धोये । बापूजीका सूत दुबटा किया । कागज जमाये । बहनोंके पास गअी । भोजन किया । अितनेमें बापूजी अुठे और अेक नारियलका पानी पिया । बादमें काता । कातते समय मैंने पत्र सुनाये । तीन बजे मिट्टी ली । बापूजी आध घंटे सोये । शामको ग्रेपफ्रूट और आठ औंस दूध लिया ।

दूध पीते पीते वक्त हो जानेसे बापूजीका मौन खुला । सुबहकी अितनी आकर्षक सजावटकी तरफ दिनभर मेरा ध्यान नहीं गया । अिमलिअे बापूजीने मुझसे कहा, “तुम्हें यह जानना चाहिये कि ये सब चीजें अिन लोगोंने कहांसे जुटाअी और यहांके मुख्य कार्यकर्ता कोन है, अित्यादि ।

अब मेरी समझमें आया कि आज बापूजी जरा गंभीर क्यों थे । मैं सारी बात समझ गअी । मैं तुरंत दौडी और मैंने सारी जांच की । अिस गांवमें ती सौ हिन्दू और पंद्रह सो मूसलमान हैं । हिन्दुओंमें ब्राह्मण, कायस्थ और शुद्र हैं । सजावट लाल-पीले कागजी, तेल और घीके दीयों, और जरी तथा पताकाओंसे की गअी थी । देहातमें तो अैसी वस्तुअें हरगिज नहीं मिलती । अिसलिअे कार्यकर्ताको बुलाकर बापूजीने पूछा, "आप ये सब चीजें कहांसे लाये ?"

अुस भाअीने कहा, "बापू, आपके चरण हमारे यहां कब पड़ते ! आप आनेवाले थे, अिसलिअे हम सबने आठ आठ आने देकर तीन सौ रुपये अिकट्ठे किये थे । अुसीमें से हमने यह खर्च किया है ।"

अिससे बापूजी बडे दुःखी हुअे - "ये फूल और जाहोजलाली तो क्षण भरमें मुरझा जायगी । अिससे मुझे यही लगता है कि आप सब मुझे धोखा दे रहे हैं । मेरी हिम्मत पर यह ठाटवाट रचकर साम्प्रदायिक भावनाको आप अधिक अुत्तेजित कर रहे हैं । आपको पता है कि मैं अिस समय अग्निकी ज्वालाओंमें जल रहा हूं । अितनी अधिक फूलमालाअें सजाअी गअी है, अिनके बजाय सूतके हार सजाये जाते तो मुझे अितना न खटकता । क्योंकि वे हार शोभा बढाते हैं और अुनसे कपड़ा भी बनता है । अिसलिअे कुछ भी बेकार नहीं जाता । मेरे खयालसे अिस गांवमें रुपया बहुत है । नहीं तो अिस कठिन समयमें आपको अैसी सजावट करनेकी बात न सूझती । आपके मनमें मेरे लिअे जो प्रेम है, अुसे साबित करनेको यदि यह सारी सजावट की हो तो यह बिलकुल अनुचित है । अिससे प्रेम जरा भी प्रगट नही होता । आपको मेरे प्रति प्रेम हो तो मेरे कहने पर अमल करें । अुतना मेरे लिअे काफी है । अितने कत्लेआमके बाद अिन फूलों पर रुपया खर्च करना आपको कैसे सूझा होगा, यही मैं समझ नहीं सकता । और फिर आप तो कांग्रेसके कार्यकर्ता हैं, सार्वजनिक कार्यकर्ता हैं । आप कहते हैं कि आपने मेरी पुस्तकें पढ़ी हैं । आप अेम. अे. तक पढे हैं । फिर अिस सजावटमें विलायती और देशी मिलका कपडा, रेशम और रिबन वगैरा काममें लिये गये हैं । यह सब मेरी दृष्टिसे दु:खद है, अितना ही कहना चाहता हूं ।

“आपके अुदाहरण परसे मैं अपने समस्त साथी कार्यकर्ताओंका विचार करता हूं, तो शंका अुठने लगती है कि जो लोग अेक दिन देशसेवकके रूपमें जनताके सेवक माने जाते थे, वे ही कार्यकर्ता कोअी पद या सत्ता मिलने पर अिसी तरह तो फूलहार पहनाने या पहननेके लालचमें नहीं फस जायंगे । मैं देखता हूं कि आज भी मैं छाती ठोक कर यह नहीं कह सकता कि मेरे कार्यकर्ताओंमें से किसीकी भी परीक्षा ली जाय तो वह सादगीका जीवन बितानेवाला ही मिलेगा, कितने ही मोटर-बंगले हो तो भी वह अपना ध्येय नहीं छोड़ेगा । आज यह बात नहीं है । ठीक है, आजकी अिस घटनाने मुझे अधिक जाग्रत बना दिया है । अिसमें मैं आपका दोष नहीं देखता । आप तो जैसे थे वैसे दिखाअी दिये । परन्तु अिससे अीश्वर मुझे अिस बातका भान करा रहा है कि मैं कहां हूं । पता नहीं अभी तकदीरमें और क्या क्या देखना लिखा है ?”

बापूजी अपने हृदयकी तीव्र व्यथाको धाराप्रवाह रुपमें प्रकट कर रहे थे । बेचारे कार्यकर्ता भाअी शरमिन्दा हो गये । अुन्हें क्या पता था कि सजावटका परिणाम यह आवेगा ? बापूजीने हारो और पताकाओमें जितना धागा काममें लिया गया था अुसका गोला बनानेकी सूचना की । बीस छोटी-छोटी आटिया हुअी । प्रार्थनाके बाद रातको आटिया लेकर वे भाअी आये । बापूने मुझसे कहा, "तुमने देख लिया ? अिन बीस आटियोंसे कितने कपड़ोंको जोड़ लग सकते हैं ? यह सब देखना तुम्हें सिखाना चाहता हूं । तुम जहां देखो कि अमुक काम मेरे स्वभावके विरुद्ध हुआ है, वहां तुम्हें जाग्रत होकर पूछताछ कर लेनी चाहिये । वैसे निर्मलबाबू करते तो हैं । तुम्हें अपने भीतर व्यावहारिक दृष्टि पैदा करनी चाहिये । अीश्वर करेगा तो वह भी हो जायगी । परन्तु तुम अितना जान लो कि अिस समय तुम्हें जिस ढंगसे मैं शिक्षा दे रहा हूं अुस ढंगसे मैंने किसीको नहीं दी है । प्रभावततीको जरूर कुछ दी थी । परन्तु अिस तरह बिलकुल अकेलीको नही दी । आगाखां महलमें तुम्हें अैसे पाठ नहीं मिलते थे । वहां तो बा लाड लड़ाती थी न ? परन्तु वहां भी कुछ तालीम तो मिली ही है । अुसमें ये सब पाठ पूरक बन रहे हैं ।”

रातको जब बापू लेटे हुअे थे और मैं अुनके पैर दबा रही थी तब अुनहोंने मुझसे यह बात कही ।

अैसा ही दूसरा प्रसंग कहती हूं, जिससे मुझे पाठ मिला ।

शामसे मेरा पेट बहुत दुःख रहा था, अिसलिअे रातको गरम पानीकी सेक करनेको बापूजीने कहा था । परन्तु मैं गरम पानी करना भूल गअी ।

सोते वक्त मुझे पूछा, क्यों सेक की थी ? मैंने अिनकार किया और पानी गरम करना रह गया, वगैरा बातें कही ! बापूजीको यह अच्छा न लगा । वे बोले, "जो आदमी अपने काममें आलस्य करे वह कभी न कभी दूसरेके काममें भी आलस्य करेगा । तुम्हारा शरीर तुम्हारा नहीं, अीश्वरका है । जैसे किसी मकान-मालिकका मकान हम किराये पर लेते हैं तो अुसे साफ रखते हैं, किसी समय मकानको नुकसान पहुंचा हो तो अुसकी मरम्मत कराते है और अैसा करनेसे ही मकानकी सुघरता बनी रहती है तथा रहनेवालेकी प्रतिष्ठाकी रक्षा होती है, वैसे ही हमारा शरीर अीश्वररूपी गृहस्वामीका है । अिसमें कभी कोअी टूट-फूट हो तो अुसकी मरम्मत करना अपना फर्ज समझकर अूसे अदा करना चाहिये । नहीं तो अीश्वर नाराज होगा ही । अीश्वरका फरमान आयेगा तथ अिस शरीररूपी घरको हमें छोड़ना पडेगा । परन्तु यदि अिस शरीरको हमने संभालकर रखा होगा और अिसके द्वारा लोगोंकी सेवा की होगी, तो ही अिसका जीना सार्थक होगा । तो ही अीश्वर प्रसन्न होगा । वर्ना अिस पृथ्वी पर जो असंख्य कीड़े-मकोडे रेगते हैं अुन्हींमें से हम भी माने जायंगे । सोना, बैठना, खाना, पीना सब नियमित हो तो बीमार पडनेकी नौबत ही न आये । परन्तु कभी शरीरके कलपुर्जे चलते चलते अटक जाय, तो वह अीश्वररुपी महान गृहस्वामीका है, अैसा मान कर अुसकी सेवा करनो ही चाहिये ।"

फिर दस बजे बाद गरम पानी कर देनेको कहा । अिसलिअे मुझे सोनेमें देर हो गअी ।

वैसे तो सब कुछ नियमित ढंगसे हो रहा है । दिनभर मौन रहा, अिसलिअे वातावरण शान्त था। परन्तु मौनके बाद हम सबको समझानेमें बापूजीको बड़ा श्रम हुआ । हमारा मुकाम राजकुमारश्रीके यहां है, जो कायस्थ है और खेती करते हैं । बस्तीमें ३०० हिन्दु और १,५०० मुसलमान हैं ।

आजकी डायरीमें बापूजीने हस्ताक्षर करके अिस प्रकार लिखा है :

आलूनिया,

१८-२-१९४७

आज मुझे क्रोध आ गया। यह है मेरी अनासक्ति। अिससे अपने आप पर अरूचि पैदा हुअी। अहिंसाकी शायद सच्ची परीक्षा होगी, यह भी विचारणीय मालूम होता है। अीश्वरकी महान कृपा है कि वह मुझे निभा लेता है। तुम पूरी तरह जाग्रत हो जाओ। — बापू

आलूनिया,

१८-२-१९४७, मंगलवार

रोजकी भांति प्रार्थनाके समय अुठे। बादमें गरम पानी और शहद लेते हुअे मेरी डायरी सुनकर हस्ताक्षर किये। बापूजीने अपना जो असह्य दुःख कल प्रग्रट किया, अुसे मैंने नहीं देखा था। अुन्होंने मुझसे पृछा, "तुम्हारी डायरीमें मैंने जो लिखा है वह तुसने देखा ?"

मैंने कहा : "मैं आपकी डायरी देकर गरम पानीका गिलास धोने चली गअी थी, अिसलिअे मैंने नहीं देखा।" बापूजी बोले, "कोअी भी चीज हो, यदि हमने अुसे दूसरेको सौंपी हो और वह हमारे लिअे ही हो तो हमें फिरसे देख लेना चाहिये। तुम जानती हो कि मैं अेक कार्ड भी लिखता हूं तो अुसे दुबारा पढे बिना डाकमें नहीं जाने देता। मेरी यह आदत पहलसे ही है।

मैंने अुनकी नोंध देखी। बापूजीके अुद्वेगका पार नहीं था।

फिर (बंगालके भूतपूर्व मुख्यमंत्री) प्रफुल्लबाबूको और मेरे बारेमें मेरे पिताजीको पत्र लिखे। प्रफुल्लबाबूने बापुजीको अभय आश्रममें जानेके बारेमें लिखा था। अुसके अुत्तरमें बापूजीने लिखा, "यदि कुमिल्ला जाअुंगा तो अभय आश्रम जरूर जाअुंगा।... मेरी यात्रा जारी है। अैसा लग रहा है कि हैमचर पहुंच कर मुझे थोडा आराम लेना ही पडेगा।"

साढे सात बजे हमने देवीपुर छोडा । नो बीजकर पांच मिनट पर हम यहां पहुंचे । पैर धोते समय बापूजीने बंगलाका पाठ समझाया । बादमें मालिश, स्नानादि । भोजनमें दो खाखरे, शाक और खोपरेकी थोडी छूछ ली । दो ग्रेपफ्रूट लिये ।

आज शाक बड़ा विचित्र था । भिंडी, पत्ती, करेले और थोड़ीसी लोकी थी । बापूजीने सबको अेकसाथ अुबाल डालनेको कहा। अुसमें भिंडी डाल देनेसे शाक खूब चिकना हो गया । और अुसी शाकमें खाते समय दूध डलवाया । मिश्रणको चम्मचसे हिलाने लगे । यह देखकर मुझे लग रहा था कि बापूजी अिसे गलेमें कैसे अुतारेंगे ? मैंने हंसते-हंसते अुनसे अपने मनकी बात कही । बापूजी बोले, "अरे, भूख हो तो सब कुछ गलेमें अुतर जाता है ।"

मेरे लिअे अपने हाथसे अिसी शाकमें से दो चम्मच अलग रखा और मुझसे खानेको कहा । (बापूजी बिलकुल अुबला हुआ शाक मिर्च-मसाला डाले बिना स्थायी रुपमें वर्षोंसे लेते रहे हैं । और वह ठीक लगता है । परन्तु अैसा पचमेल शाक भी, जिसमें अुपरसे दूध मिलाया गया था, बापूजी पी गये ।) मुझे जो शाक खानेको दिया अुसे खाना जरूरी था । लेकिन अुसे खानेमें मुझे कोअी दवा खानेसे भी ज्यादा कठिनाअी हुअी ।

खाते समय 'हिन्दू' पत्रके प्रतिनिधि रंगस्वामीजीसे कुछ पत्र लिखवाये ।

दोपहरको आराम लेते समय बंगलाका पाठ किया । दो बजे सुचेता बहन आअी । खाकसार भाअी भी मिलने आये थे । अुन्होंने बापूजीसे विनती की कि "आप अिस आशयका पत्र लिखें कि अंतरिम सरकार खाकसारोको छोड़ दे ।"

बापूजी बोले, " अिस तरह जबानी बात मैं नहीं जानता । आप अपनी सारी सामग्री मेरे पास भेजे तो मैं अुस पर विचार कर सकता हूं ।"

आज बापूजी कुछ ज्यादा थके हुअे लगते हैं । कह रहे थे, "आंखें जला करती हैं ।" आंखों पर मिट्टीकी पट्टी रखी । हैमचर जाकर आराम लेनेवाले हैं । मुझसे कहने लगे, "अब अधिक दिन कहां है ? . . . भले ही मेरी मृत्यु तक . . . न समझे । फिर भी मुझ पर अुसके शोक या मोहकी

भावनाका असर जरा भी क्यों हो? परन्तु मैंने तुमसे कहा न कि मेरी अनासक्ति बहुत थोड़ी है; यह मैंने परसो ही लिखा है । यदि मैं 'स्थितप्रज्ञ' हो जाअूं और अपना काम जारी रखूं तो कुछ भी हो सब मेरे लिअे अेकसा बन जाय । 'सुख दुख दोनों समकर जाने ।' हां, अुस ओर जानेका मेरा प्रयत्न चलता है । मुझे आशा तथा दृढ़ विश्वास है कि जितने दिन अिस प्रयत्नमें लगे अुतने अिस दिशाकी सफलता प्राप्त करनेमें नही लगेंगे । अिसीलिअे तो मैंने . . . की साहसपूर्वक छोड़नेकी अिजाजत दे दी । अिसलिअे यदि मेरे हृदयमें रामनाम अंकित हो जायगा तो मैं खुशीसे नाचूंगा । तुम मेरे प्रत्येक कार्यमें जितनी सजग रहोगी अुतनी ही तुम्हारी मदद मुझे मिलेगी और अुतनी ही मेरी शक्ति बढेगी । वैसे तुमने बहुत सीखा है ।"

दोपहरके बाद बिहारसे अेक भाअी आये है । वे खास तौर पर रामायण सुनाने आये हैं । वे यहां तक आ गये हैं, अिसलिअे अुन्हें संतोष देनेके लिअे बापूजीने रामायण सुनी और कहा, "आप कल बिहार चले जाअिये । केवल रामायणके स्वर सुननेके लिअे आपको ठहराना मुझे अच्छा नहीं लगता । वे स्वर भी यह लडकी अच्छी तरह सुना सकती है । परन्तु अिसका स्वर वैसा नहीं है जैसा मैंने बहुत वर्षों पहले सुना था । फिर, बिहारकी स्थिति तो अिस समय सेवाके अेक क्षेत्रके समान हो गअी है । वहां रहकर, रामायणके प्रचारसे यदि ग्रामीणोको लाभ पहुंचाया जा सके तो पहुंचाना चाहिये । नहीं तो यह समय सेवाकार्यमें जुट जानेका है । यदि आपको केवल स्वर सुननेके लिअे ही यहां रोकू तो यह मेरा निरा मोह और स्वार्थ होगा और अुससे होनेवाला पाप आपको और मुझे दोनोंको लगेगा । अत अिस पापसे मैं भी बचूं और आप भी बचें । यह लड़की जैसा भी गायेगी अुसीसे मैं संतोष मानूगा । अिसका कष्ट अच्छा है और यह अच्छा गा सकती है । नया स्वर तुंरत ग्रहण कर लेगी । अिसलिअे आज दिन भरमें यदि अिसे समय मिले तो सिखा दीजिये । परन्तु सिखानेके लिअे ही खास तौर पर न ठहरिये ।"

बापूजी जब मुलाकातियोंके साथ थे तब मैंने वह स्वर सीख लिया ।

शामको प्रार्थनाके बाद हम डाकरिया नदीके अुस पार रहनेवाले अेक बहुत बूढ़े पुरुषसे मिलने गये । नावमें बैठे । दोनों किनारे पानीसे भरपूर थे । दोनों किनारों पर आदमी भी बहुत थे ।

(यह वृद्ध बापूजीके दर्शनोंकी अिच्छा रखते थे, लेकिन आनेमें असमर्थ थे । अिसलिअे बापूजीसे अुनके पास जानेकी प्रार्थना की गअी । साधारण आदमी थे । कोअी बडे नेता या प्रमुख व्यक्ति नही थे ।)

घनी हरियालीके बीचसे सुन्दर नदी बह रही थी । आकाश स्वच्छ था । न बहुत धूप थी, न बहुत ठंड थी । नावमें पांच सात मिनटका रास्ता था । अिन पांच सात मिनटोमें बापूजी मेरी गोदमें सिर रखकर आंखें बन्द करके लेट गये और अुन्होनें अेक नींद ले ली । अुपर आकाश, नीचे पानी । दोनों किनारों पर मानव-समूहके साथ ही प्रकृतिके हरेहरे पेड-पौधोंकी भी भीड़ थी । मन्द मन्द हवा चल रही थी । अिस कुदरती दृश्यके बीच संसारका यह महापुरुष मेरी गोदमें सो रहा था और नाववाला नाव चला रहा था । मेरा हाथ बापूजीके कपाल पर था । मेरे जीवनके ये क्षण धन्य हो गये ।

अितने दिनोंकी यात्रामें आजका प्रसंग अनमोल अवसर बनकर रह गया ।

घुमकर लौटने पर अेक कार्यकर्त्री बहनसे अुसके सवालके जवाबमें बापूने कहा, “कार्यकर्ताओंको देहातमें जाकर लोगोंको अीश्वर पर भरोसा रखना और हिम्मत रखना सिखाना चाहिये । कार्यकर्ताओंके चले जानेके बाद गांववालोंको अैसा लगे कि अब हमारा कौन वेली है, तो यह ठीक नहीं है । गांववालोंमें अैसी भावना कभी भी पैदा न होने दी जाय । काम करनेवाले सबी भाअी-बहनोंको देहातके स्त्री-पुरषोंको साफ-साफ बता देना चाहिये कि हम लोग यहां स्थायी रूपसे नही रहेंगे, कामके लिये ही आये हैं; अिसलिअे आप सबको अपने पर आधार रखना सीखना चाहिये । अपने अपने धर्म और शीलके खातिर मरनेकी कला आपको हस्तगत करनी चाहिये ।”

कुछ दूसरी बातोंके सिलसिलेमें बापूजीने कहा, “जब मैंने अस्पृश्यताका आन्दोलन छेड़ा था तब भी अैसी ही मगर कुछ भिन्न स्थिति थी । अर्थात् समाज और साथियोंको वह पसन्द नही था, परन्तु मेरी आत्माको पमन्द था । आत्माकी आवाज सुनकर मैंने बहुतेरी बातें की हैं । और अुनमें अेक हद तक मैंने सफलता भी प्राप्त की है । यद्यपि सफलता-असफलताकी चिन्ता

करनेका हमें अधिकार नहीं है । अिसकी चिन्ता करनेका अीश्वरके सिवा किसीको भी अधिकार नहीं है । चिन्ता करना भी अेक प्रकारसे अभिमान करनेके समान है और वह मिथ्या अभिमान है।"

बादमें बापूजीके पास नृपेनदा आये । अिस समय रातके आठ बजे है । मैंने आजकी डायरी लिखी । अभी तक बापूजीने आजके अखबार नहीं देखे हैं । अखबार सुनते समय आंखों पर मिट्टीकी पट्टी रखनेवाले हैं । मुझे अभी बिस्तर करना है, कपडोकी तह करनी है और थोड़ासा पैकिंग करना है ।

यह मकान राजकुमार दासका है । गांवमें कुछ ६४६ घर है । अुनमें ४,६२१ मुसलमान हैं । हिन्दू केवल १,००० हैं । आज बापूजीके ९० तार हुअे ।

रातको बापूजीने मिट्टी लेकर अखबार सुने । थोड़ासा लिखवाया । बादमें सोये । दस बज गये । मैंने बापूजीके सिरमें तेल मला, पैर दबाये, और अुन्हें प्रणाम करके तुरन्त सो गअी ।

विरामपुर,
१९-२-१९४७

आज महाशिवरात्रि है । पु. बाकी श्राद्धतिथि होनेके कारण मैंने बापूजीसे पुछा, पु. बाका जिस समय अवसान हुआ अुस समय अर्थात् शामको सात पैंतीस पर हम गीतापाठ शुरू करे तो कैसा रहे ? बापूजी कहने लगे, "तुम्हारी अिच्छा सात पैंतीस पर गीता-पारायण करनेकी हो तो मुझे कोअी आपत्ति नही । आज भोजन तो नहीं किया जा सकता । मुझे कहना चाहिये कि बा न होती तो मैं अितना अूंचा नहीं अुठा होता । बाने मुझे खूब अच्छी तरह पहचान लिया था । और बाका परिचय मेरे सिवा दूसरा कौन अधिक दे सकता है ? वह मेरे प्रति कितनी वफादार थी ? और अंतिम समय जब मैं सोच रहा था कि बा किसकी गोदमें जायगी, अुस समय तुम तो थी ही । अन्तमें अुसने मुझीको बुलाया और मेरी गोदमें आखिरी सांस ली । अैसी थी बा । आज अिस यज्ञमें अुसे याद करके और अुसके सद्गुणोंकी स्तुति करके अुन गुणोको हम अपनायें । यही बाका

सच्चा श्राद्ध है । मेरी सेवा अुसने निर्दोष भावसे की थी । मेरे प्रत्येक कार्यमें, शादी हुअी तबसे लेकर अन्त तक, तन, मन और धनसे बाने लगातार मेरी अतुलनीय सेवा की ।"

सवेरे प्रार्थनाके ममय बापूजीने मुझे अुठाया, तब दातुन करते-करते पु. कस्तूरबाके लिअे बापूजीने ये अुद्गार प्रकट किये ।

आज कदाचित् हिन्दुस्तानमें अनेक स्थानों पर पू. बाको श्रद्धांजलि दी जायगी । परन्तु यह अंजलि बापूजीने मुझे प्रातः चार बजे ही सुनाअी । मैंने बापूजीके ही मुखसे अितने भावनामय शब्द सुननेके लिअे अपनेको भाग्यशालिनी माना ।

सवेरेकी प्रार्थना रोजकी तरह आलूनियामें हुअी । प्रार्थनाके बाद देवभाअीके साथ बातें की । बादमें गरम पानी और शहद लिया । आध घंटे बाद अनन्नासका रस लिया । कुछ पत्रों पर हस्ताक्षर किये । दस मिनट आराम किया । सात पचीस पर रोजकी भांति यात्रा आरंभ हुअी । यहां पहुंचनेमें ७२ मिनट लगे । रास्तेभर भजन-मंडलीने सुन्दर भजन गाये । अिसलिअे मेरे हिस्सेमें गानेका काम थोडा ही था । मैंने आज अेक ही भजन गाया । रास्तेभर भजन-मंडली ही गाती रही । आकर बापूजीके पैर धोये । वे बंगलाका पाठ करते रहे, अितनेमें मैंने मालिशके लिअे तम्बू वगैरा तैयार कर लिया ।

आज बापूजी खूब थक गये थे । मालिशमें काफी सोये । स्नानके बाद बापूजी, जवाहरलालजी, क्राअिट हान्स, कुलकर्णीजी, रुकमणीदेवी, हरिसिंह घोष और अब्दुल्ला साहबको पत्र लिखयाये और हस्ताक्षर किये ।

आर्यनायकम्जी आये है, अिसलिअे अुनके साथ बहुत बातें की । साढे बारह बजे बापूजी आराम करनेके लिये लेटे । मैंने पैरोंमें घी मलकर अपना काम किया । सूत दुबटा करना, कपडोके पैबन्द लगाना, डायरी लिखना वगैरा । आर्यनायकम्जीके साथ अमलप्रभाबहन और पुष्पेन्दुबाबू भी आये हैं । अमियबाबू (अमिय चक्रवर्ती) भी हैं । अिसलिअे आजका दिन भरा भरा लगता है ।

अुठकर नारियलका पानी लिया और डाक देखी । दो बजे कातते समय आर्यनायकम्जीके साथ बातें की । बापूजी कातते-कातते बातें करते रहे । सिरके बाल बढ़ गये थे, अिसलिअे मुझसे बोले, "मशीनसे काट डालो ।" मैंने बाल काटे । अिस प्रकार बापूके पास समयकी बड़ी तंगी रहती है । आर्यनायकम्जीके साथ बापूजीने मेरे विषयमें बहुतसी बातें की । ये भी खुश हुअे । तीन बजे मिट्टी लेते समय भी अुन्हींकी मंडली थी । नअी तालीमके बारेमें चर्चा थी ।

सिलहटसे बहुत संतरे आये हैं । पू. बाकी श्राद्ध-तिथिके निमित्तसे बच्चोंको बांट दिये । बापूजी बोले, "तुम जानती हो न, बा खाकर प्रसन्न नहीं होती थी, परन्तु खिलाकर प्रसन्न होती थी।"

शामको दूध और आठ खजूर लिये। बादमें प्रार्थनामें गये ।

प्रार्थना-सभामें अेक यह सवाल पूछा गया कि "अमुक स्थापित स्वार्थ रखनेवाले लोग किसी हिन्दू कार्यकर्ताके विरुद्ध जान-बूझकर झूठी बातें फैलावें और अुसकी निन्दा करें तो क्या किया जाय ?"

बापूजी - "मैं तो यह कहूंगा कि अहिंसाकी दृष्टिसे देखते हुअे मनुष्यके कार्योंसे अुसका जो परिचय मिले वही सच्चा परिचय है । कभी कोअी गलतफहमी हो गअी हो तो व्यर्थकी बातोंसे या अुत्तेजनासे अुसे दूर करनेकी झंझटमें नहीं पड़ना चाहिये । परन्तु कुछ अवसर अैसे भी आते हैं जब बोलकर सफाअी देना धर्म हो जाता है और चुप्पी साधनेसे हम लगभग असत्य ठहरते हैं । अिसलिअे ठीक रास्ता यह है कि कार्यके साथ वाणीसे स्पष्टीकरण करनेके अवसर कौनसे होते हैं, अिसका विवेक रखकर काम किया जाय । और अैसे प्रसंगों पर अच्छी भाषामें अपने बारेमें अवश्य स्पष्टीकरण किया जाय ।"

ठीक सात पैंतीस पर गीता-पारायण शुरू किया । मेरे पास पु. बाका अेक फोटो था । अुसे सामने रखकर फूलमाला अर्पण करके मैंने प्रणाम किया और पारायण आरंभ किया । प्रार्थनामें आर्यनायकम्जी के साथ आअी हुअी महिलाअें और दूसरे मेहमान तथा स्थानीय लोग शरीक हुअे

। मुसलमान भाअी भी थे । पारायण तो मैंने अकेले ही किया । दूसरे सब सुन रहे थे । सवा घंटा लगा । बहुत शांति और गाभीर्य था । पारायण पूरा होते ही बापूजीने मेरी बहनको लिखा :

> "अिस दिन और अिस समय सात पैंतीस पर बाने देह छोडी थी । पारायणके समय नये आये हुअे अतिथि मौजूद थे । आज अिस यज्ञमें बाके अवसानका दृश्य आंखोंमें तैरने लगा । कारण, मनुंडी भी थी । वह तेज गतिसे गीता-पारायण कर सकी और वह भी अकेले । आगाखां महलमें भी तो अकेले ही थे न ? अिसलिअे जब मैं छठे अध्यायके बाद लेट गया और नींदका अेक झोका आ गया, तब कुछ अैसा आभास हुआ मानों बाका सिर मेरी गोदमें रखा है ।" *

मैंने अुपवास रखा था । अिसलिअे प्रार्थनाके बाद फलाहार किया और दूसरा काम किया । बापूजी आज पौने ग्यारह बजे तक मेहमानोंके साथ बातें करते रहे ।

यह मकान तारिणीचरणदास माछीका है । यहां १०० हिन्दू लौट आये हैं । ६,००० मुसलमानोंकी आबादी है और ३५० हिन्दुओंकी ।

---

* छः अध्याय तक बापूजी अच्छी तरह बैठे- बैठे आंखें बंद करके सुन रहे थे । परन्तु बादमें थक जानेसे लेट गये थे ।

बीशकाथली,
२०-२-१९४७

आज रातमें असह्य ठंद थी । रातके बारह बजे बापूजीने मुझे जगाया । मैंने अुन्हें ओढाया और दबाकर गरम किया । अुनके पैर खूब ठंडे हो गये थे । झोपड़ेमें तेज हवा सनसन करती बहती रहती थी । परंतु अुसे रोकनेका कोअी अुपाय नहीं था । आजकल बापूजी अैसा कष्ट भोग रहे हैं ।

रातको साढ़े बारह बजे मुझसे कहा, "मेरे पैरोंके तलुअे बहुत ठंडे हो गये हैं ।" मैंने देखा कि हाथ और पैर अेकदम ठंडे पड़ गये हैं । अैसा लगा कि बापूजी कांप रहे हैं । घासलेट बचानेको

रातमें बापूजी लालटेन भी बुझवा देते हैं । अिसलिअे अमावस्या जैसी घोर अंधेरी रात थी । चारों ओर सन्नाटा छाया था । नारियल और सुपारीके वृक्षोंकी साय-सायकी अवाज बड़ी भयानक लग रही थी । वे ही अकेले अिसके साक्षी थे कि लोगोंमें मानवता पैदा करनेके लिअे यह तपस्वी कैसा कठोर तप कर रहा है । छप्परके छेदोंमें से घुसनेवाली हवा और ठंडको रोकूं भी कैसे ? अिस कोटरीमें मैं और बापूजी दो ही थे । मनमें कितने ही विचार आ गये । सोचा साथमें गरम पानीकी थैली तो है, परन्तु गरम पानी कहां किया जाय ? किसीको अुठाना तो संभव ही नहीं था । बापूजीका डर भी था । जो लालटेन नहीं जलाने देते वे प्राअिमसके लिअे तो घासलेट देने हो क्यों लगे ? अिसलिअे सभी विचार व्यर्थ थे । जितना ओढनेका था सब मैंने बापूजीको ओढ़ा दिया । सिर पर भी ओढा दिया और मेरे हाथोंमें जितना जोर था अुतना अुनका शरीर दबाया । तब कहीं आधे घंटेमें बापूजीको कुछ राहत मिली और वे सो गये ।

प्रार्थनाके बाद नित्यकी भांति सब कुछ हुआ । रातको आज थर्मासमें गरम पानी भर कर रखनेके लिअे थर्मास मंगानेकी अिच्छा हुअी और बहुत डरते-डरते बापूजीकी स्वीकृति ली । बापूजीने कहा, “काजीरखिलमें अतिरिक्त थर्मास हो और अुन लोगोंके अुपयोगमें न आता हो तो भेज दें । नया तो खरीदा ही नहीं जा सकता । रुपया कहां है ?”

आज बंगलाका ककहरा लिखनेको अेके कापीमें खाने बनाये । (हमारे यहां शुरूमें बच्चोंको बारहखड़ी सिखानेको जैसे खाने बनाये जाते हैं ठीक अुसी तरहके ।) मुझे यह देखकर बड़ी हंसी आअी । मैंने कहा, आपने अैसी लकीरें खीची हैं मानों बालवर्गमें पढ़ते हो ।

बापूजी कहने लगे, “सच है । मनुष्य जब तक जिये तब तक विद्यार्थी है । ककहरा पक्का करने और अक्षर अच्छे बनानेका यह सुन्दर ढंग है । मुझे तो अपने शिक्षक अिसी तरह अंक और ककहरा आदि सिखाते थे । यह तरीका बहुत अच्छा है ।”

बादमें रस पिया । बंगलाकी बालपोथी पढ़ते-पढ़ते दस मिनट सो लिये । सात पंद्रह पर अुठे । सात पचीसको हमने विरामपुर छोडा । आठ पचीस पर हम यहां पहुंचे । यहां आनेमें पूरा

अेक घंटा लग गया । रोजकी भांति यहां आकर बंगलाका पाठ किया । मालिशमें बापूजी पौन घंटे सोये । भोजनमें तीन खाखरे, शाक, दस औंस दूध और तीन संतरे लिये ।

दोपहरको आराम करके अेक नारियलका पानी पिया । शामको दूध और संतरेका रस मिलाकर दिया । दोपहरको सेवाग्राम आश्रमकी कुछ डाक आअी । यह मैंने पढ़कर सुनाअी । कताअी और मुलाकातें नियमानुसार हुअी । रातको आठ बजे रंगस्वामीजीसे पत्र लिखवाते लिखवाते झपकी आने लगी, अिसलिअे सो गये । आज बापुजी कुछ अधिक थके हुअे लगते हैं, क्योंकि दिनमें तीन चार बार अिसी तरह सो गये थे । पैरोंमें विवाअी फटनेकी शिकायत कर रहे थे । आजकल यात्रामें रोजकी अपेक्षा कुछ ज्यादा चलना होता है और ठंड भी बहुत है, अिसीलिअे अैसा हुआ होगा । अंगूठेमें फिर चीरा पड़ गया है । अिसलिअे अुसका भी दर्द रहता है । ठंडका असर, अुस पर नंगे पैरो चलना । और बापूजीके पैर तो अितने अधिक कोमल हैं कि जरा भी फटने पर चीरा पड़ जाता है । जो हो जाय सो सही । अीश्वरकी क्या अिच्छा है, अिसे कौन जान सकता है ?

कोमलापुर,

२१-२-१९४७

सदाकी भांति प्रार्थना । बादका सारा समय आर्यनायकम्जीने ले लिया । मौलाना साहब और जाकिर हुसेन साहबके शिक्षा-संबंधी विचारोंकी चर्चा की । साढे पाचके बाद रस पिया और थकावटके मारे लेट गये । मैंने पैर दबाये । बापूजो ५-५५ तक सोये । मृदुलाबहनको पत्र लिखवाया और सारी डाक बिड़लाजीके आदमी भैरवदासजीके साथ भेजी । मुन्नालालभाअीको पत्र लिखवाना शुरू किया, परन्तु पूरा न हो सका । . . . लावण्यलता बहनने थकावट होनेके कारण बापूजीको कोअी दवा लेनेका सुझाव दिया । बापूजी कहने लगे, “मेरी दवा तो रामनाम है । मैं कब तक टीकता हूं, यह दूसरी बात है । अिसलिअे अिस दवासे या तो मैं कभी बीमार नहीं पडुंगा और बीमार पडूंगा तो हृदयगत रामनामके बल पर चौबीस घंटेमें अच्छा हो जाअुंगा ।”

साढ़े सात बजे बीशकाथली छोड़ा । सवा नौ बजे हम यहां पहुंचे । रास्तेभर आर्यनायकम्जीसे बातें की । बीचमें दो जगह ठहरे थे, अिसलिअे देर हुअी । पैर धोते समय बापूजीने कलकी रिपोर्ट सूधारी । मालिशमें भी यही काम किया ।

बापूजीने आज भोजनमें थोड़ा फेरबदल किया । अेक खाखरा और अेक चम्मच बकरीका घी शाकमें लिया ।

बापूजीको कमजोरी और थकान होनेके कारण थोड़ा थोड़ा मक्खन निकालकर और अुसका घी बनाकर मैंने थोडीसी गुड़-पपडी बनाअी थी । बनानेके बाद ही बापूजीके पास ले गअी । मैंने कहा, "आप गुड़ लेते हैं, गेहू लेते हैं और बकरीका घी तो लिया ही जा सकता है । अिसलिअे पपड़ी बनाअी है ।" मुझे डर था कि शायद न लें । परन्तु सौभाग्यसे अेक छोटोसी ढली ले ली । फल नहीं लिये ।

मुझसे बोले : "तुम पपडी बनाकर लाअी, अिसलिअे तुम्हारा अुत्साह भंग करके तुम्हें दुखी न करनेके खयालसे अिच्छा न होते हुअे भी पपडीका अेक टुकड़ा ले लिया । परन्तु अिससे थकान या दुर्बलता चली थोड़े ही जायगी ? वह तो रामनामकी दवासे ही मिटेगी । यह श्रद्धा तुम्हें भी अपनेमें पैदा करनी चाहिये, क्योंकि अिस समय मेरी तमाम बाहरी देखभाल तुम्हारे हाथोंमें है । यह पपडी तुमने अपने मनमें चिन्ता रखकर मेरे लिअे बनाअी, परन्तु मुझे तो बनाकर लाअी तभी पता चला । मैं नहीं जानता कि तुम दूध लेकर मक्खन निकालती हो, क्योंकि रसोअीमें जब तुम काम करती हो तब मैं मान लेता हूं कि खाखरे बनाती होगी या अैसा ही और कुछ काम करती होगी । मुझमें शक्ति आये, अिस अुद्देश्यसे तुम मुझे पपड़ी खिलाती हो । परन्तु अितनी ही श्रद्धासे तुम रामनामको रामबाण दवाकी जानकर हुदयसे अुसका रटन करो, तो अुससे मुझे अिस पपडीकी अपेक्षा कअी गुना फायदा हो और हमारी शक्ति आजसे कअी गुनी बढ जाय ।"

बापूकी रामनामकी श्रद्धा अत्यन्त प्रबल होती जा रही है ।

काकासाहबको पत्र लिखा । अुसमें काफी समय लगा । निर्मलदा और दैवभाअीने हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला और अुर्दू डाक पढ़कर सुनाअी । अंग्रेजी और बंगला पत्रव्यवहार ज्यादातर

निर्मलदा संभालते हैं। देवप्रकाशभाअी और हुनरभाअी हिन्दी, अुर्दू और कुछ अंग्रेजी डाक। मेरे हिस्सेमें आजकल डाकका काम बहुत कम हो गया है। गुजराती और कभी-कमी मराठी डाक रहती है। अलबत्ता, खानगी हिन्दी-गुजराती पत्र बापूजी अधिकांश मुझीसे लिखवाते हैं और अुनकी नकलें मुझे ही करनी होती है। अुनमें से अुपयोगो पत्रोंकी तारीखवार फाअिल भी रखनी पड़ती है।

शामको बाबा (सतीशचन्द्र दासगुप्ता) आये। निरंजनसिंह गिल भी अुनके साथ थे। बिहारकी रिपोर्ट आ गअी। अैसा लगता है कि शायद बिहार जाना पड़े। रिपोर्ट बड़ी दुःखद है।

गिलके साथ बातें की। अुन्होंने सिक्ख भाअियोंका सारा चार्ज आजसे कर्नल जीवनसिंहजीको सौंप देनेकी स्वीकृति दे दी है।

स्टेनली जोन्सको भी पत्र लिखवाया। बाकीका क्रम नियमानुमार रहा। बापूजीकी तबीयत कुछ ठीक है। पैरका घाव अभी तक भरा नहीं, परन्तु भर रहा है। मौसमका असर है। अिसलिअे ठोक हो जायगा।

दूसरे पत्रोंमें लिखा "गिलके बयान परसे बिहारके बारेमें मेरा धर्म कदाचित् वहां जानेका हो जाय। यहांके मुसलमानोंका बरताव देखते हुअे यहां अहिंसाकी सच्ची परीक्षा होगी।"

"ब्रिटिश प्रधानमंत्रीने भाषण दिया अुस परसे लगता है कि शायद अभी युद्ध बाकी हो!"

अिस गांवकी आबादी ६,३८७ है। २,३८७ हिन्दू और ४,००० मुसलमान है।

आज बापूजीनें ९६ तार काते। साढ़े दसके बाद सो सके।

(चरप्रदेश) चरकृष्णपुर,
२२-२-१९४७

आज रातको २-२० होने पर बापूजीने समझ लिया कि ४-१० हो गये। मुझे अुठाया। मैंने भी नींदमें ही आंखें मलते हुअे बापूजीको दातुन और मंजन दिया। परन्तु आंखोंमें से नींद अुडती

ही नहीं थी । अिसलिअे मैंने घडीमें देखा तो अभी ढाअी ही बजे थे । बापूजीको घडी दिखाअी । मुझे बहुत नींद आ रही थी, अुस पर यह भूल निकली । अिसलिअे बडा मजा आया । दोनों फिर सो गये । चार बजे सरदार जीवनसिंहजी नियमानुसार जगाने आये । अुस समय जागे । दातुन करके प्रार्थना हुअी । प्रार्थनाके बाद बापूजीको गरम पानी दिया । मैं फलोंका रस निकालकर लाअी, अिस बीच बापूजीने बंगलाका पाठ किया । परंतु अधूरा रहा । सुबहका वक्त गुजराती, पत्रोत्तरके लिअे रखा ।

सात पैंतालीस पर कोमलापुर छोड़ा । आठ पैंतालीस पर यहां पहुंचे । रोजकी तरह बंगलाका पाठ पूरा किया, जो सुबह मेरे साथ बातें करनेमें वक्त चला जानेसे अधूरा रह गया था । मैंने मालिश व स्नानकी तैयारी की, अितनेमें बापुजीने पूरा लिख लिया ।

भोजनमें अेक खाखरा, पपडीका अेक टुकडा, शाक और छः औंस दूध लिया ।

भोजनके समय रेणुकाबहन रायके साथ बातें की । फिर आराम लेते वक्त मैंने पैरोमें भी मला और बापूजीने रंगस्वामीजीसे पत्र लिखवाये — सुहरावर्दी साहबको, श्रीकृष्ण सिंह (बिहारके मुख्यमंत्री) को और मौलाना साहबको । सवासे डेढ़ तक सोये । यहां भीड बहुत है । मैं बापूजीके लिअे कुछ भी तैयार करने जाती हूं कि पीछे पीछे स्त्रियां और बच्चे आ जाते हैं । पानी बहुत गन्दा होनेके कारण कपड़े धोने दूर जाना पड़ा । दो बजे कपड़े धोने गअी । बापूजीके भोजनके बरतन भी तभी साफ किये । अिस बीच बापूजीने देवप्रकाशभाअीके साथ डाकका काम निबटाया और चरखा काता । स्त्री और पुरुष कार्यकर्ताओंमें अमूल्यभाअी चक्रवर्ती, आभाबहन वर्धन, सुधाबहन सेन और बेनरजी मिले ।

मैं आअी तब ठक्करबापा और शरदेशानदजी (रामकृष्ण मठके स्वामीजी) बैठे थे । स्वामीजीने मठमें आनेका निमंत्रण दिया था । बापा थके हुअे लगते थे । थोडी देर बातें करके चले गये । साढे बारह बजे बापूजीने आठ औंस दूध और अंगूर लिये । रेणुकाबहनने मुझे बड़ी मदद की । स्वभावकी बहुत मिलनसार है ।

प्रार्थना नियमानुसार हुअी । प्रार्थनामें बापूजीने फरिश्तोंकी अेक सुन्दर कहानी कही :

"कहा जाता है कि खुदाने यह पृथ्वी बनाअी अुस रामय वह अिधर-अुधर हिला करती थी । अिसलिअे खुदाने बड़े बड़े पहाड बैठा दिये । अिस पर फरिश्ते खुदासे पूछने लगे, हे मालिक, तेरी बनाअी हुअी वस्तुओंमें अिन पर्वतोंसे कोअी अधिक बलवान भी है ? खुदाने कहा, हां, लोहा अिन पहाडोंको तोड सकता है, अिसलिअे वह ज्यादा ताकतवर है । फरिश्तोंने पूछा, तब लोहेसे भी कोअी ज्यादा ताकतवाली चीज है ? खुदाने कहा, हां, आग फौलादसे ताकतवर है, क्योंकि वह लोहेको गला देती है । फरिश्ते - अुससे भी कोअी बलवान है ? खुदाने कहा, हां, पानी है, क्योंकि पानी आगको बुझा देता है । फरिश्ते कहने लगे, पानीसे भी बढ़कर कुछ है ? खुदा बोले, हां हवा है, क्योंकि हवा पानीको हिलाती है । तब फरिश्ते पूछने लगे, हे खुदा, हवासे भी कोअी ताकतवर है ? खुदाने कहा, दान है । दान देनेवाला भला आदमी अपने दायें हाथसे देकर बायें हाथसे भी गुप्त रखे तो वह सभीको जीत लेनेमें समर्थ होता है ।

"प्रत्येक अच्छा काम दान है । आप अपने भाअीको हंसकर बुलायें, रास्ता भूले हुअेको रास्ता दिखायें, प्यासेको पानी पिलायें, यह सब दान है । मनुष्य जीते-जी अपने जैसे मनुष्योंके प्रति या अपने जैसे प्राणियोंके प्रति जो भलाअी करता है, वही अुसकी सच्ची पूजी है । वह मर जायगा तब लोग पूछेंगे कि यह मरनेवाला अपने पीछे क्या छोड गया है ? परन्तु फरिश्ते पूछेंगे कि मरनेवालेने पहलेसे कितने भलाअीके काम करके यहां भेजे हैं ?"

अिसके बाद यह प्रदेश नमोशूद्रो (हरिजनोकी अेक जाति) का होनेके कारण अुन लोगोंके संबंधमें कहा, "मैं भविष्यवाणी कर रहा हूं कि भारत परसे ब्रिटिश हुकूमतका हमारे देशमें निश्चित रूपसे नाश हो जायगा । ब्रिटिश लोगोंका जैसे भारतसे नामोनिशान मिट जायगा, अुसी प्रकार यदि अस्पृश्यताको जड़से नष्ट नहीं किया गया तो हिन्दूधर्म सर्वथा नष्ट हो जायगा ।"

समान अधिकार पर बोलते हुअे बापूजीने कहा, "हिन्दुस्तानमें हमें दुनियाकी दूसरी प्रजाओंको आश्चर्यमें डालनेवाला स्वतंत्रताका आदर्श जीवन बिताना हो, तो भंगियो, डॉक्टरो, वकीलो, शिक्षको, व्यापारियों और अन्य लोगोंको दिनभरकी प्रामाणिवा मेहनतके बदलेमें समान

वेतन, मजदूरी या खुराक मिलनी चाहिये । अिस बारेमें मेरे मनमें जरा भी शंका नही है । यह हो सकता है कि भारतवासी अिस ध्येयको पूरी तरह सिद्ध न कर सकें । परन्तु यदि हमारे देशको सब तरहसे सुख-संतोषकी भूमि बनाना हो, तो सबको अिस ध्येयकी ओर दृष्टि रखकर चलना होगा ।"

अिस प्रकार बापूजीके प्रत्येक विचारकी खूबी देखनेको मिलती ही रहती है ।

प्रार्थनाके बाद वीणाबहन बसु, बेलाबहन, लावण्यलता बहन, रेणुकाबहन वगैरा स्त्री-कार्यकर्ताओंके साथ बातें की ।

आजका हमारा मुकाम अेक नमोशुद्रके घर है । घरके मालिकका नाम महानंद वैद्य है । अत्यन्त गरीब होने पर भी अुन्होंने प्रेमपुर्वक हमारी सुविधाओंका खयाल रखा है ।

भगवान रामने भीलनीके घर पर कैसे प्रेमसे निवास किया था ? अुस आतिथ्यका आनंद लूटते समय अुन्हें अयोध्याके राजमहलोंसे भी कअी गुना अधिक आनंद होता था । अन्तमें जूठे बेर तक किसी मनचाहे मिष्ठान्नसे भी अधिक स्वादसे खाये थे । रामायणका वह चित्र आज हूबहू देखनेको मिलता है । बापूजी अिस गृहस्वामीके आतिथ्यका आनंद बडी प्रसन्नतासे लूट रहे हैं ।

अिस गांवकी आबादी २,५०० है । अुसमें ३०० मुसलमान हैं । अिस गांवके सब लोग लौट आये हैं ।

रातको बापूजीने घरवालोंसे बाते करनेके बाद अखबार सुने । बच्चोंके साथ खेले । दस बजे बिछोने पर लेटे । मैं भी नियमानुसार बापूजीके सिरमें तेल मल कर, पैर दबाकर और फुटकर कामकाज निबटा कर साढ़े दसके बाद सोअी ।

चरशलादी,

२३-२-१९४७, रविवार

आज प्रार्थनाके बाद बापूजीने बंगलाके अंकों पर हाथ घुमाया । २ का अंक सीखनेमें काफी देर लगी । शैलेनभाअीसे २ लिखवाया और अुस पर भी दस बार हाथ घुमाया । बादमें अलगसे २

लिखा। मुझे तो यह देखकर बहुत मजा आया। बापूजीने लडकोंकी तरह बहुत रसपूर्वक बंगलाके अंकों पर हाथ घुमाया।

यह मुश्किलसे पूरा हुआ कि बालपोथी पढ़ते-पढ़ते व्याकरणकी दृष्टिसे अेक शब्द बापूजीकी समझमें नहीं आया।

मुझे भी अच्छी तरह समझमें नहीं आया। 'निओ' और 'नाओ' – अिन शब्दोंमें क्या फर्क है, यह जानना था। दस मिसट मैंने और बापूजीने सिरपच्ची की। अितनेमें निर्मलदा आ गये। वे भी थोड़ी देर परेशान हुअे, परन्तु बादमें अुन्होने समझाया। मुझसे कहने लगे, बापूजी यह बालपोथी कितनी कुशलतासे पढ़ते हैं? अिस प्रकार बापूजीने बालपोथीके शब्दोंमें निर्मलदा जैसे प्रोफेसरको भी कुछ क्षण तक परेशान किया।

फिर देवप्रकाशभाअीके साथ बातें की। आज जरा भी आराम नहीं लिया। अुनसे बापूजीने कहा कि नअी तालीमकी दृष्टिसे ही आपको यहां काम करना है।

साढे सात बजे चरकृष्णपुर छोडा। यहां हम साढ़े आठ बजे पहुंच गये। मालिश, स्नानादिसे निबटनेमें साढ़े दस बज गये। रंगस्वामीजीके साथ ब्रिटिश सरकारके वक्तव्यके सिलसिलेमें बातें की।

भोजनमें गेहूंका दलिया और शाक खाया। मैंने आधा औंस तक मक्खन निकाला था, वह भी खाया। खाते खाते डाक सुनी। मैं नहाने गअी। कपड़े ज्यादा थे अिसलिअे धोनेमें देर लगी। आकर देखती हूं तो बापूजी गहरी नींदमें सो रहे हैं। अिसलिअे मैंने पैरोमें घी मला। सवा बारह बजे बापूजी जागे। मुझसे कहा, "मैं सो रहा होअुं तब भी तुम्हें पैरोमें घी मलनेकी छूट देता हूं।" फिर जब बापूजी तीन बजे पेडू पर मिट्टी रखकर सोये तब मैंने पैरोंमें मालिश की। आर्यनायकम्जी राजकुमारीबहन तथा मौलाना साहबके पत्र लाये थे। अुन्हें पढ़ा और मुझसे पत्र लिखवाये। कुछ नकलें करनेका काम सौंपा।

* * *

पू. बा और महादेवकाकाको अिन दिनो बापूजी रोज याद करते हैं ।

आजकी लिखी लगभग सारी ही बातें सबके पत्रोके अुत्तरमें बहुत स्पष्ट थी ।

बापूजीकी दाढ़ी पर छोटासा मसा हो गया है, जिसे नृपेनदाने धोड़ेके बालसे बांध दिया । साढे चार बजे बापूजीने अेक खाखरा, चार बादाम और चार काजू और थोड़े मुमुरे खाये । बादमें काता । प्रार्थनाका समय होने पर प्रार्थनामें गये ।

प्रार्थनामें कुछ प्रश्न पूछे गये थे । अुसमें अेक प्रश्न बाल-विवाह और विधवा-विवाहके बारेमें था । अुसका अुत्तर देते हुअे बापूजीने कहा :

“अिस मामलेमें मेरी राय स्पष्ट है । यदि बाल-विवाह न हो तो बाल-विधवा होनेकी बात ही नहीं रह जाती । नमोशुद्र (हरिजन वर्ग) में कन्या-विक्रयकी जो प्रथा है वह बिलकुल मिटनी चाहिये । मैं यह मानता हूं कि पत्येक व्यक्तिको जीवनमें अेक ही विवाह करना चाहिये । 'सिविल मैरेज' का रिवाज मुझे बिलकुल पसन्द नहीं । जहां हृदयोंकी अेकता है, परस्पर सम्मति है, वहां ‘सिविल मैरेज’ क्यों किया जाय ? परन्तु अिसमें गहरा नहीं जाअुंगा । धार्मिक क्रियाकी बात अलग है । अुसका अर्थ जीवनका नवनिर्माण हो रहा हो अुस समय अीश्वरसे प्रार्थना करनेके लिअे की गअी अेक विधि है । वह मुझे बहुत अच्छी लगती है, यद्यपि अुसमें अनेक बुरे रिवाज घुस गये हैं । परन्तु अिस चर्चामें अभी नहीं जाअुंगा ।

“हमारी यह यात्रा हैमचरमें पूरी हो जायगी और अुसके बाद नया विभाग शुरू होगा । अितनी यात्राके अिस सुखद अंतके लिअे अीश्वरका अुपकार मानता हूं । ठक्करबापा तो हेरिजनोंके सेवक और पुरोहितकी तरह हैं । अुन्होंने यह जिला अपनी मरजीसे पसंद किया है । अेक कहावत है कि 'बढअीका मन बबूलमें' । अुसी तरह ठक्करबापाने अपने-आप आपके बीचमें बसनेका काम ढूंढ लिया ।

“आप अपनेको हलके या अस्पृश्य मत मानिये । आपका अुद्धार धारासभा या कोअी और संस्थाअें नहीं कर सकेंगी । अिसके लिअे आपको स्वयं ही परिश्रम करना पड़ेगा । बापाने मुझे

यहां जो बरबादी हुअी वह बताअी । मुझे बहुत दु.ख हुआ । परन्तु अिसके लिअे न तो आप रोअिये और न कायर बनिये । हिम्मत रखकर अपनी मेहनत पर पूरा भरोसा कोजिये । जो लोग अपने अुद्धारके लिअे स्वयं सच्चाअीसे मेहनत करते हैं अुन्हें अीश्वर अवश्य सहायता देता है ।"

प्रार्थनाक बाद बापूजीने पत्र लिखे । मौन शुरू हो जानेसे सारा वातावरण शान्त है ।

यह घर अेक मिस्त्रीका है । जातिसे नमोशुद्र है । अिस गांवकी आबादी ७,६६८ है, जिसमें हिन्दू केवल ५० है । आज बापूजीके ९० तार हुअे । सवा नौ बजते बजते बापूजी बिस्तरमें लेट गये।

हैमचर,

२४-२-१९४७

नित्यकी भांति प्रार्थना हुअी । प्रार्थनाके बाद गरम पानी पीते पीते बापूजीने मेरी डायरी सुनी ।

सात चालीस पर चरशलादी छोड़ा। रास्तेमें मालतीदीदी (मालतीदेवी चौधरी) और अुनके साथ काम करनेवाली बहनें बापूजीको मिलने आअी । बहनोंने रास्ते भर मधुर कंठ से मंगल प्रभातिया गाअी । ठक्कर बापा भी बापूजीको लेने आये । बापूजी ठक्करबापासे विनोदमें कहने लगे "क्यों, आज तो आपका मेहमान बननेवाला हूं न ? हम दोनों बूढ़े मिल गये हैं । दोनोंकी ठीक जमेगी ।" और सूब हंसे ।

रास्तेमें रामकृष्ण मिशनके आश्रममें गये । बापा और विसेन भाअीने सुन्दर सुविधाअें कर रखी थी । दरवाजे पर ही बहनोंने आकर्षक चौक पूरा था । शान्तिनिकेतनमें शिक्षा पअी हुअी बहनोंके हाथों चौक पूरा जाय तो कमी कैसे रह सकती है ? फिर मालतीदीदीने बापूजीके माथे पर तिलक करके अक्षत लगाये, शगुन-गीत गाया और शंख बजाया । जाते ही बापूजीने पैर धुलवा कर जवाहरलालजीका पत्र पूरा किया । बंगलाका पाठ किया । यहां बढ़िया तैयारी थी, अिसलिअे मुझे खास तौर पर मालिश और बाथरुमकी तैयारी नहीं करनी पड़ी । बापूजीके लिअे कूकरमें

शाक रखकर सीधी मालिश की । अजितभाअी वगैरा कार्यकर्ताओंने भी खूब काम किया । नहाकर बापूजीने भोजनमें शाक, दूध और अेक सेब लिया।

बापूजीके कपड़े धोनेमें सौभाग्य माननेवाले अजितभाअीने आग्रहपूर्वक बापूजीके कपड़े धोये । बड़े-बड़े सुशिक्षित आदमी बापूजीके कपडे धोने और खाये हुअे बरतन मांजनेमें जीवनका अमूल्य लाभ समझकर यह काम करते हैं । बरतन अेक ग्रेज्युअेट सुसंस्कारी बीहनने मले । मालतीदीदी मुझसे कहने लगी, " हमें तुमसे अीर्षा होती है । अिसलिअे बापूजी जितने दिन यहां रहे अुतने दिन तुम्हें बापूजीका हमारे लायक काम हमें देना ही पड़ेगा ।" बड़ी प्रेमी है । अपनी लडकी बबुबहनको दिनभर याद करके मुझे प्यारसे खिलाती हैं । मेरे लिअे याद रखकर दही जुटाती है । जबरन दूध पिलाती है । अुन्होंने बंगला भजन भी मुझे सिखाये । बापाने अपने रसोईमें मेरे लिअे खाना बनवाया था । खानेमें दाल, चावल, शाक, रोटी और पापड था । बापाके लिअे बिड़लाजीकी तरफसे रसोअिया भेजा गया है ।

यहां (नोआखाली) आनेके बाद अर्थात् लगभग तीन महीनेमें आज अिस तरह घरकी भांति मैंने खाना खाया ।

खाकर लौटने पर बापूजीको साढ़े बारह बजे नारियलका पानी दिया । कातते समम मैंने पत्र सुनाये । साढ़े तीन बजे बापूजीने दो खाखरे, मुरमुरे और काजू खाये । सवा चार बजे मिट्टी ली । पौने पाच बजे प्रार्थनामें गये । यहां जो जले हुअे और लुटे हुअे मकान थे अुन्हें प्रार्थनाके बाद देखा । भयंकर दृश्य था । मकानोंकी जगह राख और जला हुआ मलबा तथा टीन वगैरा पड़े हुअे थे । सब्जीमंडीकी दुकाने भस्मीभूत हो गअी थी । बहुत कुछ मलबा अुठा ले गये थे । फिर भी काफी पड़ा था । फिर सुरेशभाअी यहां जो रात्रीशाला चलाते हैं अुसे देखने गये ।

निर्मलदाने यहां तम्बू तानकर ही सारी व्यवस्था की है । दो घर हैं । अेकमें बापा रहते हैं और दूसरेमें बापूजी रहते हैं । प्रेस-प्रतिनिधियोंने भी तंबू ही ताने हैं ।

नौ बजे बापूजीने अखबार सुने । थोडा लिखा । पौने दस बजे सोनेकी तैयारी ।

यहां हफ्तेभर रहना होगा और दूसरे सहायक है, अिसलिअे मेरे जिम्मे तो मुख्य मुख्य काम ही करना रहता है । बापूजीका कुछ भी काम करके कृतार्थ होनेकी भक्तिपूर्ण भावना यहांके भाअी-बहनोंमें है ।

हैमचर,

२५-२-१९४७

रोजकी तरह प्रार्थना । प्रार्थनाके बाद गरम पानी और शहद देकर मैं थोड़ी देर सो गअी । बीस मिनट बाद बापूजीको रस दिया ।

साढ़े सात बजे यात्रा पर निकलनेके समय घूमने गये । आअी. अेन. अे. वाले श्री देवनाथभाअी दासके साथ छोटी छोटी बालिकाओंने बापूजीको सलामी देकर जयहिन्द किया । ओस और ठंड होनेसे मालिश थोड़ी देरसे की । साढ़े नौ बजे मालिशके लिअे गये ।

भोजनमें दूध, फल, शाक और अेक केला लिया । बाबा (सतीशबाबू) आये ।

दोपहरको आअी हुअी डाक मैंने पढ़कर सुनाअी । साढे बारह बजे बापूजीने यह काम करके मालतीबीहन और रेणुकाबहनसे बातें की ।

तीन बजे यहांके रिलीफ-अफसरने अेक सभा रखी थी अुसमें गये । अफसरका नाम नूरुन्नबी है। सभा अेक घंटेसे अधिक चली । चेयरमेन और दूसरे वक्ताओंने अपने भाषणोंको अितना लम्बाया कि हम लोग अूब गये । बापूजीने जो समझना था सो समझ लिया । परन्तु सभासे अुठ कर जाते तो अच्छा न लगता । अिसलिअे समयका सदुपयोग करनेके लिअे मिलने शोरगुलमें भी थोड़ी नींद ले ली । सूचीमें देख लिया था कि बापूजीको किसके बाद बोलना है । अुस भाअीका भाषण पूरा होनेको आया तब मैंने सोचा कि बापूजीको जगा दूं । लेकिन अितनेमें बापूजी खुद ही जाग गये । नींद पर बापूजीका अैसा जबरदस्त काबू है । बापूजीने अपने भाषणमें कहा :

"मेरे पास न तो बंगला भाषा है, न बुलन्द आवाज । आपने देखा होगा कि जो भाषण हुअे वे मैंने सुने, परन्तु साथ ही सो भी लिया ।

"यहां जो कुछ कहा गया सो तो हवाअी बातें है । अिसका किसीको पता नहीं कि विमानमें अुडकर हम कहां जा सकेंगे । मैं नम्रतापूर्वक अितना ही कहूंगा कि जिस ढंगसे तुरन्त राहत मिल सके वही कीजिये । योजनायें कागज पर धरी रहे, तो अुनका कोअी अर्थ नहीं । हममें अेक बुरी आदत यह है कि हम करते थोड़ा हैं और विज्ञापन बहुत करते हैं । अिसलिअे अैसी बड़ी बड़ी योजनाओंका विचार करनेके बाद अन्तमें वे कागज पर ही रह जाती हैं । नुकसान यह होता है कि अिससे हम लोगोंका, आम जनताका, विश्वास खो बैठते हैं ।

हम जो काम करें वह अपने दिलसे पूछकर करें; हर काममें हम अपने दिलसे पूछें, मैं पाप तो नही कर रहा हूं ? अगर दिल हां कहे तो पापका प्रायश्चित्त करना चाहिये । जैसे, रास्तेमें थूकना नहीं चाहिये । थूका हो तो अपने दिलसे पूछें कि मैंने यहां थूका यह पाप सो नहीं हुआ ? अगर दिल कहे कि पाप हुआ तो प्रायश्चित्तके रूपमें वहां सफाअी कर दें । अिससे दूसरी बार वैसा न करनेकी सावधानी अपने-आप आ जायगी ।

दूसरे क्या करेंगे या कहेंगे, अिसकी राह देखते बैठे नहीं रहना चाहिये । हमें यदि रामराज्य स्थापित करना है, तो हमारे प्रत्येक कार्यमें यह सोचा ही नहीं जा सकता कि दूसरे क्या कहेंगे । खराब समझा जानेवाला काम हमें खटकेगा तो ही हमारी अुन्नति होगी ।"

सवा चार बजे वापस आये । आकर बापूजीने अेक औंस गुड और दूध लिया ।

प्रार्थना-सभामें अेक प्रश्न पूछा गया: "यदि परदेके रिवाज पर कडाअीसे अमल किया जाय, तो क्या अैसा नहीं लगता कि अुससे स्त्रियोंकी पवित्रताकी अधिक रक्षा होगी ?"

बापूजी – सही बात यह है कि परदेका रिवाज मर्यादा पालन करनेके लिअे है । कोअी स्त्री दिखावेके लिअे बाहरसे मुंह पर कपड़ा रख ले, परन्तु भीतरसे किसी पर-पुरुषकी तरफ बुरी नजरसे देखती हो, तो यह निरा ढोंग है, पाखंड है । अिसीलिअे मैं परदेका विरोधी हूं । और अैसे

परदेसे स्वास्थ्यकी दृष्टिसे तो नुकसान होता ही है । स्त्रियोंको हवा और रोशनी काफी नहीं मिलती । अिसलिअे वे बीमार रहती हैं । परन्तु परदेकी जो मूल भावना है बह संयमकी है । यह संयमरुपी परदा ही सच्चा परदा है ।

प्रश्न – आप लोगोंको मजदूर बनकर पेट भरनेको कहते हैं । तब व्यापार और शिक्षाका काम कौन करेगा ? अिससे हमारी संस्कृतिका नाश नही हो जायगा ?

बापूजी – यह सवाल पूछनेवाले मेरे कहनेका अर्थ भलीभांति नहीं समझे हैं । शब्दोंके पीछे रही भावनाका अध्ययन करना चाहिये । केवल शब्दोंको नहीं पकड़ रखना चाहिये । हाथीके मुंहवाले गणपतिको देखें तो वह विचित्र प्राणी माना जायगा । परन्तु प्रतीकके रुपमें वह कल्पना मनुष्यको अूंचा अुठाती है ।

दस सिरवाला रावण अेक बेवकूफ आदमी लगता है, परन्तु अुसका अर्थ यह है कि जिस मनुष्यको सारासारका भान नही, जो मनुष्य अेक वचन पर टिका नहीं रहता, क्षण क्षणमें बदला करता है और आवेगमें अिधर-अुधर भटकता रहता है, वह कअी सिरवाले राक्षसके समान है । मतलब यह है कि जो अेक बात पर कायम नहीं रहता, वह अेक सिरवाला नहीं है । मेरी दृष्टिमें रामायणमें बताये गये दस सिरवाले राक्षस रावणका यही अर्थ है ।

दंतकथाओंमें अैसे गूढ अर्थ भरे हैं । मजदूरकी मजदूरीमें शारीरिक श्रमका विभाग तो है ही । मेरे कहनेका अर्थ यह है कि हर प्रकारके काम करनेवाले सब लोगोंको बराबर वेतन मिले । वकील, डॉक्टर, शिक्षक, भंगी—सब अपना-अपना काम तो जरूर करें, मगर अुनका वेतन समान हो । अैसा न हो कि अेक डॉक्टरको आठ सौ रुपये मिलें और भंगीको आठ आने मिलें । यदि हम समझ लें कि दोनोंकी सेवा अुत्म है, अेकसी है, तो फिर दोनोंका रहन-सहन क्यों अेकसा नहीं होना
चाहिये ? यदि सब लोग यह सिद्धान्त स्वीकार करके अिस पर दिलसे अमल करें तो राष्ट्रका ही नहीं, बल्कि दुनियाका अुद्धार हो जाय और समाज-व्यवस्था सुखदायी बन जाय ।

विलायतमें सच्चे भंगीका पेशा करनेवाले बड़े बड़े नामांकित अिंजीनियर और सफाअी-शास्त्रके निष्णात होते हैं। परन्तु हमारे यहां जब तक आलस्य और जड़ता नहीं मिटती, तब तक कुछ भी होना कठिन है।

प्रार्थनासे लौटने पर बापूजीकी नअी यात्राका जो नकशा बाबा लाये हैं अुस पर चर्चा हुअी। मैंने सामान अलग निकाला। सारा फालतु सामान बाबाको सौंप दिया।

साढ़े नौ बजे बापूजीने मेरी पूरी डायरी लेटे लेटे सुनी। मैं जो पढ़ रही थी अुसमें रिलीफ-अफसरका साम नूरुन्नबी लिखा था। अिस पर बापूजीने ध्यान दिलाया कि "या तो नूरुन्नबी साहब लिखना चाहिये या नूरुन्नबीजी या नूरुन्नबीभाअी। लिखी हुअी भाषा दुबारा पढ़ लेना चाहिये, ताकि पता चल जाय कि कहीं कोअी अनुचित अथवा असभ्य बात तो लिखनेमें नहीं आयी।"

रात हो गअी थी, अिसलिअे मैं जल्दी जल्दी डायरी सुना रही थी। तो भी अैसा सोचकर यह पंक्ति बापूने दुबारा पढवाअी कि कहीं सुनने मैं भूल तो नहीं हो रही है; और जब यह पक्का कर लिया कि मैंने केवल 'नूरुन्नबी' लिखा है तब यह भूल मुझे समझाअी। बापू अैसे महान गुरु हैं।

हैमचर,

२६-२-१९४७

रोजकी भांति प्रार्थना हुअी। गीतापाठ बिसेनभाअीने किया।... की ओरसे अेक छोटी-सी पुस्तिकाके रूपमें पत्र मिला है। वह पत्र बापूजीने प्रार्थनाके बाद मुझसे पढवाया। बापूजी कहने लगे, "अेक पथ दो काज हो जायंगे। तुम पढ़ लोगी और मैं सुन लुंगा। और तुम्हारी समझमें न आये वहां समझा भी सकूंगा।

साढे सात बजे घूमनेके लिअे रवाना हुअे। लौटकर स्थानीय कार्यकर्ता भाअियोंसे वार्तालाप। अम्तुस्सलाम बहन तथा कनुभाअी आये हैं। साढ़े नौ बजे मालिश। मालिशमें बापूजी आध धंटा सोये। स्नानादिसे निबटनेमें अेक घंटा लगा। भोजनमें अेक खाखरा, शाक और आठ

औंस दूध लिया । अधिकांश समय अम्तुस्सलाम बहन और कनुभाअीसे बातें करनेमें ही गया । बीचमें रिलीफ-अफसर नुरून्नबीभाअी आ गये ।

दो बजे यहांके बाजारमें रखी गअी अेक आम सभामें गये । वहांसे आकर बापूजीने मिट्टी ली । मिट्टी लेकर थोडा सोये । पौने चार बजेसे प्रार्थनामें जाने तक ठक्करबापाके साथ बातें की । साढ़े चार बजे प्रार्थनामें गये । प्रार्थना-सभामें कहा :

"हममें मनुष्यता हो तो हमें छोटी-छोटी बातोंके लिअे सरकार पर निर्भर नहीं रहना चाहिये । अुदाहरणार्थ, कोअी रास्ता साफ रखना हो, मुझे अपना गांव प्यारा हो और गांवकी सुघड़ता अच्छी लगती हो, तो मुझे स्वयं वह रास्ता साफ रखना चाहिये । जहां-तहा अनजानें भी थूकना नहीं चाहिये । कूड़ा-कर्कट अुसकी जगह पर ही डाला जाना चाहिये । अैसे अनेक काम सेवाके पड़े हैं । अिसमें जवाहरलालजी, सरदार या जिन्ना साहबको पूछने जानेकी बात थोडे ही हो सकती है ? देहातको यदि सुखी बनाना है तो ग्राम-पंचायते स्थापित करके शान्ति और सहकारसे अपने भले-बुरेकी जिम्मेदारी हमें संभाल लेनी चाहिये ।

"जिस मनुष्यकी स्वार्थत्यागकी अिच्छा अपनी जातिसे आगे नहीं बढती, वह अपने आपको और अपनी जातिको स्वार्थी बना देता है । परन्तु सच पूछा जाय तो स्वार्थत्यागकी अिच्छाका परिणाम यह होना चाहिये कि व्यक्ति अपनी जातिके लिअे सर्वस्वका त्याग करे, जिलेकी सेवाके लिअे जातिका त्याग करे, प्रान्तकी सेवाके लिअे जिलेका त्याग करे और प्रांतसे आगे बढकर राष्ट्रकी सेवा करे । समुद्रके अथाह पानीसे अेक बूंद अलग हो जाती है, तो वह किसी काममें नहीं आती और सूख जाती है । परन्तु जब वह बूंद महासागरका अेक अंग बनती है तब अुस पर बड़े बड़े जहाज तैरते हैं ।

"सच्ची स्वतंत्रतासे बना हुआ हिन्दुस्तान अुसका पड़ौसी राज्य अगर संकटमें आ फंसे तो अवश्य अुसको मदद देगा । अफगानिस्तान, लंका और बर्माका ही अुदाहरण लीजिये । पड़ौसीकी मदद करनेका नियम अिन तीनों पर भी लागू होगा । अिस प्रकार ये देश जिन जिन देशोंकी सहायता करेंगे वे सब हिन्दुस्तानके पडौसी बनेंगे । अिस तरह, जैसा मैंने कहा, व्यक्ति अगर

समझके साथ त्याग करेगा तो वह समस्त मानव-जातिको अपनी सेवाके क्षेत्रमें अवश्य समा लेगा।"

प्रार्थनाके बाद बापूजी घूमे। शामको अेक औंस गुड, आठ औंस दूध और फल लिये। आज बापूजीक ९० तार हुअे। घूमकर रोजकी भांति अखबार सुने। अरुणाशुभाअी, बिसेनभाअी और अम्तुस्सलाम बहनके साथ बातें की। मैं पैर दबा रही थी तब . . . की बात परसे बापूजीने मुझे अेक सैद्धान्तिक बात कही।

"जब . . . अपना दोष जैसे-तैसे हटानेका प्रयत्न करती हैं तब अुसकी गिनती झूठमें होती है। परन्तु सब कुछ शुरू अुसीने कराया है। वह सेवाभावी है, परन्तु अुसे सच-झूठकी समझ नहीं है। अैसी हालतमें मनुष्यका कोअी भी काम चमकता नहीं। अिसीलिअे . . . के अुपवास मेरी दृष्टिसे नहीं चमके। यह अिन अवगुणोंका निश्चित परिणाम हैं। मनुष्यको हमेशा स्पष्ट रहना चाहिये। अपनी भूलको सूक्ष्मदर्शक यंत्रसे देखना सीखना चाहिये और दूसरेकी भूलको पहाड परसे देखना चाहिये। यदि यह नियम अपना लें तो हम हजारों पापोंसे बच जायं। . . . जो अपने प्रति सच्चा हो अुसे किसका डर हो सकता है ? मनुष्यको सबसे पहले अपने प्रति सच्चा बनना चाहिये।

"भयसे या बहुत बार किसी लाभके लोभसे या दोष छिपानेकी वृत्तिसे झूठ बोलनेके अवसर आते हैं। परन्तु जो दोष करना ही न चाहता हो अुसके लिअे छिपानेको होगा ही क्या ? और जो अैसे मनुष्य होते हैं वे कभी कोअी भूल हो जाय तो अुसके निवारणके लिअे अपनी भूलको प्रगट कर देनेकी वीरता दिखाते हैं और अुससे मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं। अिसीलिअे तो मैंने कल लिखा कि . . . यदि कोअी दोष दिखाअी देता हो तो अुसे जाहिर कर दो। अिसका परिणाम दोनों पक्षोंके लिअे लाभदायक ही होता है। अिससे दोषका मैल धुल जाता है और हम साफ हो जाते हैं। और हमारी आत्मा, हृदय और चेहरेका तेज पहले जैसा ही चमकता है।

"प्रामाणिक और शुद्ध हेतुसे अपने अन्तकरणको साक्षी रखकर काम करते रहनेवालेकी प्रभु अवश्य सहायता करता है। अिसका मैं यहां अनुभव कर रहा हूं। बड़ेसे बड़े तूफान भी जैसे

निष्ठावानको स्पर्श नहीं कर सकते । सच्चे और दृढ़ व्यक्तिका हृदय-बल कैसे भी तुफानोंके सामने कभी ढीला नही पड़ता । अैसे समय दिखनेवाली असफलता भी सफलता ही होती है । अिससे असफलता या सफलता दोनों स्थितियोमें संसार पर आशीर्वाद ही अुतरता है । यह मैं अनुभव करता हूं, अिसीलिअे कहता हूं कि प्रभु यहां मेरी मदद कर रहा है, अिसमें मुझे जरा भी शंका नहीं है ।"

बिहार जानेकी बात साफ नहीं हो पाती, अिसलिअे टलती रहती है । रातको मैं बापाक पास बैठी । अुन्हें कुछ पत्र पढ़कर सुनाये । कुछ पत्र सुननेके बाद वे कहने लगे "... कुछ बातें रूबरू मिलनेसे जितनी समझ में आती है अुतनी पत्रोंसे समझमें नही आती । बापूजीक साथ मैंने जो बातें आज की अुनके अनुभवसे यह कहता हूं । पत्र-व्यवहारसे कितनी ही गलतफहमिया बढ़ जाती हैं । आज बापूजी साथ हुअी आध घंटेकी बातोंसे और तुम्हारे यहांके निवाससे जो कुछ प्रत्यक्ष देख रहा हूं, अुस परसे मेरा मन बहुत हलका ही गया है । बापूको कभी कभी पत्र-व्यवहारसे समझना बड़ा कठिन होता है ।

बापाके पाससे आअी तब बापूजी सो गये थे । मैं भी तुरन्त सो गअी ।

हैमचर,

२७-२-१९४७

नियमानुसार प्रार्थना हुअी । प्रार्थनाके बाद ... बात करने आअी । परन्तु बापूजीने बंगला पाठके बीचमें बातें करनेसे अिनकार कर दिया । घूमते हुअे ... के साथ बातें की । ... बापूजीने साफ कह दिया कि "... तुम अिस समय बिलकुल बदल गअी हो और झूठ बोल रही हो ।" यह बात नोट कर लेनेको बापूजीने मुझसे कहा । ... बापूजी पर बड़ी नाराज हुअी । बापूजी बोले, "अिसकी कोअी परवाह नहीं । जो सच मालूम हो वह मैं न कहूं तो कौन कहेगा ? सच बात कहनेका मेरा धर्म हो जाता है ।"

साढ़े आठसे ग्यारह तक मालिश, स्नानादिका क्रम चला । भोजनमें दूध, शाक और अेक केला लिया । आज बापूजी अेक बजे सो सके । फिर अम्तुस्मलाम बहनने खादी-सम्बन्धी जो लेख

लिखा था अुसे देखा । दो बजे नारियलका पानी पिया । साढे तीन बजे सुधाबहन सेन आअी । अुन्होंने अपनी अहिंसाकी परेशानी बताअी तो बापूजीने सुन्दर अुत्तर दिया "रामनाम-रूपी तलवार लोहेकी तलवारसे कहीं ज्यादा मजबूत है ।" फिर काता । आजके ७५ तार हुअे ।

साढ़े तीन बजकर दस मिनट पर फजलुलहक साहब आये । किसीने अुन्हें कनेरके फूलोंका हार पहनाया और फोठोग्राफरने अुन्हें खड़ा रखकर पहले अुनका फोटो लिया । तेज धूप और गरमी थी । अुनका शरीर बहुत मोटा था और बैठना तो बापूजीकी झोंपड़ीमें ही था । मैं बापूजी पर पंखा झल रही थी । बापूजीने मुझे सूचना की कि अुनको भी पंखेकी हवा मिल सके अैसा घुमाओ । अुस मुरझाये हुअे हारके कारण निकलनेवाले पसीनेकी तरफ अितनी गंभीर बातोंमें भी बापूजीका ध्यान गया । हार अुतार देनेकी सूचना की तभी हक साहबने अुतारा ।

सवा चार बजे तक मुलाकात चली । अुनके साथ प्रो. महमूद अजीमुद्दीन, मुहम्मद सिराजुल अिस्लाम और नूरेजमान मियां थे । बापूजीने खरी खरी सुनाअी । . . . अिन लोगोंके जानेके बाद थोड़े मुरमुरे और अेक औंसके लगभग गुड-पपडीका टुकड़ा लिया ।

आजकी हमारी प्रार्थना दंगोके दिनोंमें बरबाद हुअे अेक मंदिरके मकानमें हुअी । आजका प्रार्थना-प्रवचन कलके प्रवचनके आधार पर ही था ।

"मनुष्य अपने पड़ोसियोंकी और मानव-जातिकी सेवा अेकसाथ कर सकता है, अिस सत्यको मैं निश्चित रुपमें मानता हूं । परन्तु शर्त यह है कि पडौसीकी सेवा निजी स्वार्थ साधनेके हेतुसे न की जाय । अर्थात् सेवक जो सेवा करे अुसमें किसीसे अनुचित लाभ न अुठाये, अपने सेवाकार्यमें किसीका भी शोषण ने करे । अैसी सेवा होती देखकर लोग अवश्य अुसकी ओर आकर्षित होंगे और अुसकी छूत अुन्हें जहर लगेगी । अैसा हो तो वह सेवाकार्य फैलते फैलते सारी दुनियाको अपने क्षत्रमें समा लेगा । अिससे यह सिद्धान्त निकल सकता है कि दूसरोंकी बात छोडकर अपने घरकी, कुटुम्बकी और सबसे नजदीक रहनेवाले पड़ौसियोंकी सेवा की जाय । स्वदेशीकी भावनाका यही अर्थ है ।

"मेरा मिशन तो लोगोंमें सच्ची हिम्मत पैदा करके अुन्हें बहादुर बनाना है । आप लोग यदि अपने मनमें रहनेवाले डरको निकाल डालेंगे, तो आपको कोअी डरा नहीं सकेगा । मुसलमान जब देखेंगे कि आप निडर और साहसी बन गये हैं, तो वे खुद आपके मित्र बन जायेंगे । सच्ची बहादुरी तलवार हाथमें लेकर सामनेवालेको मारनेकी कुशलतामें नहीं है, परन्तु मानव मानवका दुश्मन किसलिअे हो सकता है, यह हकीकत जाननेमें सच्ची बहादुरी है ।"

अुद्योगीकरण पर बापूजीने कहा : "अमरीका अिस वक्त उद्योगोमें दुनियाका सबसे आगे बढ़ा हुआ देश माना जाता है । फिर भी, अुस देशमें, गरीबीका, मनुष्यको भ्रष्ट करनेवाली बुरी आदतोंका और बुराअियोंका नाश नहीं हो पाया है । अिसका कारण यह है कि मनुष्यमात्रमें रहनेवाली शक्तिका उपयोग करनेके बजाय वहां अपार धन कमा लेनेवाले बहुत थोड़े व्यक्तियोंके हाथोंमें सत्ता अेकत्रित हो गअी है । अुसका परिणाम यह हुआ कि अमरीकाका अुद्योगीकरण वहांकी गरीब जनताके लिअे और संसारके शेष भागके लिअे भी बहुत खतरनाक हो गया है ।

"परन्तु हिन्दुस्तानको यदि अिससे बचना हो तो अुसे पश्चिमके देशोंमें जो कुछ अच्छे तत्त्व हो अुन्हें अपनाना होगा और आकर्षक होते हुअे भी पश्चिमकी नाश करनेवाली आर्थिक नीतिसे दूर रहना होगा । देशके कच्चे मालका निकास करके बादमें तैयार होनेवाली चौजें हम बेहद रुपया देकर खरीदते हैं । अिनके स्थान पर भारतके ४० करोड लोगोंकी शवितको संगठित करके अुसका अच्छेसे अच्छा अुपयोग किया जाय और व्यवस्थित रुपमें गांव गांवमें कच्चा माल बांटकर अुसका पक्का माल वही तैयार किया जाय, तो देशका धन देशमें रहे और किसीको अैसे दंगे-फमाद करनेकी फुरसत ने मिले । मेरी रायमें अिसीमं सच्चा आर्थिक नियोजन समाया हुआ है ।"

प्रार्थनाके बाद लगभग डेढ़ दो घंटे लगातार डाक लिखवाअी । नौ बजकर पच्चीस मिनटके बाद अखबार सुने । बातें करते करते आज बापूजी दस बज सोये ।

हैमचर,

२८-२-१९४७

रोजकी तरह प्रार्थना । प्रार्थानाके बाद . . . के साथ बातें की । अैसा लगता है कि . . . की भूलसे बापूजीको दुःख हुआ है ।. . . ने बापूजीके पास जाकर अपनी भूल जाननी चाही । अिस पर बापूजीने अपने विचार प्रगट किये और कहा, ". . . ने यह जानना चाहा कि अुसकी भूल कहां है । गुझे आश्चर्य हुआ । दुःख हुआ । दुःख अपने पर होना चाहिये था । मुझे सन्देह हुआ । अगर मैंने भूल की है तो अुसका प्रारंभ अुसकी प्रेरणासे हुआ । यह संदेह मैंने अुसके सामने रखा और दो किस्से सुनाये । और अब . . . यह भूल लगती हो तो यह स्पष्ट दिखाअी देता है कि अिसमें . . . का ही दोष है ।"

बापूजीका हृदय अितना विशाल है कि प्रत्येक कार्यमें दूसरोंकी भूलें स्पष्ट दिखाअी देते हुअे भी वे अपनी ही भूल मानते हैं ।

निर्मलदा तो यह देखकर बहुत नाराज हो गये । मुझसे कहने लगे, "ये लोग देखते हैं कि गांधीजी अिस समय जलती हुअी भट्टीमें पड़े हैं, फिर भी ये विचार क्यों नहीं करते ?" मगर बादमें हंसते हंसते बोले, "अिस बूढ़ेकी यही खूबी है कि अुसकी दृष्टिमें कोअी बात या कोअी चीजे बेकार नहीं, छोटी नहीं है । अिसीलिअे वे देशके अद्वितीय नेता हैं । वैसे तो गांधीजीके बराबर पढे-लिखे आदमी देशमें बहुत हैं; गांधीजीसे दीखनेमें बहुत रूपवान मनुष्य भी हैं । परन्तु गांधीजीमें जो विशालताकी शक्ति है वह अनुपम है ।"

अैसा लगता है कि बिहार जानेका अेक-दो दिनमें ही तय हो जायगा । सुधीरदा (सुधीरबाबू घोष)को घूमने जानेसे पहले शुभेच्छाका तार किया ।

बापूजीका सुबहका क्रम हमेशा बंगलाका पाठ करनेका होता है । वह आज . . . के साथ बातें करनेमें बदल गया । यह बापूजीको अच्छा नहीं लगा । घूम कर लौटने पर सबसे पहले बीस मिनट तक बंगला लिखी ।

बादमें मालिश, स्नान वगैरा हुआ । दोपहरके भोजनमें शाक, दूध और स्टीम किया हुआ अेक सेब लिया । और सब छोड दिया । बिहारकी बातोंसे और आजके . . . प्रसंगसे बापूजी कुछ गंभीर विचारोंमें डूब गये हैं । मुझे तो यह डर लगता है कि बापूजी कहीं अुपवासका या कोअी और कड़ा कदम न अुठा लें । सुशीलाबहन पै और सतीशबाबू आये हैं । अुन्होंने नअी यात्राका नकशा बताया ।

कातते समय बिहारसे डॉ. सैयद महमूद साहबके निजी मंत्री मुस्तफा साहब आये । अुन्होंने बिहारकी करुण और भयंकर रिपोर्ट पढकर सुनाअी । अुस रिपोर्टमें स्त्रियों पर जो अत्याचार हुआ है अुसे पढ़ते पढ़ते मुस्तफा साहब रो पड़े । बापूजीका चेहरा गंभीर था, परन्तु हृदयमें जो वेदना हो रही थी अुसका प्रतिबिंब चेहरे पर स्पष्ट दिखाअी देता था । अिसमें कांग्रेसी भी शरीक थे । खूब मारकाट हुअी । लडकियों पर हुअे अत्याचारका पार ही नहीं था ।

हिन्दुओंने बिहारमें ये काली करतुतें की, अिससे बापूजीके हृदयमें असह्य वेदना हो रही थी । बापूजीने अेस. डी. ओ. साहबीके मारफत बिहारके मुख्यमंत्रीको तार किया कि मैं जा सकता हूं या नहीं ? क्योंकि ये सारी बातें वे आंखों देखना चाहते थे । बापूजीकी सभ्यता भी निराली ही है । यद्यपि बिहारके मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिंह अुनके परम भक्त और पुराने साथी हैं, तो भी बापूजी कहने लगे, “बिना अिजाजत लिये मैं बिहार नहीं जा सकता । यदि यहां आनेके लिअे सुहरावर्दी साहबकी अिजाजत लेना जरुरी था, तो वहां जानेके लिअे भी वहांके मुख्यमंत्रीकी अनुमति मुझे अवश्य लेनी चाहिये । जो नियम साधारण लोगों पर लागू होता है, वह मुझ पर भी लागू होना चाहिये न ?”

मैंने कहा, परन्तु हर बातमें तो वे लोग आपकी सलाह लेते हैं, आप ही को पूज्य मानते हैं, अपना बुजुर्ग समझते हैं ।

बापूजी बोले , “अिसमें क्या ? परन्तु आज अुनके पदके कारण यह सभ्यता हमें अवश्य दिखानी चाहिये । निजी व्यवहार चाहे जैसा रखें, परन्तु कानून तो सबके लिअे अेकसा ही होता है ।” अैसा है बापूजीका न्याय ।

लगभग तीन बजे बापूजी स्थानीय कार्यकर्ताओंकी सभामें गये । वहीं मिट्टी ली । चार बजे नारियलका पानी पिया । आज अन्न बिलकुल नहीं खाया ।

प्रार्थना-सभामें यहांके नमोशूद्रोंसे बापूजीने शिक्षाके बारेमें कहा, "आप लोगोंमें पढाअीके लिअे जो बेपरवाही पाअी जाती है, अुसके लिअे अूंचे वर्गके हिन्दू ही कसूरवार हैं । हिन्दू समाजने जान-बूझकर आपको अुठने नहीं दिया । परन्तु अब आपको खुद ही यह खयाल मिटा देना चाहिये कि आपकी जाति नीची है । तभी आप अूंचे अुठेंगे ।

"आज दूसरी बात जो कहनी है वह बिहारके विषयमें है । मुझे समाचार मिले हैं कि बिहारके हिन्दुओंने अैसे अत्याचार किये हैं, जो त्रिपुरा और नोआखालीके अत्याचारोंको भुला देते हैं । मेरा यह खयाल था कि यहां बैठे बैठे मैं बिहारका काम कर सकूंगा । परन्तु डॉ. सैयद महमूदके मंत्री मुस्तफा साहब अभी मेरे पास अुनका पत्र लेकर आये थे । अुनके पत्रमें लिखा है किः "अगर आप आयेंगे तो आपकी अुपस्थितिमें यहांकी स्थिति बहुत सुधरेगी और मसुसलमानोंको विश्वास हो जायगा कि आपको जितना दर्द हिन्दुओंके लिअे है अुतना ही मुसलमानोंके लिअे भी है ।" अिसलिअे आज मैंने जरूरी तार देकर पुछवाया है । नोआखाली और त्रिपुराकी पैदल यात्रा थोड़े समयके लिअे मुलतवी करनी पडेगी । आप सबसे बिनती करता हूं कि मेरी गैर-हाजिरीमें आप सब भाअी-भाअीकी तरह रहें । मैं बाहर जाअुंगा, मगर मेरा दिल तो आपके पास ही होगा ।

"अिनमें जरा भी शक नहीं कि अब अंग्रेज भारत छोड़कर चले जायेंगे । अब भारतवासियोंके (भारतमें रहनेवाले सभी जातियोंके लोगोंके—तमाम दलोंके लोगोंके) मेलजोलसे रहनेका निश्चय करनेका समय आ गया है । अैसा नहीं होगा तो भारत आपसकी भयंकर लड़ाअीकी आफतमें फंस जायगा, और हम अखंड भारतके टुकड़े टुकड़े कर डालेंगे । अिससे किसीको भी लाभ नहीं होगा । संसारमें हम हंसीके पात्र ने बनें, अिसका गंभीरतापूर्वक विचार करना प्रत्येक भारतीयका धर्म है । आप सब अिस पर विचार कीजिये ।"

बापूजीने घूमते घूमते कहा, "दोपहर तक तो त्रिपुराका कार्यक्रम तैयार हुआ था । परन्तु रातमें जैसे रामजीके राज्याभिषेककी तैयारियां हो रही थी और सवेरे अुन्हें अेकाअेक वनमें जाना पडा वैसा ही मेरे संबंधमें भी हो गया है ।"

घूमते समय रास्तेमें जले हुअे घर देखे । आकर कुछ भी नहीं खाया। मुस्तफा साहब कहां सोयेंगे, अुन्होंने क्या खाया वगैराके बारेमें बापूजीने स्वंय पूछताछ की और सारी व्यवस्था कराअी । प्रार्थना-प्रवचन देखा । रंगस्वामीजीसे पत्र लिखवाये । रातको साढ़े ग्यारह बजे सोनेसे पहले बापूजीने कहा, "तुम अपनी तैयारीमें रहना । सामान जहां तक हो सके अेकदम कम कर देना और याद रखकर सतीशबाबूको दे देना ।"

हैमचर,

१-३-१९४७, शनिवार

बापूजी आज पौने चार बजे अुठ गये । माला जपी । बादमें . . . को जगाकर अुनके साथ बातें की । बापूजीने . . . दोनोंको अपना अपना धर्म समझाते हुअे कहा, "यदि मुझमें विश्वास हो तो यहां (नोआखालीमें) स्थिरता रखकर काम करो । फिर जडता नहीं आनी चाहिये, मनकी चंचलता भी नहीं होनी चाहिये । यदि अैसा न कर सको, मुझमें दोष पाते हो, तो मेरा त्याग कर दो । मेरी बात करनेकी शक्ति अब खतम हो गअी है ।"

सवेरेकी प्रार्थनाके बाद शहद और गरम पानी लिया। बादमें अनन्नासका रस पिया । हुनरभाअीसे रजाअुर्रहमान अन्सारी साहबको और दूसरोंको अुर्दूमें जो पत्र लिखवाये अुन पर अुर्दूमें दस्तखत किये ।

घूमते वक्त अेक अनाथाश्रम देखने गये । आते-जाते डेढ घंटा लगा । पौने नौ बजे लौटे । मालिशमें थोड़ी देर बापूजी सो गये । अच्छा हुआ, क्योंकि आज बहुत जल्दी अुठे थे । बिहारकी स्थिति बिगड़ रही है । अभी तक पटनासे कोअी समाचार गहीं आये । स्नानघरमें बापूजी बोले, जवाब आये या न आये, तुम तैयार रहना । कल तो निकलना ही पड़ेगा ।" चौबीस घंटे हो जाने पर भी बिहारसे कोअी अुत्तर नहीं मिला, यह बापूजीको अच्छा नहीं लगा ।

दोपहरको बापूजीके लिअे और हमारी मंडलीके लिअे रास्तेका खाना बनाया । बापूजीके लिअे खाखरे और गुड़-पपड़ी बनाअी । हमारे लिअे नारियलके तेलका मोन डालकर अलग खाखरे बनाये । दोपहरका लगभग सारा समय अिसीमें चला गया । आज भी बापूजीने शाक, दूध और फल ही लिये । बापाके साथ बातें की । दो बज रामकृष्ण मिशनवाले आये थे । साढ़े तीनसे चार तक काता । बादमें मिट्टी ली ।

प्रार्थना-सभामें जा रहे थे कि सामनेसे मृदुलाबहनको आते देखा । अुनके साथ विदेशोंसे चार विद्यार्थी आये हैं ।

मृदुलाबहन पंडितजीका, खानसाहबका और दिल्लीके दूसरे बहुतसे पत्र लाअी है । वहांकी बहुतसी नअी नअी बातें भी जाननेको मिली । प्रार्थनाके बाद लगभग सारे समय अुन्हींके साथ बातें की ।

कनुभाअी अपने गांव गये । शामको बापूजीने अेक केला और दूध लिया । रातको तो मुलाकाती अेकके बाद अेक आते ही रहे । बिसेनभाअीने और मैंने रातको देर तक सामान बांधा । अुन्होंने और अजितभाअीने बेहद मदद दी । निर्मलदा भी अपने काममें मशगूल थे । अुन्हें तो अितना काम रहता है कि रात और दिनका फर्क ही नहीं रह जाता ।

बापूजीका पौन भागका काम वे ही निबटा देते हैं । रातको साढ़े ग्यारह तक मुलाकातियोंकी भीडमें बैठे रहे । अब आयेंगे प्रेस-रिपोर्टर । मैं अपनी यह डायरी अुन्हींके तम्बूमें बैठकर लिख रही हूं । सामान भी ज्यादातर तम्बूमें ही बांधा, जिससे बापूजीको आवाज न सुनाअी दे ।

अब बारह बजे हैं । सोने जाती हूं ।

हैमचर,

२-३-१९४७

कल रातको बाबा (सतीशबाबू) आये थे । मैं और बापूजी तो हमारे कमरेमें लालटेन बुझाकर गहरी नींदमें सो गये थे । लगभग साढ़े बारह हुअे होंगे । मैं भी थक गअी थी । मुझे सोये

कोअी आध घंटा ही हुआ होगा, परन्तु आधी रात जैसा लगता था । बाबाने बापूजीकी मच्छरदानी खोलकर अुन्हें जगाया । दोनों बातें करते थे, अिसलिअे मैं अेकाअेक अुठ बैठी । मुझे डर लगा कि रातको मेरा देर से सोना बापूजीको अच्छा न लगा हो, अिसलिअे स्वयं अुठकर दातुन-पानी कर लिया होगा और प्रार्थना भी कर ली होगी । अिसलिअे अेकदम खडी हो गअी । दातुन लेने गअी तो बापूजी हंसकर कहने लगे कि "अभी समय नहीं हुआ । दातुनमें देर है । तुम सो जाओ ।" मैं नींदमें थी अिसलिअे और किसी बातमें न लग कर सो गअी । बाबा कब गये, अिसका मुझे पता नहीं । परन्तु रात तक बिहारसे कोअी समाचार नही आये, अिसलिअे कल क्या करना होगा, यह जाननेके लिअे बाबा आये थे ।

रोजकी तरह प्रार्थना हुअी । बादमें बंगलाका पाठ । बापाके रसोअियेको हस्ताक्षर करके दिये और अुससे पांच रुपये लिये । प्यारेलालजीके नाम पत्र लिखा । आज दोपहरको दो बजे जाना तय हुआ । मालिश और स्नानके बाद मृदुलाबहन तथा बापाके साथ बातें की । बापाके साथ भोजन करते समय भी बहुत बातें की । भोजनमें अेक खाखरा, शाक और दूध लिया ।

आज बापूजीका मन कुछ हलका मालूम होता है, क्योंकि बिहारके बारेमें कुछ तय कर सके और सबको . . . स्पष्ट सुना सके । अिस प्रकार हृदयमें जो भरा था सो खाली कर दिया । बापूजीके दर्शन करने आनेवाले लोगोंसे सब जगह भर गअी थी । अजितभाअीकी बिहार चलनेकी बड़ी अिच्छा है । परन्तु बापूजीने यही रहकर काम करनेका आदेश दिया ।

मैंने साढे बारह बजे सारा सामान गिनकर कर्नल जीवनसिंहजीको सौंपा । छोटे बड़े सब मिलकर बीस नग हुअे । मेरे साथ जो सामान है अुसमें से बापूजीके कागजोंका बस्ता, पानीकी बोतल, थूकदानी वगैरा चीजें थेलेमें ही रखी है । नोआखालीका टोप, चरखा, खानेके घरतनोवाली बेतकी छोटीसी बेटी, अेक छोठासा बिस्तर और लाठीके सिवा बाकी सब कुछ आगे रवाना कर दिया ।

[चांदपुर पहुंचनेके बाद]

जानेसे पहले मैं बापासे अिजाजत लेने गअी ।

अुन्होंने मुझे अेक पत्र लिखवाया । प्रणाम किया तो मुझे मीठा आशीर्वाद दिया, "तुम बापूजीकी जिस ढंगसे सेवा कर रही हो अुससे मैं बड़ा प्रसन्न हुआ हूं । तुमने बड़ा पुण्य कार्य किया है । अीश्वर तुम्हें सुखी रखे; तुम्हारे दादा अमृतलालभाअी तो बड़े बढ़िया आदमी थे । मेरे और अुनके बीच बड़ा मीठा संबंध था, जब हम नवी बंदरमें साथ रहते थे । जयसुखलाल अुस समय बहुत छोटे थे । दुम्हारे दादा अितने पवित्र मनुष्य थे कि अुन्हें याद फरके हम पावन हो सकते हैं।"

बापा आंखोंसे अच्छी तरह काम नहीं कर सकते, अिसलिअे मुझसे कहने लगे, समय हो तो मुझे तुमसे अेक पत्र लिखवाना है । . . . रवाना होनेमें दस ही मिनट बाकी थे । परन्तु जरूरी पत्र था, अिसलिअे जल्दी जल्दीमें लिखवाया । अुसकी नकल मुझे दी ।

फिर मैं और ठक्करबापा बापूजीके पास गये । बापा और बापूजीके मिलनका और बिदाअीका दृश्य बडा पवित्र मालूम होता था । बापाको यह कल्पना ही नहीं थी कि बापूजीको अिस प्रकार अचानक बिदा देनी पड़ेगी । परन्तु हमारे अेक सप्ताह यहां रहनेसे बापा बहुत खुश हुअे और दोनों अेक-दूसरेके अनेक कामोंको समझ सके । अन्तमें सभीको अिससे संतोष हुआ ।

बापूजीने हैमचरमें ही कात लिया था । मिट्टी तैयार करके साथ ले ली ।

ठीक दो बजकर दस मिनट पर हम जीप गाड़ीमें चांदपुरके लिअे रवाना हुअे । बहनोंने बापूको तिलक लगाया और शकुन किया । हमें दही-चीनी खिलाअी । हमारी जीपमें अितने आदमी थे—बापूजी, मृदुलाबहन, चारुदा, देबभाअी और मैं । बापूजी आध घंटा जीपमें बैठे बैठे सो लिये । रास्तेमें अेक नदी पार करनेके लिअे गांवमें बैठना पडा । जीपगाडी भी पार अुतारी गअी ।

यहां हम ठीक ३-४० पर पहुंचे । गांवोंकी शांतिसे शहरकी अशांतिमें आ गये । थोडा पैदल चलकर बाबू हरदयाल नागके यहां गये । यहां बापूजी अिसी घरमें आजसे बीस वर्ष पहले भी आये थे । बापूजी कहने लगे, "अब तो घरमें कुछ परिवर्तन मालूम होता है ।" अपार भीड थी । भीडमें से चलकर घर तक पहुंचनेमें दस मिनट लगे । आकर हाथ-मुंह धोकर नारियलका पानी

पिया । सरदार जीवनसिंहजी लोगोंकी भीड़को काफी संभाल रहे थे; चिल्ला-चिल्लाकर अुन्होंने अपना गला बैठा लिया था ।

मृदुलाबहन तो अपने स्वभावके अनुसार खूब मदद करनेमें लग गअी । मुझसे बोली, "किसी भी प्रकारसे बापूजीको तकलीफ नहीं होनी चाहिये । किसी भी चीजकी जरूरत हो तो मुझे कह देना ।" बापूजीने अुनसे खान साहब और दुसरे लोगोंको पत्र लिखवाये । आंखों और सिर पर मिट्टीकी पट्टी ली । यहांकी व्यवस्था सुन्दर है । आज रातको नौ बजे गोआलंदी जानेवाले स्टीमरमें बैठना है ।

नोआखालीमें लगभग पचाससे अधिक गांवोंमें पैदल यात्रा की अब सवारीमें यात्रा शुरू हुअी।

बापूजी साढे चार बजे अुठे । प्रार्थनामें जानेको रवाना हुअे । मोटरमें न जाकर बापूजीने पैदल ही जाना पसन्द किया, जिससे लोगोंको भी संतोष हो । दोनों तरफ कॉर्डन किया गया था । अेक तरफ मृदुलाबहनका सहारा था और दूसरी तरफ मैं थी । स्त्रियां अपने घरोंकी छत परसे अच्छे अच्छे कपड़े पहनकर फूल और चावलकी वर्षा कर रही थी । कहीं कहीं शकुनका शंखनाद हो रहा था । सारी सडक फूलोंसे छा गअी थी ।

सभामें बहुत शोरगुल था । पहले बापूजीने रामधून शुरू करनेको कहा । अिसके बाद कुछ शान्ति हुअी और सारी प्रार्थना कराअी । चिल्ला-चिल्लाकर शैलेनभाअीकी आवाज भी बैठ गअी थी । अिसलिअे मुझे अकेले ही प्रार्थना करानी पड़ी । शैलेनभाअी अे. पी. आअी. के रिपोर्टर हैं, परन्तु हमारी मंडलीके सदस्य हो गये हैं । वैसे सारे प्रेस- रिपोर्टर और हम सब कुटुम्बी जैसे हो गये हैं । परन्तु शैलेनभाअी प्रार्थनामें बड़ी मदद देते हैं ।

प्रार्थनामें शांति रखनेका अनुरोध करनेके बाद बापूजीने कहा, "मैं अिससे भी बड़ी सभाओमें गया हूं और वहां मैंने संपूर्ण शान्ति पाअी है । मैं बंगला नहीं बोल सकता, अिसका मुझे दुःख है । परन्तु लौटूंगा तब आशा रखता हूं कि बंगला बोल सकूंगा ।

"चांदपुर मेरे लिअे नअी जगह नहीं है । जब अलीभाअी और बाबू हरदयाल नाग जिन्दा थे, तब मैं पहले-पहल आया था । अेक ओर यहां दुबारा आनेसे हर्ष होता है; दूसरी ओर दुःख होता है । जब मैं देहातमें यात्रा कर रहा था तव लोग रो रहे थे, बडे दुःखी थे । परन्तु रोनेसे कुछ नहीं होगा । सबको अुस मार्गसे ही जाना है । यह बाबू हरदयाल नागकी भूमि है । वे जो काम कर गये अुससे प्रेरणा लेकर हम वैसा ही काम करें तभी हमारा जीना सार्थक है । मैं चांदपुर क्यों आया ? मेरी यात्राके दो हिस्से पूरे हो चुके थे । तीसरा हिस्सा शुरू होनेको था कि डॉ. सैयद महमूद साहबके मंत्री आये और अुन्होंने मुझे बिहार जानेका आदेश दिया । अिसलिअे आज वहां जा रहा हूं ।

"जैसे किसी हिन्दुके मरने पर मुझे सगे भाअीके मरनेका दुःख होता है, वैसे ही किसी मुसलमानके मरने पर भी मुझे अुतना ही दुःख होता है। हम सब अेक अीश्वरके बालक हैं । अिसलिअे मैं नोआखाली और टिपरा जिलोंमें घूमा । जब तक शान्ति कायम नहीं हो जायगी, तब तक न तो मैं चैन लूंगा और न दूसरोंको लेने दूंगा । भले मैं अकेला ही रह जाअूं तो भी चिल्लाता रहूंगा ।

"बिहारमें मेरी कुछ चलती है । अिसलिअे आशा रखता हूं कि वहांका काम जल्दी पूरा करके यहां आ जाअूंगा । परन्तु अिस बीच आप अिकबालकी अिस कविताको सच साबित करके दिखा दीजिये – 'मजहब नहीं सिखाता आपसमें बैर करना । हिन्दी है हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा ।'"

प्रार्थनासे लौटकर बापूजीके लिअे घरकी बहनोंने बकरीके दूधका जो सन्देश आग्रहपूर्वक बनाया था वह लिया। अिन बहनोंकी अिच्छा थी कि बापूजीके खानेकी थाली वे ले जायं । अिसलिअे अेक छोटी लड़कीको मैंने तैयार करके दे दी । वही आठ औंस दुध, अंगूर और यह सन्देश ले आअी । बहनोंकी अिच्छा थी कि बापूजी अुनके बरतनोंमें खाय । बापूजीने वैसा ही किया ।

बापूजी बहुत ही थक गये थे ।

अचानक अेक स्पेशल रटीमर आ पहुंचा, अिसलिअे मृदुलाबहनने अुसीमें जानेका प्रबंध किया । यह बड़ा अच्छा हुआ, नहीं तो पैसेंजर स्टीमरमें आना पड़ता । अुस हालतमें बापूजीको सोनेकी सुविधा नहीं मिलती ।

बापूजीका मौन शुरू हो गया । रातको आठ बजे बापूजीकी अंतिम वस्तुअें मृदुलाबहनको सोंपी । बापूजीको मच्छरोका मरहम मल कर सारे सामानके साथ मैं स्टीमर पर गअी । कैबिनमें बापूजीका बिस्तर करके रातकी दातुन वगैरा अुपयोगी चीजें रखी ।

बापूजी मृदुलाबहनके साथ दस बजे स्टीमर पर आये । कैबिनमें थोड़ा लिखकर कर्नल जीवनसिंहजीके साथ खूब बातें कीं । बिदा करने आनेवालोमें चारुदा और कर्नल जीवनसिंहजीके साथ करीब अढ़ाअी महीनेका साथ होनेके कारण हम सबका कुटुम्ब जैसा प्रेम हो गया था । सब गद्गद हो गये । ग्यारह बजे सब गये । स्टीमर चला । साढ़े ग्यारह बजे बापू सो गये । खूब थक गये थे । सिरमें तेल मला, पैर दबाये और प्रणाम किया । बहुत दिनों बाद बापूजीने आज खूब जोरकी थप लगाअी । चिट्ठीमें लिखा :

> "हैमचरमें बापा तुम पर बड़े खुश हुअे । मुझसे कह रहे थे । परन्तु संतोषकी बात यह हुअी कि हफ्तेभर अुनके साथ रहनेसे मैं बापाको काफी समझा सका और अुन्होंने अपनी कुछ मान्यतायें छोड़ दी । वे तो महात्यागी हैं । अति नम्र मनुष्य है । तुमने देखा कि अुन्होंने अितने दिनोंमें केवल अेक ही दिन मेरा थोड़ा समय लिया । आम तौर पर ये मेरा समय लेने आते ही नहीं थे । अुनका अैसा काम है । अुनकी जोडका दूसरा आदमी नहीं है । भूल मालूम हो जाय तो तुरंत सुधार लेते हैं, अुसमें अुन्हे देर ही नहीं लगती । तुम अुनकी कुछ सेवा कर सकी, यह मुझे अच्छा लगा । अिसीलिअे मैंने तुम्हें प्रोत्साहन दिया था । तुम्हारी दो दिनकी डायरी देखना रह गअी है । अुसे यही रख देना । प्रार्थनाके बाद सुबह पढ़ लूंगा ।"

आजकी यह डायरी स्टीमरमें साढ़े बारह बजे पूरी कर रही हूं । बापूजीके पैर दबाकर मच्छरदानी बंद की । बत्ती और कैबिन बंद करके बाहर बैठकर अपनी दिन भरकी डायरी पूरी

की। साढ़े चार बजे तककी चांदपुरमें लिखी थी । बादकी चांदपुरसे गोआलंदी आते हुअे स्टीमरमें पूरी की । आज बापूजीके ८८ तार हुअे ।

चांदपुरसे गोआलंदी जानेवाले स्टीमरमें,
३-३-१९४७

अभी-अभी दातुन-पानीसे निबटकर रोजकी भांति प्रार्थना की । बापूजीको गरम पानी और शहद दिया । में रस निकालने गअी अुस बीच बापूजीने बंगलाका पाठ किया और फिर अपना डाकका काम शुरू किया । बापूजी पत्र लिखनेमें अितने मझगूल थे कि मैं रस हाथमें लेकर दस मिनट खड़ी रही परन्तु अुनका ध्यान नहीं गया । आज मौन भी है । अन्तमें मैंने दो बार पुकारा और हाथमें गिलास दिया तब हंसकर पिया । फिर अपना काम शुरू कर दिया । . . . और पत्र लिखते लिखते ही सो गये ।

बापूजी लेटे हैं । मैं अपनी डायरी लिख रही हूं । रात अच्छी बीती । यात्रा शान्त है । सामने सुन्दर किनारा दिखाअी दे रहा है । सवेरेके सवा सात बजे है ।

बापूजी साढ़े सात बजे अुठे । घूमने निकले । मैं और बापूजी डेक पर चक्कर काट रहे थे । बापूजीका मौन था । बहुत तेज चल रहे थे । थोड़ी देरमें प्रेम-प्रतिनिधि, जो हमारे साथ सफर कर रहे हैं, शैलेनभाअी और दूसरे लोग आये । निर्मलदा भी देख गये । सामनेसे अेक स्टीमर 'महात्मा गांधीकी जय' के नारे लगाता हुआ हमारे साथ हो गया । अेक बेडी नदीमें अिस प्रकार दो स्टीमर चल रहे थे । हमारे स्टीमरके कप्तानने मुझसे कहा कि अुसके मुसाफिर खास तौर पर बापूजीके दर्शन करनेको ही यात्रा कर रहे है । बापूजीने वहां खड़े रहकर सामनेवाले स्टीमरके मुसाफिरोंको हाथ जोड़कर प्रणाम किया । सूर्यदेव अुग रहे थे और अुनकी सुनहरी किरणें सीधी बापूजीके तेजस्वी चेहरे पर पड़ रही थी । किनारा अत्यन्त रमणीय था। और नदी शान्तिसे कल-कल करती हुअी बह रही थी । अैसे वातावरणमें बापूजी सामनेवाले स्टीमरके मुसाफिरोंको हाथ जोड़ कर खड़े रहे और अुन मुसाफिरोंने स्टीमरको जयनादोंसे गूंजा दिया । मुसाफिरोंने कृतज्ञतापूर्वक बापूजीको प्रणाम किया ।

आज पैर नहीं धोने थे । बापूजीने . . . का पत्र पुरा किया, अितनी दैरमें मैंने मालिश और स्नानकी तैयारी की । दस बजे नहा-धोकर निवृत्त हुअे । बाबूजीने भोजनमें शाक, अेक खाखरा और बकरीके दूधके बजाय कल बनाकर रखा हुआ संदेश लिया । दूध यहां नहीं मिलता । ग्यारह बजे मृदुलाबहन बातें करने आअीं । मैं बापूजीके कपड़े वगैरा जमाने और धोने चली गअी । फिर जो सामान निकाला था अुसे ठीक किया । अिसमें अेक बज गया । अेक बजे बापूजीके पेडू पर मिट्टी रखी । पैरोंमें घी मला । बापूजीने आराम लेते हुअे बंगला बालपोथी पूरी की । दो बजे अुठकर नारियलका पानी पिया ।

हम ठीक अढ़ाअी बज गोआलंदी पहुंचे ।

स्टीमर पर बहुल आदमी आये थे । बारीक रेत खूब तप रही थी और गरमी भी लग रही थी । ट्रेनमें आये तो वहां डिब्बेमें काकासाहब बैठे हुअे थे । बापूजीसे मिलने आये थे । बापुजीकी बैठकका बन्दोबस्त करके हम हाथोंहाथ सामान ले आये । तीन बजे गाडी चली । बापूजी और काकासाहब बातोंमें लगे । आज मौन-दिन था । अिसलिअे लिखकर बातें करते थे । साढ़े चार बजे दो काजू, दो बादाम और दो खाखरे खाये । बापूजीने बातें अधूरी रखी और खाकर आंखोंमें बहुत जलन होनेके कारण मिट्टीकी पट्टी रखकर सो गये । मैं तो सामान निकालने और रखनेमें ही लगी रही ।

सात बजे मौन खुला । पुराने सारे प्रेस-प्रतिनिधि बापूजीसे मिलने आये । क्योंकि अिस नअी स्थितिमें नोआखालीमें जो प्रेस-प्रतिनिधि बापूजीके साथ यात्रा करते थे अुन्हें कदाचित् अुनके अधिकारी बापूजीके साथ अब न भी रखें । प्रार्थनाके बाद सब प्रेस-प्रतिनिधियोंने अंतिम बार गद्गद कंठसे 'अेकला चलो रे' भजन गया । सबकी आंखोंमें पानी भर आया । प्रार्थनाके बाद बापूजीने फिर काकासाहबके साथ बातें की । आराम किया । नौ पचास पर हम सोदपुर आये । आकर बापूजीका बिस्तर किया । वे हाथ-मुंह धोकर स्वस्थ हुअे, सबसे मिले और लगभग साढ़े ग्यारहके बाद सोये ।

मैं खूब थक गअी थी । अिसलिअे बापूजीके सोनेके बाद अुनके सिरमें तेल मलकर और पैर दबाकर नहाअी । सामान मिलाया । सुबहकी तैयारी की । बापूजीके लिअे दातुनकी कूची बनाअी । यह फुटकर काम निबटाकर डायरी पूरी की । थक गअी थी, अिसलिअे भोजन नहीं किया । अब अेक बजनेमें दस मिनट बाकी हैं । सोने जाती हूं । निर्मलदा अभी तक जाग रहे हैं । अुनका काम तो रातको देर तक चलता रहता है ।

खादी प्रतिष्ठान,

सोदपुर, (कलकत्ता)

४-३-१९४७

रोजकी तरह प्रार्थनाके लिअे अुठे । मैं कब सोअी आदि पूछताछ करके बापूजी कहने लगे, "हमने नोआखाली छोड़ तो नहीं दिया, परन्तु अब यात्रायें दूसरी तरहकी होंगी । शायद काम बढेगा । परन्तु जो नियम नोआखालीमें पालन किये जाते थे, अुनमें फर्क नहीं पड़ना चाहिये । यह यज्ञ अब नोआखाली तक ही सीमित नहीं रहेगा । अब तो जब तक दोनों जातियोमें पूरा भाअीचारा पैदा न हो जाय, हममें मानवता न आ जाय, तब तक मुझे निरंतर करना है या मरना है । अत, मेरा और तुम्हारा तप जितना शुद्ध हागा अुतना असर अिस कार्य पर अुसका अवश्य होगा । बिहारका काम नोआखालीसे ज्यादा कठिन साबित हो तो मुझे अचंभा नहों होगा, क्योंकि कभी-कभी जब अपने आदमी भूल कर बैठते हैं तब अुसे सुधारना बहुत कठिन हो जाता है । बिहारकी रिपोर्ट देखते हुअे मुझे लगता है कि नोआखालीकी अपेक्षा बिहारका मेरा काम ज्यादा मुश्किल होगा, ज्यादा बढ़ जायगा । अिसलिअे तुम्हें बहुत सावधानी रखनी है । तुम अपना खाना-पीना, आराम, नियमानुसार घूमना सभी कुछ नोआखाली जैसा नियमित रखोगी तो ही मुझे संतोष होगा ।"

कल रात देरसे सोअी, अिसलिअे प्रात काल पौने चार बजे ही चेतावनी दी, ताकि अिस नये परिवर्तनसे मैं अनियमित न बन जाअूं ।

प्रार्थनाके बाद मेरी डायरी देखी । बापूजीको मरम पानी और शहद देकर रस निकालने गअी । अिस बीच अुन्होंने अपना बंगला पाठ लिखा । आज तो वे बंगला बोलना सीख रहे थे । मैं

रस लेकर आअी तो मुझसे बंगलामें पूछा, “तोमार नाम की ?” (तुम्हारा नाम क्या है ?) और खूब हंसे । बापूजीको दस तक अंक लिखना अच्छी तरह आ गया है ।

साढ़े सात बजे नित्यकी भांति घूमने गये । दूसरी बहनें 'लाठी' बननेवाली थीं, अिसलिअे में घूमने नहीं गअी । मुझे काम भी था । परन्तु यह बापूजीको बिलकुल अच्छा नहीं लगा । पैर धोते समय अुलाहना दिया, “भले तुम मेरी लाठी न बनती । लेकिन अिससे क्या ? तुम्हें घुमना न छोड़ना चाहिये । तुम्हारा घूमना भी मेरी दूसरी सेवाका अेक भाग है । अिसलिअे आज तुम नहीं घूमी, अिसका मुझे दुख है । मैं खुश होअूंगा यदि आज तुम मालिशसे छुट्टी ले लो और अुतनी देर घूम लो ।”

मैंने कहा, “मालिशसे छुट्टी लेना तो मुझे अच्छा नहीं लगेगा ।”

बापूजी कहने लगे, “तो मैं कमोड पर जाअुं तब अेक बार दौड़ लेना । अुससे भी पूरा तो नही, कुछ संतोष हो जायगा । परन्तु बिलकुल न घूमना तो पाप है ।”

मैंने बापूजीके कहे अनुसार दौड़ लगा ली । बापूजी नियमितता पर अितना ध्यान देते हैं ।

पौने नौ बजे शहीद सुहरावर्दी साहब—यहांके मुख्यमंत्री—आये । लगभग सवा दस बज गये । अिससे मालिशमें बहुत देर हो गअी और मालिश अच्छी तरह नहीं हो पाअी । सुहरावर्दी साहब अपनी ही बातें करते रहे । बापूजीको बोलने ही नहों देते थे । जबरदस्त आदमी हैं । बापूजीको भी लगा कि वे गोलगोल बातें कर रहे हैं, मुद्देकी बात नहीं करते । बापूजी कहने लगे, “अीश्वरने सोचा होगा वही होगा ।”

बारह बजे स्नान वगैरा पूरा हुआ । भोजनमें शाक, दूध और फलोंमें थोड़े अंगूर लिये । और कुछ नही लिया । भोजन करते हुअे काकासाहबसे बातें की ।

दर्शनार्थियोंकी अपार भीड़ थी । मेरा नहाना-धोना ठेठ दो बजे पुरा हुआ । अढाअी बजे डॉ. कुलरंजन बाबू (प्राकतिक चिकित्सक) आये । बापूजीके कानमें कुछ बहरापन-सा लगता है । अुसे मिटानेके लिअे अेक विशेष प्रकारका स्पंज करनेका तरीका अुन्होंने मुझे बताया ।

फिर बापूजीने थोड़े पत्र लिखे, अपनी डायरी लिखी । कल रात मैं देरसे सोअी थी, अिस पर बापूजीने लिखा :

> " . . . मनुड़ीके बारेमें । ... अभी तक अुसकी बालबुद्धि नहीं गअी । प्रौढ़ बननेकी बहुत जरूरत है । मुझे तो आशा है कि थोड़े ही समयमें प्रौढ़ हो जायगी । बहुत भोली है । मेरी खूब सेवा करती है । अुसमें तल्लीन हो गअी है । परंतु खाने-पीने और सोनेका ध्यान नहीं रखती । अुसका शरीर बिगड़ता है, यह मुझे सटकता है । . . . वैसे मुझे काफी संतोष दे रही है ।"

मैंने जब यह नोंध देखी तब यह सोचकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि बापूजी कितना याद रखते हैं । मैंने अुनसे कहा, अिस डायरीमें आपने मेरे विषयमें जो लिखा है वह मुझे पसन्द नहीं । क्योंकि आपकी डायरी तो सब लोग पढ़ेंगे ।

बापूजी बोले, "अिससे क्या हो गया ? हम जैसे हों वैसे ही दिखाअी दें, तो ही जीवनमें आगे बढ़ सकते हैं । 'खानगी' नामका शब्द ही तुम्हें मनसे निकाल देना चाहिये । हमने कोअी चोरी थोड़े ही की है कि खानगी रखें ?" मैं चुप हो गअी ।

शामको प्रार्थनासे पहले दूध और फल लिये । प्रार्थनामें जानेसे पहले मैंने सारा सामान गिनकर ट्रंकोमें हावड़ा स्टेशन पर रवाना कराया ।

शामको प्रार्थनामें भारी भीड थी । प्रार्थना-सभामें बापूजीने समझाया कि वे बिहार क्यों जा रहे हैं और लोगोंसे भाअीचारा बढ़ानेका अनुरोध किया । प्रार्थनाके बाद दसेक मिनट घूमे ।

ठीक साढे सात बजे हम सोदपुरसे रवाना हुअे । हावड़ा स्टेशन पर बापूजीके दर्शनोंके लिअे जो अपार भीड आअी थी अुसके बारेमें तो क्या लिखूं ? मानव-समुद्र अुमड आया था । और फोटोग्राफरोंका टिड्डोदल ही निकल आया था । प्रकाशसे आंखें चौंधिया जाती थी । परन्तु अुन लोगोंके प्रेमके कारण यह कठिनाअी सहनी ही पडी । अिस बीच बापूजीने अपना धंधा—हरिजन फंड अिकट्ठा करनेका—शुरू कर दिया । बापूजीके हाथमें पैसे, रुपये, आने, दो आने, चार आने

और नोटोंका खासा ढेर हो गया । सब लोग बापूजीके हाथमें ही देते थे । हममें से कोअी हाथ फैलाता तो शायद ही कोअी देते थे । खूब रेजगारी गिननेको हो गअी है । कल पटनामें गिन लुंगी । अिस समय (रातके दस बजे) यह डायरी वर्दवान स्टेशन पर पूरी कर रही हूं । बापूजी सो रहे हैं । लोग निर्मलदाके समझानेसे शांतिपूर्वक बापूजीका दर्शन कर रहे हैं ।

* * * * *